



111513



वी. प

नी आरं

7

Editor

पंजाब, हिमाचल, उत्तराखण्ड, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा, नागालैण्ड, असम, वी. पी. आर. के लिए स्वीकृत



★
७, जनवरी १९५९



111513

111513

सम्पादक
हितैषी-अलावलपुरी



वार्षिक मूल्य

मनीऑर्डर से सात रुपये

वी. पी. से सात रु० ६५ नए पैसे

विदेशों के लिए

१५ शिलिंग पेशगी

री ऑर्डर अथवा पोस्टल ऑर्डर द्वारा।



★ नई छब्बीस जनवरी ★

नए वर्ष में हर्ष नया ले आई है छब्बीस जनवरी—

वर्ष पहले रावी के तट पर जो ध्वज फहराया था,

अपने हाथों से लेकर नव प्रण फहराया था।

हा वह लाल किले पर विश्व-शान्ति का प्रतीक बन,

नौ बत्सर पहले यह भण्डा प्रजा-राज्य बन कर आया था

सर्व तंत्र, निज तन्त्र बना जब भारत वह छब्बीस जनवरी,

नए वर्ष में हर्ष नया ले आई है छब्बीस जनवरी।

राष्ट्र प्रगति जो अब तक की है आओ उसको आज देखलें,

पूर्ण हो चुके हैं यदि, कुछ आज नया प्रण और एक लें।

'है आराम हराम' यह, जब तक जनता नहि नव-जीवन पाए,

ओ' न आलसी व्यक्ति हिन्द के कर्मता का पंथ नेक ले।

राष्ट्र प्रगति के लेखे जाँखे का दिन है छब्बीस जनवरी,

नए वर्ष में नया हर्ष ले आई है छब्बीस जनवरी।

जनता का हित साधन करते राष्ट्र बड़ा है कितना आगे।

रोग, मूर्खता ओ' दरिद्रता के भय अब तक कितने भागे,

जनता के जीवन का स्तर भी क्या हो पाया है कुछ ऊँचा ?

क्या ऊँचा कुछ हुआ है नोचा-पतित दलित के दिन जागे,

नई दृष्टि दे रही हमें हर बार नई छब्बीस जनवरी।

THE "Prakash"

Editor: L.C. HATASHI

JULLUNDUR CITY.

‘प्रकाश’ के लक्ष्य तथा नियम प्रकाश के सम्बन्ध में सम्मतियाँ

लक्ष्य :—

- (१) विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना ।
- (२) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना ।
- (३) छात्रों और अध्यापकों में सहयोग और प्रेम बढ़ाने में सहायता देना ।
- (४) छात्रों और अध्यापकों के हितों की रक्षा करना ।
- (५) निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना ।
- (६) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति !

नियम :—

- (१) प्रकाश प्रतिमास की ७ तारीख को ग्राहकों को भेजा जाता है । किन्तु कारण-वश देर सबेर संभव है ।
- (२) वार्षिक मूल्य, भारत में ७ रु० मनीआर्डर से ७ रु० ६५ नए पैसे बी. पी. से और १५ शिलिंग विदेशों से लिये नियत है । विदेश के ग्राहक शुल्क पोस्टल आर्डर अथवा मनी आर्डर से भेजें । विदेशों में बी. पी. नहीं जाता ।
- (३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता । इसके लिए ६५ नए पैसे के टिकट भेजने चाहिए ।
- (४) बृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटानेकी अवस्था में मूल्य में कमी या वृद्धि की जा सकेगी ।
- (५) लेख, कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास की १५ तारीख तक आ जाने चाहिए । जो लेखक अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे ५) रु० ब्लाक के लिए अपने फोटो के साथ भेजें ।

(१) ‘प्रकाश’ का मई का अंक मिला । मैंने उसे ध्यान से पढ़ा । उसमें आप ने शिक्षा सम्बन्धी उपयोगी सामग्री जुटाने और उसे सारगर्भित रूप में थोड़े ही पृष्ठों में उपस्थित करने में जो परिश्रम किया है, वह सराहनीय है । इस प्रकार ‘प्रकाश’ के छोटे क्लेवर में एक बड़ी ज्ञान राशि भर देने से, आशा है विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा ।

—सन्तराम बी. ए. पुरानी वसी ।

(२) मैंने ‘प्रकाश’ को पढ़ा है और स्कूलों के लिये बहुत ही लाभप्रद पाया है ।

—पी. एल. सोदन, हैडमिस्ट्रेस गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना ।

(३) मैंने इसे सभी शिक्षा पत्रिकाओं में उत्तम पाया । इसमें छात्रों के लिए बहुत उपयोगी सामग्री संग्रहीत की गई है ।

—रामप्रसाद हैडमास्टर, मिडल स्कूल जमशेर

(४) ‘प्रकाश’ की नमूने की प्रति मिली । अंक सुन्दर और पत्रिका छात्रोपयोगी है ।

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट्, प्रिंसिपल डी.ए.वी. कालेज अजमेर

इनके अतिरिक्त

प्रशंसापत्र भेजने वालों में इनके नाम उल्लेखनीय हैं :— (१) हैडमिस्ट्रेस, क्रिश्चियन गर्ल्स हाई स्कूल पालमपुर । (२) हैडमास्टर, गवर्नमेंट हाई स्कूल नंगल टाऊनशिप होशियारपुर, (३) हैडमिस्ट्रेस गवर्नमेंट स्पेशल स्कूल नंगल टाऊनशिप होशियारपुर तथा अन्य ।

(६) अप्रकाशित लेख आदि बिना डाक टिकट आए लौटाये नहीं जाते । (७) विज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अश्लील न हों और जिनके दाम पेशगी आ जाएं । —प्रबंधक

प्रावकाश

वर्ष १०]

जनवरी ५९

[अंक १

★ नव वर्ष सन्देश ★

—शालिहास, सिरसा।

नववर्ष यही सन्देश हमें, दे जाता है हर बार नया।

गाओ नवयुग के मधुर गीत

ऐ ! तप्त विश्व तुम नए नये !

नव वर्ष दिवस की प्रथम उषा

नव दुलहिन सी सज कर सुन्दर

नीलम नभ पर छिटकाती है

स्वर्णिम द्युति रागारूण सुख कर

उपवन में मानो आज खिले डाली-डाली पर फूल नए।

तुम जाओ भूल विगत दुख को,

गत वर्ष गया सब दुःख गए

अब तो नित नूतन आशाएं

नूतन उमंग सब रंग नए

चिंता विषाद तज भेद भाव,

गाओ मानव अब राग नए

अब गया अठावन वीत और 'उनसठ' ने चरण रखे भू-पर।

जीवन कष्टों का एक वर्ष कट गया

और, अब सिर ऊपर

आया कष्टों का भार नया

पथ औ' साथी सब नए नए

मत घबराओ तुम कायर बन,

जग कायर को खा जाता है

युग-चक्र पीस देता उसको,

परिणति से जो अकुलता है

इस परिवर्तन को गले लगा

बढ़े चलो राहपर नए-नए नववर्ष यही सन्देश हमें दे जाता है।

कहां क्या है ?

कविताएं

पृ० सं०

टैगोर का गीत

११

पंचशील सन्देश

११

विदा

आनन्दप्रकाश

१४

नया वर्ष आया

प्रसाद

२३

निर्भय होकर बढ़ जा आगे

३१

तुम भी बन सकते हो

३१

भारत के वीरों से

३३

वीरों की ललकार

३३

कहानियां

ऐकसीडेंट

सुबोधकुमार १६

बेचारा अध्यापक

सुदर्शन २०

आंकड़े बोलते हैं

प्रसाद २०

लेख

बिना लक्ष्य के जीवन में कोई कुछ

नहीं कर सकता

७

विगड़े हुए बच्चों को सुधारने

की समस्या

८

चीन में शिक्षा का नया रूप

२०

बुनियादी शिक्षा पर एक दृष्टि

१२

आपका जीवन सफल है या असफल

१५

२१वीं शती के मनुष्य कैसे होंगे?

२४

कोहेनूर का मूल्य व नैपोलियन की

सफलता का रहस्य

२८

आगे बढ़ो

२९

बूढ़े एक दिन में जवान

३०

स्नान तो मुझे करना पड़ेगा

३०

मास्को का वह स्कूल जहां हिंदी

पढ़ाई जाती है

३२

ईमानदारों का अभाव क्यों है

३४

शिक्षा-समाचार, समाचार-सार

गृह-विज्ञान सम्पादकीय विचार,

अपनी बोली'च, स्वास्थ्य सुधार

चटकुले तथा अन्य स्थाई स्तम्भ

अपनी धोली च

★ वाह ओये नवियां साला !

३१ दिसम्बर दी रात नूँ असीं नवें साल दीआं शुभ कामनावां दे काई पढ़ के सुत्ते ताकि सचमुच नवां साल शुभ चढ़े । ते सच जानना कि नवें साल दे पहले दिन दे 'शुभ' होन'च कोई शक नहीं रिहा । ओह किवें ? लौ सूनो । असीं हाले सुफने'च अपने शुभचिंतकां दीआं भेजीआं शुभ कामनावां नूँ साकार हुन्दियां देख रहे सां कि मंगतियां दी इक टोली दे शुभ आशोवादि कन पाड़न लगे । साडा जी ते चाहिया कि उठके देश दियां एहनां रत्तां नूँ २१ रु० मन खरी-दिया आटा रसोई चों लिया के तोला २ दे दियां ताकि ओह एस नूँ देखनों न तरस जान । आखिर ओह भी ते २१ रु० मन विकन वाले आटे दे दर्शन करन दा हक रखदे ने ! पर हाले असीं सोच ही रहे सी कि नेकी दे एस कम नाल नवां साल शुरू करिए कि पुण्य दा होर कोई कम सोचिए कि घर-वाली ने आटे दा खाली पीपा खड़का के इसदे खाली होन दी घोषणा कर दिती ते जरा छेती उठके आटा लियौन दा अल्टीमेटम दे दिता । पर इक गल्लों एह चंगा ही होया सानूँ रजाई चों निकलना न पिया । हट्टीआं ९ बजे खुलनीआं सी पर अजे तनखाह ते मिलो ही नहीं सी । की दुकानदाए नवें साल दे पहले दिन आटा उधार दे दयेगा ? एह सोच-दियां असीं खण्डों बगैर नवें साल ते नवीं किसम दी चा पीती ते हट्टी वाले कोलों २२॥ रुपये मन आटा लिया के अपनी सरकार दा धन्यवाद कीतां जिसने नवें साल दे आटा नाल दे दया करी ।

फूल और कांटे

[पाठकों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र०—पाकिस्तान भारत को फिर धमकियां देने लगा है । —हरिप्रसाद, लखनऊ

उ०—उसके पास हमें ओर देने को धरा ही क्या है ?

प्र०—क्या आप के ख्याल में तीसरे महान युद्ध के निकट भविष्य में होने की संभावना ?

उ०—संभावनातो है किन्तु खतरा नहीं ।

प्र०—हमारे देश को पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा क्या लाभ हुआ है ? —रेवती शर्मा, मेरठ ।

उ०—यह लाभ क्या कम है कि भूखों ओर बेकारों का फौज देश को शत्रुओं से रक्षा के लिए अपने आप तैयार हारहा है ।

प्र०—रेलगाड़ियों में जनाना डिब्बे होते हुए भी स्त्रियां पुरुषों के डिब्बे में क्यों यात्रा करती हैं ? —रामनाथ, बनारस ।

उ०—इसलिये कि पुरुषों के डिब्बे में उन्हें टांगें पसार कर लेटने की जगह आसानी से मिल जाती है ।

प्र०—पंजाब की भाषा समस्या का सर्वोत्तम हल क्या है ? * —गोपालदास, शिमला

उ०—हिंदी और पंजाबी को स्वेच्छा से पढ़ने न पढ़ने की छुट्टी और सरकारी नौकरी के लिये दोनों का अनिवार्य ज्ञान !

स्टैंडर्ड उच्चा करके साडी जिदगी दा स्टैंडर्ड ऐना उच्चा कर दिता ए, जिस तों साडे लई नवें साल दे शुभ कामनावां दे दया करी ।

शिक्षा समाचार

—संस्कृत सम्मेलन के अवसर पर हुए संस्कृतके डैक्लेमेशन कटेस्ट में उषा शर्मा (लुधियाना) कालेज की छात्राओं में, स्वर्ण कांता (फगवाड़ा) स्कूल की छात्राओं में विजयदत्त (हरियावाड़) कालेज के लड़कों में रमेशचन्द्र (जालन्धर) स्कूलों के लड़कों में प्रथम रहे।

—८०० पाकिस्तानी स्काऊट गाड़ी द्वारा अमृतसर से चिटागांग गए। उन में से ६०० बिना परमिट के थे।

—२२ लाख के व्यय से ४१८ सीटों का एक टैक्निकल ट्रेड इंस्टीट्यूट रोहतक में खोला जाएगा।

—समाजवादी नेता डा० राम मनोहर लोहिया ने पंजाबियों से अपील की है कि वे हिन्दी पंजाबी का भगड़ा छोड़ कर अंग्रेजी के विरुद्ध संघर्ष करें।

—पं० बेहरो को जापान ने ३० हजार रुपये के मूल्य की २१०३ पुस्तकें भेंट की हैं।

—भारत को ३ हजार इंजिनियरिंग टीचरों की आवश्यकता है।

—चीन में प्राइमरी स्कूलों के छात्रों की संख्या ८ वर्षों में तिगुनी, मिडल के छात्रों की ६ गुनी और कालेज के छात्रों की भी तिगुनी हो गई है।

—हिंदू गर्ल्स मिडल स्कूल बूडिया (अम्बाला) को सरकार ने अपने प्रबन्ध में लेने के लिये ४५३०० रु० की भेंट मांगी है जबकि स्कूल को केवल ३६ सौ रुपये वार्षिक की ग्रांट दरकार है।

—श्री सतदेव बौहरा हैडमास्टर गवर्नमेंट हाई स्कूल गुडगावां डि० इंस्पेक्टर आव स्कूल गुरदासपुर नियुक्त किये गए हैं।

शिकायतें और सुझाव

★नए स्तम्भ खोलिए

श्री रामलाल मुजफ्फर नगर से लिखते हैं कि “प्रकाश” काफी रोचक होता है। इसकी रोचकता और बढ़ सकती है यदि आप इस में नए नए स्तम्भ जैसे महिला जगत आदि भी खोल दें। [हम आप के सुझाव को क्रियान्वित करने का यत्न करेंगे।]

—सम्पादक

★पृष्ठ बढ़ाए जाएं

श्री मेघराज सोशल वर्कर पुण्डरी से लिखते हैं कि “प्रकाश” को और अधिक उपयोगी बनाने के लिये इसकी पृष्ठ संख्या बढ़ाएं और कागज भी अच्छा लगाएं। [आपका सुझाव तो उचित है किंतु कागजके अभावके कारण मानना सम्प्रति सम्भव नहीं है।]

—सम्पादक

समाचार सार

—देश की तीसरी श्वर्षाय योजना पर ६ हजार करोड़ रुपये व्यय होंगे।

—क्रिस-मस के भीड़ भड़के में अमेरिका में ७६३ व्यक्ति मारे गये।

—चीन की तोपें क्युमाय पर गोलाबारी कर रही हैं।

—घाना के प्रधानमंत्री डा० क्वामे नकुर्मा जो भारत आए थे, देश की उन्नति से बहुत प्रभावित होकर गए हैं।

—रूस बर्लिन के भगड़े पर पश्चिम से बात चीत-करने को उद्यत है।

—पंजाब की कुछ नगर पालिकाओं के चुनाव फरवरी में हो रहे हैं।

—मद्रास में परीक्षणार्थ एक कर्टसी-पुलिस

★ नये वर्ष का स्वागत

'५८' अतीतके गर्भ में चला गया और '५९' नई आशाओं को

आंचल में समेटे आ गया। हम जाने वाले को विदा कहते और आने वाले वर्षका स्वागत करने हुए विश्व की शांति भारत के कल्याण, पंजाब की उन्नति तथा "प्रकाश" के पाठकों के सुख के लिये जगन्नि्यन्ता से प्रार्थना करते हैं।

★ उन्नति की ओर

हम 'प्रकाश' को सुन्दर और रींचक बनाने के लिये कुछ पग उठा रहे हैं। इसका पहले पृष्ठों का छोटा टाईप बदल दिया गया है। भविष्यमें शेष पृष्ठ भी या तो इसी टाईप में आगामी अंकसे छपने लगेंगे या फिर उनके लिए भी मोटा नया टाईप मंगवा लिया जाएगा। टाईटल पेजों पर जो चित्र दिये जा रहे थे उन्हें छापना बन्द कर दिया गया है। स्थाया स्तम्भों के शीर्षकों के ब्लॉक बनवा लिये गए हैं। मुख-पृष्ठ के लिए भी नया डिजाइन तैयार करवाया जा रहा है। इस प्रकार हमें आशा है कि अप्रैल तक 'प्रकाश' सर्वथा नए आकर्षक रूप में पाठकों के हाथों में पहुंचने लगेगा। पाठकों के सुझावों का भी स्वागत किया जायेगा और उपयोगी होने पर उन्हें भी क्रियान्वित करने का प्रयत्न किया जायेगा।

हमें आशा है कि हमारे प्रेमी पाठक भी कर्तव्य पालन कर न केवल अपना शुल्क समय पर भेजते रहेंगे अपितु अन्य को भी ग्राहक बनने की प्रेरणा करेंगे।

★ फेल होने वालों की बढ़ रही संख्या

यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं में असफल रहने वालों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जाती है। परिस्थिति इतनी विकट हो चुकी है कि यदि

सम्पादकीय विचार

गम्भीरता पूर्वक इस ओर ध्यान देकर इस को रोकने का उपाय न किया गया तो राष्ट्र

की इस प्रकार हो रही क्षति में और अधिक वृद्धि होती रहेगी।

हमारी सम्मति में इस समस्या के हल में ये सुभाव सहायक हो सकते हैं: (१) कोर्सों को रोवाइज करके छोटा किया जाए, (२) छुट्टियों में कमी की जाए (३) अध्यापकों की वेतनवृद्धि उनकी कक्षा के परीक्षा परिणामों पर निर्भर करे, (४) कमजोर छात्रों पर विशेष ध्यान दिया जाए, (५) परीक्षा प्रणाली में सुधार किया जाए। यदि इन सुझावों को क्रियान्वित किया जाए तो हमें विश्वास है कि फेल होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या में आशातीत कमी हो सकती है!

★ ये प्रतिबन्ध !

किन्तु इस समस्या का वह हल नहीं जो इन प्रतिबन्धों के रूप में सोचा गया है अर्थात् (१) मैट्रिक की परीक्षा में बैठने वाले छात्र अथवा छात्रा की आयु कम से कम १५ वर्ष अवश्य हो। (२) किसी थर्ड क्लास ग्रेजुएट को एम० ए० की परीक्षा में बैठने की अनुमति न दी जाए। इन प्रतिबन्धों के फलस्वरूप तो उनके लिये उन्नति का द्वार बन्द हो जाएगा। क्योंकि हो सकता है कि किसी विशेष कारण-वश कोई परीक्षार्थी बी. ए. में अच्छे अंक प्राप्त न कर सका हो और वह अधिक परिश्रम कर एम. ए. में द्वितीय अथवा प्रथम डिवीजन में पास हो जाए। इसी प्रकार कई बच्चों की बुद्धि बहुत तीक्ष्ण होती है और वे छोटी आयु में ही अच्छे नम्बर लेकर परीक्षाएं पास कर

बिना किसी लक्ष्य के जीवन में कोई कुछ नहीं कर सकता

भाग्य का निर्णय तथा भविष्य का निर्माण उत्साह और जोखम लेने की सामर्थ्य पर निर्भर है !

विचार—

कुछ लोग शरीर के रोगी होते हैं और कुछ मन के। किन्तु आज के विज्ञान के युग में जितने शरीर के रोगी पाए जाते हैं उनके मुकाबले में मानसिक रोगी कम ही हैं। आपको जो चहुं ओर रोगी ही रोगी दृष्टिगत होते हैं उनमें से अधिक चाहें तो अच्छे हो सकते हैं किन्तु उनके विचार उन्हें रोगी बनाए रखते हैं। संसार में कष्टों का अभाव नहीं है। कठिनाइयां परीक्षाएं और दुःख आते ही रहते हैं। जीवन दुःख और सुख से ही मिल कर बना है। किन्तु जो लोग दुःख की बात ही सोचते रहते हैं वे अपने कष्ट को दुगुना कर लेते हैं। यदि कभी उनके सामने निराशा और असफलता आ जाती है तो वे सोचने लगते हैं कि उनका बेड़ा गिरक हो जायेगा। भाग्य उनसे रूठा हुआ है। उनका दिल डूबने लगता है। भय, उदासी और निराशा उन पर छा जाती है। जीवन उनपर बोझ बन जाता है। यह अवस्था बदली जा सकती है किन्तु ऐसे लोगों को अपने विचार बदलने पड़ेंगे। वे अपनी हालत को बदल सकते हैं, हमें अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों को गलत इस्तेमाल करने का अधिकार नहीं। बुरे विचारों से दिमाग ही परेशान नहीं होता शरीर भी परेशान होता और रोगी बन जाता है। उदासी और निराशा अपने आंचल में अगणित रोग लिए फिरती है। बुरे विचार जहां रोग को बढ़ा देते हैं वहां पैदा भी करते हैं। कुछ लोग जीवन पर्यन्त रोगी रहते हैं। ऐसे लोग यदि अपनी मानसिक अवस्था को ठीक करने लग जाएं तो वे शीघ्र स्वस्थ हो सकते हैं। अपने

मस्तिष्क पर बुरे विचारों का प्रभाव कभी न पड़ने दीजिए ! बुरे विचारों वाले लोग दुनिया में बहुत कम सफल हो सकते हैं।

आत्म विश्वास और जोखम

वे ही लोग सफल और समृद्ध होते हैं जिन्हें अपनी सफलता पर विश्वास होता है और जोखम व कठिनाइयों का धैर्य से सामना करते हैं। यदि आप में आत्म-विश्वास है तो बैठ कर एक बार निश्चय कर लीजिए और कार्यक्षेत्र में उतर पड़िये। भाग्य का निर्णय तथा वर्तमान और भविष्य का निर्माण उत्साह और जोखम लेने की हिम्मत पर ही निर्भर है। पुरानों कदमों को छोड़ने, पुराने बन्धनों को ताड़ने नई रोशनी में नया मार्ग ढूँढने और नए विचार आनाने का प्रयत्न करें। जीवन की सफलता और समृद्धि आपके पांव चूमेगी। जो कुछ कोजिये सोच समझ कर किन्तु विचारों में लचक बहुत आवश्यक है। अपनी सम्मति स्थिर करते समय दूसरों के विचारों से भी सहायता लीजिए किन्तु साथ ही साथ अपने विचारों का मूल्य भी समझते रहिए। वे मनुष्य कुछ नहीं कर सकते जिनका अपना कोई लक्ष्य नहीं होता।

यात्रा—कितनों को जीवन सीधी पहाड़ी पर चढ़ने की तरह मालूम होता है। यदि वह बोरता से रास्ते पर आगे बढ़ते जाते हैं तो समय उन्हें सफलता के शिखर तक पहुंचा देता है जहां से वे अवर्गनीय सुन्दर दृश्य देख सकते हैं, यदि वे मुड़ कर तै किए हुए मार्ग को देखते हैं तो मार्ग उन्हें कई स्थानों पर दुर्गम दीख पड़ता है किन्तु ऐसा अनुभव होता है जैसे इस कठिन राह पर चलने का पुरस्कार उनको मिल गया हो।

बिगड़े हुए बच्चों को सुधारने की समस्या

इस सम्बन्ध में केन्द्रीय शिक्षा संस्थान क्या कर रहा है ?

केन्द्रीय शिक्षा संस्थान समस्त भारत में शिक्षा सम्बन्धी अनुसन्धान तथा मानसिक रोग विशेषज्ञों के लाभ के लिए एक मार्गदर्शक संस्था बन गया है। अन्य देशों के विशेषज्ञों ने इस महत्वपूर्ण कार्य में भारतीय शिक्षकों को सहायता की है। उनमें वे अमेरिकी शिक्षा-शास्त्री भी सम्मिलित हैं जिन्होंने इस संस्थान के कार्य में योग दिया है।

अध्ययन का शिक्षा देने वाली इस उपयोगी संस्था की स्थापना एक छोटे से कालेज के रूप में तम्बुओं में हुई थी। आज यह एक प्रथम श्रेणी के राष्ट्रीय संस्थान का रूप धारण कर चुकी है और इसके पास अपना भवन है। विदेशी विशेषज्ञों ने संस्थान को उसके कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में मदद दी है।

केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के बाल कल्याण केन्द्र की डा० प्रेम पसरिचा ने मिनेसाटा विश्व-विद्यालय के बाल कल्याण संस्थान से बाल मनोविज्ञान में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। डा० पसरिचा ने अमेरिका में जो अनुभव प्राप्त किया था। उसका उन्होंने उस सत्कार्य में उपयोग किया है जो यह संस्थान दिल्ली में कर रहा है।

बिगड़े हुए बच्चों को सुधारने के कार्य में सहायता देना इस संस्थान का दैनिक कार्य है। यहां एक ऐसे ही बच्चे का उल्लेख किया जा रहा है जिस का डा० पसरिचा ने सुधार किया है।

१२ बरस की चांद नामक बालिका अपनी सहपाठिनियों की दृष्टि में सेण्टाक्लाज

की तरह हां दयालु और स्नेहपूर्ण थी। उसे जितना आनन्द अपनी स्कूल की सहेलियों के लिए चाकलेट खरीदने में आता था, उतना अन्य किसी बात में नहीं। लेकिन उसकी इस उदारता में एक दोष था। वह जिस पैसे से चीजें खरीदती थी, वह उसका अपना नहीं होता था। उसके पास यह पैसा चुराई हुई पुस्तकों की विक्री से आता था।

चांद के इस दोष की खास बात यह थी कि उसमें स्वार्थ को कोई बू नहीं थी। वह बालिका चाहती तो उस पैसे को अपने पास रख सकती थी, किन्तु उसने हमेशा उस पैसे को प्यार और दोस्ती पर खर्च किया।

स्कूल की अध्यापिका परेशान थी। उसने केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के बाल-सलाहकार से मिल कर यह पता लगाने में मदद देने को प्रार्थना की कि ऐसा कौन सा कारण है जिससे चांद जैसी प्रिय बालिका ऐसा बुरा काम करती है। केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के बाल-मार्गदर्शक-केन्द्र की अध्यक्षा डा० प्रेम पसरिचा ने चांद के माता-पिता से भेंट की और उन्हें इस का कारण मालूम हो गया। बच्ची को घर पर माता-पिता का प्यार नहीं मिलता था और उस ने बाहर के लोगों का प्यार और प्रशंसा हासिल करने का एक अनूठा तरीका खोज निकाला था। फलस्वरूप माता-पिता और स्कूल की अध्यापिका के सहयोग से, डा० पसरिचा ने एक साल में ही इस बच्ची को सुधार दिया।

अब चांद बिलकुल बदल चुकी है। घर में उसने अपने को अन्य लोगों के अधिक अनुकूल

वना लिया है और माता-पिता का कहना फौरन मान लेती है। स्कूल में, अब वह पीछे की सीट पर नहीं बैठती। हाल में वह अपनी क्लास की नेत्री चुनी गई है। स्कूल में प्रोत्साहन और घर में प्यार मिलने से, चांद ने खूब तरक्की की है।

बिगड़े हुए बच्चों को सही रास्ते पर लाना शिक्षा के क्षेत्र में अपनाये गये उस नये दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण पहलू है जिस के सम्बन्ध में शिक्षा संस्थान ने प्रचार एवं कार्य किया है।

केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के तीन कार्य हैं : अध्यापन की शिक्षा लेने वाले छात्रों को प्रशिक्षण देना; अध्यापकों को गोष्ठियों और अध्ययन-सम्मेलनों द्वारा शिक्षण देना ; और शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं के बारे में अनुसंधान करना। इन कार्यों द्वारा संस्थान ने देश में अध्यापन की शिक्षा देने वाली संस्थाओं के सम्मुख अपने को एक नमूने के रूप में प्रस्तुत किया है।

संस्थान के दो शिक्षक, श्री के० के० जेसवानी और सुश्री ए० चारी, अमेरिका जा चुके हैं। अमेरिका की माध्यमिक शिक्षा और अध्यापक-प्रशिक्षण पद्धति का अध्ययन करने के लिए १९५३-५४ में फोर्ड प्रतिष्ठान के आयोजन पर, जो अन्तर्राष्ट्रीय टोली अमेरिका गई थी, उसका नेतृत्व प्रिंसिपल पायरस ने किया था।

केन्द्रीय शिक्षा संस्थान में प्रवेश से पूर्व छात्र की कड़ी परीक्षा ली जाती है। प्रतिवर्ष १२५ स्थानों के लिये लगभग ८०० छात्र को शिश करते हैं। बौद्धिक परीक्षा तथा मुलाकात के लिए लगभग ३५० छात्रों को बुलाया जाता है। संस्थान के प्रिंसिपल डा० ई० ए० पायरस का कहना है : "हम चाहते हैं कि हमारे भावी अध्यापक बुद्धिमान और संवेदनशील हों, क्योंकि हमारा विश्वास है कि अध्यापक का पेशा अप-

नाने वाले किसी भी व्यक्ति में इन गुणों का होना अनिवार्य है।"

प्रतिदिन प्रातःकालीन सभा में चरित्र-निर्माता और ज्ञान-प्रसारक के रूप में शिक्षक के विशेष दायित्वों पर बल दिया जाता है। डा० पायरस के नेतृत्व में छात्र सुबह प्रभ से यह प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें अध्यापक के रूप में अपने दायित्वों को समझने और दैनिक जीवन को उन्नति के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग करने में मदद दे।

संस्थान के प्रिंसिपल डा० ई० ए० पायरस के कथनानुसार काफी अच्छे छात्र मिल रहे हैं। यह अध्यापक के पेशे की दृष्टि से एक अच्छा शकुन है। हमारे छात्रों में स्त्रियों और पुरुषों का अनुपात लगभग बराबर है।

अच्छे शिक्षक तैयार करने की दृष्टि से संस्थान अपनी शिक्षण पद्धति (प्रति १० छात्रों के पीछे १ शिक्षक) के अन्तर्गत छात्रों के साथ निकट सम्बन्ध बनाये रखने पर जोर देता है।

क्योंकि शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं के प्रति संस्थान का दृष्टिकोण परीक्षित विधियों पर आधारित है, इसलिये अनुसन्धान पर खास जोर दिया जाता है। चार वर्ष पूर्व चालू किया गया डाक्टरेट का २ वर्ष का कार्यक्रम इस आवश्यकता की पूर्ति करता है। प्रत्येक छात्र को पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अनुसन्धान-योजना को हाथ में लेना पड़ता है।

संस्थान का सबसे अधिक आशाजनक और शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण अनुसन्धान ७ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था। यह अनुसन्धान ३ से ११ वर्ष तक की आयु के बच्चों को बौद्धिक परीक्षाओं का एक सौ स्तर निश्चित करने से सम्बन्ध रखता था। दिल्ली के सैकड़ों स्कूली

चीन में शिक्षा का नया रूप

राज्य परिषद् ने १९ सितम्बर १९५८ को संयुक्त रूप से शिक्षा कार्य के सम्बन्ध में एक बच्चों को परीक्षापत्र दिये गये और उन के परिणामों के आधार पर भारतीय बच्चों की बुद्धि के सम्बन्ध में सिद्धांत स्थिर किये गये।

इस योजना के फलस्वरूप ही आज भारत के हिन्दी-भाषी क्षेत्र के पास बच्चों के मानसिक विकास का स्तर मापने का एक विश्वसनीय पैमाना है। यह चीज शैक्षणिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन की योजनाएं तैयार करने, बच्चों की मानसिक न्यूनताओं का पता लगाने और अध्यापन की विविध पद्धतियों को तुलनात्मक उपयोगिताओं को मापने में शिक्षाविज्ञों तथा मनो-विज्ञान-वेत्ताओं के लिए बड़ी उपयोगी है।

डा० पायरस १२ से लेकर १६ वर्ष की आयु के बच्चों के बारे में भी पड़ताल कर रहे हैं और उम्मीद है कि अगले कुछ वर्षों में अपने निष्कर्षों को पूरा कर लेंगे। बुद्धि स्वाभाविक चीज है। यह ईश्वर की देन है। किन्तु परीक्षाओं से यह अवश्य पता चलता है कि बच्चे को अपनी बुद्धि का पूरी तरह विकास करने में कंसे मदद दी जा सकती है।

अपनी स्थापना के बाद कुछ वर्षों के भीतर ही केन्द्रीय शिक्षा संस्थान ने सच्चे अर्थों में एक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्था का रूप धारण कर लिया। संस्थान में अफ्रीका, ईरान, श्रीलंका, फिजी द्वीप समूह और फिलिपीन के छात्र शिक्षा पाने आये।

इस संस्थान से लगभग १००० अध्यापक प्रशिक्षित होकर आने वाली पीढ़ियों में ज्ञान का प्रचार करने के लिए भारत के विभिन्न राज्यों तथा पड़ोसी देशों में जा चुके हैं।

आदेश जारी किया। इसके अनुसार शिक्षा कार्य सम्बन्धी नीति का अर्थ यह है कि शिक्षा सर्वहारा राजनीति का हित सिद्ध करे और वह उत्पादक श्रम से जुड़ जाये।

तमाम स्कूलों को उत्पादक श्रम को पाठ्यक्रम में औपचारिक रूप से जगह देनी चाहिए और प्रत्येक छात्र को नियमानुसार कुछ समय शारीरिक श्रम में लगाना चाहिये। तथ्यों से यह स्पष्ट है कि शारीरिक श्रम में भाग लेने से छात्रों के नैतिक, मानसिक और शारीरिक विकास को बढ़ावा मिलता है और यह सभी और से विकसित नवीन व्यक्ति तैयार करने का सहो तरीका है। शिक्षा-कार्य को दिशा अब से यह होगी कि स्कूल कारखाने और फार्म कायम करें और कारखाने व कृषि-सहकारी संस्थाएं स्कूल कायम करें। कारखाने और फार्म कायम करते हुए, स्कूल को उन्हें शिक्षा से जोड़ने की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए।

स्कूल कायम करते हुए शिक्षा का उद्देश्य केवल यह होना चाहिए कि छात्रों को इस तरह प्रशिक्षित किया जाए कि वे समाजवादी चेतना और संस्कृति से युक्त श्रमजीवी बन जाएं। फिर भी एक साथ बहुत तरह के स्कूल कायम होने चाहिए : राज्य-संचालित व्यावसायिक संस्थानों या सामूहिक फार्मों द्वारा संचालित साधारण व व्यावसायिक वयस्कों और बच्चों के दिन भर चलने वाले और कुछ समय शिक्षा और कुछ समय काम वाले या अवकाशकालीन स्कूल, स्वयं पाठ्यक्रम (पत्रव्यवहार रेडियो पाठ्यक्रम) और फीस वाले व बिना फीस वाले स्कूल। चीन में ३ प्रकार के स्कूल होंगे : पूरे समय के, कुछ समय शिक्षा कुछ समय काम वाले व अवकालीन स्कूल।

ना बूझ
केमने
अर्थर
बूझें कि

ना बूझें
केमने

जान लि
इसका
नहीं च
गया हूँ

मारते
द्वारा मे
समाचा
तव राज
ने वारत
हृदि मा
ईश्वर रा

ना बूझें
मने वि
पानी को
जान गय

टैगोर का एक गीत

ना बुझेओ आमि बूझेछि तोमारे
केमने कि छू ना जानि ।
अर्थर शेष पाइना तबुओ
बूझे छि तोमार वाणी ॥१॥

निश्वासे मोर निमेषेर पाते
चेतना-वेदना-भावना आघाते
के दये सर्व शरीरे ओ मने
तव सम्वाद आनि ।

ना बुझेओ आमि बूझेछि तोमारे
केमने किछू ना जानि ॥२॥

अर्थः—न जान कर भी मैंने तुम को
जान लिया है । किस प्रकार जान लिया है,
इसका कुछ भी पता नहीं । अर्थ का अन्त पता
नहीं चलता, तो भी तुम्हारी वाणी समझ
गया हूँ ॥

श्वास लेते हुए और आंखों की पलक
मारते हुए, चेतना, वेदना और भावना आघात
द्वारा मेरे शरीर में और मन में कोई तुम्हारे
समाचार पहुंचा देता है ।

तव राजत्व लोक हते लोके
ने वारता आमि पेयेछि पल के
हृदि माझे यने हेरेछि तोमारे
खेवर राजधानी ॥३॥ ना बुझे ओ०

आपनार चित्त निविड़ निभूते
येथाय तोमारे पेयेछि जानिते
सेथाय सकलि स्थिर निर्वाक्
भाषा परास्त मानि ॥

ना बुझेओ आमि बूझेसि तोमारे
केमने किछू ना जानि ॥४॥

अपने हृदय में जब मैंने तुम्हारी राज-
धानी को निहारा, तब निमेष पर मैं ही यह
जान गया कि लोक लोकान्तर में तुम्हारा ही

पंचशील संदेश

—'दीपक'

सुना दो पंच-शील सन्देश,
कि सुन कर जाग उठे हर देश
जगत का क्षण में मिदे क्लेश

सुना दो पंचशील सन्देश ।
अस्त्रों शस्त्रों की यह दौड़
आपसी द्वेष भाव, यह होड़
बढ़ाओ विश्व शांति में योग
यह बुत हिंसा के दो तोड़

कि सुख से भूम उठे हर देश
सुना दो पंचशील सन्देश
गाओ पंचशील के गान
देखो टूट न जावे तान

भुका दो सारा आज जहान
बनाओ भारत देश महान

कि दौड़े, आवें स्वयं महेश
सुना दो पंचशील सन्देश

★ शिक्षकों का कर्तव्य

अध्यापकोपदेशकौ ताह्शं प्रयत्नं कुर्यातां
येन धार्मिका दीर्घायुषो विद्वांसोऽध्येतारः स्युः ॥
अर्थात्—अध्यापक और उपदेशक ऐसा प्रयत्न करें
जिससे विद्यार्थी धार्मिक, दीर्घायुषी और विद्वान्
बनें । (ऋग्वेद ४-१५-९)

जैसे सूर्य अन्धकार को दूर कर और
प्रकाश को उत्पन्न करके भय को भगाता है वैसे
विद्वान् गाढ़ अज्ञान को निवृत्त कर और विद्या
रूपी सूर्य को उत्पन्न करके सब की आत्माओं
को प्रकाशित करें ॥ (ऋग्वेद ५-२-९)

★

राज्य है । अपने ही चित्त के गहन एकान्त में जब
तुम को जान लिया, तो वहां पर भाषा अपने
को परास्त मान सार्वभाषी स्थिर और अवाक् रह
गई । अनुवादक—श्री शंकरदेव विद्यालंकार ।

बुनियादी शिक्षा पर एक विहंगम दृष्टि

(श्री शमसुद्दीन एम० ए०, एम० एड०)

बुनियादी शिक्षा आज विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न दृष्टियों से देखी जा रही है। यह बहुत हद तक क्षम्य भी है क्योंकि यह एक अत्यन्त नवीन और आधुनिक प्रयोग है। इस की विचार धारा व प्रणाली आज भी निर्माण की स्थिति में है। अतः बुनियादी शिक्षा में अन्तर्निहित मूलभूत भावना जान लेना अत्यन्त आवश्यक है।

साधारण तौर पर बुनियादी शिक्षा की मूल भावना वही है जिस की व्याख्या बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा समिति (जाकिर हुसैन अमेटी रिपोर्ट) द्वारा की गई तथा जिस का विस्तृत विश्लेषण केन्द्राय सलाहकार शिक्षा समिति के द्वारा हुआ। यह स्पष्ट है कि हमारी आधुनिक बुनियादी शिक्षा के 'सम्पूर्ण सिद्धान्त उमी भावना पर आधारित हों तथा उन को केन्द्र मान कर शिक्षा में सुधार व पुनर्गठन का कार्य किया जाय जहाँ तक आठ वर्ष तक अनिवार्य शालीय शिक्षा व मातृभाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा देने का प्रश्न है, सभी इस से सहमत हैं और विवाद का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। हाँ इस बात पर पूरा तर्क आवश्यक उठाया जाता है कि प्राथमिक व माध्यमिक दोनों ही श्रेणियों में बुनियादी शिक्षा का ऐसा अखंड विस्तार हो कि उसके पूर्ण व निर्दिष्ट ध्येय भी प्राप्त हो सके। बुनियादी शिक्षा के अन्य अङ्ग जिन पर विचार व विश्लेषण की आवश्यकता है, निम्नलिखित हैं:

गांधीवादी भावना और बुनियादी उद्योग

महात्मा गाँधी ने जिस भावना या विचार धारा से प्रेरित हो कर बुनियादी शिक्षा का स्वरूप

निश्चित किया, उस का ध्येय जीवन के द्वारा जीवन के लिए ही शिक्षा है। इस का लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जिस में हिंसा अथवा शोषण के लिए कोई स्थान ही न रहे। यही कारण है कि बुनियादी शिक्षा प्रणाली सभी छात्रों को चाहे वे बालक हों अथवा बालिकाएँ बिना किसी धर्म जाति या वर्ग के भेद भाव के ऐसी शिक्षा प्रदान करती है जो उत्पादक, क्रियात्मक तथा सामाजिक जीवन के लिए उपयोगी हो। निःसन्देह सम्पूर्ण शिक्षा गांधीवादी भावना से ओत प्रोत है।

बुनियादी उद्योग द्वार शिक्षा यहाँ आवश्यक हो जाती है। उत्पादक कार्य के रूप में आवश्यक शक्तों के साथ उद्योग की शिक्षा न केवल शिक्षा को ठोस और यथार्थ रूप देती है वरन् विद्यार्थी चरित्र और व्यक्तित्व का विकास करते हुए उसे एक अच्छे समाज का उपयोगी सदस्य बनने में सहायक हानो है। यहाँ यह भी स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि बुनियादी शिक्षणाधियों से तैयार किये गये सामान को बेचने से जा रकम प्राप्त होगी उस से शाला के कुछ खर्च को पूरा करने का प्रयत्न किया जावेगा अथवा बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जैसे उनकी शाला-वर्दी बनाने मध्यान्ह का भोजन देने, अध्यापन सामग्री खरीदने आदि के लिए उस रकम का प्रयोग होगा।

शिक्षा की उत्पादकता

चूँकि शिक्षा को उत्पादक बनाने के संबंध में लोगों में भ्रम फैला हुआ है, यहाँ

यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि बुनियादी शिक्षा की मूल भावना बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है। जिसमें उस की उत्पादन की योग्यता एक आवश्यक अङ्ग है। यह सिद्ध करने के लिए कि उद्योग की शिक्षा योग्यता व उत्तमतासे दी गई, यह आवश्यक है कि छात्रों द्वारा तैयार किया गया सामान उन की योग्यतानुसार ऐसा हो जो समाज के दैनिक जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध हो तथा आवश्यकता के समय उसे विक्रय भा किया जा सके। कर्तव्य शक्ति क द्वारा किसी भी उद्योग में निपुणता की प्राप्ति तथा उस के प्रति प्रेम की उत्पत्ति शिक्षा की दृष्टिसे अधिक महत्वपूर्ण व उपयोगी है। इस की अपेक्षा नहीं होना चाहिए। किसी भी उद्योग में निपुणता की प्राप्ति निश्चय है। बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है। यह उस के सामने योग्यता प्राप्ति के उच्च स्तर प्रस्तुत करती है तथा उन्हें अच्छी और उपयोगी आदतों जैसे एकाग्रता, सतत प्रयत्न, परिश्रम, पूर्व योजना से कार्य करना इत्यादि की शिक्षा देती है। यद्यपि वर्तमान स्थिति में छात्रों से उत्पादन के किसी निश्चित प्रमाण की अपेक्षा नहीं की जा सकती किन्तु शिक्षकों को बिना यह सोचे कि इससे शिक्षा के हितों की हानि होगी, ज्यादा से ज्यादा उत्पादन का प्रयत्न करना चाहिए। हाँ उच्च कक्षाओं के लिए अवश्य कुछ शर्तों के साथ उत्पादन का कोई परिणाम तय किया जा सकता है।

उदारता का दृष्टिकोण

बुनियादी तालीम के अन्तर्गत उद्योगों के चुनाव में उदारता का दृष्टिकोण होता चाहिये। ऐसे ही उद्योगों का चुनाव किया जाये जिनमें बौद्धिक तालीम की सम्भावनाएँ हों। तथा जिन के द्वारा व्यावहारिक कुशलता की प्राप्ति हो

शाला में ऐसे उद्योग का चुनाव किया जाए जो आसपास के प्राकृतिक व सामाजिक वातावरण के अनुकूल हो तथा जिसमें ज्यादा से ज्यादा वैज्ञानिक सम्भावनाएँ हों। कई लोगों की गलत धारणा हो गई है कि शाला में कोई भी उद्योग जैसे कताई आदि आरम्भ होते ही वह बुनियादी शाला हो जाती है। यथार्थ में यह बुनियादी तालीम की मूल भावना के प्रति बड़ा अन्याय है।

बुनियादी तालीम या किसी भी अच्छी शिक्षा-प्रणाली में तालीम क्रियात्मकता, व्यवहारिक अनुभव तथा अवलोकन से सम्बन्धित होना चाहिए इसी विषय से बुनियादी समवायक तीन प्रमुख कन्द्र उद्योग कार्य, प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण प्रस्तुत करती है। शिक्षित योग्य तथा अनुभवा शिक्षक को चाहिए कि वह जो कुछ भी तालीम प्रगतशाल बालक को देना चाहे इन केन्द्रों के समवाय के द्वारा दे। यदि शिक्षक किसी विषय का ज्ञान इस प्रकार देने में असमर्थ रहा तो उसका अर्थ यह होगा कि या तो शिक्षक में योग्यता नहीं है या फिर पाठ्यक्रम ऐसे विषयों से लाद दिया गया है जो उस अवस्था-विशेष में अनावश्यक व अनुपयोगी हैं।

इस सम्बन्ध में यह भी स्मरण रखना चाहिये कि पाठ्यक्रम में कुछ ऐसे भी विषय रहते हैं जिनका उपर्युक्त केन्द्रों से सरलता से समवाय नहीं होता। ऐसी हालत में उन्हें किसी अच्छी अध्यापन प्रणाली के अनुसार प्रत्यक्ष रूप से बता देने में कोई नुकसान नहीं है। इस प्रकार हम देखते हैं कि तालीम में बालक की रुचि व प्रवृत्ति को प्रधान स्थान दिया जाता है

उसके मस्तिष्क पर जबर्दस्ती कोई चीज नहीं लादी जाती ।

विदा—

—आनन्द प्रकाश

उत्पादन कार्य की महत्ता से यह तात्पर्य नहीं कि बुनियादी शालाओं में पुस्तकों के अध्ययन की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाए ।

यद्यपि बुनियादी शिक्षा कहती है कि किताबों अध्ययन ही एकमात्र या सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा का साधन नहीं है बल्कि उचित रूप से संगठित किया कोई भी उत्पादक कार्य करने को ज्ञान बुद्धि तथा व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से अधिक उपयोगी बनने के अतिरिक्त और व्यवस्था अस्वीकार नहीं की जा सकती । इस प्रकार अन्य शालाओं के सामान बुनियादी शाला में भी एक अच्छे पुस्तकालय का होना आवश्यक है ।

★ शाला और समाज

बुनियादी शिक्षा शाला और समाज के बीच घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करती है ताकि शिक्षा अधिक सामाजिक हो और बालक सीखें । इस ध्येय की पूर्ति सब से पहले के संगठन से ही प्रारम्भ हो जाती है क्योंकि शाला में भी एक सजीव और सतत कार्यक्रम व अन्य क्रियायें होती हैं । दूसरे विद्यार्थियों को शाला के आस पास के जीवन में भाग लेने के लिए उत्साह दिला कर तथा स्थानीय समाज में विभिन्न समाज सेवा के कार्यों का आयोजन कर उपर्युक्त ध्येय की पूर्ति की जा सकती है ।

विद्यार्थियों का स्वयं शासन का कार्य बुनियादी शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जो उत्तरदायित्व की भावना तथा प्रजातंत्रीय जीवन प्रणाली की शिक्षा की दृष्टि से बड़ा महत्व रखता है । इस प्रकार बुनियादी शाला न केवल आत्म निर्भरता, सहकारिता, श्रम की महत्ता के प्रति आदर में वृद्धि करती है बल्कि

दूर वह तारक दल का देश—

जहां से आया है सन्देश—

प्राण, अब मुझे विदा दो !

अम्बर के आंगन से चंदा करता मस्त इशारे,
जगमग किरण-पालकी आ कर रुकी खड़ी है द्वारे,

आज का विकल विरह अवसाद—

मिलन का कल होगा उन्माद—

प्राण, अब मुझे विदा दो !

इन अस्थिारी आंखों में क्यों पीड़ा-घन जुड़ आए ?

अस्फुट आमंत्रण के स्वर क्यों अधरोपर मुड़ आए ?

विहग ने लिए पंख अब तोल—

बोल रह जाने दो अनबोल—

प्राण, अब मुझे विदा दो !

मिलन-विरह की जाने कितनी गली भटकना होगा

कोई तट छोड़ेगी नौका, कहीं अटकना होगा,

मात्र चलना अपना अधिकार—

पंथ में सम्बल केवल प्यार—

प्राण, अब मुझे विदा दो !

—★—

एक प्रगतिशील समाज व्यवस्था का भी निर्माण करती है ।

बुनियादी शिक्षा केवल ग्रामीण क्षेत्र के लिये है ऐसा नहीं समझ लेना चाहिए । इसकी उपयोगिता देखते हुए इसे शहरी क्षेत्रों में भी बराबरी से प्रारम्भ करना चाहिए इससे लोगों की गलत धारणा कि यह शिक्षा केवल ग्रामीण क्षेत्रों के बालकों के लिए है दूर हो जावेगी । इतना अवश्य है कि शहरी क्षेत्रों के लिए उद्योगों के चुनाव में कुछ परिवर्तन करने होंगे तथा कुछ पाठ्यक्रम भी बदलना होगा किन्तु बुनियादी शिक्षा के साधारण सिद्धान्त तथा प्रणाली जैसी की तैसी रहेगी ।

आप का जीवन सफल है या असफल ?

जरा अपने मन से पूछिए तो!

प्रायः लोग कहते सुने गए हैं—'मैंने सोचा कुछ था हो कुछ गया।' इसका एक अर्थ यह है कि मनुष्य का अनुमान प्रायः गलत होता है। यही बात एक और क्षेत्र में देखी जाती है। आपने ऐसे कितने ही व्यक्ति देखे होंगे जो अपने आप को किसी भी अवस्था में उदास नहीं होने देते। दूसरे शब्दों में परिस्थितियों से समझौता कर लेते हैं। किंतु कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो घबड़ा कर अपनी हानि कर लेते हैं। नीचे दिए गये प्रश्नों की सहायता से इस नतीजे पर पहुंचा जा सकता है कि जीवन में कोई कहां तक सन्तुलित रहता है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर हां या न में दें। प्रत्येक हां या न पर ५, ५ अंक लगाएं। यदि हां पर लगाए गए अंकों का जोड़ ७० या ८० है तो इस का अर्थ है कि आप अपने आप को प्रतिकूल परिस्थिति में सन्तुलित रख सकते हैं और यदि न पर लगाये गए अंकों का जोड़ ७० या ८० हो जाए तो इसका अर्थ यह है कि आप विशेष अवस्था में अपनी हानि भी कर सकते हैं। ५० अंक तक आ जाएं तो भी बुरा नहीं है किन्तु ५० से कम अंक लेने वालों की हालत अच्छी नहीं कहो जा सकती।

(१) क्या आप टहलते समय अपने शरीर और कपड़ों को देखा करते हैं ? (२) जब आप किसी व्यक्तिके सम्बन्धमें कोई धारणा बनाते हैं तो उससे आपको कुछ चिन्ता भी होती है ? (३) आप जो कार्य करते हैं उस पर सन्तोष है या नहीं ? (४) क्या आप को दूसरों की प्रशंसा और उन्नति से जलन होती है ? (५)

क्या आप अपने मित्रों की गिनती बढ़ाने के सम्बन्ध में भी सोचा करते हैं ? (६) क्या आप किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से मिल कर आनन्द का अनुभव करते हैं ? (७) यदि आप से सहसा कह दिया जाए कि आप को एक ऐसे शहर में रहना है जहां आप किसी से परिचित नहीं हैं तो क्या आप इस बात से प्रसन्न होंगे ? (८) क्या आप किसी काम का उत्तर दायित्व लेना पसन्द करते हैं ? (९) क्या आप अपनी आलोचना बिना किसी कष्ट के सुन सकते हैं ? (१०) क्या यह सच है कि आप अपनी कमजोरियों के कारण दूसरों से क्षमा मांग लेते हैं ? (११) क्या आप बिना जोश में आए किसी से २, ३ घण्टे तक बहस कर सकते हैं ? (१२) क्या अपने विचारों से आप किसी दूसरे व्यक्ति को अपने जैसा अच्छा या बुरा बना सकते हैं ? (१३) क्या आप अपनी भूलों पर कभी २ खुद भी हंसा करते हैं ? (१४) क्या बिना पक्षपात के किसी भगड़े का निर्णय कर सकते हैं ? (१५) क्या आप मेहनत करने में कई बार कठिनाइयों का अनुभव करते हैं ? (१६) क्या आप अपने स्वभाव से पूरी तरह सन्तुष्ट हैं ? (१७) क्या सदैव सफलता के सम्बन्ध में ही सोचते हैं और नाकामी से डरते नहीं ? (१८) क्या आप अपने स्वास्थ्य का सदैव ध्यान रखते हैं ? (१९) क्या आपके जीवन का कोई लक्ष्य है ? (२०) क्या आप दार्शनिकों की तरह अपनी मुसीबतों को स्वीकार करके सोचने की कोशिश करते हैं ?

सोच कर उत्तर दें।

जुड़वां भाइयों की एक हास्य कथा—

एक्सीडेंट

(श्री सुबोध कुमार)

अपने छोटे भाई मोहन से मैं १५ मिनट बड़ा हूँ। चॉकिए नहीं हम जुड़वां हैं किन्तु जुड़वां होते हुए भी मेरे कुछ कटु अनुभव ने मुझे यह सोचने पर विवश कर दिया है कि यदि मुझे एक और चांस दिया जाए तो मैं अकेला ही इस दुनियां में जन्म लेता पसन्द करूंगा। इन कटु अनुभवों के कारण ही वचपन ही से मेरा यह विश्वास दिन प्रति दिन दृढ़ होता गया है कि मोहन जैसे भाई के साथ पैदा होने से शायद मेरा कभी भला न होगा।

बात यह है कि हम दोनों की शक्लें एक दूसरे से इतनी मिलती जुलती हैं कि बाहिर वालों की तो बात ही क्या खुद घर के लोग भी चक्कर में पड़ जाते हैं और मोहन को सोहन और सोहन को मोहन समझ लेते हैं। फिर वचपन में घर वालों को हम लोगों के कपड़े भी एक जैसे बनवाने पड़ते थे क्योंकि हम दोनों के कपड़ों में जरा भी अन्तर हुआ कि बस हम मचल गए कि सोहन के कपड़े अच्छे हैं, उन का रंग अच्छा है, उन पर अधिक फूल बनें हैं। लाख समझाने पर भी कोई असर न हाता इस लिए एक दो बार ऐसी भयंकर स्थिति का सामना करने से सर्वथा असफल रहने के पश्चात माता पिता ने भा ऐसी सख्त गलती न दुहराने के लिए कान पकड़ लिए। कपड़ों के इस प्रकार एक जैसा होना स कोढ़ म खाज का काम किया जिससे हम दोनों में फर्क करना और भी कठिन हो गया।

मुझे याद है कि हमारे घर में कट ग्लास के फूलदानोंकी एक अति सुन्दर जोड़ी थी। उन

में रोज सवेरे और शाम माली बागसे फूल सजाया करता था। नित्य प्रति बिना नागा किए ऐसा करने को पिता जी को उसे आज्ञा थी। ये गुलदस्ते बैठक में रखे जाते। एक दिन मोहन ने गेंद मार कर एक गुलदस्ता गिरा दिया। फूलदान के कई टुकड़े हो गए। मां ने मोहन को रंगे हाथों पकड़ लिया और मांके पर हो दा तमांचे जड़ दिए। साथ ही यह भी कह दिया कि सायं को तुम्हारे पिता जी से भी शिकायत करूंगी। सायं हुई मोहन पिता जी के आन से पूर्व ही कहीं खिसक गया। मुझे इस दुघटना का कुछ ज्ञान न था। जब पिता आए तो मैं बाहिर खेलने जाने को तैयार मैं था। मां ने बाहर ही पिता जी को मोहन का करतूत की सूचना दे दी थी। मैंने द्वार के बाहिर पग रखा हा था कि एकदम पाछे से मेरे मुंह और सिर पर दा करारे चांटे पड़े। डांट डपट का झड़ो लग गई जिससे मुझ फूलदान ताड़ने के अपने 'दोष' का ज्ञान हुआ। इस से पूर्व कि मैं अपनी स्थिति स्पष्ट करता पिता जा अन्दर जा चुके थे। इन चांटों से मेरा खेलने का मूड 'आफ' ही नहीं 'फ्यूज' हो हो गया। इस लिए मैं रोता-रोता जाकर एक कमरे में लेट गया और न जाने कब सो गया। जब मेरी आंख खुली और आंखें मलता हुआ उठ कर आया तो देखा कि सोहन बड़े आराम और मजे से पिता जी की गद में बैठा मिठाई खा रहा है। पिता जी भी बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कह रहे थे 'क्यों रे तूने बताया क्यों नहीं कि तू सोहन है, मुझे क्या मालम कि

तू-तू-है और एक दम उन के लहजे ने दिल को कम्पा देने वाला टर्न लिया और बोले—‘आने दे उस मोहन के बच्चे को, देखना ! मैं उसकी कैंसी खबर लेता हूँ ।’ इतना सुन कर मैंने अन्दाजा लगा लिया कि ऐसे मौके पर किसी तरह का रहस्य उद्घाटन करने का नतीजा मेरी सेहत के लिए हानिकर हो सकता है अतः मैं दवे पाँव पोछे के द्वार से बाहर निकल गया । इस अप्रिय घटना के पश्चात् मैं घर से काफी चौकस हो गया । घर वाले भी हम दानों में भेद करने का पूरी २ कोशिश करने के पश्चात् कोई कड़ा पग उठाते । किन्तु ऐसा तो लगभग रोज ही होता कि मोहन मां से मेरे भाग के फल, मिठाई आदि पिता जी से पसे आदि ले लेता ।

घर के अतिरिक्त स्कूल में भी मोहन की शरारत और पढ़ाई लिखाई के सम्बन्ध में बुद्धि गम को वस्तु का सिरे से ही गायब होना मेरे लिए नित्य नई मुसीबतें खड़ी करता रहता था । लड़कों से लड़ता भगड़ता वह और मास्टर कान मेरे खींच देता । स्पोर्ट्स और ड्रामे आदि में मेरे नाम पर कप मैडल अनाऊंस होते और बड़ी अकड़ के साथ उन्हें ले लेता वह । मिठाई आदि बटती तो वह मुझ से पहले ही लेकर खिसक जाता और मेरा नम्बर आने पर मास्टर मुझे डाट कर कहता—‘दावारा लेना चाहते हो बद-माश ! वह फल हुआ तो लोगों ने तसल्ली मुझे दी और हमदर्दी दर्शाते हुए कहा—कोई बात नहीं जो फेल हो गए । अगले साल डट कर मेहनत करना, इस वर्ष तुम खेले भी तो ज्यादा हो ।’ मास्टरों ने अलग झिड़का-तुम्हारा भाई साहन कितना इन्टेलिजेंट है और एक तुम हो कि निरे गोबर ।’

मैं अपने आपको सदैव तसल्ली देता आया था कि बड़े हो कर हम लोगों की समानता

कुछ कम हो जाएगी और सूरतों में कुछ न कुछ अन्तर अवश्य पड़ जाएगा । जैसे मोटे या छोटे बड़े कद का और उस से लोगों को हम में भेद करने में आसानी हो जाएगी मगर मेरी यह आशा कभी पूरी नहीं हुई । एक बार मेरे दाएं भों के ऊपर हाकी की गेंद लग जाने से जख्म हो गया । मगर सच मानिए मुझे रत्तोभर भी दुःख न हुआ क्योंकि मैं साचता था कि यह घाव का निशान ही हम दानों का समानता का अन्त कर देगा किन्तु मेरी यह आशा पूरा न हो सकी ! अगले दिन माहन भी अपने माथे पर पट्टा और खून से तर कमोज लिए घर में घुसा । पता चला कि साईकल एक्सीडेंट में उसकी दाईं भों के ऊपर चोट लगी थी । आप अनुमान लगा सकते हैं कि मेरे मन का उस समय क्या हालत हुई होगी ?

—(२)—

कालेज में यूनियन के चुनाव की गर्मी गर्मी थी । मैं भी एक पद का उम्मीदवार था और अपने क्लास फैलोज के आगे हाथ जोड़ने में काफी व्यस्त रहा । आखिर चुनाव खत्म हुआ वोट गिने जाने लगे । तभी सहसा मुझे एक जरूरी काम याद आ गया । मेरे साथी वोट गिनवा रहे थे इस लिए मैं चला गया । लौटने में जरा देर हो गई । कालेज आ कर देखा कि एक कमरे में काफी भीड़ जमा हो रही है । अन्दर भाँका तो मोहन साहेब लड़कों की बधाइयों के उत्तर में गव से कह रहे थे ‘साथियों यह जात मुझ से आप लोगों के अथाह प्यार और विश्वास का प्रदर्शन है । मैं बचन देता हूँ कि आप के इस विश्वास को भूखा सिद्ध न होने दूंगा । मैं बचन देता हूँ कि दो महीनों के अन्दर ही यूनियन के नए हाल की नींव रखी जाएगी । अनुचित तौर पर लग रही इलैक्ट्रिक फीस बन्द

होगी। मेरी जीत आप की जीत है।' मैं चुनाव जीत चुका था। अगले दिन जब कालेज के निकटवर्ती होटल वाले ने मुझे आठ रुपये बारह आने का बिल दिया तो मैंने अचकचा कर पूछा—'यह कैसा बिल है?' होटल वाला चकरा कर मेरा मुँह देखने लगा। फिर हैरानी से तेज़ी में बोला—'अरे वाह सोहन बाबू! कल आप ने चुनाव जीतने की खुशी में लड़कों को जो मिठाई और चाय पिलाई थी यह उसी का तो बिल है क्या इतनी जल्दी भूल गए?'

'मैंने, मगर...' उसकी बात को बीच में ही काट कर मैंने कहना शुरू किया। तभी सारा रहस्य मेरी समझ में आ गया। मोहन साहेब ने कल अपने मित्रों को पार्टी उड़वाई होगी। 'अच्छा! अच्छा! ले लेना!' मैंने लापरवाही दिखाते हुए कहा। होटल वाला मुझे विचित्र दृष्टि से घूरता हुआ चला गया। बाद में जब मैंने मोहन से इस घटना की चर्चा की तो जनाब फौरन बोल धठे—'मैं क्या करता सोहन भैया! लड़कों ने मुझे घेर लिया फिर मुझे आप की प्रेसटीज भी तो मेनटेन करनी थी।'

'जी हां मेरी प्रेसटीज!' भला मैं और क्या कहता?। एम. ए. में मोहन फल हो गया किन्तु कन्वोकेशन के समय जनाब जिस शान और गर्व से मेरी डिग्री लेने चल दिए उसने मुझे अपनी सीट पर मोहन बना रहने पर विवश कर दिया। इस पर गज़ब यह कि मेरी आंखों से आंखें मिलने पर उसने पलक नहीं झपकाई!

(३)

एक दैनिक समाचार पत्र में बहुत ही आकर्षक नौकरी का विज्ञापन देखा। वेतन काफी

था और योग्यता केवल बी. ए. पास। हम दोनों ने आवेदन पत्र भेजे। मुझे इंटरव्यू के लिए काल आ गया। मोहन ने चिंता न की। मैं इंटरव्यू दे आया। काफी अच्छा रहा। नियुक्ति पत्र भी आ गया और सर्विस जाकर मोहन ने ज्वाइन कर ली! मुझे बहुत भल्लाहट हुई किंतु मोहन को जैसे इस सब से कोई मतलब न था वह निर्लिप्त सा हो काम करता रहा। ठीक एक मास पश्चात साढ़े तीन सौ रुपये जेब में डाल लेने के बाद उसने महसूस किया नौकरी 'बोर' है। अगले दिन से मैं उसकी जगह जाने लगा।

मेरे जीवन में मोहन के कारण अब तक इतनी विचित्र घटनाएं हो चुकी थीं। इतने उतार चढ़ाव आ चुके थे कि मैंने चिंता करना छोड़ दिया था। उसके कारण अपनी याजनाओं में गड़बड़ होने को मैंने एक अप्रिय आवश्यकता मान लिया था। मेरे हृदयमें यह धारणा बिल्कुल पक्की हो चुकी थी उसके किसी भी काम से भूले से भी मेरा भला न हो सकेगा। तभी एक घटना ने अचानक ही मेरी इस विचार-धारा का रुख बदल दिया।

(४)

उन दिनों मोहन का हमारे परिचित जज श्रीनाथ सिन्हा की पुत्री निशा से रोमांस चल रहा था। यदि मैं भूल नहीं करता तो यह मोहन का २५वां रोमांस था। जज साहेब पिता जी के पुराने और गहरे मित्र थे। उन लोगों के हां हमारा काफी आना जाना था इस लिए मोहन और निशा का यह रोमांस विना स्कावट बढ़ता गया। मोहन के जन्म दिवस पर घर पर शाम को पार्टी हुई। इस में जज साहेब के घर के सब लोग आए। निशा भी आई। पार्टी खत्म होने

दोनों
लिए
इंटर-
न पत्र
न ने
किंतु
था
ठीक
व में
करी
जाने

के पश्चात् मोहन निशा को बाग में ले जाने वाला था जिससे एकांत में दो बातें हों मगर तभी पिता जी ने संकेत से उसे बुलाकर कहा 'देखो मोहन, या तुम सोहन हो? मेरी ऐनक के शीशे साफ नहीं हैं।' उन्हें कुछ सन्देह हुआ। 'जी मैं मोहन हूँ।' मोहन ने न जाने कैसे सच बोल दिया?

'हूँ! ठीक है।' पिता जी बोले—'देखो मोहन मिस्टर सिन्हा की कार खराब हो गई है इन्हें अपनी गाड़ी पर घर छोड़ आओ।'।

'अच्छा!' डूबते दिल से माहन ने कहा और निशा को शीघ्र ही लौट आने का वचन देकर वह चला गया। मैं सारा दिन पार्टी के प्रबन्ध में व्यस्त रहा था अतः थोड़ा सा सुस्ताने के लिए बाहिर बाग में जाकर घास पर लेट गया। पूर्णिमा की रात्रि थी। सारे पेड़, फल और झाड़ियां चांदनी में डूबे हुए थे। फव्वारे के गिर्द पानी पर चांदनी झिलमिल रही थी। बहुत रोमांटिक मौसम था। मैं शायद भ्रमको ले रहा था। तभी पीछे से किसी के आने का आहट हुई और निशा की आवाज सुनाई दो लो मैं सोच रही थी, इतनी देर कहां लगा दो और जनाव यहां पड़े ऊंध रहे हैं!'

इससे पूर्व कि मैं कुछ कह सकूँ उसने हाथ पकड़ फर मुझे उठा दिया और खुद भी मेरे पास ही बैठ गई। 'मैं तो अकेले बैठे २ बिल्कुल बारे हो गई, कोई बात करने वाला ही न था।' वह कहने लगी, और वह तुम्हारे सोहन भैया हैं न जाने कहां मुंह छिपाये पड़े हैं। विचित्र लजीले किस्म के आदमी हैं। न जाने लड़कियों को क्या समझते हैं?' उसकी बातों में मुझे कुछ दिलचस्पी हुई। मैंने भी नाटक जारी रखने के उद्देश्य से कहा, 'क्या बताऊं निशा, सिन्हा साहेब को छोड़ कर आ रहा था कि रास्ते में

मोटर का पहिया पक्कर हो गया। पहियों की अदला बदला में काफी मेहनत हुई जिससे थोड़ा थक गया। सिर में हल्का सा दर्द हो रहा था इसलिये मैं यहां चला आया।' मैंने साफ झूठ बोला। 'तो लाओ मैं तुम्हारा सिर दबा दूँ।' कह कर उसने मेरा सिर अपनी गोद में रख लिया। 'सोहन भैया भी विचित्र व्यक्ति हैं' मैंने कहना शुरू किया 'लड़कियों से ऐसे शर्मति हैं कि कभी २ मुझे उन पर तरस आने लगता है।' हम लोग काफी समय तक बातें करते रहे। निशा को ज़रा भी सन्देह न हुआ कि मैं मोहन नहीं हूँ। तभी अचानक निशा को दूँडता हुआ माहन वहां पर आ पहुंचा। हम लोगों को बैठा देख कर उसने पुकारा—'निशा।'

निशा चौंक गई। उसने मेरे चेहरे को चांदनी में गौर से देखा फिर ज़ोर से हंस पड़ी। मोहन ने निकट आकर हम दोनों को बड़े आश्चर्य से देखा फिर वह सब समझ कर ज़ोर से हंस पड़ा। 'तो यह हैं तुम्हारे सोहन भैया' निशा हंसी रोककर मुस्कराते हुए बोली—'बेचारे बहुत शर्मिले हैं। लड़कियों से बहुत शर्मति है—क्यों?'

'वाह सोहन भैया। आप भी बड़े छिपे गुरु निकले। आखिरी चाल में मुझे मात दे ही गये।' हंसता हुआ मोहन बोला।

विवाह निशा के साथ मेरा हो गया मगर वधाइयां लोगों ने मोहन को दीं।

हीरे-मोती —★—

★ एक स्वार्थी हृदय प्रेम अपने लिए चाहता है जबकि सच्चे प्रेमीका दिल बिना प्रति-कार पाने की इच्छा के प्यार करता है।

★ सहानुभूति मानव आत्म को स्वार्थी बनने से बचाती है।

कहानी—

बेचारा अध्यापक !

(कुमारी सुदर्शन खोसला प्रभाकर)

‘खेद है मि० रमन ! तुम शायद नौकरी से निकाले जा रहे हो—?’

राजेन्द्र ने अपने चौड़े मस्तक पर व्यथा की सिकुड़न डालते हुए कहा।

‘ओह, मुझे कष्ट है, मित्र ! पर इससे भी अधिक दुःख इस बात का है कि मेरे जीवन की भयानक लपेट में आकर १ निरपराधका खून हो गया।’

‘खून !’ राजेन्द्र प्रायः चीख पड़ा तथा उसके हाथ का प्याला छनू से नीचे गिर पड़ा।

‘हां, दोस्त, उस निरपराध के खून का दाग मेरे जीवन से कभी भी धुल नहीं सकेगा—ओफ !’ और वह व्यग्र हो उठा—‘उसकी आंखें सजल होगई !’ उसने सम्भल कर आगे कहा—

‘मेरी कहानी सत्य तथा पवित्र है लेकिन समाज की आंखों में मिथ्या तथा अपवित्र बन चुकी है—राजन !’

‘मुझे सुनाओ अपनी कहानी—मैं जरूर सुनूंगा !’ राजेन्द्र ने रमन के कन्धों को भक-भोर कर कहा।

रमन कुछ बोला नहीं, पाषाण की तरह खड़ा रहा।

‘क्या मुझे अपनी व्यथा नहीं सुनाओगे ?’ राजेन्द्र के स्वर में विनय था।

‘जरूर सुनाऊंगा, लोग कहते हैं, अपनी व्यथा कह देने से घाव फूट कर वह जाते हैं परन्तु मेरी पीड़ा तो मेरे जीवन का कटु सत्य बन कर मेरे हृदय में जम चुकी है—वह कभी मिट नहीं सकेगी !’

रमन कुछ देर के लिए रुका तथा राजेन्द्र

का हाथ पकड़ कर कुर्सी पर बिठाते हुए स्वयं भी बैठ गया तथा बोला—

‘सुनो—एक वर्ष की बात है। मेरा परिवर्तन एक गांव में हुआ था। गांव के भोले भाले व्यक्तियों के प्रति मेरे हृदय में प्रारम्भ से ही सम्मान रहा है। फिर एक अध्यापक होने के नाते मैं अपना खाला समय भा अग्रोथ विद्यार्थियों को सुयाग्य बनाने के लिए लगा देना अपना कर्तव्य समझता था। शायद यही कारण था कि स्कूल में मेरा सम्मान दिनां दिन बढ़ रहा था।

एक दिन मुझे ऐसा लगा कि मेरा यह सम्मान मुख्याध्यापक को खलने लगा है। मैं कुछ बोला नहीं बल्कि उसके प्रतिदिन के कट-व्यवहारों को कड़वा घूट पीकर चुपचाप सहता रहा।

एक दिन मुख्याध्यापक ने मुझे कुछ ऐसा काम करने को कहा जिससे मेरे चरित्र को भारी ठेस लग सकती थी। मैंने स्पष्ट रूप से वह कृत्य करने से इन्कार कर दिया। इस पर वह खोभ पड़ा तथा तेज आवाज में बोला—

‘मि० रमन ! तुम्हारी देखी एक दिन राख में मिल जाएगी।’

‘नहीं सर—मैं यह कार्य अभिमान से नहीं बल्कि अपने चरित्र पर दृष्टिपात करते हुए नहीं कर सकता—

‘रमन—!’ वह चीख पड़ा—

‘तुम्हें पछताना होगा !’

‘मैं पश्चाताप के लिए सदा तैयार हूं। मैं आफिस से निकल पड़ा तथा वह देर तक वहां

(शेष सफा २२ पर)

* भारतीय बाल सभा *

बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी

अध्यक्षा: दीदी

फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र०—क्या मैट्रिक की परीक्षा में बैठने वालों के लिए कम से कम आयु निश्चित रख दी गई है ? —जमुना प्रसाद अम्बाला

उ—हाँ, १५ वर्ष ।

प्र०—रूस के किसी ऐसे स्कूल का जहाँ बच्चे हिंदी पढ़ते हैं कुछ विवरण प्रकाशित करें । —मधुरिमा, करनाल

उ०—मास्को के स्कूल नं० २३ का, जहाँ रूसी बच्चे हिंदी पढ़ते हैं, पूरा विवरण किसी अन्य पृष्ठ पर पढ़ें ।

प्र०—भारतीय वैज्ञानिकों ने भी कोई राकेट आकाश में छोड़ा है ?

—सुमित्रा कुमारी गुड़गांव ।

उ०—हाँ अभी कुछ दिन हुए एक राकेट छोड़ा गया था जो ५००० फीट ऊँचा आकाश में जाकर नीचे आ गिरा ।

प्र०—क्या नता जो सुभाषचन्द्र की पुत्री अनिता बोस को हमारी सरकार कोई सहायता देती है ? —सुशीला, भटिण्डा ।

उ०—सरकार तो नहीं, काँग्रेस द्वारा स्थापित एक फण्ड पर मिलने वाले सुद में से पांच सौ रुपया मासिक अनिता को स्विटजरलैंड भेजा जाता है ।

प्र०—इस वर्ष मैट्रिक में कितने परीक्षार्थियों के बैठने की सम्भावना है ?

—कुन्दन लाल अमृतसर ।

उ०—यूनिवर्सिटी के एक अनुमान के अनुसार १ लाख तीस हजार ।

प्र०—बम्बई में जो आणविक भट्टी कैनेडा की सहायता से स्थापित की गई है, वहाँ क्या तैयार होता है ?

—सुशीलकुमार पटियाला ।

उ०—यह तो पंडित नेहरू को भी मालूम नहीं, फिर भी आणविक शक्ति के रचनात्मक कार्यों में उपयोग सम्बन्धी रिसर्च इसकी सहायता से की जा रही है—ऐसी हमारी आशा है ।

—दीदी

[सभी बच्चे निस्संकोच प्रश्न भेज सकते हैं]

(सफा २० से आगे)

खड़ा दाँत पीसता रहा ।

इस घटना के ठीक चार दिन बाद—
मैं अपने कमरे में बैठा चाय पी रहा था ।
अचानक हल्के से किसी ने द्वार खोल कर
भीतर झाँका ।

‘कौन ?’ मैंने प्रश्न किया, छाया पीछे
हो गई !

‘कौन है बाहिर ? मैंने फिर पूछा ।

‘मैं हूँ—जी !’ एक पतली सी आवाज
आई ।

‘कमला—’ मैं मुस्कराया ।

‘भीतर आ जाओ !’

वह सकुचाई सी भीतर आकर खड़ी हो
गई तथा पाँव से जमीन कुरेदते हुए धीरे
से बोली—

‘जी—एक सवाल समझना है !’ मैं जोर
से हँस पड़ा—

‘भई ! कभी किसी को मना किया है
मैंने—बैठ जाओ ।’ मैंने एक चौकी उसकी
तरफ सरका दी—वह बैठ गई ।

‘कौन सा प्रश्न है ?’

‘तिजारत का !’

मैंने उसके हाथ से कापी-पेंसिल लेते हुए
कहा—

‘कमला ! एक प्रश्न पूछूँ ?’

पूछो ! कमला ने सिर का पल्ला माथे

तक खिसकाते हुए भयभीत स्वर में कहा ।

तुम कितनी बार यहाँ आई हो ?

जी कई बार ! कमला की आवाज में
घबराहट थी ।

तो फिर इतना डरती क्यों हो—देखो
तुम्हारी भाभी आने वाली है—उनका पत्र
आया है !

अच्छा ! वह मुस्करा दी

और उसके बाद मैं प्रश्न कर रहा था
तथा वह ध्यान-पूर्वक देखती रही । अचानक
बाहिर भागी शोर सुनाई दिया । मैं चौंक पड़ा—
कमला भौंचकी सी खड़ी हो गई तथा द्वार
की ओर बढ़ गई । बाहिर गाँव के बहुत से
लोग खड़े थे । चारों ओर से भांति २ की
आवाजें आ रही थीं—

कैसा मास्टर है—गाँव में गन्दगी फैला
दी है ।

अरे ! किसी की वहु बेटी का ध्यान तो
रखा होता ।

चाण्डाल है बना फिरता है पढ़ा-लिखा
ऐसा भुड़ता बनायेंगे कि साले की हेकड़ी चूर
हो जायेगी !

कमला का रंग यह सब सुन कर उड़ने
लगा—

जी ! आप को गालियाँ दे रहे हैं ।

मारना चाहते हैं—शायद मैं—जी—जी—!

(शेष सफा ३६ पर)

नया वर्ष आया

(महावीर प्रसाद अग्रवाल)

नया वर्ष आया, नया हर्ष लाया ॥

नये ये जमाने के गाने निराले;

नये ये तराने नये गाने वाले ।

गये वे फसाने गमी लाने वाले,

गये वे न जाने किधर जाने वाले ॥

नया युग बसाया, नया युग बनाया ॥१॥

न बीते युगों पर ये आँसू गिराओ,

तेरी कृपा

—टैगोर

‘तूने मुझे अनन्त बनाया है, ऐसी तेरी लीला है । तू इस भंगुर-पात्र (शरीर) को चार बार खाली करता है और नवजीवन से उसे सदा भरता है ।

तूने इस बाँस की नन्ही सी बाँसुरी को पहाड़ियों और घाटियों पर फिगया है और तूने इसके द्वारा ऐसी मधुर-तानें निकाली हैं जो नित्य नई है । मेरा छोटा सा हृदय, तेरे हाथों के अमृत-मय स्पर्श से अपने आनन्द की सीमा को खां देता है और फिर उसमें ऐसे उद्गार उठते हैं जिनका वर्णन नहीं हो सकता । तेरे परिमित दानों की वर्षा मेरे इन क्षुद्र हाथों पर (आर्हन्तिश) होती है । युग के युग बीतते जाते हैं और तू उन्हें बराबर बरसता जाता है और यहां भरने के लिए स्थान शेष ही रहता है ।

न बीते युगों पर कहीं फूल जाओ,

गया बीत उसका न गाना सुनाओ;

नया गीत लेकर नया राग गाओ ॥

नया पग बढ़ाया नया पथ सुहाया ॥२॥

न अटक अटक को अड़ी देख कर भी,

न भटक सुस्थ से विपद भेल कर भी ।

न भिन्नको विपद को खड़ी देखकर भी,

न हिचको हृदय में कभी हार कर ही ॥

नया जोश आया; नया होश लाया ॥३॥

समय बीतता युग निकलता रहा है,

बड़ी पल-विपल कल न पलभर रुका है ।

किया सो किया आज कल न रहा है,

गया सो पिछड़ सो पिछड़ ही गया है ॥

गया वर्ष पिछला, नया वर्ष आया ॥४॥

111513

★ जीवन धन ★

‘ससार के बारह सौभाग्य’

स्वास्थ्य, धार्मिक विचार; उचित शिक्षा पर्याप्त-आजीविका, सादा जीवन; हसमुख स्वभाव; सुशील पत्नी अथवा नेक पति; सुशील तथा नेक सन्तान; माता-पिता भाई-बहिन, सच्चा मित्र, भला पड़ोस, परोपकार में रुचि, भाग्यनुसार जिस हालत में होना-उसी में प्रसन्न रहना और हालात को सुधारने का प्रयत्न करत रहना ही मनुष्य के साँसारिक बारह सौभाग्य हैं । यही उसका अमूल्य जीवन-धन है ।

इक्कीसवीं शती के मनुष्य कैसे होंगे ?

कल्पना कीजिए कि हम सन् २०५९ में हैं। समस्त देश में हस्तश्रम एवं मानसिक श्रम के बीच की सीमा-रेखाएं मिट गई हैं। मानव के स्वाभाविक एवं सुनियोजित शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास के लिए समस्त आवश्यक परिस्थितियां विद्यमान हैं। यद्यपि लोग राष्ट्रीय अर्थतंत्र के प्रत्येक क्षेत्र में पारमाण्विक शक्ति का उपयोग कर रहे हैं, यद्यपि उन्होंने प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त कर ली है फिर भी वे कमजोर नहीं हुए हैं प्रत्युत सौ वर्ष पहले की तुलना में कहीं अधिक बलशाली दिखते हैं। वे सदा प्रसन्न रहते हैं और सर्वत्र निश्चिन्तता का अनुभव करते हैं। निवेदन है कि आप कहीं यह नहीं सोचें कि वे अपेक्षाकृत कम खाते पीते हैं।

इक्कीसवीं शती के जैव-रसायनविद कृत्रिमरूप में कार्बोहाइड्रेट्स और प्रोटीन तैयार करने में सफल हो चुके हैं। फलतः नये रस के खाद्यपदार्थ तैयार किये गये हैं। यद्यपि उन का पौष्टिक तत्त्व ठीक है और उन का स्वाद रोटी या गोश्त जैसा है फिर भी उतने भारी भरकम नहीं है। आंतरिक इन्द्रियां बिल्कुल ही नये क्रियाकलाप कर रही हैं। साधारण जल के बदले हाईड्रोजन का यह आईसोटोप स्वल्प परिमाण में लेनेसे अवयवों के अन्दर तत्वों को

खराब होने से बचाता है।

यही वजह है कि २१वीं शती में लोगों की ऊंचाई औसतके हिसाब से कहीं अधिक होगी। वे सब के सब चाहे उन की उम्र कुछ भी हो स्वस्थ होंगे।

उन में कुछ की उम्र सौ वर्षों से भी अधिक होगी। फल के रस के साथ वे निर्दिष्ट परिमाण में भारी जल पियेंगे।

क्या नौजवान और क्या बूढ़े सब के सब शारीरिक व्यायाम पसन्द करते हैं। सभी नगर उद्यान-नगरों में परिणत कर दिये गये हैं। प्रत्येक नगर में व्यायाम-शालाएं तैरने के तालाब तथा शारीरिक व्यायाम की अन्य सुविधाएं हैं। सब से उल्लेखनीय बात यह है कि इन नगरों में बृद्ध या जराग्रस्त एक भी व्यक्ति नहीं है। वे सिर ऊंचा किये तेजी से चलते हैं, उन के शरीर में स्वास्थ्य सौन्दर्य है और उन की आँखों में ओज और उल्लास चमक रहा है।

पुनर्यौवन की यह प्राप्ति यही अचानक नहीं हुई है : यह क्रमिक प्रक्रिया है और जनता के स्वास्थ्य को उन्नत बनाने के लिए तथा वाढ्ढक्य के कारणों के अनुसन्धान एवं उन्मूलन के लिए राज्य द्वारा उठाये गए कदमों का परिणाम है।

जनता के स्वास्थ्य-सौंदर्य से भी कहीं अधिक आश्चर्यजनक वाशष्टतायें हैं जो इन्द्रियों के असाधारण विकास से सम्बद्ध हैं। नेत्र-ज्योति बहुत ही अधिक प्रबल हो गई है। बीसवीं शती के अन्त में वैज्ञानिकगण नेत्र द्वारा गृहीत विद्युत्चुम्बकीय स्पन्दनों के क्षेत्र का विस्तार करने में लगे थे। इसी दौड़ में उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक तथा अन्य यन्त्रों द्वारा उसकी क्षमताओं में वृद्धि कर दी।

इलेक्ट्रॉनिक यन्त्रों के सहारे मनुष्य की आँखें न केवल निविड अन्धकार में, अधोःरक्त प्रकाश में वरन् लघुतम पारनीललोहित प्रकाश में देख सकती हैं। सारे रहस्यों का भेदन किया जा चुका है। मानव दृष्टि में किसी पदार्थ की आँतरिक बनावट तक देखने की क्षमता आ गई है, जिस प्रकार हम ऐक्स-रे के चित्रों में देखते हैं।

इक्कीसवीं शती का मानव जिन चीजों को देख नहीं सकता उन्हें आसानी से सुन सकता है, जैसे घास किस प्रकार बढ़ रही है, गिलासमें तरल पदार्थ किस प्रकार गतिमान है किस प्रकार टूटी हुई हड्डियाँ एक साथ जुट रही हैं, इत्यादि।

अब श्रवणशक्ति द्वारा उन सारे प्रक्रियाओं का पता लगाना सम्भव है जो स्नायुकेन्द्रों के भीतर क्रियशील हैं जिनपर मनुष्य की सेहत और जीवन निर्भर करता है।

प्रकृति के बारेमें अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करने के फलस्वरूप प्राणशक्ति को उन्नत करना सम्भव हो गया है। मानव जब केवल हजारों प्रकार की सुगन्धियों की बात बात में पहचान करने की क्षमता रखता है वरन् नई प्रविधि द्वारा वर्द्धित प्राणशक्ति के द्वारा किसी चीज के आकार-प्रकार और स्वरूप का भी पता लगाने की शक्ति रखता है।

गन्धों के अतिलघु तरंगीय स्वरूप का पता लगाने से एक नयी टेलीसैटिंग इकाई द्वारा हजारों मील की दूरी पर उन्हें सम्प्रेषित करना सम्भव हो गया है। नाट्यशालाओं, घरों, कलकारखानों और प्रयोगशालाओं के अन्दर की हवा को अब न केवल शुद्ध और ताजी रखना सम्भव हो गया है वरन् उसे ऐसी भीनी भाँती गन्धसे सुवासित करना सम्भव हो गया है जिस का स्नायुमण्डल के ऊपर आह्लादकारी प्रभाव पड़ता है।

सन् २०५९ के मानव, उस के बार में बहुत कुछ कहा जा सकता है और इस में कुछ भी असाधारण बात नहीं है। हम जिन बातों की कल्पना अपने हृदय में संजोये रहे हैं उन में से अधिकांश हमारे दैनिक जीवन का अंग बन रहा है।

—रूसी वैज्ञानिकों ने रूस से ऊन तैयार कर ली है।

जरा बचकर—

आँकड़े बोलते हैं !

[श्री प्रसाद प्रभाकर]

‘तो तुम्हें विश्वास नहीं। अरे भाई, (मेरे इस सम्बोधन को माफ करें) ये आँकड़े साफ बोल रहे हैं। गिन लो न ? इकाई, दहाई, सैंकड़ा; हजार—हां हां गिन लो न पूरे ३ लाख ९० हजार ५ सौ बत्तीस रुपए—जिला गुड़गाँव की ओर से रैड-क्रास सोसाइटी को दान—’

—भूठ ! सब भूठ। और सफेद भूठ।

—शुक्र है लाल या नीला भूठ तो नहीं।

इतने में अन्धकार छा गया मेरी मेज पर। हैं यह क्या ? किन्तु मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मेरे लिए मेरी कई दिन से प्रतीक्षित नभ-छकड़ा-गाड़ी आई है। मैं लेखनी और कगज ले उसमें बैठ गया और मुझे शीघ्र उड़ा ले चली वह।

इससे पहले कि मैं कुछ बताऊ अपनी ‘गाड़ी’ का वर्णन कर दूँ। नभ-छकड़ा-गाड़ी यह मेरा दिया हुआ नाम है; वास्तविक नाम क्या है सो तो मैं ही बता सकता हूँ पर बात ऊँगा नहीं। क्यों ? का उत्तर भी न दूँगा। अच्छा तो यह ‘गाड़ी’ मेरे लिए ही है इस पर किसी का कण्ट्रोल नहीं। किन्तु

यह मेरी होते हुए भी कभी कभी मेरी नहीं रहती। मुझे बड़ा तंग करती है; कभी कभी तो यह ठीक नभ मण्डल में जाकर रूठ जाती है, यहां तक कि मुझे नीचे ढकेल देती है। आप सोचिये उस समय मेरा क्या हाल होता होगा ? आप गिर कर देखें तो पता चले। परमात्मा की कृपा से इतने ऊँचे से गिर कर मरा नहीं हूँ। किन्तु मैं भी हूँ कि उसका पीछा नहीं छोड़ता। मेरी हालत उस समय—पर जाने दो इस समय तो मैं अपनी गाड़ी में हूँ अकेला मेरे साथ तर्क करने वाला (या करने वाली मैं स्पष्ट न लिखूँगा। समता के युग में लिंग भेद भायेगा ? नहीं। ‘करने वाला’ ही क्यों ? क्या करें हिन्दी में कोई न्यू र जेण्डर भी नहीं) (हाँ यदि किसी ने आविष्कार कर लिया तो अवश्य-अवश्य यही लिंग प्रयोग करूँगा अब नहीं) हा अब तो केवल मैं ही मैं था।

‘जरा बच कर’ दमाग (माफ करें इंग्लिस्तानो हिन्दी के लिये) गाड़ी आ रहा है। यहाँ तो डी०सी० महोदय सभा में भाषण दे रहे हैं। तो सुनो जर, ‘४ लाख ९० हजार ५ सौ बत्तीस रुपए’

गाँव गाँव फैलें, अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर दबाव दें और—और इतने रुपये आनन फानन में। आप उन्हें बता सकते हैं कि शायद आप लक से पहला इन म जीत लें—’

....मैंने देखा सभासदों में हर विभाग के दिग्गज थे। उनके हाथ में अंग्रेजी के समाचार पत्र थे और....(कृपया आप ही समझ लें दिग्गजों के चिन्ह !)

‘लॉटरी इज् एन अफैस’

‘दिस इज् नाट ए....’ मैं सुन न सका उस दिग्गज की वाणी क्योंकि मेरा ‘गाड़ी’ मुझे दूर ले गया।

‘हां, २० टिकटें’ टिकटों का नाम सुनते ही चौंका। अरे हमारा यान एक कोर्ट (?) पर से उड़ रहा था। मैंने ‘गाड़ी’ रोका। ध्यान से देखा। एक साहब (बड़े आदमी यही कहलाते हैं) पास में क्लर्क सहित बैठा था, एक किसान हाथ में कागज लिए खड़ा था और कुछ इधर उधर भिखरे हुए थे।

‘२० रु० की २० टिकटें लो वर्ना १० १० बोरी सीमेंट नहीं मिलेगा’—साहब ने कह दिया।

‘हजूर, ५ टिकटें ले लूंगा।’

‘५ टिकटें’....(एक लम्बी सी गाली देते हुए डांटा उसने (अगर यहा लिख दू तो शायद बुरा मानेंगे।))

‘जा, निकल, आया है सीमेंट लेने’—

क्लर्क का कठोर स्वर निकला।

आगे कुछ सुनूँ इससे पहले वह गाड़ी मुझे एक ऐसे स्थान पर ले गया जो नया था। नाम था—हां नाम—अच्छा याद आया ओ बी. डी. (हो सकता है बी. डी. ओ. हो) हां ऐसा वे गाँव वाले कह रहे थे। प्रवेश-बन्द द्वार पर हम रोक लिये गये क्योंकि ग्राम सेवकों की मीटिंग होरही थी। फिर भी हमने कुछ सुन लिया था। वह था....दश-पाँच टिकट एक-विमान न माना और मेरी बिना इच्छा के रुक गया।

थोड़ी देर में क्या देखता कि हूँ दो किसान दूर खड़े कुछ बातें कर रहे हैं—

—तो काका ! तुम ५ टिकट ले क्यों नहीं लेते ? ५) रु० के लोभ में सैंकड़ों की हानि करा रहे हो।

—क्या वैसे न मानेंगे ?

सचमुच हद कर दिया इस मेरी गाड़ी ने। ज्यों ही कोई सुनने-समझने की बात आती है यह उड़ चलती है। अब की बार निरन्तर चक्कर काट कर भी किसी लक्ष्य पर न पहुँची। अचानक शोर सुन पड़ा। नीचे भाँक कर जो देखा—विद्यालय। अरे इनका पढ़-शाला है कहाँ ? हमारी गाड़ी ने खाली कुर्सी के ४; २० चक्कर लगाये कि कहीं पढ़-शाला ज़ी ऊँघते-ऊँघते कहीं गिर न पड़े हों लेकिन पास से सिंह-गर्जना (?) सुन

विश्व के अमूल्य हीरों की कहानी—

कोहेनूर का मूल्य क्या है ?

दुनिया के लोगों की एक दिन की आय
भारत में पाये गये हीरों में सब से प्रसिद्ध
हीरा कोहेनूर है। पहले यह पांडवों के पास

कर हमारा संशय दूर हो गया कि वे सब
'आ-फस' में बैठे हैं।

‘—तब तो गजब हो गया। टिकट बेचो
वर्ना—’

‘—अरे व्यर्थ क्यों अड़ रहे हो ? परीक्षा
के दिन हैं एक क्या पचास कापी बेच लो
हिम्मत—’

‘आ-फस’ में न जा कर एक कच्चे घर
में पहुँच गया मैं। वहाँ एक बुढ़िया ने उस
बालक को दो थप्पड़ मारे और—घर में
दाना नहीं चाहिये ?) रु०, हमें नहीं चाहिये
इनाम — कहती किड़ाड़ बन्द करने लगी।
हम धबराये, हे देव! अच्छे फँसे बिना रोशनदान
के हमारी गाड़ी बाहर कैसे जाएगी ? धबरा
कर हम ने बचकर कहा कि हमारा नम छकड़ा
गाड़ी दीवार से टकरा कर टूट गया और हम
अपनी मेज पर आ गिरे।

—तो तुम मानते हो कि ३९०५३२
दिये ?

पर अब मैं क्या उत्तर देता, आप ही
बतायें ?

था किन्तु इसका पूरा इतिहास १२०४ से
मिलता है। यह मुगल सम्राटों से होकर महा-
राजा रणजीतसिंह के अधिकार में आया और
फिर अंग्रेजों के हाथ लग गया। आजकल
एलिजबेथ के राज-मुकुट में लगा है। भारत
सरकार इसे प्राप्त करने का यत्न कर रही है।
महारानी विक्टोरिया को जब यह हीरा दिया
गया तब १८६ कैरट था। काँट छोट के
पश्चात अब १०६ कैरट रह गया है। सारी
दुनिया के लोग यदि एक दिन की आय
इकट्ठी करे तब कोहेनूर हीरे की कीमत
जितनी होती है।

नैपोलियन की सफलता का रहस्य

कोहेनूर से भी बड़ा और सुन्दर हीरा
पिट है। यह १००१ में परित्याल-ब्लान से
मिला था। तब इसका वजन ४१० कैरट था
काँट-छोट कर इसे १६३ कैरट बना दिया
गया। अब यह ३० मिलीमीटर लम्बा; २५
मिलीमीटर चौड़ा और १९ मिलीमीटर मोटा
है। इसका नाम उस समय के मद्रास के
गवर्नर के नाम विलियम पिट पर पड़ा। बाद
में उसे फ्रांस के युवराज ड्यूक आब आर्येस ने
खरीद लिया। तब से यह फ्रांस की राष्ट्रीय
सम्पत्ति है नैपोलियन इसे अपनी तलवार की
मूठ में रखता था। उसका विश्वास था कि
सारी सफलताओं की कुंजी यही हीरा है।

तीसरा हीरा औरलाफ है। यह श्री

रंगम टापू में ब्रह्मा जी के मन्दिर की मूर्ति की आँख में लगा था। वहां से इसे एक फ्रांसीसी सिपाही ने सन्यासी का रूप धारण कर मन्दिर से चुरा लिया। उसने इसे एक जहाज के कप्तान को बेच दिया। उसने इसे फ्रांस के युवगज औरलाफ को बेच दिया। उसने इसे रूस की महारानी को भेंट में दे दिया। तब से यह हीरा रूस में है। इसका वजन १६४ कैरट है। इसका रंग हल्का पीला है।

एक और हीरा ग्रेट मुगल है। यह कोलूर-खान में से १६५० में निकाला गया था। उस समय इसका वजन ७८० कैरट था। उस समय वानस का प्रसिद्ध कारीगर बोरगर भी भारत में था। उसने इसे तराश कर २४० कैरट के सुन्दर हीरे में परिवर्तित कर दिया। पता नहीं कि इसके पश्चात क्या बना ?

होय-नाम का हीरा हल्के नोले रंग का है। इसे भी कालूर की खान से निकाला निकाला गया था। इसे फ्रांसीसी राजदूत भारत से ले गया था। फ्रांस की क्रांति के पश्चात यह इधर उधर भटकता रहा। अन्त में एक व्यक्ति सरलीन ने इसे ८ लाख रुपये में खरीदा रंगीन हीरों में यह विश्व का सब से बड़ा हीरा है। पहले इसका वजन ११२ कैरट था अब केवल ४४ कैरट है।

निजाम नाम का एक हीरा गोलकण्डा

‘आगे बढ़ो’

जातीय-जीवन में स्फूर्ति और चेतना उत्पन्न करने वालो नवयुवको। राष्ट्र के कर्ण-धागे ! भारत माता के आशा स्तम्भो !

देश की आशयें आप के ऊपर लगी हुई हैं, क्योंकि जब नवयुवक आगे बढ़ने हैं तो और लोग चलते हैं, जब नवयुवक चलते हैं तो और लोग खड़े हो जाते हैं, जब नवयुवक बैठ जाते हैं तो और लोग सो जाते हैं और जब नवयुवक सो जाते हैं तो और लोग मर जाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि देश और जाति के उत्थान और पतन का उत्तरदायित्व आप पर है। आप तेज, ओज, साहस, और शक्ति और वीरता की साक्षात् प्रतिमा हैं, अतः देश की डगमगाती हुई नौकाको उत्थान की ओर ले जाने के लिए आगे बढ़ो।

—द्वेन्द्रकुमार ‘चावला’ दसवीं श्रेणी
आर्य हाई स्कूल पूण्डरी।



से मिला था। इसका वजन पहले ३४० कैरट था। अब २७७ कैरट है। हैदराबाद के निजाम के कब्जे में है।

१९५० में भारत में सब से ज्यादा हीरे निकले—अर्थात् २७६९ कैरट वजनी। इनका मूल्य ४ लाख रुपये से अधिक था।

बूढ़े एक ही दिन में जवान ?

देसी जड़ी बूटियों के चमत्कार

एक वैद्य ने बड़ी चमत्कारी जड़ी बूटियां खोजी हैं। एक ऐसी बूटी है जिस का रस शरीर पर मल लें तो आग और बिजली का असर नहीं होता। रस का लेप पाँवों के तलवों पर कर लेने से मनुष्य दहकते अंगारों पर चल सकता है और बिजली की तारों को पकड़ लेने पर भी झटका नहीं लगता। हिमालय में एक ऐसी जड़ी मिलती है जिस के प्रयोग से केवल एक ही दिन में बूढ़े जवान हो जाते हैं। एक दूसरी जड़ी है जिसे हाथ में पकड़ ले तो जहरीले साँप के काटने का प्रभाव नहीं होता। यदि यही बूटी मनुष्य के कान में डाल दी जाए तो काटने वाला साँप स्वयमेव मर जाएगा। बिखना नामक एक ऐसी जड़ी है जिसके पास से गुजरने वाला व्यक्ति वेदोश हो जाता है लेकिन इसके समीप ही नरेश नामक जड़ी भी उगती है जिसके सूघने से वेदोशी दूर होती है। आवृ पर्वत पर एक ऐसी जड़ी मिली है जिस पर नजर पड़ते ही व्यक्ति अन्धा हो जाता है और जड़ी के ओझल होते ही दृष्टि फिर लौट आती है। शायद अथर्व वेद में ऐसी ही बूटियों को जादू की बूटियां कहा गया है।

यह भी खूब रही -

स्नान तो मुझे करना पड़ेगा

शास्त्रार्थ में जो भी सामने आता नवयुवक आचार्य रामानन्द उसे हरा देते। बड़े विद्वान थे वह, कावेरी नदी के किनारे प्रातःकाल सूर्य भगवान को अर्घ्य दे रहे थे। एक चमार भी वहाँ चमड़ा धो रहा था। उस की ओर से पानी के कुछ छींटे उड़े और आचार्य पर आ पड़े। ज्ञान के घमण्ड के कारण उन्हें क्रोध आ गया—'नर्क के कीड़े' उन के मुख से क्रोध आ बन कर निकला, नाश हो तेरा, अब मुझे दोबारा स्नान करना पड़ेगा।

अपराध क्षमा करें महाराज, चमार ने व्यंग्य में कहा—चमड़े के छींटे से चमड़ो अपवित्र नहीं होती। सब से अधिक अपवित्र तो क्रोध माना गया है और उसके छींटे मुझ पर पड़े हैं अब स्नान तो मुझे करना पड़ेगा।



नेता जी की पुत्री को ५ सौ रु० मासिक पें० जवाहर लाल नेहरू के एक वक्तव्य के अनुसार नेता जी के परिवार की सहायता के लिये काँग्रेस द्वारा स्थापित किए गए फण्ड पर मिलने वाले सुद के (५००) रु० प्रतिमास के दर से उनकी पुत्री अनिता को स्विटजरलैंड भेजे जाते हैं। १९६० में मैट्रिक करके वह भारत आएंगी।

निर्भर्य हो कर बढ़ जा आगे

देख विवशता मानव तेरी,
अचल खड़ा हो रोता है ।

दिशा २ में गूँज रहा स्वर,
दिल पाषाणों के होता है ॥

निर्बलता का सहचर बन कर,
मत कर हिंसा और अभिमान;
सकल विश्व का निर्माता हो,

बना हुआ है क्यों अनजान,
श्रम में छिपा हुआ है वैभव,

ओ भोले-भाले इन्सान,
जाग रहे हैं देख चराचर

और पड़ा तू सोता है ।
देख विवशता मानव तेरी,

अचल खड़ा हो रोता है ॥
पृथ्वी और आकाश सभी पर,

युग २ से तू छाया है;
जड़-चेतन कृपा सघन तरल

सब पर अधिकार जमाया है,
तू ने खोज निकाली जग में,

ईश्वर की जो माया है,
फिर अपना विश्वास स्वयं से

अपने आप क्यों खोता है;
दिशा २ में गूँज रहा स्वर

दिल पाषाणों के होता है ।
निर्भर्य हो कर बढ़ जा आगे,

तेरी मजिल साथ रहेगी;

तुम भी बन सकते हो

छोटी २ जल की बून्दें,
भूः की प्यास मिटाती हैं ।

बाल अरुण की चंचल किरणें
तम को दूर भगाती हैं ।

छोटी-छोटी बातें ही तो,
राई को अचल बनाती हैं ।

छोटे से बादल गोरा ने,
भीषण युद्ध मचाया था ।

बालक ध्रुव ने कष्ट सहन कर
तप करके दिखलाया था ।

अभिमन्यु औ शतमन्यु से
काम करो न्यारे-प्यारे ।

तुम भी उन से बन सकते हो
हो सकते नभ के तारे ।

सत्य प्रेम की ज्योति जला कर
जन मन में उजियाला कर दो ।

सत्य स्वप्न कर गांधी जी का
घर २ में उजियाला कर दो ।

शांति समर में कूद बावरे,
जीत भी तेरे हाथ रहेगी

आने वाली कल फिर जग से
हस २ तेरी बात कहेगी

देव और दानव से मानव
सदा श्रेष्ठ तर होना है ।

देख विवशता तेरी मानव
अचल खड़ा हो रोता है ।

मास्को का वह स्कूल जहां बच्चे हिन्दी पढ़ते हैं !

हो सकता है कि आप ने मास्को बोर्डिंग स्कूल नं० १३ का नाम सुना हो। यह स्कूल सच्चे अर्थों में १८० लड़की लड़कों का दूसरा घर हो गया है। यहां वे रहते और पढ़ते; काम करते और आराम करत, खाना-कपड़े पाते, अपनी रुचि के विविध मण्डलों में भाग लेते और स्कूल से घर के लिये जो काम दिया जाता है; उसे करते हैं।

ऐसे बोर्डिंग स्कूल में बच्चों को रखने के लिये माता-पिता को नाम-मात्र की माह-वारी फीस देनी पड़ती है। यह फीस उनके वेतन के अनुपात से देनी होती है। माता-पिता ३० रूबल से १०० रूबल तक फीस देते हैं। अनाथ बच्चों का पूरा खर्च राज्य बर्दाश्त करता है।

अन्य स्कूलों से इस बोर्डिंग स्कूल में क्या विशेषता है ?

एक विशेषता यह है कि यहाँ भारतीय भाषाओं, हिंदी और उर्दू की पढ़ाई जारी की गयी है।

अभी दो साल भी नहीं बीते कि इस स्कूल के बच्चों ने नमस्ते कहना सीखा और हिंदी-रूसी भाई-भाई का नारा सीख लिया। यह नारा सोवियत और भारतीय जनता के भाईचारे और मित्रता का द्योतक हो गया है।

लेकिन इसी बीच इन बच्चों ने ये दोनों भाषायें काफी सीख ली हैं। उनमें से कई बड़े मजे में हिन्दी, उर्दू पढ़ सकते हैं। उन्हें करीब ३०० शब्द मालूम है और इतने से वे उन भारतीय अतिथियों से हिन्दी, उर्दू में वार्तालाप करने का प्रयत्न करते हैं जो भारतीय दूतावास से आते हैं, या मास्को के प्रकाशन-गृहों और मास्को रेडियो में काम करने वाले भारतीय होते हैं। उनसे बच्चों की अच्छी दोस्ती हो गयी है।

बोर्डिंग स्कूल देखने वाले अतिथियों ने स्कूल की दर्शक पुस्तिका में अपने अनुभव लिखे हैं।

‘मैंने यहां जो कुछ देखा, उससे दर्प हुआ। मुझे खेद है कि मुझे ऐसे बढ़िया स्कूल में पढ़ने को न मिला। मास्को के बच्चे यहाँ हिंदी उर्दू पढ़ते हैं। मुझे यह देख कर खुशी होगी कि भारतीय बच्चे रूसी पढ़ रहे हैं।’ सोवियत संघ में भारत गणराज्य के दूतावास के सचिव श्री वी. के. अहूजा का यह मत है।

एक अन्य सम्मति इस प्रकार है —

“इस बोर्डिंग स्कूल में कई घण्टे बिताने के बाद मुझे एक बड़े माकें का पाठ मिला। यहाँ का वातावरण मुझे घर की याद दिलाता है। मैंने काफी कक्षाएं देखी हैं जिनमें भार-

भारत के वीरों से

★ आग बनो और आग लगा दो ★

पापों की यह भारी नगरिया,
पथिक चला है कठिन नगरिया ।

मानस की इस अन्धारी में,
जुगनु की उस चिंगारी ने ॥

अन्धकार पर वजू गिराया,
जीवन-पथ को है दर्शाया ।

भवसागर है, घोर निशा है;
नौका तेरी और दिशा है ॥

जग भूला है राह दिखा दो ।
आग बनो और आग लगा दो ॥

निराशाओं के भोके आयें;

तीय भाषाएं और गाना सिखाया जाता है ।
मैंने बच्चों को रूस सम्बन्धी एक गाना गाते
सुना । इन नन्हे-मुन्नों के स्वर में ऐसी आवेग-
मयी भावना गूँजती है जो मुझे तरुण देश
रूस के बारे में जहाँ नये जीवन का निर्माण
करने के लिये इतने बड़े पैमाने में सृजनात्मक
काम हो रहा है, सोचने को बाध्य करती है ।
यह सम्मति दिल्ली के देहातों की खुशहाली
और उद्योगीकरण का संगठन नामक एक
दातव्य संस्था के सभापति मोहिनी खेर की
है ।

आशाओं के दीप बुझाएं ।

आशा दीप जला लेना तू;
सोये भाग जगा लेना तू ॥

परवाने हैं जलने आये;
जीने को हैं मरने आए ।

यह संदेश परवानों का,
सुलग रहे अरमानों का ॥

सागर शोणित का बहा दो ।
आग बनो और आग लगादो ॥

(वेद प्रकाश ब्रह्म यमुना नगर)

वीरों की ललकार

(किशोरी लाल नारायण गढ़)

बढ़ २ कर दें शीश-समर में, वीर वही कहलायेंगे ।
बड़ा सरस्वती मही-सभ्यता पर, मर-मर जी जायेंगे ।
मृत्यु क्या है ? एक पर्व है, सुख से इसे मनाना है ।
रण में खेलें सिर ले कर में, माँ को मुक्त कायेंगे ।
मानवता बन्धनमें जकड़ी, दानवता का राज्य अहो ।
तोड़-फोड़ दानवता का गढ़ मानव राज्य बसायेंगे ।
भारत वर्ष है भूमि हमारी; इसमें सुख स्वराज्य रहे ।
इसी हेतु सिर दे कर; अपनी राष्ट्र-ध्वजा फहरायेंगे ।
अत्याचार हम नहीं सहेंगे, न ही अत्याचार करेंगे ।
देश-द्रोही के शत्रु-दल को; रण में मार गिरायेंगे ॥

—प्रत्येक शुद्ध किया सद्विचार अपने
सौंदर्य की छाप आदमी के मुख पर छोड़
जाता है ।

ईमानदारों का दुनिया में अभाव क्यों है ?

[श्री रामचन्द्र भज्जर]

समाज-कल्याण के नाम से एक नवीन संस्था की स्थापना उत्तर-प्रदेश सरकार ने की है, जिसका उद्देश्य समाज में फैली हुई बुराइयों को दूर करना है और जनता के सह-योग से सामाजिक-स्वतन्त्रता, सामाजिक न्याय और सामाजिक समन्वय को प्राप्त करने की चेष्टा करना; साथ ही प्रचलित सामाजिक अनीतियों के विरुद्ध लोकमत तैयार करना है। उपयुक्त उद्देश्यों की पूर्ति व्यक्तिगत चरित्र निर्माण के आधार पर ही हो सकती है। जब व्यक्तिगत चरित्र ऊंचा होगा तभी सामाजिक उन्नति भी हो सकेगी और सामाजिक कुरीतियों का निराकरण भी।

व्यक्तिगत चरित्र निर्माण के लिए अपराधों के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने की आवश्यकता है। यदि हम मनोविज्ञान के आधार पर यह निर्णय कर सकें कि जिन कारणों के आधार पर प्रचलित अपराधों की संख्या बढ़ रही है; और अपराध करती हुई भी जनता यह अनुभव नहीं करती है कि अपराध हो रहे हैं और उसकी दशा दूषित होती जा रही है; तो अपराध निवारण में बहुत कुछ सहायता मिल सकती है।

का आभास न हो तब तक वह उस रोग की औषधि खोज कर स्वस्थ होने की चेष्टा भी नहीं कर सकता। आज कल तो अपराध सभी करते हैं कौन बचा है इस बला से; मैं भी करता हूँ तो क्या हुआ? आज कौन हरिश्चंद्र है; सब कहते ही कहते हैं; करने से कोई नहीं चूकता। इस भावना के कारण अपराध करने वाला अपने को बहुमत का साथी समझता है और वह अपराध करने में लज्जा या संकोच नहीं करता।

लक्ष्य पूरा होना चाहिए साधन चाहे कैसे ही हों। इस भावना ने भी अष्टाचार में वृद्धि की है। लक्ष्य तो उत्तम होना ही चाहिए परन्तु साधनों की उत्तमता भी आवश्यक है। यदि सभी साधनों से स्वार्थ पूरा किया जाना उचित समझा जाये तो संसार में कोई अपराध ही न रह जाएगा। जीवन और समाज की उन्नति में लक्ष्य और साधन दोनों ही समुचित और पवित्र होने चाहिये। संसार में धनवानों का मान है। धनी के विषय में यह कोई नहीं जानना चाहता कि उसने यह धन कैसे कमाया है या कहाँ से प्राप्त किया है? चोरबाजरी द्वारा धन कमाने वाला बड़ी कोठी या हवेली

जब तक रोगी को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधा नहीं पड़ती, तब तक वह अपने लक्ष्य में व्यस्त रहता है, बड़े-बड़े

आप नहीं जानते

एक हेल मछली का वजन २५ हाथियों के बराबर होता है। उस की लम्बाई ३३ मीटर तक होती है। एक पूरे हेल के मांस का वजन औसतन ७० टन और चर्बी का वजन ३५ टन होता है। नवजात हेल का वजन ६ टन होता है और जब तक वह दूध पीता रहता है, उसका वजन रोज १०० किलोग्राम बढ़ता है। हेल की जोभ का वजन तीन टन और दिल का कोई ७० किलोग्राम होता है। हेल में ८ टन खून होता है और उस के फेफड़े १४,००० लिटर वायु लेते हैं। हेलका कुल वजन १२० टन से ज्यादा होता है।

अगर हम पूरी पृथ्वी को मकड़ी के जाले के तागे से घेरें तो उस धागे का वजन कोई ४५० ग्राम होना चाहिए। लेकिन अगर उस धागे को हम निरुद्धतम तारे को—दक्षिण तारकमंडल के प्रधान नक्षत्र को—पहुँचाना चाहें तो उस का वजन कुछ किलोग्राम या दर्जनों किलोग्राम अथवा हजारों किलोग्राम नहीं बल्कि ५ लाख टन के बराबर होना चाहिए।

विद्वान पंडित यज्ञ कराने आते हैं; दक्षिणा लेते हैं, प्रीतिभोज में नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित होते हैं, और प्रशंसा करते हुए चले जाते हैं। इस प्रकारका लोक व्यवहार देख कर

बूझिए तो ?

जाती नहीं पेट में खाई जाती है,
सुन कर उस का नाम घड़कती छाती है।
काले कम्बल में आग छिपी।
फिर भी कम्बल जले नहीं।

चोर बाजारी या अन्य अनुचित उपायों द्वारा धन कमाने की भावना को प्रोत्साहन मिलता है।

चालाक-व्यक्ति सर्वत्र सफलता प्राप्त कर रहे हैं। सीधे आदमियों का कहीं ठिकाना नहीं है, इस भावना के कारण ईमानदार व्यक्ति भी अपना सीधापन छोड़ कर चालाक बनने का प्रयत्न करते हैं। ईमानदार व्यक्ति को जब मूर्ख समझा जाता हो तब कोई विरलाही बैसा बनना पसन्द करेगा, धोखा देना प्रत्येक आदमी का स्वभाव ही बन गया है।

मेरा अपराध कोई न जान सकेगा, मैं एकान्त स्थान में रात्रि के अन्धरे में दुनिया की आंखों में धूल भोंक कर अपराध करने में सफल हो जाऊंगा। इस प्रकार छिप कर अपराध करनेकी भावनाभी अपराध में सहायक होती है।

यदि अपराधी को यह ज्ञान हो जाए कि अपराध छिप नहीं सकता, मनुष्य नहीं तो ईश्वर तो सर्वज्ञ और सर्व-द्रष्टा और सर्व-व्यापक है तो अपराध कम हो सकते हैं।

(सफा २२ से आगे)

वह चौदह वर्षीया बालि । बुरी तरह काँप रही थी । मैं सब कुछ सुन कर भी चुप रहा—किस २ को अपनी पवित्रता का सबूत देता ।

दूसरे दिन थाने में हमारे बयान लिये जा रहे थे । मैंने अपना बयान लिखवा दिया तो मुखिया बोला—हजूर ! वह एक दम गलत कह रहा है । हमें इसके चरित्र पर सन्देह है—हमारी बहू-बेटियों की लाज खतरे में हैं—

मेरे सिर पर मानो बिजली गिर पड़ी । उसी समय न जाने कहाँ से मुख्याध्यापक टपक पड़ा ? वह देरतक मुझे जहरीली नजरों से घूरता रहा । मानो कह रहा हो—तेरी जान मेरी मुट्ठी में है ।

मैं समझ गया कि सारा प्रपंच उसी का रचा हुआ है । मैं कुछ बोला नहीं, केवल दृष्टि मुका ली । कुछ देर बाद मैंने सुना मुख्याध्यापक कह रहा था—

‘सर, इसका चरित्र मचमुच शोचनीय है’ । मेरा रक्त उबल पड़ा लेकिन चुप ही रहा । थानेदार ने दुष्टता-पूर्वक मुझराते हुए तथा अचोष कमला को घूरते हुए कहा—तुम्हें क्या कहना है ? वह मारे लज्जा के गड़ी जा रही थी । उसने आँचल को आँखों तक खींचते हुए कहा—जी, मास्ट जी का चरित्र गङ्गाजली की

तरह पवित्र है— मैं ही उनके पास सवाल समझने गई थी ।

उस दिन जब मैं घर लौटा तो मेरा सिर चकरा रहा था ।

मेरी आँखों के सामने बार २ असत्य की भूमिका; मुख्याध्यापक का छत; थानेदार की दुष्ट हंसी तथा कमला का भोला चेहरा घूम रहा था ।

उसके बाद रमन जरा रुका—उसकी साँस तेजी से चल रही थी, आँखें छत पर टिकी हुई थीं । फिर—आगे ? ‘राजेन्द्र के स्वर में सहानुभूति वेदना तथा उत्सुकता थी, आगे क्या हुआ ?’ ‘जो होना चाहिये था’ रमन कृत्रिम हंसी हसता हुआ आगे बोला—असत्य की रूपरेखा जोर पकड़ती गई । मेरे भाई ! मैं एक कमजोर अध्यापक था उस रेखा को मिटा न सका । उसके बाद मेरी ईमानदारी तथा परिश्रम मिल का मुझे बेकारी की तरफ धसीट कर ले चले—मेरे सामने मेरी मासूम पत्नी तथा दो भोले बच्चों की जिन्दगी का प्रश्न था ।

क्षण भर के लिये रमन फिर रुका तथा धीमा आवाज में बोल—राजेन्द्र ! मेरी आवाज तेज आवाज के कोहरे में छिप गई । मेरी सत्यता का प्रकाश काले-गहरे झूठ के बादलों के पीछे जाकर धुन्धला गया ।

दूसरे दिन जब मैं थाने पहुँचा तो मेरे

विरोधियों का स्वर प्रबल हो चुका था। मेरे पक्ष में बोलने वाली अबोध बालिका ने समाज के झूठे आरोपों से तंग आकर नदी में डूब कर अपने अमूल्य प्राण खो दिए थे। यह समाचार सुन कर मेरी आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। छलिए समाजकी कठोर अंगुलियों ने एक नाजुक कली को मसल दिया था—एक मासूम जिन्दगी को मिटा दिया था।

रमन आवेश में कहता गया—अब मुझे अपना शोक नहीं—परिवार का गम भी भूल चुका हूँ लेकिन मैं उस ग्रामीण बालिका की मृत्यु को भूल नहीं पाया हूँ! मैं सोचता हूँ, कि उसकी मृत्यु का कारण मैं हूँ या समाज? और यह सोचते रूक जाता हूँ। समाधान करूँ भी कैसे? उसकी आवाज की सत्यता को किसी ने न पहचाना—उसके पावक चरित्र पर कीचड़ उछालने में भी निष्ठुर समाज को लज्जा न आई। वह निर्दोष थी, कोमल थी शायद मैं भी निष्ठुर समाज की कठोर चोट सह न सकी—वह मिट गई—पर-पर ऐसा लगता है मेरे कि जीवनपर उसके रक्तका एक धब्बा लग गया है—ओफ!

रमन रुका पर उसका स्वास तेजी से चल रहा था—थकन ने उसके चेहरे को विकृत बना डाला था। राजेन्द्र धबरा गया। उसने उठकर रमन को सोफे पर लिटा दिया—

रमन, चुप रहना—अब कुछ मत कहना।

अब मैं क्या कहूँगा? कहने को रह ही क्या गया है—वह खिलौना थी जो समाज से टककर टूट गई—पर-पर! रमन की आँखें उस टूटी प्याली पर जम गईं जो कुछ क्षण पहले राजेन्द्र के हाथ से छूट कर चूर हो चुकी थी तथा उसके टुकड़े इधर-उधर बिखर गए थे।

‘राजे !,

“हूँ?” राजेन्द्र ने धीरे से पूछा।

“वह देखो—प्याली के टुकड़े—! न जाने कितनी जिन्दगियाँ इस की तरह समाज के हाथों से चूर हो चुकी हैं!”

वह हस पड़ा—हंसता ही गया तथा हसते हंसते बेदम हो गया।

“रमन—” राजेन्द्र चील पड़ा। रमन की हसी रुक गई। उसने धीरे से कहा—“टूटी-प्याली—” और अपना मुँह दोनों हाथों से छिपा लिया। कुछ देर बाद राजेन्द्र ने देखा रमन की अंगुलियों के बीच से हो कर अश्रु-रेखायें बहती जा रही हैं। उसने धीरे से पुकारा—

‘रमन--’ लेकिन उस का स्वर भारी था और आँखें भी भीग गई थीं!

★ भाग्य ने मुझ से भद्दा भजाक किया किंतु मैं उस पर हस दिया ताकि कोई यह न जान सके कि मैंने कितना कड़वा घूंट पिया है।

चुटकुले

★ अध्यापक—पूणिमा की रातको बहुत कम तारे आकाश में दिखाई देते हैं—क्यों ?

एक छात्र : वे अपने अपने घर में सत्य नारायण की कथा सुनते होंगे।

★ सुरेश—भई किशोर, आज तो तुम्हारी जेब गर्म मालूम होती है।

किशोर—हां भई अभी अभी प्रस करके पहनी है।

★ दार्शनिक : क्यों भई तेली तुमने बैल के गले में घण्टी क्यों बांध रखी है ?

तेली : इसलिए कि चल जब रुक जाए तब मुझे पता चल जाए कि वह खड़ा हो गया है।

दार्शनिक : भई बाह; यदि वह एक ही जगह खड़ा रह कर सिर हिलाता रहे तो घण्टी बजती रहेगी और तुम समझोगे कि वह चल रहा है।

तेली—माफ कीजिए मेरा बैल आप जैसा दार्शनिक नहीं है।

★ प्रकाशक : आपका हस्तलेख इतना अच्छा है कि कई कवितायें मुझ से बिल्कुल नहीं पढ़ी गईं। आप इन सब को टाईप कर लाइए, तब मैं इस पुस्तक पर विचार करूंगा।

कवि : यदि मैं टाईप करना जानता होता तो कविता कब से लिखने बैठता ?

गृह-विज्ञान

घर में रखने की आवश्यक चीजें—बच्चों वाले घरमें चोट लगने और मामूली दर्द आदि की शिकायत हर समय पैदा होती रहती है। रोग अधिक हो तो बेशक हकीम — डाक्टर को फौरन बुला लेना चाहिए मगर साधारण शिकायतों को दूर करने के लिए हर घरमें निम्नलिखित चीजें अवश्य मौजूद रहनी चाहिए। (१) ट्रिक्चर आइओडिन (२) मरहम पट्टी के लिए साफ कड़ा (३) साफ रुई (४) फोड़े फुंसियों पर रखने के लिए फाहे (५) छोटी कैंची (६) बोरिक की मरहम (७) जेतून का तेल [८] वैजलीन [९] नरम कड़ा मलमल।

खाने की चीजें—खाने की चीजों की एहतियात न रखने से प्रायः सभी रोग होते हैं। दूध ऐसी गिजा है जो बहुत शीघ्र खराब हो जाता है अतः दूध का विशेषतः ध्यान रखना चाहिए। दूध रखने और गर्म करने के बरतन निहायत एहतियात से धोकर और सुखा कर रखने चाहिये जिस बरतन से जरा सी भी बू आती हो उस में दूध कदापि नहीं डालना चाहिए। यदि दूध में थोड़ा सा बोरिक एसिड डाल दिया जाए तो दूध अधिक समय तक खराब नहीं होता।

शिक्षा विभागसे मान्यता प्राप्त

पंजाब— : डी. पी. आई नं० २६३९ सी.

तिथि—१०-२-५०

उत्तरप्रदेश :—डायरेक्टर आव एजुकेशन

सं० बी ४०८/१०/८ (७०३) ५०-५१

तिथि ६-७-५०.

हिमाचल : डिप्टी डायरेक्टर आव एजुकेशन

नं. ई २९-३/३१०० तिथि १६-६-५१

पैप्सू : नं. एड: ई. आई. (५०) ५२/२२६०७

तिथि २९-७-५२.

बिहार : सुपरिटेण्डेंट आव लाइब्रेरीज

नं. ७३४०/२ पी-१५३ ति. २७-११-५३

हैदराबाद : डी. पी. आई नं. १७/१२९/१८

१९५२ तिथि ३-१-५३.

भूपाल : [मध्यप्रदेश] सीनियर इंस्पेक्टर आव

स्कूलज नं. १२१९५/१२२०२-१८ एकेड

[५२] ८/५२ तिथि १९-४-५२.

विज्ञापन के दर

'प्रकाश' में विज्ञापन छपवाने के लिए निम्न दर हैं:—

वार	१ पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	३० रुपये	१७ रुपये	१० रुपये
३ बार	८०	४५	२६
६ बार	१५०	८०	५०
एक वर्ष	२५०	१७५	९०

'प्रकाश' के ग्राहक सारे भारत, ब्रह्मा, फिजी इंग्लैंड और अफ्रीका में भी मौजूद हैं।

['प्रकाश' में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं]

मैनेजर:-

'प्रकाश' चहारबाग जालंधर

शिक्षा क्या है ?

शिक्षा का अर्थ यह नहीं कि लोगों को वह कुछ सिखाया जाए जो वह नहीं जानते, बल्कि ऐसा व्यवहार करना सिखाना है जैसा कि उन्हें करना चाहिए !

विद्यार्थियों से

विद्यार्थियो ! अपने माता पिता का आदर करो। जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया, शैशव काल में स्वयं दुख उठा कर तुम्हारा पालन-पोषण किया, यौवन-काल में तुम्हें शिष्टाचार सिखाया—और सभी अवस्थाओं में तुम्हें प्रेम किया। उनका आदर करो। उनकी आज्ञा का पालन करो। इससे उनकी आत्मा सन्तुष्ट होगी और तुम्हें आशीर्वाद देंगे और भविष्य में तुम्हारे बच्चे तुम्हारे जीवन को सुखी बनाएंगे।

बच्चों को पहली शिक्षा

माता-पिता की आज्ञा पालने की मिलनी चाहिये और दूसरी जो वे चाहें।

भाग्य

भाग्य के दुर्व्यवहार पर हंस दो ताकि कोई यह न जान सके कि कितना कड़वा घूंट तुम ने पिया है।

कभी निराश मत हों

मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए, और यदि निराशा कभी जीवन में आ जाए तो निराशामें भी काम करते जाना चाहिए।

बड़े आदमियों की आत्म कथायें

बड़े आदमियों की आत्म कथाएं बताती हैं कि मनुष्य अपने जीवन को जैसा चाहे बना

सकता है।

पंजाब की ग्राम पंचायतों के लिए

उर्दू मासिक

‘पंचायत गजट’ जालन्धर

अप्रैल ४९ से बड़ी सजधज से प्रकाशित हो रहा है। सभी सम्बन्धित अधिकारियों और ग्राम पंचायतों ने इसे हृदय से अपनाया है। हजारों पंचायतें इसकी ग्राहक बन चुकी हैं। इसमें पंचायत कानून की व्याख्या, इन्तजामियां दीवानी और फौजदारी मुकद्दमों की समाइत का तरीका, भारत का विधान, कृषि सम्बन्धी अमूल्य जानकारी, पंचायतों की समस्याओं का हल उनके प्रश्नों के उत्तरों के रूप में, शिक्षा समाचार, कृषि समाचार, महीने भर के अन्य महत्वपूर्ण समाचार तथा पंचायतों के काम की रिपोर्टें पढ़ने को मिलेंगी। वार्षिक मूल्य ९ रु० बी. पी. से ९ रु० ८५ नए पैसे।

आज ही ग्राहक बनिए

नमूने की प्रति १२ आने के डाक टिकट भेजकर मंगवाएं।

हिन्दी संस्करण

‘पंचायत गजट’ का हिन्दी संस्करण भी छपता है। इसका वार्षिक शुल्क भी ९ रु० ही है। बी. पी. से ९ रु० ८५ नए पैसे। उर्दू तथा हिन्दी दोनों संस्करण एक साथ जारी कराने पर १८ रुपये की बजाए १६ रु० लिए जावेंगे।

पंजाबी में भी ‘पंचायत गजट’

‘पंचायत गजट’ पंजाबी में शीघ्र छपने लगेगा।

उपयोगी उर्दू पुस्तकें

(१) पंचायतों के अधिकार तथा कर्तव्य

इस पुस्तक में पंचायतों के लाजमी और इस्तियारी कर्तव्यों और सभी प्रकार के अधिकारों की व्याख्या की गई है। मूल्य ६ आने।

(२) दीवानी व माल नालिशों की समाइत

इसमें पंचायतों की दीवानी व माल नालिशों की समाइत के अधिकारों की व्याख्या करके इन नालिशों की समाइत का तरीका बताया गया है। मूल्य ८ आने।

(३) फौजदारी मुकद्दमों की समाइत

जिन दफात में पंचायतों को फौजदारी मुकद्दमों की समाइत का इस्तियार हासिल है उनकी व्याख्या और मिसल बनाने का तरीका देकर एक पूरी मिसल बतौर नमूना दी गई है। मूल्य १२ आने।

(४) पंचायत-इलैक्शन क्वाइड

इसमें पंचायतों के चुनाव सम्बन्धी सारी जानकारी दी गई है। मूल्य ६ आने।

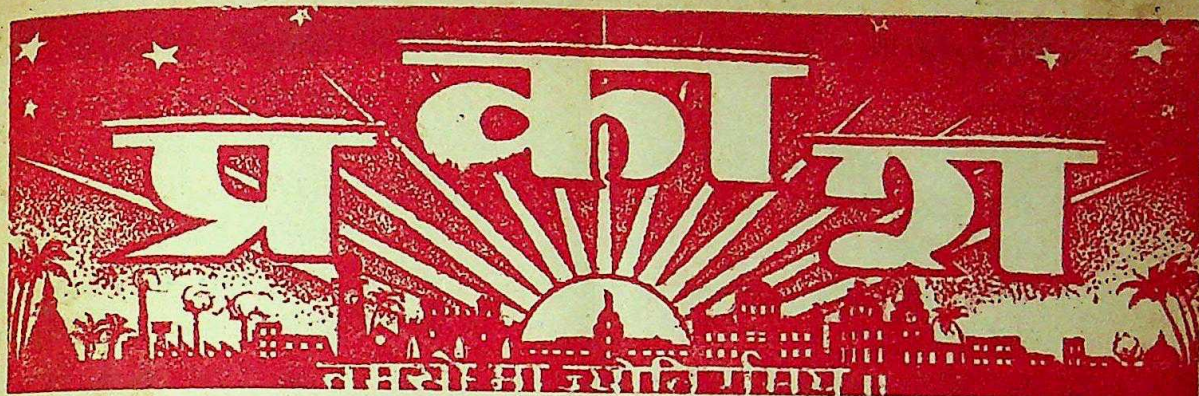
(५) इन्तजामिया मुकद्दमों की समाइत

दफात २३ ग्राम पंचायत ऐक्ट के अंतर्गत किए जाने वाले इन्तजामिया मुकद्दमों की समाइत का तरीका और दफा २१, २२ के तहत जारी किये जाने वाले नोटिसों और आज्ञाओं के नमूने दिए गए हैं। मूल्य चार आने।

(६) मसला शामलात देह

के बारे में पूरी जानकारी। मूल्य ५ आने।

वीर मिलाप प्रेस जालन्धर शहर में श्री एल० सी० हितैषी द्वारा मुद्रित तथा १३७ चहार बाग



७, फरवरी १९५९



सम्पादक

हितैषी-अलावलपुरी



वार्षिक मूल्य

मनीआर्डर से सात रुपये
बी. पी. से सात रु० ६५ नए पैसे
विदेशों के लिए
१५ शिलिंग पेशगी
मनी आर्डर अथवा पोस्टल
आर्डर द्वारा।



● उठो हिन्द के हे सपूतो ! ●

उठो हिन्द के हे सपूतो ! उठो तुम,

उठो क्रान्ति के अग्रदूतो उठो तुम।

घन-घोर तूफान में घिर रहे हो, तनिक देख लो कहां गिर रहे हो,
अभी तक वृथा घूमते फिर रहे हो, पकड़ कर कुशा सिधुमें तिर रहे हो।

अरे इस पतन को सहारा बना लो,

उठो हर लहर को किनारा बना लो।

नहीं रोकते प्रीत के गीत गाओ, बड़े चाव से मानिनी को मनाओ,
मगर वीर कर्तव्य मत भूल जाओ, समय आपड़े तो विगुलभी बजाओ।

सदा वीरता की निशानी यही है,

जवानो तुम्हारी जवानी यही है।

महा नाश के मूल आधार हो तुम, सदा नव सृजनके समाचार हो तुम,

महा रुद्र के घोर अवतार हो तुम, धधकते हुए लाल अंगार हो तुम।

उठो इस तरह उठ रही आंध्रियां हों,

गिरो इस तरह गिर रही विजलियां हों।

—उदय भानु “हंस”



THE “Prakash”

Editor: L.C.H. TASHI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

JULLUNDUR CITY.

‘प्रकाश’ के लक्ष्य तथा नियम

लक्ष्य :—

- (१) विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना ।
- (२) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना ।
- (३) छात्रों और अध्यापकों में सहयोग और प्रेम बढ़ाने में सहायता देना ।
- (४) छात्रों और अध्यापकों के हितों की रक्षा करना ।
- (५) निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना ।
- (६) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति !

नियम:—

- (१) प्रकाश प्रतिमास की ७ तारीख को ग्राहकों को भेजा जाता है । किन्तु कारण-वश देर सबेर संभव है ।
- (२) वार्षिक मूल्य, भारत में ७ रु० मनीआर्डर से ७ रु० ६५ नए पैसे बी. पी. से और १५ शिलिंग विदेशों से लिये नियत है । विदेश के ग्राहक शुल्क पोस्टल आर्डर अथवा मनी आर्डर से भेजें । विदेशों में बी. पी. नहीं जाता ।
- (३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता । इसके लिए ६५ नए पैसे के टिकट भेजने चाहिए ।
- (४) वृष्ट संख्या बढ़ाने या घटानेकी अवस्था में मूल्य में कमी या वृद्धि की जा सकेगी ।
- (५) लेख, कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास की १५ तारीख तक आ जाने चाहिए । जो लेखक अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे ५) रु० ब्लाक के लिए अपने फोटो के साथ भेजे ।

प्रकाश के सम्बंध में सम्मति

- (१) ‘प्रकाश’ का मई का अंक मिला । मैं उसे ध्यान से पढ़ा । उसमें आप ने शिक्षा सम्बन्धी उपयोगी सामग्री जुटाने और उसे सारगर्भित रूप में थोड़े ही पृष्ठों में उपस्थित करने में जो परिश्रम किया है वह सराहनीय है । इस प्रकार ‘प्रकाश’ के छोटे क्लेवर में एक बड़ी ज्ञान राशि भर देने से, आशा है विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा ।

—सन्तराम बी. ए. पुरानी वसी

- (२) मैंने ‘प्रकाश’ को पढ़ा है और स्कूलों के लिये बहुत ही लाभप्रद पाया है ।

—पी. एल. सोदन, हैडमिस्ट्रेस गवर्नमेंट

गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना

- (३) मैंने इसे सभी शिक्षा पत्रिकाओं में उत्तम पाया । इसमें छात्रों के लिए बहुत उपयोगी सामग्री संग्रहीत की गई है ।

—रामप्रसाद हैडमास्टर, मिडल स्कूल जमशेर

- (४) ‘प्रकाश’ की नमूने की प्रति मिली । अंक सुन्दर और पत्रिका छात्रोपयोगी है ।

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट्, प्रिंसिपल डी.ए.वी. कालेज अजमेर

इनके अतिरिक्त

प्रशंसापत्र भेजने वालों में इनके नाम उल्लेखनीय हैं:— (१) हैडमिस्ट्रेस, क्रिश्चियन गर्ल्स हाई स्कूल पालमपुर । (२) हैडमास्टर, गवर्नमेंट हाई स्कूल नंगल टाऊनशिप होशियारपुर, (३) हैडमिस्ट्रेस गवर्नमेंट स्पेशल स्कूल नंगल टाऊनशिप होशियारपुर तथा अन्य ।

- (६) अप्रकाशित लेख आदि बिना डाक टिकट आए लौटाये नहीं जाते । (७) विज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अश्लील न हों और जिनके दाम पेशगी आ जाएं । —प्रबंधक

पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका

प्राक्काश

वर्ष १०]

फरवरी ५९

[अंक २

उठो आंख खोलो ! (श्री देवीप्रसाद 'राही')

किसी फूल के मौन का गीत हूं मैं—

उसी के लिये हूं न जो बोल पाये ।

नई जिन्दगी की सुवह हाथ में ले

नई रोशनी की फसल काटता हूं

अंधेरे में भटके हुए राहियों को

बिना दाम के रोशनी बांटता हूं,

शराबोर जो हो गये आंसुओं से

अंधेरे ने जिस का गला घोट डाला

नियति की परिधि में रहे घूमते जो

प्रगति का जिन्हें मिल न पाया उजाला

उन्हीं की विवश मुकतायें उभर कर—

मुखर हो रहीं गीत बन कर अधर पर

असह चोट सह, शूल की कामना की

तुम्हारी तरह जो न मुंह खोल पाये, उसी—

अंधेरा मिटे और उन जुगुनुओं से—

पले जो सदा रात के ही सहारे

सबेरा कहां चांद के राज में है ?

यही सोच कर टूट जाते सितारे

जिसे प्राण देकर शलभ ने जलाया

उसी दीप को आंधियां यों बुझा दें ?

उठो तींद के कंदियो, आंख खोलो

चलो रात में आज सूरज उगा दें

बड़ा कर्ज तुम को अभी पाटना है

उन्हें हौसला, फैसला बांटना है—

गिरी रुहियों के सड़े बंधनों से

कैसे पंख अपने न जो खोल पाये । उसी—

★ कहां क्या है ? ★

कविताएं

पृ० सं०

दिशा बदल दा आनन्दप्रकाश १०

विश्व शान्ति के पहरेदारो! २१

उषा आमंत्रण शालिहास २२

बसन्त से महावीरप्रसाद ३३

दो मुक्तक शालिहास ३३

नेता जी सुभाष ३६

खुद बुरा है जो— सुवर्ण रत्न ३८

कहानियां

ज्वाला श्रीमती पुष्पा महाजन १२

मानवता की राह पर सुदर्शन २८

भगवान की मर्जी शंकर ३१

लेख

मनुष्य ने अब तक क्या किया ? ७

रूस में शिक्षा और काम साथ २ ८

रूसी कामिक रिकेट ९

बच्चों की शिक्षा की प्राथमिक बातें ११

मनुष्य की जरूरत न रहेगी २०

जीवन की अनुभूतियां २३

आज्ञा पालनकरने वाला फौलादी हाथ २६

क्रेमलिन का घण्टा २५

राष्ट्रोन्नति का मूल मन्त्र २६

२४ छातों का प्रभु २३

जेबी टैलीफोन ३६

इनके इतिरिक्त : शिक्षा समाचार, सार

समाचार, अपनी बोलो च, फूल और कांटे

सम्पादकीय विचार, आप नहीं जानने,

गृह विज्ञान, स्वास्थ्य सुधार, बुझिए तो ?

चुटकले इत्यादि स्थायी स्तम्भ !

—★—

भूल सुधार : पृष्ठ ७ पर छपे लेख

के शीर्षक में क्या से आगे किया शब्द रह

गया है, सुधार लें ।

अपनी धोली 'च'

पंडित जी दी कौन सुनदा ए ?

पंडित नेहरू हारां राष्ट्रपति भवन 'च अध्यापकां नू पदवीयां दिते जान दे अक्सर ते किहा कि किसे आदमी दी हैसीयत दा अन्दाजा ओसदी दोलत तों नहीं लौना चाहोदा । गल ते पाड़त जा न खरा कहा ए पर आहनां दी कौन सुनदा ए ते कौन मनदा ए ? आहनां कई वार आखिया ए कि किसे नोकरी लई उम्माद वार दी डिगरी नहीं लियाकत वेखनी चाही दी ए । एस गल दा सारे देश 'च स्वागत कोता गया । पर असीं वेखदे हां कि इसते अमल न ते सरकार ने कीता ते न ही फर्मा ने । बिना डिगरी दे ते पुच्छनां इक पासे रिहा डिगरी हुन्दे सुन्दे भी इक होर चीज दी लोड़ ए ते ओ वे सिफारिश ! लियाकत नू कौन वेखदा ए ? जहड़ मिनिस्टर कल तीक सौ रुपया महीना वो नहीं सन कमादे ओह केहड़ो लियाकत दे जोर ते बजारत दोआं कुरसीआं सम्भालो बैठे ने ?

जे देश नू उन्नति बल ले जाना ए तां कोरीआं गल्लां नाल कुभ नहीं बनेगा, कुभ कर के दिखाना पएगा । पंडितजी देश दे प्रधान मन्त्री ई नहीं सर्वमान्य नेता भी ने । की आह अपनीआं गल्लां ते अमल नहीं करवा सकदे ? जरूर करवा सकदे ने । आह आज्ञा जारी करन कि सरकारी नौकरियां लई उम्भोदवारां दी लियाकत वेखी जावे डिगरी नहीं, ते किसे व्यक्ति दी हैसीयत ओस दी दोलत करके वही न समझी जावे बल्कि ओस दे गुणां करके । जे प्रधान मन्त्री हुन्दे होए ओह सहनां गल्लां ते अमल नहीं करवा

फूल और कांटे

[पाठकों के प्रश्न ओर उनके उत्तर]

प्र०—पाकिस्तान भारत के साथ जो भी सन्धि करता है उसे निभाता नहीं क्यों ?

रोशन लाल लुधियाना ।

उ०—इस लिए कि आज तक अपनी सन्धियों पर अमल भी करने की कोई सन्धि उसने भारत से नहीं की !

प्र०—क्या देश वास्तव में उन्नति कर रहा है ?

मदन लाल, फीरोजपुर ।

उ०—जिस देश में ५० वर्ष पहले रुपये का ३५ सेर गेहूं बिकता था वहां आज ३५ रु० का मन बिकने लगा है—क्या उस देशकी उन्नति में किसी को शक हो सकती है ?

प्र०—पिछले जमाने में लोग घरों को ताले भी नहीं लगाते थे फिर भी चोरियां नहीं होती थीं किन्तु अब ताले लगानेपर भी चोरियां बन्द नहीं होतीं, इस का क्या कारण है ?

अनिता, होशियारपुर ।

उ०—उस जमानेमें लोग अशिक्षित ओर मूर्ख होते थे उन्हें ताले बनाने आते थे न तोड़से इस लिए चोरी करना भी न जानते थे । मगर आज की दुनिया तो इतनी तरक्की कर चुकी है कि लोग ताले तोड़ने के साथ-साथ चार पैसों के लिए किसी का सिर भी ताड़ना जान गए हैं । अभी तो है यह इन्तदा आगे-आगे देखिए होता है क्या ?

सकदे ते फेर होर कौन करवायेगा ? एहो कारण ए कि ओहनां दी कोई नहीं सुनहा !

—भाईया रेल ।

शिक्षायेत और सुभाव

हरिजन वेल फेयर स्कीम

रिकेगनाईज्ड प्राईवेट स्कूलों को पंजाब शिक्षा विभाग ने एक नया सरकुलर भेजा है जिसमें आदेश है कि हरिजन छात्रों को आइन्दा आधी फीस की माँग सरकार से की जाए। ये स्कूल कई वर्षों से हरिजन छात्रों को पूरी फीस सरकार से पाते आ रहे हैं। कई स्कूल ऐसे हैं जिन में हरिजन छात्रों को संख्या अन्य छात्रों से अधिक हैं। उदाहरण के लिए जी० ए० वी० स्कूल कांगड़ा के ७४३ छात्रों में से ४७७ हरिजन हैं। गत वर्ष इन की फीसों का स्कूल ने २२००० रुपये प्राप्त किया। इस वर्ष यदि सरकार आधी रकम दे तो शेष ११००० को घाटा कहां से पूरा किया जा सकता है? यदि यह सरकुलर वापिस न लिया गया तो परिणाम यह होगा कि कई स्कूल बन्द हो जाएंगे और सैकड़ों अध्यापक बेकार हो जाएंगे।

आर० एल० मिसर, कांगड़ा

समाचार सार

रीसोसिज एण्ड रिट्रैचमेंट कमेटी ने पंजाब के वित्तमन्त्रीसे सिफारिश की है कि और सीधे टैक्स न लगाये जाएं और व्यय में बचत की जाए।

भारत को १ करोड़ १० लाख डालर दान में प्राप्त हुए हैं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कांग्रेस की प्रधाना बनाया जाना मान लिया है।

मलिका एलिज्वैथ के पति प्रिंस फिलिप भारत आए हुए हैं।

शिक्षा समाचार

गणतन्त्र दिवस पर देश के ३२ टीचरों को उनका अमूल्य सेवाओं के लिए नेशनल एवार्ड दिए गए हैं। इनमें जालन्धर फटन गंज गल्ले स्कूल की मुख्यअध्यापिका श्रीमता बोणा भी हैं।

पंजाब के शिक्षा विभागको आर से प्राईवेट रिकेगनाईज्ड स्कूलों को सरकुलर भेजा गया है कि भविष्य में हरिजन छात्रों का आधी फीस वे स्वयं भरें।

पंजाब के चारों आयुर्वेदिक कालेजों में भविष्यमें एक जसा कोर्स नियत किया जाएगा।

रूस में ४० लाख पुस्तकें प्रति वर्ष छपती हैं।

भारत सरकार ने देहलीके प्राईवेट स्कूलों को त्रैमासिक ग्रांट पेशगी देनेका निश्चय किया है। ताकि टीचरों को वेतन समय पर मिल सके।

अमेरिकन विशेषज्ञों को विश्वास है कि वे १० वर्ष तक 'स्पेस स्टेशन' स्थापित कर लेंगे।

चीन के पास ३० लाख सशस्त्र सैनिक हैं। तीसरी पंच वर्षीय योजना पर १९०० करोड़ रुपये व्यय होंगे।

इस वर्ष भारत बाहर से चावल नहीं मंगाएगा। ४॥ लाख टन गेहूं मैंगनीज के बदले में अमिराका से आएगा।

लोक सभाका वजट अधिवेशन ९ फरवरी से शुरू हो रहा है। रेलवे वजट १९ फरवरी को पेश होगा।

भारत के रक्षा मन्त्री श्री कृष्ण मेनन ने पाकिस्तान को चेतावनी दी है कि यदि पाकिस्तानी सेना ने सोमोल्लघन की मुखता को तो उसे खरिद दिया जाएगा।

★ शिक्षा विभाग का
नया सरकुलर
पंजाब शिक्षा-विभाग
द्वारा प्राईवेट रिकेगना-

सम्पादकीय विचार

इज्ड स्कूलों के नाम एक सरकुलर जारी किया गया है। इसमें कहा गया है कि भविष्य में हरिजन छात्रों की आधी फीस सरकार देगी और आधी वे स्वयं दें। अब तक स्कूलों को हरिजन छात्र छात्राओं की पूरी फीस सरकार द्वारा हरिजन वेलफेयर स्कीम अन्तर्गत दी जाती रही है अतः यह सरकुलर प्राईवेट स्कूलों के लिए नई आर्थिक कठिनाई पैदा कर देगा। कई स्कूल ऐसे हैं जिन में हरिजन छात्रों की संख्या अन्य छात्रों की अपेक्षा कहीं अधिक है। ऐसे स्कूलों का व्यय सरकार द्वारा दी जाने वाली सहायता से ही चलता है। यदि यह सहायता आधी रह जाए तो ऐसे स्कूलों के लिए खर्च पूरा करना असम्भव हो जाएगा। यदि सरकार द्वारा यह सरकुलर वापिस न लिया गया तो भय है कि बहुत से प्राईवेट स्कूल बन्द हो जाएंगे, जिसके फल स्वरूप सैकड़ों अध्यापक बेकार हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त शिक्षा के ध्येय को भी हानि पहुंचेगी। आशा है कि शिक्षा विभाग अपना यह सरकुलर वापिस ले लेगा।

★ शिक्षा शास्त्रियों की भूलें ★

हायर सैकण्डरी स्कीम के अनुसार वह छात्र जिसने पंजाबी माध्यम में परीक्षा दी हो पंजाबी को इलैक्टिव विषय के तौर पर नहीं ले सकता। उसे इसके स्थान पर हिन्दी सीखनी होगी। यही स्थिति हिन्दी माध्यम में परीक्षा देने वालों की है। उन्हें हिन्दी को इलैक्टिव विषय के तौर पर लेने की मनाही है। उन्हें इस इसके स्थान पर पंजाबी सीखनी होगी। इस

प्रकार छात्र-छात्राओं को हिन्दी या पंजाबी भाषा पर अधिकार प्राप्त किए बिना शिक्षा का माध्यम

बनाने पर विवश होना पड़ेगा। यह तो गाड़ी के पीछे घोड़े को जोतना है। आश्चर्य है कि शिक्षा विशेषज्ञों ने ऐसी व्यवस्था कैसे कर दी ?

इस योजना में अंग्रेजी के सम्बन्ध में भी एक विचित्र बात नोट करने योग्य है। एक परीक्षार्थी को जो इलैक्टिव विषय के तौर पर अंग्रेजी में परीक्षा देता है, उसे एलामेंटरी इंग्लिश की परीक्षा देनी होगी, जब कि यह प्रश्न पत्र उन परीक्षार्थियों के लिए होना चाहिए था जिन्होंने मिडल बिना अंग्रेजी के पास किया हो। क्या आशा की जाए कि इन भूलों का शीघ्रति शीघ्र सुधार कर दिया जाएगा ?

★ संस्कृत कमिशन की सिफारिश ★

संस्कृत कमिशन ने अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की है कि विभिन्न राज्यों में हिन्दी के अनिवार्य रूप में पढ़ाए जाने के प्रश्न पर जो मत भेद है उस का अन्त करने के लिए हिन्दी की बजाय संस्कृत को अनिवार्य रूप में पढ़ाये जाने की व्यवस्था कर दी जाए। भारत सरकार ने इस सुझाव को नहीं माना क्योंकि हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा है अतः उसकी जगह संस्कृत नहीं ले सकती। यह उचित ही है किन्तु संस्कृत को अंग्रेजी के स्थान पर ५वीं कक्षा से अनिवार्य कर देने का सुझाव दिया जाता तो अधिक युक्ति युक्त होता।

“प्रकाश” वास्तवमें प्रकाश है!

जिस स्कूल के पुस्तकालय में “प्रकाश” नहीं वह पुस्तकालय विद्यार्थियों को प्रकाश प्रदान करने में अधूरा है। —शुगनचन्द केरव बी.ए.बी.टी. हैडमास्टर गवर्नमेंट स्कूल जूडला करनाल

मनुष्य ने अब तक क्या है और भविष्य में क्या करेगा ?

पृथ्वी पर मानव जीवन दो महान् परिवर्तन के कालों का सामना कर चुका है। पहला परिवर्तन उस समय हुआ, जब पृथ्वी पर ऐसी संघटित व्यवस्था प्रारम्भ हुई, जो वातावरण से बहुत कुछ स्वतन्त्र रहते हुए अपने आप को कायम रख सकती थी तथा अपना पुनर्निर्माण कर सकती थी। दूसरा परिवर्तन जीव-रासायनिक क्रिया के विकास काल में आया। इस के फलस्वरूप फोटो सिन्थैसिस व्यवस्था तथा जीवित कोषों में परिवर्तन की क्रिया शुरू हुई। मनुष्य, अधिक सच तो यह है कि समस्त जीवन-प्रवाह इन परिवर्तनों से फला फूला और पनपा। इन से उस में आत्मरक्षा की शक्ति की अभिवृद्धि हुई तथा अपने आप को परिस्थिति के अनुरूप ढाल लेने की नई शक्ति पैदा हुई। इस समय एक तीसरा महान् परिवर्तन सम्मुख है।

क्या वर्तमान परिवर्तन भूतकाल के परिवर्तनों से मुख्य रूप में भिन्न है ? २ अरब वर्षों के धैर्यपूर्वक किए गए जीवित कोषों सम्बन्धी परीक्षणों के परिणाम स्वरूप मनुष्य की सृष्टि हुई है। भौगोलिक काल के हिसाब से मनुष्य की सृष्टि हुए अधिक समय नहीं हुआ। फिर भी आज मनुष्य इतना शक्तिशाली हो गया है कि अपनी सभ्यता और यहां तक कि अपने समस्त वंशजों तक का विनाश करने में समर्थ है। कुछ दिनों बाद वह इतना शक्तिशाली भी हो सकता है कि समस्त जीव यहां तक कि पृथ्वी का भी विनाश करने में समर्थ हो जाए। ऊपरी तौर पर यद्यपि अपने उत्तरदायित्व तथा साथ ही अपने विनाश का कोई चिन्ह मनुष्य प्रकट नहीं करता, फिर भी डर उसकी हड्डियों तक में

समा गया है। सम्भवतः यह उसकी रक्षा कर सके।

चूंकि सामग्री तथा शक्ति परिवर्तित हो सकने वालो वस्तुएं अधिकाधिक सिद्ध होती जा रही हैं, इस लिए हमारी तात्कालिक समस्या शक्ति के स्रोत हैं। तेल और कोयले ने मनुष्य को यान्त्रिक जीवन-व्यवस्था के प्रति आकर्षित कर लिया है। मनुष्य के इस जीवन से अभ्यस्त होने से पूर्व ही इन दोनों वस्तुओं की समाप्ति हो जाएगी। फिर भी इस बीच आणविक न्यष्टि में विद्यमान ऐसी शक्ति पर नियन्त्रण प्राप्त करने की एक विधि हमने खोज ली है। इसके अतिरिक्त सूर्य से भी सदा शक्ति का प्रवाह होता रहता है। यह सत्य है कि यूरेनियम और थोरियम के भण्डार अत्याधिक सीमित हैं; किन्तु हम यह बात जानते हैं कि हर प्रकार के द्रव्य की बनावट में इसी प्रकार की हजारों गुना शक्ति विद्यमान है। मनुष्य १० लाख वर्ष से पृथ्वी पर विद्यमान है। इसमें से आधा समय उसने ओजार बनाते ही बिताया है। पिछले ३०० वर्ष में ही उसने कुछ ऐसे कार्य किए हैं; जिन्हें वैज्ञानिक यान्त्रिक प्रगति का नाम दिया जा सकता है। अणुशक्ति के अस्तित्व का पता तो उसे पिछले ६० वर्ष से भी कम काल में लगा है। पिछले १८ वर्ष में वह इस शक्ति को केवल एक ही तत्व से बहुत कम मात्रा में तथा न्यून दक्षता से प्राप्त करने में सफल हुआ है। संक्षेप में मनुष्य और उसके वातावरण का सम्पर्क अनेक प्रकार की इन्द्रियों से होता है ये इन्द्रियां स्मृति और निर्णय केन्द्र तक सूचनाएं पहुंचती हैं। आदेश संकेत प्रसारित करने वाली स्नायुओं द्वारा भेजे जाते हैं।

रूसमें शिक्षा और काम साथ-साथ चलते हैं !

[लेखक श्री पी० निकितन]

रूस की आर्थिक तथा सांस्कृतिक सफलताओं का श्रेय बहुत कुछ सोवियत विद्यालय को है। विद्यालय को जीवन के निकट लाने के प्रश्न पर तथा जनता की शिक्षा की सोवियत पद्धति को भविष्य में और भी उन्नत करने के बारे में भी विचार किया जा रहा है।

सोवियत संघ में ५ करोड़ से अधिक जन विभिन्न विद्याओं का अध्ययन कर रहे हैं। अकेले सन् १९५८ में ही १६ लाख तरुण छात्र और छात्राएं माध्यमिक साधारण विद्यालयों में पढ़ कर निकले।

रूस में इस बात का पूरा २ ध्यान रखा जा रहा है कि वहां के मजदूर दफ्तरों के कर्मचारी और सामूहिक कृषि शालाओं के किसान बिना अपना काम छोड़े या उसमें किसी विघ्न-बाधा के आए बगैर ही अपना मनपसंद पढ़ाई करते रह सकें। इसके लिए स्थान-स्थान पर सांध्यकालीन, साधारण विद्यालयों तथा पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा देनेवाले विद्यालयों, उच्च-तर तथा विशेष माध्यमिक शिक्षण संस्थाओं का और विभिन्न पाठ्यक्रमों का जाल सा बिछा हुआ है। पिछले महायुद्ध के समय जो विद्यालय, कारखानों के तथा ग्रामों के नौजवान श्रमिकों के लिए खोले गए थे वे आजकल बड़े जनप्रिय हो रहे हैं। इनमें २० लाख के लगभग ऐसे श्रमिक और किसान पढ़ रहे हैं जो पढ़ाई के साथ साथ नौकरियां या अपना काम भी कर रहे हैं।

नौजवानों के लिए ये सांध्य विद्यालय जब से खुले हैं तब से ही राज्य उनके विकास

तथा उन्नति की ओर विशेष ध्यान देता आ रहा है। अन्य तमाम विद्यालयों की तरह इनमें भी शिक्षा निःशुल्क ही है। इनमें पढ़ने वाले छात्रों को परीक्षा के दिनों में खास सवेतन छुट्टियां दी जाती हैं। समस्त उद्योगों व कल-कारखानों के प्रबन्धकों को सरल आदेश दे रखे हैं कि वे इन विद्यार्थियों से नियत समय से अधिक काम न लें।

ये विद्यालय जनता के सांस्कृतिकस्तर को ऊंचा उठानेमें महान् योग दे रहे हैं। मास्को लेनिनग्राद, स्वर्दलीव्स्क तथा अन्य नगरों के अनेक कलकारखाने ऐसे सैंकड़ों दक्ष इंजिनियरों को अपने यहां नियुक्त किए हैं जिन्होंने नौकरी करने के साथ साथ शिक्षा प्राप्त की।

सरकार ने माध्यमिक विद्यालयों और महाविद्यालयों के पुनर्गठन के लिए जो योजना-प्रारूप बनाया है उसमें इस बात पर जोर दिया है कि तरुण मजदूरों के विद्यालयों को और भी उन्नत किया जाएगा। उनमें पढ़ने वाले नौजवानों के लिए हर तरह की उपयुक्त सुविधाजनक परिस्थिति का प्रबन्ध किया जाएगा। यह व्यवस्था की गई है कि अनेक बातों के साथ साथ उनके काम के घण्टे कम कर दिए जाएं या सप्ताह में उन्हें २-३ दिन का अवकाश दिया जाया करे।

काम बिना छोड़े विशेष माध्यमिक तथा उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था साधारण शिक्षण व्यवस्था के समान ही बड़े पैमाने पर चल रही है। गत कुछ वर्षों में ही १०० से अधिक माध्यमिक विद्यालय तथा सांध्य-

विद्यालय एवं महाविद्यालय खोले गए हैं।

सोवियत जन-संगठन, और उद्योगों के अध्यक्ष तथा शासक इस तरह के शिक्षण पर बहुत अधिक ध्यान दे रहे हैं। मास्को का लिखाचव मोटर-कारखाना इसका बड़ा अच्छा उदाहरण है। इस कारखाने के २५०० मजदूर तथा दफ्तर के कर्मचारी, मोटर मिकेनिक्स और इन्जिनियरिंग महाविद्यालय तथा अन्य प्राविधिक विद्यालयों के संध्याकालीन विभागों में पढ़ रहे हैं। वहां प्रशिक्षण के साथ-साथ छात्रों को सलाह-मस्विदा भी खास तौर से दिया जाता है। उच्चकोटि के सुदक्ष मजदूरों को इस तरह कारखानों की मशीनों पर प्रशिक्षित किया जाता है।

वर्तमान समय में सोवियत संघ में ३५ लाख से अधिक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपना काम भी कर रहे हैं और साथ-साथ बाकायदा पढ़ाई भी कर रहे हैं। उनमें से ९५०००० व्यक्तियों ने सांध्य एवं पत्र-व्यवहारीय महाविद्यालयों में दाखिला लिया है। सन् १९५८ में कुल ८०००० व्यक्तियों ने इस तरह अपनी उच्चतर शिक्षा पूरी की।

उच्चतर या विशेष माध्यमिक शिक्षा प्राप्त ७५ लाख के करीब विशेषज्ञ, वर्तमान काल में, राष्ट्रीय अर्थतन्त्र को तमाम शाखाओं में नियुक्त हैं। क्रांतिपूर्व के रूस में काम करने वालों की संख्या से यह संख्या ६३ गुना से भी अधिक है।

जनता की शिक्षा पद्धति के भावी पुनर्गठन के परिणामस्वरूप माध्यमिक तथा उच्चतर शिक्षण संस्थाएं जनता को शिक्षित करने में और अर्थतन्त्र, विज्ञान, और संस्कृति की तमाम शाखाओं में उच्चकोटि के सुदक्ष व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण योग देगी।

रूसी कास्मिक राकेट

रूस ने २ जनवरी १९५९ को विश्व के प्रथम अन्तरिक्ष राकेट को सफलतापूर्वक छोड़ा। यह कार्य विज्ञान की दुनिया में अपूर्व घटना है। इस घटना ने सारी दुनिया को बता दिया है कि रूस ने राकेट-विज्ञान और इंजिनियरिंग की अन्य शाखाओं के विकास कार्य में कितनी प्रगति की है। इस राकेट का छोड़ा जाना निश्चय ही मानव द्वारा महाव्योम की विजय के लिए एक नए मार्ग को आलोकित करेगा।

अन्तरिक्ष राकेट की अंतिम मंजिल का वजन ईन्धन के बगैर १४७२ किलोग्राम है। यह विशेष प्रकार के डब्बे से लैस है जिसमें मापक यन्त्र है। चन्द्रमा के चुम्बकीय क्षेत्र का और उसकी रेडियो तेजस्क्रियता का पता लगाने पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र के पास ब्रह्मांड किरणों की तीव्रता और परिवर्तनों का अध्ययन करने, ब्रह्मांड तेजस्क्रियता में भारी बीजाणुओं के वितरण का तथा अन्तःनक्षत्रीय पदार्थ के गैस संघटकों का पता लगाने और उल्का कणों का और सूर्य की कणिका तेजस्क्रियता का अध्ययन करने के लिए ये औजार विशेष रूप में तैयार किये गए हैं। उनसे मिलने वाले तथ्य अत्यन्त उपयोगी होंगे तथा वे अब तक रहस्य बनी हुई समस्याओं पर काफी प्रकाश डालेंगे।

राकेट में अलग-अलग फ्रीक्वेंसियों पर काम करने वाला रेडियो ट्रांसमिटर है। इनसे पृथ्वी के पर्यवलोकन केंद्रों की वैज्ञानिक तथ्य मिले और राकेट की गति के पैरामिटर्स (परिमितियों) को नापना मुमकिन हुआ। राकेट में सोडियम बादल (कृत्रिम कामेट) का निर्माण करने वाला एक विशेष उपकरण भी है।

वैज्ञानिक और मापक यन्त्रों, और शक्ति-स्रोतों तथा विशेष प्रकार के डब्बे का कुल वजन ३६१.३ किलोग्राम है।

मापक यन्त्र के नतीजे खुदबखुद समन्वय संगणक केन्द्र कौ पहुँचे हैं। संगणक मशीनें उन का विधायन करती हैं। इस तरह इस अन्तरिक्ष राकेट की गति से सम्बन्धित तथ्य प्राप्त किये जाते हैं।

अन्तरिक्ष राकेट गुस्त्वाकर्षण से बाहर जाने वाला पृथ्वी का प्रथम पिंड है। उससे सोवियत राकेट विज्ञान का उच्च स्तर निर्णायक रूप में सिद्ध हो जाता है।

राकेट की गति इतनी तेज थी कि उसे चन्द्रमा की गुस्त्वाकर्षण शक्ति नियंत्रण नहीं कर सकी, इस लिए वह चन्द्रमा से आगे बढ़ते हुए अपने अण्डाकार कक्ष पर बढ़ गया ताकि प्रथम मानव निर्मित ग्रह का स्थान ग्रहण कर सके। अन्तरिक्ष राकेट ज्यों-ज्यों पृथ्वी और चन्द्रमा से आगे बढ़ता जा रहा है उसकी उड़ान पर उनका प्रभाव कम होता जा रहा है और उसकी उड़ान बहुत हद तक सूर्य की गुस्त्वाकर्षण शक्ति से निर्धारित होगी। वह सौरमंडल के अन्दर ब्रह्माण्ड अवकाश में अपनी उड़ान जारी रखेगा। वह ३४ करोड़ ३६ लाख किलोमीटर की दीर्घतम व्यास वाली कक्षा पर परिक्रमा पूरी करने में उसे लगभग १५ महीने लगेंगे।

समन्वय संगणना केन्द्र के आरम्भिक तख्तीनों के मुताबिक मानव निर्मित ग्रह की कक्षा लगभग गोलाकार जैसी होगी और उस की केन्द्र-च्युति ०.१४८ होगी। उसकी अनुप्रस्थ घुरी पृथ्वीके साथ १५ डिग्री का कोण बनायेगी और उसकी कक्षा का तल पृथ्वी की कक्षा के तल से प्रायः मिल जाता है।

दिशा बदल दो !

(श्री आनन्द प्रकाश)

किरन परी सन्देश जागरण का ले आई

वक्त नहीं है मधु मल्हारों के गाने का,
निरी कल्पनासे अपना मन बहलाने का।

उठो किवाड़ें खोलो निज आलस काराकी
दिशा बदल दो इन इतिहासकी धाराकी।

श्रम अधिनायकके माथेपर तिलक लगाओ
श्वेत विदु का श्रम देवीको अर्घ्य चढ़ाओ

तुम्हें पाटनी गहन विषमताओं की खाई
श्रम सीकर से जन कल्याणी को बहलाओ

शंख बजाओ नए जागरण के स्वागत में
वक्त नहीं बन स्वप्न नयनमें मंडराने का

पाकर सहज थपकियां पीकी सो जाने का
बीत गया जो उसके वैभव को क्या रोना

नहीं अर्थ कुछ आगत के स्वप्नों में खोना
तुम पोंछो इस वर्तमान की गीली पलकें

और नहीं अब इन आंखों में आंसू छलकें
भू को दो वरदान गीत जीवन के गाए

शोषणकी कट गिर जाएं बल खाती पलकें
हुलसे मन जनजीवन का नव जीवन पाकर

वक्त नहीं है दर्पण में लख इठलाने का
पाप वासना की लहरों में खो जाने का

कहीं बीत न जाए यह घर आई बेला
कहीं लुट न जाए स्वर्णिम किरणोंका मेला

उठो धरा के पुत्रो अपनी आंखें खोलो
उठो न मुसकानों के बदले आंसू तोलो

तुम प्रतीक हो परिवर्तन के आवर्तन के
उठो न स्पन्नों की गठरी और टटोलो

जागो चेतना भर दो जग के आंगन में
वक्त नहीं बीती भूलों को दोहराने का

शोषे आदमियों को धरती पर लाने का

बच्चों की शिक्षा की प्राथमिक बातें

[श्री काशीनाथ त्रिवेदी]

जिस प्रकार बच्चा अपना एक स्वतन्त्र जीवन-कार्य लेकर हमारे बीच आता है, उसी प्रकार अपने उस जीवन कार्य की सिद्धि के लिए उसको आरम्भ से ही घर में कुछ बुनियादी बातोंकी जरूरत रहती है। जानकारोंका कहना है कि बच्चा अपने लिए स्वतन्त्रता चाहता है, स्वावलम्बन चाहता है और अपनी रुचि, मर्जी तथा स्फूर्ति से काम करनेकी अनुकूलता चाहता है। इसलिए बचपन से ही उसे इन तीन बातों की भूख रहती है। यदि घर के बड़े बूढ़े उसकी इस सहज भूख को पहचान कर उसे अपने ढंग से बढ़ने, और काम करने का मौका दें तो उससे बच्चे का जितना अच्छा और मजबूत विकास होगा उतना दूसरे किसी से हो नहीं सकेगा। आज हमारे घरों में बच्चों को काम करने की स्वतन्त्रता नहीं होती। हम में से बहुतों को इस बात का ज्ञान भी नहीं है कि बच्चों को बचपन में स्वतन्त्रता की बड़ी तगड़ी भूख रहती है। हम बच्चे के मन की भावनाओं को जान नहीं पाते, जानने की कोशिश नहीं करते, जानना जरूरी है—इसका हमें ध्यान भी नहीं रहता। इस कारण अनजाने ही हम बालकों के साथ ऐसा वर्तन करते हैं जो उनको सुख पहुंचाने के बदले दुखी बनाता है। उनके सहज विकासमें रुकावट पैदा करता है, और उनके खिले हुए दिल को मुरझा देता है। बच्चा तो भगवान के घर से ही भगवान की ही कई विभूतियां लेकर हमारे घर में आता है। उसे काम करना अच्छा लगता है। अपने भरोसे जीना अच्छा लगता है। वह स्वभाव से दयालु होता है।

उसके मन में किसी के लिए कोई भेदभाव नहीं होता। वह अपने पराये सबके साथ एक साथ व्यवहार करता है। ऊंच नीच, अमीर गरीब, छोटा बड़ा, मालिक नौकर वगैरह के जो कई भेद आज बड़ों की ना समझी से समाज में मौजूद हैं, बच्चों के मन पर उसका कोई असर नहीं होता। बच्चे सब को अपना समझते हैं और सब के साथ प्रेम से रहना चाहते हैं। यह उनका सहज स्वभाव ही होता है। यदि हम अपनी तरफ से उनपर पाबंदी न लगाएं और उन्हें ऊपर बताए भेदों का पाठ न पढ़ाएं, तो वे अपनी राजी-मर्जी से किसी के साथ कोई भेद या फरक करना पसंद नहीं करेंगे। बच्चे तो पशुओं पक्षियों और पेड़ पौधों से भी स्नेह का नाता जोड़ने के लिए उतावले रहते हैं। इसमें उनको सहज रुचि रहती है। जन्म से वे निर्भय और निर्मल हो होते हैं। उनके मन में छल कपट और राग द्वेष की बातें तो आगे चल कर बड़ों के असर से पैदा होती हैं। नहीं तो बच्चा अपनी तरफ से किसी को दुश्मन नहीं मानता। वह तो सांप और बिच्छू जैसे जहरीले जानवरों से भी खेलने के लिए तैयार रहता है। उसे उनका भी कोई डर बाद में पैदा होता है। इस तरह जो ऊंचे और बहुत जरूरी गुण बच्चा अपने साथ भगवान के घर से लाया होता है, यदि अपने घरों में हम समझदारी के साथ उन गुणों के विकास की अच्छी व्यवस्था करके रखें तो हमारे बच्चे आज से कहीं ज्यादा सद्गुणी, सदाचारी और सज्जन बन सकते हैं।

(शेष सफा १५ पर)

★ ज्वाला ★

(श्रीमती पुष्पा महाजन)

गांव की पंचायत के समक्ष एक विकट समस्या खड़ी थी। बड़ा संगीन अभियोग था। ताराचन्द ने अपनी पत्नी पर कुलटा होने का आरोप लगाया था। गांव के विधान के अनुसार यह अपराध सचमुच क्षम्य नहीं, क्योंकि इस से समाज में व्यभिचार फैलने का आशंका था। वहाँ बेटियाँ जब विशृंखल हो जायें तो लोक-मर्यादा का नाश हो जाता है। इसलिये यह विषय विचारणीय है, फिर यह अभियोग साधारण व्यक्ति का नहीं। ताराचन्द की एक बड़ी कपड़े की दुकान गांव में है। अच्छा खाता पीता है। पचास वर्षके लगभग होजाने पर भी खाने पहिनने के शौकीन हैं। दोपहर को उन के यहां ताश जमती है। बड़े मिलनसार हैं। धर्म-कर्म में भी उन की रुचि है। प्रति पूर्णिमा को उनके यहां सत्यनारायण की कथा होती है। गांव के चौराहे पर उन्होंने पुण्यार्थ एक नलका भी लगा दिया है ताकि पथिकों के तृप्त हृदय के आशीर्वाद से उनका परलोक सुधरे। सो ऐसे गण्य मान्य आदमी की बात भूटी नहीं हो सकती। उन की पत्नी अवश्य ही कुलटा है। नहीं तो पति हो कर पत्नी पर कलंक लगाना अपने मुख पर स्वयं कालिख पोतना है। इसलिए पंचायत आज सतर्क होकर निर्णय देना चाहती थी। पंचायत के मुखिया रामदयाल थे। संसार देखे हुए, उनकी एक गर्जनाही अपराधियों पर आतंक जमा देतो। पंचायत इस विषय में सावधान थी कि नीर-क्षीर विवेचन हो। तो भी प्रमाण मिले बिना अभियोग प्रमाणित करना असम्भव था सो प्रमाण देने

के लिए ताराचन्द घरेलू नौकर और बर्तन साफ करने वाली महरी लाये थे। उन्होंने ऐसी चतुराई से प्रमाणित किया कि पंचायत को विश्वास करना ही पड़ा कि सच ही अभियुक्ता पड़ोसी युवक मुनील से प्रेम-सम्बन्ध स्थापित किए है। युवक प्रायः ताराचन्द की अनुपस्थिति में उनके यहां जाता है। वह कुलटा स्त्री उससे हंस-हंस कर बातें करती है—सुन कर सब लोगों के तन बदन जल उठे। ऐसी कुलटा गांव के लिए कलंक है। छिः ऐसी स्त्री का मुख देखना घोर पाप है। दण्ड सुना दिया गया—‘त्याग’। निर्णय देकर पंचायत उठ गई। ताराचन्द अहंकार से मूँछें मरोड़ते उठे... अब सीधी हो जाएंगी। सब रंगीनियां हवा हो जाएंगी। वह जानते थे कि मैंके या ससुराल में कोई आश्रय देने वाला नहीं। जाएगी कहां? यौवन की मस्ती दिखाती थी ऊंह.....

संध्या जब सृष्टि के आवरण पर धूमिल रेखाएं अंकित कर रही थी, तब ताराचन्द की अभागिनी स्त्री रसोई घर के धूमिल वातावरण में व्यस्त थी। चूल्हे पर दाल चढ़ाये वह आटा गून्ध रही थी। वह बार बार फूंक मार कर आग जलाती और वह बुझ जाता। नेत्र उसके रक्षित हो रहे थे। क्षोभ से भर उठी वह, किंतु नहीं जानती थी कि दुर्दैव उसके लिये भी अन्धकार और धुएं जैसा सन्देश ला रहा है। नाम उसका चन्दा था। उसके सौंदर्य के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि वह नाम को सार्थक करती थी। “भाभी, ओ भाभी” ! पुकार आने पर वह क्षब्ध सी उठी। गौरी आंगन में खड़ी पुकार रही थी। गौरी सरपंच रामदयाल की पुत्री थी। अच्छे घर में ब्याही थी। चन्दा के अतुल रूप रंग, हाव भाव पर सुग्घ हो कर उसे सखी बना लिया तो भी जाता तो भाभी का

था। इसलिए वह भाभी ही पुकारती थी और जब चन्दा ने दीदी कहना चाहा तो रुठ गई। मचल कर कहा—‘नहीं भाभी गौरी’—दीदी मैं बड़प्पन तो था, अपनत्व नहीं तब से चन्दा स्नेह से उसे गौरी ही कहती थी।

गौरी ने देखा, चन्दा आटा सने हाथों से उठ आई है। उसका विहंसता मुख देख कर गौरी और भी विह्वल होगई। वह जा समाचार उसे कहने आई है, उसे सुनकर चन्दा को क्या दशा होगी, इस विचार से ही वह दुखी हो उठी। उसने चन्दा के गौरवर्ण विशाल भाल पर सौ-भाग्य-सिंदूर भरी मांग, वे घनी बरौनियों के नीचे मचल रही काली पुतलियां और वे मृदु-स्मित रंजित अधर। गौरी किंकर्तव्य विमूढ़ हो गई। चन्दा ने कभी गौरी को ऐसे नहीं देखा था वह सदा नाचती कूदती ही आती थी। आते ही चन्दा से लिपट जाती थी। स्नेह विनिमय के वाद दोनों घुलमिल कर बातें करतीं। आज यह अभिनय कैसा ? कौतुहल मिश्रित स्वर में पूछा—‘क्या है गौरी ?’

गौरी फिर भी उत्तर न दे सकी। शब्द अधरों तक आकर पुनः भीतर ही रह जाते। चन्दा ने आग्रह से पूछा—‘बोल न गौरी।’

गौरी ने रुन्वे कण्ठ से कहा—‘समाज ने तुम्हें अधिकार-हीन कर दिया भाभी।’

चन्दा समझ नहीं सकी इन शब्दों को फिर भी अनिष्ट की सूचना तो उसने जान ली उसका साहस जात रहा—‘गौरी बहिन पहेलियां न बुझवा, कल से अधिकार मुझे मिले, जो समाज ने छीन लिये।’

गौरी ने अवरुद्ध कण्ठ से सारी बातें कह सुनाई। चन्दा ने जैसे आकाश से गिरी। यह स्वप्नातीत था। वह कुछ दिनों से पति के तेवर देख रही थी। वह रुखा व्यवहार, यहाँ तक कि

उसके कर्तव्य में तो कोई ढील नहीं। नियतित रूप से वह गृहस्थी चला रही है। पति को लोक व परलोक का सर्वस्व समझती है। अपने संस्कारों को वह पलट नहीं सकती। माने सोता सावित्री की कहानियां सुना २ कर हिंदू नारी को पति परायणता की जो छाप उसके हृदय पर अंकित कर दी थी वह अमिट है। तो भी पड़ोस के सुनील के संसर्गसे जो जीवन में नवीन अनुभूति का आगमन हुआ उसे वह अस्वीकार नहीं करती। गांव का नाता है। वह देवर है वह भाभी दोनों में हास परिहास होता है। आज उसी सुनील को लेकर जब भरी सभा में उसे कलुष लग गया तो वह तड़प उठी।

गौरी ने देखा उसके मस्तक पर शीतल स्नेह कग झलक आये थे, क्षोभ से नासिका के अग्रभाग फड़क रहे थे। बड़े बड़े नेत्र जैसे पत्थरा गये थे। कंधे से थाम कर कहा—‘भाभी ! सचेत होओ, मन छोटा न करो’—गौरी ने चाहा, चन्दा खुल कर रो पड़े। उसके मन की आग बाहर निकल आये परन्तु चन्दा रोई नहीं। वह शांत हो गई। सूखते अधरों को आर्द्र कर वह बोली ‘गौरी तुम तो सब जानती हो, एक काम करोगी बहिन ?’

‘क्या ?’ कौतुहल से गौरी ने पूछा।

‘पहले कहो करूंगी।’

‘करूंगी।’

‘वचन दो।’

‘कैसी बातें करती हो। मुझ पर अविश्वास न करो। जो कहो, करूंगी।’

‘वचन दो’—गौरी ने अपना हाथ चन्दा के हाथ पर रख कर कहा—‘रहा वचन पक्का।’

कुछ क्षण रुक कर चन्दा ने कहा—‘पंचायत का निर्णय अधूरा है। मुझे कल पंचायत में

‘क्यों ?’

‘मैं अपना स्पष्टीकरण दूंगी। आज तक जो घुट घुट कर मैंने समाज की आग का धूआं सहा है, उसे कहूंगी।’

‘किन्तु भाभी ?’

‘किन्तु-विन्तु कुछ नहीं—

‘भाभी, गांव की कोई स्त्री आज तक पंचायत में नहीं गई।’

‘इसी लिये जाना चाहती हूं। आज तक स्त्री की कोई पुकार समाज के कर्णधारों तक नहीं पहुंची। वह पुरुषों की पंचायत है न, जहां पुरुष स्वच्छन्द वातावरण में असामाजिक, अवैधानिक, अप्राकृतिक अपराध करने पर भी क्षम्य है और नारी अपनी अनुभूतियां, भावनाओं का बलिदान करने पर भी दण्डनाय है।’

गौरी उस अचल मूर्ति के सन्मुख झुक गई। कोमल नारी जैसे समस्त विद्रोही शक्तियों के विरुद्ध तन बैठे हो। उसने मान लिया कि वह चन्दा को पंचायत में ले जाएगी।

शाम को जब ताराचन्द घर आए तो पासा ही पलटा देखा। नित्य की भांति चन्दा ने मुस्कान के फूल बरसा कर उनका स्वागत न किया। एक अभूतपूर्व सन्नाटा सर्वत्र छा रहा था। रसोई-घर का प्रदीप भी शांत था। मन में खटका हुआ, चन्दा कहां गई, किन्तु चन्दा गई नहीं थी। रुठ कर चारपाई पर पड़ी थी। वास्तव में ताराचन्द ने केवल उसे भयाक्रांत करना चाहा था। वे जानने थे, पुरुष-पुरातन की वधू प्रायः चंचल होती है। तो भी सुनील से चन्दा का हंसना बोलना उन्हें अच्छा नहीं लगा। गत चार वर्षों में चन्दा ने उनकी सेवा क्रीतादसी की भांति की थी। समयानुसार भोजन, वस्त्र, सुख और आनन्द सभी की सुव्यवस्था वह करती थी, किन्तु पत्नी सुलभ

प्रणय और आनन्द वे कभी प्राप्त नहीं कर सके। निस्सन्देह वह उनके इंगित पर कठपुतली की भांति नाचती है। फिर भी सुनील के सन्मुख स्वच्छन्द भाव से वह जो मुस्कराती है उसने पति के हृदय में विष-वृक्ष बोया हो नहीं, संदेह ईर्ष्या के फूल भी उसमें निकल आए। द्वेष के शूलों ने चुभ चुभ कर उनके हृदय को छलनी कर दिया तो पंचायत के सन्मुख अपनी व्यथा कहने को वे विवश हो गये।

घर में कोप शय्या देख कर वे मन ही मन हंसे। सोच रहे थे, चन्दा अब उठ कर पांवों पर गिर जाएगी। अश्रु कणों से उन्हें भिगोती हुई क्षमा मांगेगी और आश्रय को भोख चाहेगी किन्तु यह सच नहीं हुआ। न तो चन्दा उठी न गिड़गिड़ाई। नारी के मानस में होने वाला प्रतिक्रिया से ताराचन्द अनभिज्ञ थे। मन ही मन ऐंठ कर रह गये। पेट में चूहे जो कूद रहे थे उसका प्रतिकार भी तो...। खीज कर पुकारा ‘चन्दा !’ ‘भोजन रसोई में है खा लो।’—वहीं लेटे लेटे चन्दा ने उत्तर दिया।

‘ऐं। यहां तो भीता सी ध्वनि नहीं ! यह दृढ़ता-पूर्ण आवाज है। खिन्न मन से रसोई में गये। दीपक जलाया। खाने बैठे तो दो कौर भी निगल न सके। इस प्रकार ठण्डा खाने का अभ्यास न था। थालो छोड़ी और उठ आए। वात चलाने का बहाना ढूँढने लगे और कुछ न सूझा तो पूछ बैठे—‘यहां क्यों पड़ी है।’

क्षोभ से चन्दा ने उत्तर दिया—‘क्या यहां पड़ने की आज्ञा भी नहीं है?’

ताराचन्द भी भड़के—‘हां नहीं है। पंचायत ने तुम्हें त्यागने...’

‘हां सुन चुकी हूं।’

कैसे धीमे से कह दिया, ‘सुन चुकी हूं।’

‘ठीक तो है तुम जैसी चरित्र-हीना को

घर में कौन रखे?’

चन्दा क्रन्दन कर उठी—‘क्यों पाप बोलते हो, मैं चरित्रहीना हूँ?’ ताराचन्द ने धाव पर नमक छिड़क कर कहा—‘ऐसा निर्लज्ज नहीं हूँ कि देख सुन कर चुप रहूँ। सुनील की कहानियाँ तो गांव की जिह्वा पर हैं।’

‘मेरे पीछे सुनील को बदनाम न करो। जानबूझ कर मुझपर कलंक लगाते तुम लज्जित नहीं हुए। क्या तुम नहीं जानते, वह कैसा है?’

किंतु चन्दा की इस व्यथित चित्लाहट से वे घबराये नहीं। इसकी अपेक्षा भी उन्हें न थी। चन्दा को उन्होंने तीन हजार रुपए में खरीदा था। यह उनकी चौथी पत्नी थी। सौभाग्य से पहली दोनों निःसन्तान मर गईं। तीसरी कहीं पूर्व से पकड़ लाए, किन्तु भाग्य विपरीत होने से वह बेचारी विसूचिका से चल बसी। ताराचन्द ने निश्चय किया कि विवाह नहीं करेंगे और वर्ष भर तीर्थाटन करते रहे, किन्तु घर लौटने पर वही समस्या ‘बिन घरनी घर भूत का डेरा’ शून्य घर को देख उनका दिल बैठा जाता था। दोस्त मित्रों ने सम्मति दी कि विवाह कर लो, किन्तु इसी बीच आयु अघेड़ हो चुकी थी। विवाह कैसे हो, सो यह समस्या धन द्वारा हल की गई। वह निर्धन मां बाप की बेटी धन को वेदी पर बलि चढ़ा दी गई। उसकी अनुभूतियों की अग्नि धन का पानी डाल कर बुझाने की चेष्टा की गई तो बाड़वाग्नि की वे उद्दाम लपटें भीतर ही भीतर सुलगती रहीं। तड़प कर चन्दा बोली—‘कलंक तो मुझे उसी दिन लग गया, जिस दिन नाम रख दिया। किन्तु तुम्हारा निर्णय न्याय नहीं है।’

‘मेरा निर्णय नहीं, पंचायत का निर्णय है। मैं कुछ नहीं कर सकती।’

चन्दा फिर नहीं बोली और ताराचन्द भी क्रोध से पांव पटकते चले गए।

दूसरे दिन चन्दा का वेष कुछ विशेष था। आसमानी रंगकी किनारेदार धोती उसने पहनी। भवोंके कुछ कुछ ऊपर गोरवर्ण मस्तकपर सिन्दूर की बिन्दिया खूब मचल रही थी। कजरारे नेत्रों में काजलकी रेखा कुछ लम्बी हो गई थी। आज दर्पण देखने की चाह उसे नहीं। इसलिए सौंदर्य को वह जांच नहीं सकी। तो भी वह अनुभव कर रही थी कि उसकी सुन्दरता की परीक्षा है। उसने सुना था कि सौंदर्य में सम्मोहन है। वह जैसे परीक्षण करना चाहती थी। वह पंचायत के लिए उद्यत थी, किन्तु गौरी अभी नहीं आई। बैठी वह सोचने लगी। स्मृतियाँ जो अतीत की ओर मुड़ीं तो न जाने कितने दृश्य नेत्रों के सम्मुख घूम गए, किन्तु वे सुखद दृश्य। उसने और उसकी सहेलियों ने ‘सीता स्वयम्बर का नाटक खेलना था। वह सीता चुनी गई। फूलों के आभूषण और चम्पई रंग की धोती पहने जैसे ही वह सब के सामने आई तो सभी मुग्ध से रह गये। पास-पड़ोस की स्त्रियों ने मां से कहा—‘तुम्हारी चन्दा राजमहलों की शोभा है। राजरानी बनेगी।’

मां ने हंस कर कहा था—‘भाग्य की बात है बहिन, तब तो वह भी रानी बनने के स्वप्न देखती थी।’

इतने में गौरी ने चौंका दिया—‘उफ भाभी, यह आसमानी रंग बड़ा घातक है।’

चन्दा कटाक्ष से हंसी। उठती हुई बोली—‘चलो गौरी, मैं तो तुम्हारी बाट जोह रही थी—चन्दा ने घूँघट निकाल लिया और गौरी के पीछे हो चली।’

पंचायत में आज जैसे सारा गांव टूट

पड़ा। स्त्री कुछ कहेगी इसलिये कौतुहल वश स्त्रियां भी आई थीं। बेटियां, बहूएं और सास मातायें सभी। सबमें कानाफूसी चल रही थी। घूँघटों के छोर चंचल हो रहे थे। नवौढ़ाएं उत्सुक थीं। वृद्धाएं नारी की निर्लज्जता पर नाक चढ़ा रही थीं। घोर-घोर कलियुग है। पति के विरुद्ध पत्नी भरी सभा में कुछ कहे इस से डूब मरना अच्छा। धर्म कर्म तो कुछ रहा नहीं। वे विस्मित थीं, कैसे बोलेगी। जीभ न झड़ जायेगी उसकी।

पंच लोगों के आ जाने पर चन्दा धीरे धीरे पग रखती आई। उसकी चाल संतुलित थी। मुख घूँघट के आवरण में छिपा था। गोरे गोरे हाथ घूँघट को थामे थे। आसमानी आभा में वे ठीक कमल-युग्म की भांति रम्य लग रहे थे। वह स्थिर भाव से गौरी के साथ खड़ी हो गई। सरपंच चौधरी रामदयाल ने गम्भीर किन्तु अनुशासन-भरे स्वर में पूछा, 'तुम्हारा नाम चन्दा है?' घूँघट के मध्य से सिर हिला कर स्वीकृति दी गई।

“तुम तारा चन्द की पत्नी हो?”

इस प्रश्न का उत्तर भी उपरोक्त ढंग से दिया गया। इसके पश्चात् चन्दा ने गौरी के कान में कुछ कहा। गौरी बोली—“भाभी कहती है, घूँघट में बात करने में वह असमर्थ है। पंचायत मुझे बेटी घोषित करे क्योंकि यह समस्या समस्त बहू बेटियों की है। व्यक्तिगत नहीं!”

यह शब्द सुनते ही उपस्थित जनता में कोलाहल मच उठा। किन्तु सरपंच ने शांत भावसे कहा—“चन्दा सब की बेटी है, घूँघट हटा दिया जाए।”

तारा चन्द क्षोभ से पांगल हो उठा। किसी भले घर की स्त्री गांव के सामने तंग कर विद्रोह कर रही थी। चन्दा पुनः बोली, “मेरे पति ने लांछन लगाया है कि मैं सुनील से प्यार

मुख दिखाए! असम्भव है। वह उत्तेजित हो उठा। किन्तु चौधरी राम दयाल के इस कथन ने—तुम अभियोग उपस्थित कर चुके हो। स्पष्टीकरण सुने बिना न्याय अधूरा रह जाएगा उसे ठंडा कर दिया। मनमारे बैठने के अतिरिक्त और उपाय भी क्या था।

चन्दा ने घूँघट उलट दिया। जैसे भूकम्प आ गया हो। आंधी का एक भोंका जैसे सबको हिला गया हो। मेघ घटा को विछिन्न कर कलानाथ मानो मुस्करा रहा हो। सब मूर्तिवत् स्थिर रह गये। समस्त अनुभूतियां जैसे सन्न हो गईं। हृदय निस्पन्द, नेत्र अपलक रह गए। अद्भुत सौंदर्य दास बन कर चन्दा पर न्योछावर हो रहा था। कहां वह कमनीय कुसुम और कहां तारा चन्द का भुर्रियों भरा चेहरा। समाज के इस अनमेम को देख इन बूढ़ों ने सिर झुका लिया। युवकों ने व्यथित मन से उस अछूते सौंदर्य को देखा। चन्दा ने कहा—“आपने मुझे बेटी कह कर पुकारा है—” उसकी वाणी शतवीणाओं की भांति भंकृत हो उठी—घूँघट हटाने का मेरा तात्पर्य केवल यह है कि समाज अपने अत्याचार को नेत्र खोल कर देखे केवल दरिद्रता के अभिशाप से मेरे जैसी असंख्य कोमल कलियां झुलसने के लिए धन की भट्ट में भोंक दी जाती हैं। मेरे पति ने जो कलम मुझे लगाया है वह मैं नतशीश होकर स्वीकार करता हूं।

‘छि: छि: कुलटा है।’ वृद्धाओं ने मांघ घृणा के मुंह फेर लिया। सुनील हक्का बस सन रहा था। चन्दा किस साहससे कह रही है वह गंवार युवती समस्त शक्तियां संग्रहित कर विद्रोह कर रही थी। चन्दा पुनः बोली, “मेरे पति ने लांछन लगाया है कि मैं सुनील से प्यार

करती हूँ।" चन्दा रुक गई। उसका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। घूँट निगलते हुए उसने कहा—'कैसा प्यार, जैसे सागर की उमिमाला का चांद से होता है। काश ! समाज मेरे इस अभाव को समझ सकता। नारी का दिल जो निसर्ग ने मुझे दिया है, उसका अनुभूतियों को व्यक्त करने की आज्ञा भी समाज मुझे नहीं देता। मुझे इस का खेद नहीं; क्योंकि हिन्दू धर्म के वे सस्कार, रामायण की वे पंक्तियाँ—'उत्तम नारी सपने में भी पर-पुरुषका ध्यान नहीं करती—सदा मेरो उदास लालसाओं को उमड़ने से रोकती रहें। इस पर भी पति मुझे अपवाद लगाये तो मुझे स्वीकार है।'

गहन शून्य सी नीरव निस्तब्धता सर्वत्र छा रही थी। चन्दा के शब्दों ने कुछ क्षणों के लिये सब को भावुक बना दिया था। सभी मूक पाषाण की भांति निस्पन्द बैठे थे। पर इस हार्दिक अभिव्यंजना ने चन्दा के धैर्य का बांध तोड़ दिया। जहां पहले विद्रोह की ज्वाला थी, वहां अब विवशता को बदलियां उमड़ आईं। नेत्र-कोरों में अश्रु-विन्दु चमक आये। विलख कर बोली—'मैं पंचों से न्याय मांगती हूँ। सभी बेटियों वाले हैं। क्या धन की तुला पर नारी की सब अनुभूतियां तुल सकती हैं? कहिये—सभा निस्तब्ध थी। पंच लोग पगड़ियों के आंचल से सचमुच आंखें पोंछ रहे थे—बोलिये, क्या इस पुरुष नाम धारी पति को अधिकार है कि जब चाहे, पत्नी को घर से बाहिर निकाल दे? क्या समाज की कोई शक्ति नहीं, कोई आवाज नहीं?'

चन्दा गिरने को हो रही थी कि गौरी ने आगे बढ़ कर थाम लिया। पलड़ा चन्दा की ओर झुक रहा था। व्यथित नारी की कानपुष्प

ने सब को द्रवित कर दिया था। चौधरी राम दयाल ने निर्णय सुना दिया—'तारा चन्द को अधिकार नहीं कि चन्दाको घरसे बाहर निकाले यह कलंक मिथ्या है। यदि तारा चन्द उस से सम्बन्ध न रखे तो भी जीवन भर निर्वाह का का व्यय देना होगा।' तारा चन्द के मुंह पर स्याही पुत गई। चन्दा अभिमानिनी सिंहनी की भांति सिर उठाये मस्त चाल से चली गई। किन्तु स्वयं नारी को यह निर्णय नहीं भाया। दो एक ने विद्रूप कस ही दिये—'ऐसी कुलटाओं का तो मुंह फूक देना चाहिये' अन्धेर है और क्या, सरपंच को क्या सूझी उस भलेमानस की लाज ही रख ली होती।'

तीसरी बोली—मोहिनी सूरत दिखाकर जादू कर दिया। ठीक है अब नारी मुंह जोर हो गई है। पुरुषों का पुरुषत्व क्या खाक रहेगा।

क्रुद्ध सर्पिणी की भांति चन्दा ने मुड़कर देखा भी। फिर उपेक्षा का भाव दिखा कर वह इस प्रकार चली गई, मानों इन व्यंग्य वाणों की उपेक्षा उसे नहीं।

उधर ताराचन्द की दशा पानी-पानी हो रही थी। कि कर्तव्य विमूढ़ हो रहे थे कि यह कैसी बे-भाव की पड़ी। पत्नी भी विमुख हुई और हेठी हुई सो अलग। घर जाने का साहस न था। चन्दा से क्या बात करेंगे, कैसे करेंगे? यही चिन्ता खाये जा रही थी। मनहूस शकल बनाये दुकान पर बैठे थे। गाहक लौटे जा रहे थे। धूप की छाया देखी तो दिन ढलने में पर्याप्त समय था। मस्तिष्क की समस्त शक्तियां जैसे अवनन्त हो रही थीं। सहसा मुनील की ध्वनि सुन चौंक उठे। सोचा यह जले पर तमक छिड़-कने आया है। नीच कहीं का।

(ये सब सफा २० पर)

(सफा ११ से आगे)

और इस प्रकार वे अपने जमाने की और अपने लोगों को बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं। इस ख्याल से अगर हमारे घरों में बच्चों को जरूरी स्वतन्त्रता दी जाए, तो वह गुण ही करेगी, अवगुण नहीं। किन्तु आज उन्हें स्वतन्त्रता नहीं है। बात २ पर उन्हें दबाया जाता है, डराया जाता है, मारा पीटा भी जाता है, और अच्छे काम करने से रोका भी जाता है। बचपन में बालक अपनी सहज रुचि के कारण घर के हर छोटे मोटे काम को करने के लिए बहुत उत्सुक रहता है। घर के बड़े लोग सुबह से शाम तक जो कुछ भी करते कराते हैं, बालक उन सब को बहुत ध्यान से देखता है, और खुद भी ठीक उसी तरह करने की इच्छा रखता है, करने को दौड़ता भी है। पर हम अपनी अड़-चन का, समय का या इस तरह की और बातों का ख्याल करके बच्चों को उस आयु में काम करने नहीं देते, उन्हें पानी भरने से रोक देते हैं, भाड़ लगाने से रोक देते हैं, वर्तन मांजने से रोक देते हैं, कपड़े धोने से रोक देते हैं। अनाज साफ करने से रोक देते हैं, सब्जी काटने से रोक देते हैं और इसी तरह के दूसरे कई कामों से हम उनको बराबर रोकते रहते हैं। इस तरह की रीक टोक का नतीजा यह होता है कि धीरे धीरे बालकका मन मुरझा जाता है, काम करने की उसकी सहज वृत्ति घटती जाती है वह अनुमना रहने लगता है। अकेला एक तरफ कहीं बैठा रहता है, और अपने मन की तरंगों में उलझा रहता है। बच्चे के मन और शरीर दोनों पर इस व्यवहार का बहुत असर पड़ता है, और बच्चा अकारण ही भरे पूरे घर में अकेला पड़ जाता है दुखी होजाता है हम अपनी व्यस्तता के कारण उसमें होने वाले इस परि-

वर्तन की ओर ध्यान नहीं दे पाते, इस कारणों की खोज करने का ख्याल भी हमारे मन में नहीं उठता। कोई कमी-खामी भी हमारे ध्यान में नहीं आती। काम की रुचि और वृत्ति रखने वाले बालकको अपने ऐसे व्यवहार से निकम्मा बना ही हम नहीं चुकते, बल्कि जो बालक हमारी ही भूल के कारण निकम्मा बन है, आगे चल कर उसे हम उसके निकम्मेपन के लिए बहुत बुरा भला कहते हैं। और इस तरह उसके साथ अधिक अन्याय करते हैं। कहने का मतलब यह है कि अपनी ना समझी से हम खुद ही अपने प्यारे बच्चों को दुखी बनाते हैं, और उनको ठेठ बचपन से पराधीन बना कर स्वाधीनता के सुख से और उसके लाभों से दूर रखते हैं। इससे बच्चों को बे-शुमार हानि होती है। अतएव माता-पिता के नाते हमें इस बारे में बहुत सावधान रहना है और घर में बच्चे को काम करने की पूरी स्वतन्त्रता मिले, इसकी व्यवस्था करनी है। जिस बालक को बचपन में घर के सब व्यवहार में स्वतन्त्रता का सहज लाभ मिलेगा, वह अपने समय का एक भाग्यशाली और शक्तिशाली, बालक होगा। इसका मतलब यह नहीं कि स्वतन्त्रता के नाम पर हम बालकों को मन मानी करने का, जिद्दी बनने का, और तोड़ फोड़ और नुकसान करने का भी मौका दें। स्वतन्त्रता में इन बुराइयों के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। सच्ची स्वतन्त्रता स्वच्छन्दता से बिल्कुल अलग चीज है। उसमें विवेक, विचार, संयम अनुशासन आदि भी अपना काम बराबर करते रहते हैं। इस कारण ऐसी स्वतन्त्रता किसी के मार्ग में, सुख में, हित में अथवा उत्कर्ष में कभी रुकावट नहीं डालती। अगर इस अर्थ में स्वतन्त्रता को समझें तो घरों में अमल हो तो सब के लिए हितकर है।

* भारतीय बाल सभा *

बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी

अध्यक्षा : दीदी

फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र०—लोग कहते हैं कि रूस में ६० वर्ष से अधिक आयु के मनुष्यों को गोली मार देते हैं। क्या यह सत्य है, यदि हां तो ऐसा क्यों करते हैं? क्या मनुष्य की दीर्घायु व्यर्थ है? —राम प्रकाश पब्लिक हाई स्कूल, रोपड़।

उ०—यह गलत है। १०० वर्ष से अधिक आयु के जितने मनुष्य रूस में हैं उतने अन्य किसी देश में नहीं।

प्र०—सुना है कि पंजाब सरकार ने हरिजन छात्रों को दी जाने वाली फीस की रियायत आधी कर दी है, क्या यह सच है? —मोहन लाल, धर्मशाला।

उ०—हां, सच है और स्कूलों को आज्ञा दी है कि आधी फीस की रियायत वे स्वयं दें।

प्र०—डि० बोर्ड स्कूलों के सरकार के प्रबन्ध में आ जाने से उनकी अवस्था पहले से भी खराब हो गई है, ऐसा

क्यों? —जीवनदास अमृतसर।

उ०—इसलिए कि इतना बोझ उठाने की सामर्थ्य न रहने पर भी उसने उठा लिया।

प्र०—दुनिया में सब से अधिक जनसंख्या वाला शहर कौन सा है?

—कृष्णा कुमारी, राजपुरा।

उ०—पहले लन्दन समझा जाता था किंतु अब टोकियो है।

प्र०—रूस ने जो राकेट २ जनवरी को छोड़ा था उसे सूर्य के गिर्द एक चक्कर काटने में कितना समय लगेगा?

—हरिप्रकाश, रोहतक

उ०—१५ महीने में। (पूरी जानकारी पृष्ठ ९ पर छपे लेख में मिलेगी।)

प्र०—क्या चन्द्रलोक में पहुंचना संभव है? —सुधा, चंडीगढ़।

उ०—वैज्ञानिकों को विश्वास है कि

१० वर्ष तक यह सपना साकार हो जाएगा।

[सभी बच्चे निस्संकोच प्रश्न भेज सकते हैं]

५० वर्ष पश्चात मनुष्य की जरूरत न रहेगी ?

अमेरिका के पश्चिमी तट पर एक नगर बसा है जिसका नाम है 'सिटी आव कुक्स'। यहां से कई हजार मन रोटियां सब्जियां और आमलेट तैयार किए जाते हैं। ये चीजें डिब्बों में बन्द करके यूरोप के दूसरे नगरों को भेज दी जाती हैं जहां ये बाजारों में खड़े लैटर बक्स जैसे बक्सों

(सफा १७ का शेष)

गुर्रा कर बोले—'चला जा, कमबख्त मैं तेरी सूरत नहीं देखना चाहता।' प्रत्युत्तर में सुनील स्थिर रहा। न तो अपमान के भाव से मुस्कराया और न ही उत्तेजित हुआ—'भय्या! आप के घर से असीम घुआं उठ रहा है।

हड़बड़ा कर ताराचन्द उठ बैठे—'क्या?'

'हां! किवाड़ सब बन्द हैं और भाभी भीतर हैं।'।

'हैं, चन्दा भीतर है' लड़खड़ाते हुए वह बोले—'भाग रे सुनील, बचा उसको, बड़ी हठिन है।'।

ताराचन्द जब तक सुनील के साथ घर पहुंचे तब तक इर्द-गिर्द के लोगों ने द्वार तोड़ अग्नि को काबू कर लिया था किंतु चन्दा बुरी प्रकार से कुलसुखी थी।

में से स्वयंभेव निकल आती हैं। आप को केवल छेद में सिक्के डालने पड़ते हैं। यूं तो हाथ को मेहनत के कई काम मशीनें दौ सौ वर्षों से करती आ रही हैं मगर अब तो आंख और दिमाग के बारीक काम भी जो केवल मनुष्य कर सकता है मशीनें करने लगी हैं। यदि मशीनों का निर्माण

वास्तव में आग तो उसने अपने ही कपड़ों में लगाई थी। गौरी की गोद में वह अचेतन पड़ी थी। गौरी के आंसू टप टप गिर रहे थे। पानी के छींटे दे कर सचेत करने का यत्न हो रहा था। ताराचन्द की वाणी मानों मूक हो गई थी। पथराये नेत्रों से चन्दा के विकृत शरीर को देखने लगे।

समस्त वातावरण उन्हें हत्यारा हत्यारा कह कर धिक्कारता ज्ञात होता था। उनका हृदय उन्हें लानत दे कर कह रहा था—'इसकी मृत्यु के कारण तुम हो।' उसके पवित्र शरीर को छूने का साहस उनमें नहीं था।

'यह क्या किया भाभी?'

अन्तिम समय भी चन्दा के मुख पर मुस्कान खेल गई। बोली—'वह—सुलगती ज्वाला शांत हो गई गौरी।

यह—मृत्यु बड़ी सुखद है।'।

विश्वशांति के पहरेदारों !

आज देख लो महा युद्ध की
धुमड़ रही हैं सघन घटाएं ।

कड़क २ कर प्रलयकारी तड़ित सी
उतर रही हैं समरांगन में ।
विकराल रूप की रूप धारिणी
रण-चण्डी वह, विज्ञान ज्ञान का,

इसो प्रकार होता गया तो वह दिन भी
आएगा जबकि मनुष्य की जरूरत नहीं
रह जाएगी—उसके सभी काम मशीनें ही
कर लिया करेंगी । मशीनरी युग में
प्रत्येक मनुष्य के लिए अधिक मशीनी
शक्ति उपलब्ध होगी । तब सभी बिजली
घर एटैमिक शक्ति से चलने लगेंगे । हाई-
ड्रोजन या यूरेनियम का एक टन दस लाख
टन कोयले से भी अधिक शक्ति पैदा कर
सकता है । प्राणी विज्ञान में भी आश्चर्य
जनक प्रगति होगी १८०० में मालोथ्यूज
और १९०० में कुरक्स ने भुखमरी की
चेतावनी दी थी । अमेरिका ने नवीनतम
कृषि साधनों से उपज बढ़ा कर अन्न का
अभाव नहीं होने दिया । आज कल
मशीनों को मनुष्य चलाते हैं किंतु अब
मशीनें स्वयं चलने जगेंगी । भय है कि
आगे चल कर कहीं मनुष्यों को भी मशीनें
ही न चलाने लगे ।

दुरुपयोग इन्सान कर रहा
सोच मुझे भी निगल न जाये
निर्माण ध्वंस से कितनी दूर
आज भाग रहा, सब सजग हो उठो
विश्वशांति के पहरेदारों !

अरे नहीं तो लुट जाएगी
खेल खेल की चालों में
बिना मोल के बिना तोल के
वह अनमोल धरोहर—

क्षण क्षण ताक रहे जिसको
अपनी पैनी तीखी नज़रों से
जिस की रक्षा हेतु बने दो
आज अहिंसा वैरागी—

विगतों के वत् नहीं युद्ध आगामी
होगा, उसे रोकना नन्हे मुन्ने
शिशुओं का खिलवाड़ न होगा
हाईड्रोजन ऐटम बम भी

मन माना अपना नृत्य करेंगे
जगह जगह पर जल जल करते
अंगारे दहकेंगे, पी पी कर
प्रकीर्ण उस जहर की वायु को
बेचारे निर्दोषी नभ-चर
नीड़ों से गिर जाएंगे ।

दिग दिगन्त से रक्तपात का
धुआं धार मच जाएगा ।

कोटि २ का स्वयं काल आ जावेगा ।
मानव भी कुछ कहते २ सो जावेगा ।

उषा आमन्त्रण —शालिहास

दास्य यामिनी बीती काली (२५)

जन जागृति का आज पर्व है

आज सकल जन-मन सगर्व है

राष्ट्र आज गर्वोन्नत मुख है

प्रजा स्वशासन की मत्वाली ।

दास्य यामिनी बीती काली ।

जगा राष्ट्र है जनता जागी

जड़ता परता, दोनों भागीं

‘जन मन गन’ स्वर गूँज रहा है

करता गौरव की रखवाली ।

दास्य यामिनी बीती काली ।

धर्म चक्रयुत ध्वज लहराता,

निर्भयता के भाव बनाता ।

“सत्यमेव जयते” से शोभित

आज राष्ट्र है वैभव शाली

पावन नदियों की धाराएं

बून्द २ से विलख पड़ेंगी

हरे हरे खेतों की रानी

शस्य श्यामला धरती माता

स्वयं राख में मिल जावेगी ।

यह तीर्थ-भूमि यह कर्म भूमि

मकबरे-मन्दिर और महल

अंकित जिनमें युगकी चहल पहल

खून पसीना एक किए

मरे मिटे बलिदान हुए

ये सभी बात की बात में ढह जाएंगे ।

दास्य यामिनी बीती काली ।

आओ ! जीवन तरु को सींचें, (२६)

प्रातः पवन के मस्त झकोले

कण-कण में जीवन को घोलें ।

उपवन में चल, श्वासों द्वारा

इस ‘जीवन’ को जी भर खींचें

आओ जीवन तरु को, सींचें ।

भाव लहरियों से मन आकुल

शब्द निकलने को हैं व्याकुल

आ गीतों में बांध इन्हें अब

लिख डालें, इस तरु के नीचे ।

आओ जीवन तरु को सींचें ।

अरुण-अम्बरा नव द्युति नभ पर

नाच रही कितनी सुन्दर तर ।

दिव्य सुन्दरी के इस ‘नृत’ को

देखो, रहो न आंखें मीचे ।

आओ जीवन तरु को सींचें । (क्रमशः)

—१० से १४ जनवरी तक गर्व-न-

मेंट हाई स्कूल करनाल में हुए डिस्ट्रिक्ट

टूर्नामेंट में जाट हाई स्कूल कैथलकी फुट-

बाल, वाली बाल, कबड्डी, लाग तथा हाई

जम्प की टीमों में प्रथम रहीं ।

—सांच (करनाल) का बेसिक स्कूल

५४ में मिडल बना । मुख्याध्यापक के प्रयत्न

से भवन के लिए २५ हजार रुपया इकट्ठा

किया गया । इश्तमाल आराजी विभाग

से ३५ बीघे जमीन मिली है । गणतंत्र

दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया ।

जीवन की अनुभूतियां

खुशी

अपनी किसी आंतरिक विजय पर किसी कठिन समस्या को तय कर लेने पर अथाह आंतरिक प्रसन्नता होती है।

मार्ग

यदि जीवन नियमित रूप में व्यतीत किया जाए तो आयु बढ़ने के साथ २ उसमें माधुर्य, सन्तोष और शान्ति की वृद्धि होती है। शक्ति, आशा और जागृति जवानी के चिह्न हैं। किन्तु ज्यों २ मनुष्य जीवन के मार्ग पर बढ़ता जाता है, तजुर्बा, बुद्धि और कार्य कुशलता में वृद्धि के साथ २ इसे अपने आप में आत्मिक सन्तोष, शक्ति तथा आत्म-विश्वास का आभास होने लगता है।

निश्चय

स्वास्थ्य जीवन की दीवार जीवन-दर्शन ज्ञान और क्रिया पर स्थिर है। स्वास्थ्य के कुछ सर्वमान्य नियम हैं। इन पर सभी स्वास्थ्य-प्रिय व्यक्ति चलते हैं और प्रायः रोगी इनका उल्लंघन करते हैं। कुछ लोगों के लिए तो दिमाग में बसे वहमों को छोड़ना ही कठिन होता है और इससे भी दुष्कर इनके लिए नए विचारों को सही तौर पर समझ लेना होता है। पहली बात तो यह है कि ऐसी बातें जो

गलत हैं उन्हें छोड़ना सीखना चाहिए और जो सही हैं उन्हें अपनाने का यत्न करना चाहिए। यदि मनुष्य ध्यान रखे और अपने निश्चय से काम ले तो ऐसी गलतियों से बच सकता है जो उसे बर्बाद कर सकती हैं।

अवसर

आने वाले अवसरों पर उनका मूल्य नहीं लिखा रहता। दूसरे दिनों की तरह ही प्रत्येक प्रातः आती है और उसका कोई एक घण्टा होता है जो और घण्टों की ही तरह होता है। किन्तु इस प्रातः और इसी घण्टे में हमारे जीवन को बनाने और बिगाड़ने वाला अवसर आ मौजूद हो सकता है इसलिए हर अवसर को बुद्धिमत्ता और उत्साह के साथ इस्तेमाल कीजिए, सुनहरा अवसर पाने का यही तरीका है।

परिश्रम

कठिनाइयों पर विजय पाने से सफलता का एक पग बढ़ाने से और नई नई इच्छाओं को जन्म देकर उन्हें पूरा करने से जो आनन्द मिलता है उससे बढ़कर जीवन का कोई और आनन्द नहीं। जो व्यक्ति किसी प्रशंसनीय कार्य में लगा होता है उसे आशा के रूप में प्रोत्साहन और प्रसन्नता के रूप में पुरस्कार मिलता है।

आप की आज्ञा का पालन करने वाला फौलादी हाथ

आप बस अपने मन में यह सोच लें कि फौलाद से बने हाथको सुपारी तोड़ना है या कांच की बनी किसी नाजुक चीज को उठाना है, आप देखेंगे कि वह फौरन आपकी आज्ञा का पालन कर देगा।

यह हाथ अनेकानेक कृत्रिम अंगों के निर्माण का पूर्व सूचक है जो विकलांगों के लिए बनाए जाएंगे। ये कृत्रिम अंग उन लोगों के लिए ऐसी सम्भावनाओं से परिपूर्ण हैं जो चमत्कारों से कम नहीं होंगे।

यह कृत्रिम हाथ सोवियत कृत्रिम अंग अनुसंधान संस्थान ने बनाया है। इस अंग को एक कड़े के जरिरे आदमी की हथेली से बांध दिया जाता है, फिर वह कड़ा उस व्यक्ति के जिसे अपने मन में सोचना है कि फौलादी हाथ को क्या काम करना चाहिए, स्नायु-मंडल से गुजरने वाली विद्युतधाराएं पकड़ लेता है।

ये विद्युत संवेग हाथ तक संचारित होते हैं और विशेष आकार का धातु उसके अनुसार काम करता है। इस समय काम यहां तक हो चुका है कि अगर आदेशकर्ता चाहे तो इस्पात की उंगलियां बड़ी नमी के साथ चलेगी और अगर वह चाहे तो वे जोरदार ढंग से चलने लगेंगी।

यह बहुत बड़ा पग है, हालांकि यह केवल लोगों में संचारित की जा सकती है।

पहला ही है।

दूसरा पग यह होगा कि हाथ 'स्वयं-मेव' अनुभव करे यानी वह आपरेटर को बताये कि जिस चीज को वह पकड़े हुए है, वह कितना गर्म, कितना ठंडा या मुलायम है।

ऐसे पूर्ण अंगों के डिजाइन भी बन रहे हैं जो कलाई, कुहनी और कंधे से और उंगलियों के जोड़ों से संचालित होंगे।

ये कृत्रिम अंग मनुष्य के कटे हुए अंगों की जगह इस्तेमाल किये जाने के अलावा काफी फासले से अत्यन्त खतरनाक तेजस्क्रिय सामग्रियां उठाने, रखने आदि कामों में प्रयुक्त किये जाएंगे।

जो व्यक्ति बिल्कुल विकलांग हो, उस के लिये इस बात की परिकल्पना की गई है कि अन्ततः एक ऐसी विद्युत चालित पहियों वाली कुर्सी का निर्माण हो जाएगा जिससे कि रोगी मेज के पास बैठ कर खाना खा सकेगा और अन्य सामान्य काम कर सकेगा। इस कुर्सी में दो 'जैव-विद्युत' बाजू होंगे।

और यह भी विश्वास किया जाता है कि जैव धाराएं सुषुम्ना-प्रदाह से पीड़ित लोगों के इस्तेमाल में आने वाले 'लौह

क्रेमलिन का घन्टा

[ए. गोंचारोवा]

स्पास्काया मीनार पर क्रेमलिन की दीवार घड़ी कब लगायी गई थी ? कोई भी इसका ठीक उत्तर नहीं देसकता । ऐसा अनुमान है कि १४९१ में मीनार बनने के बाद ही यह घड़ी लगायी गयी थी ।

समय बीतता गया । घड़ी टिकटिक कर चलती रही । घड़ी साजों की पीढ़ियां पर पीढ़ियां अपने काम पर लगी रहीं । उन का काम काफी जटिल था । उन्हें घड़ी में सिर्फ चाबी न देनी पड़ती थी, बल्कि उन्हें उसे चलाना भी पड़ता था और चलाना शाब्दिक अर्थ में पड़ता था । पीटर महान के आदेश पर क्रेमलिनकी स्पास्काया मीनार के लिए एक नई घड़ी विशेष जहाज में हालैण्ड से आखजिल्स्क लायी गयी और वहां से तीस गाड़ियों में रखकर मास्को लायी गयी । परन्तु मुश्किल से एक

इसका अर्थ यह होगा कि उससे संचारित कृत्रिम श्वासक्रिया रोगों की आवश्यकताओं... कम गहरी या गहरी सांस, जैसी भी जरूरत हो... के लिए और अधिक उपयुक्त होगी । इस तरह उस व्यक्ति को सामान्य जीवन हासिल करने में मदद दी जा सकती है ।

चौथाई सदी बीती थी कि घड़ी बिगड़ गयी । १७६७ में इवान पोलियान्स्की और बर्लिन के घड़ीसाज फाइटज को मीनार में नयी घड़ी लगाने का काम सौंवा गया, परन्तु वह घड़ी भी अल्पायु सिद्ध हुई ।

इस समय जो घड़ी है, वह १८५१-५५ में लगाई गई थी, इसके लगाने वाले वूतेनोप बन्धु थे । घड़ी का पूरा ढांचा तीन मंजिल का है तथा इसमें तीन अलग इकाइयां हैं... घड़ी का ढांचा, चौथाई घण्टा बजाने वाला घण्टा और पूरा घण्टा बजाने वाला घण्टा । ३२ किलोग्राम वजन के पेंडुलम की सहायता से घड़ी ठीक से चलाई जाती है । घण्टे बजाने के यन्त्र मीनार के गुम्बद के नीचे रखे गए हैं... ९ घण्टे चौथाई घण्टा के लिए और एक घण्टा पूरा घण्टा बजाने के लिए है । इसके अतिरिक्त चौथाई घण्टा बजानेवाले प्रत्येक घण्टे का वजन ३२० किलोग्राम है, जब कि पूरा घण्टा बजाने वाले घण्टे का वजन २१६० किलोग्राम है । स्पास्काया मीनार के ये घण्टे १७वीं १८वीं सदी में ढाले गए थे तथा रूस की कलात्मक ढलाई के अद्भुत नमूने हैं । घड़ी के ढांचे में एक हथौड़ा लगा है । उसकी सहायता से घण्टा बजता है । यह हथौड़ा घण्टे के निचले भाग पर आकार लगाता है ।

★ वसन्त से ★

(श्री महावीर प्रसाद प्रभाकर)

कुछ तो बोलो प्यारे वसन्त !

क्यों मुखड़ा दुखड़ा भरा हुआ

तन पर कम्पन क्यों छाया है?

किसके स्मरण ने सब तन को,

घड़ी में प्रति २४ घण्टे में दो बार
चाबी दी जाती है। घड़ीके डायल मीनार
के चारों ओर है। इनका व्यास ६.१२
मीटर है। डायल में बने ग्रंथ ७२ सेंटी-
मीटर के हैं तथा घण्टे वाली सुइयां ३.२८
मीटर लम्बी हैं।

मास्को में अक्टूबर क्रांति के समय
घड़ी तोप का गोला लगने से बिगड़ गयी
थी और उसका चलना बन्द हो गया था
वी. आई. लेनिन के आदेश पर १११८ में
उसे ठीक किया जाने लगा। क्रेमलिन के
घड़ीसाज एन वी. बोरेन्स ने घड़ी के
ढाँचे को ठीक किया तथा कुशल कला
कर्मी चेरेम्निख ने उसमें 'अन्तर्राष्ट्रीय'
गीत की धुन का समावेश किया।

अक्टूबर १९१८ में फिर मीनार की
घड़ी का घण्टा बजा। तब क्रेमलिन की
घड़ी बराबर ठीक समय देती आ रही है,
उस के घण्टे बिलकुल ठीक समय पर
बजते हैं।

पीला-सा अरे बनाया है ?

क्या आज हकीकत की घटना

आ गई याद सच सच कहना,

शाहजहाँ बादशाह के युग की

आ गई याद तुझ को घटना?

कुछ मुझ को बतला रे वसन्त!

उन कोमल हाथों को जकड़

थे खड़े क्रूर न्यायी बन के,

मानो हो कोमल कुसुम कैद

लोहे के भारी बन्धन से।

भर भर निर्भर से भरते थे,

आंसू जनता की आंखों से,

रोते थे मात-पिता-पत्नी,

दुःख भरी डरी सो आहों से।

क्या तैने देखा रे वसन्त ?

मुल्ला काजी हाकिम सारे,

तौहीन समझ क्यों भल्लाये ?

उस बालक की भोली बातें,

वे सहन नहीं क्यों कर पाये ?

तुम देख रहे थे—न्याय नहीं,

अन्याय वहाँ पर जीता था।

उन मानव के दानम तन में,

मानवता का रस रीता था ॥

क्यों चिंता करता रे वसन्त !

मैं मुसलमान बन जाऊँ गर;

प्राणों से कुछ है प्यार मुझे ॥

क्या मुसलमान हो अमर बनूँ

राष्ट्रोन्नति का मूलमन्त्र

(श्री रामेश्वरदास)

नीति का कथन है—‘विनाश काले विपरीत बुद्धि’—कि जब किसी मनुष्य के बुरे दिन आते हैं तो उसकी अक्ल भी उलटी हो जाती है। और उसके अन्दर से हित अहित के विचार करने की शक्ति जाती रहती है। उसका दिमाग शिथिल और कुंठित हो जाता है जिसके कारण वह विचार करने योग्य नहीं रहता कि कौन उसका हितैषी है और कौन बुरा चाहने वाला। वह ऐसी बातों को जो उसके हित के लिए कही जाती हैं संदेह की दृष्टि से देखता है। वह ऐसे सब

मित्रों को जो वास्तव में उसके शुभचिंतक होते हैं अविश्वास की दृष्टि से देखता है। और जो केवल बातें बनाकर इसे मायाजाल में फंसा कर प्रसन्न रखते हैं वह उनका आदर करता है। और ऐसे मित्राभास शत्रुओं से अपना सत्यानाश करवा लेता है। नीति का यह कथन जहां व्यक्तिगत रूप से घटता है वहां समष्टि रूप में भी ठीक २ घटता है। जब किसी जाति या राष्ट्र ने आपत्ति से गुजरना होता है तब उसकी बुद्धि भी उलटी हो जाती है और वह हित अहित के बारे में समुदाय रूप से असमर्थ हो जाता है। कितनी ही जातियां इस विवेक हीनता के कारण विनाश (शेष सफा ३४ पर)

छिः हाकिम के अन्याय तुझे ॥
धर्म पद के कारण स्वयं विकूँ,
धिकार मुझे जो धर्म तजूँ,

यों कड़क उठा वह अभय वीर
न तन हित यह दुष्कर्म करूँ ।’

क्या यह सुनता था रे वसन्त ।

क्या समझें पर वे धर्म न्याय
मद से अन्धे हों लोग जहां ।

क्या समझें वे परमार्थ भला,
फैला स्वार्थमय भोग जहां !

फिर उठीं तेज-सी तलवारें,

बालक का सिर कट गिरा वही, क्या यही सोचता रे वसन्त ॥

वह चली तेज खूनी धारा,
सिरहीन वीर धड़ गिरा वहां ।

यों हुआ वीर का अन्त हन्त ।
हंसते हंसते सिर कटा गया,
हो अमर हकीकत वीर गया,

भय भीत हुई जगती की यों,
वह दिखा गया आलोक नया ।
पर तलवारों का शासन कब,
इस भूतल पर टिक पाया है ।

जो शासन भय से होता है,
होता वह अस्थिर काया है ॥

कहानी—

मानवता की राह पर

[कुमारी सुदर्शन खोसला प्रभाकर]

यमुना के किनारे, रेत की मोटी परत पर पांवोंके गहरे परन्तु नन्हे निशान मुझे आज भी याद हैं ! मैंने सोचा था कि न जाने किधर जाने का संकेत कर रहे हैं वे । अब, अब मेरा हृदय न जाने क्यों उन्हीं चिह्नों के सहारे लालायित हो उठा था । हृदय की धड़कन से कोई धीरे २ कह रहा था 'बल पड़ शायद तू ऐसी जगह पर पहुंच जाए जिसे मंजिल कहते हैं ।' लेकिन मेरा यह अरमान पूरा न हो सका मैं न जाने क्या सोच कर लोट पड़ा ।

उसके बाद स्कूल में प्रायः अध्यापक कहते—'बड़ों के चरण-चिह्नों पर चला करो !'

इतिहास या किसी महान व्यक्ति का जीवन-चरित्र खोलने तो वह भी मूक वाणी में बोल पड़ती, महापुरुषों के पद-चिह्नों पर चलते रहो !'

तब, तब मेरी आंखों के सामने वही रेत पर फैले हुए छोटे परन्तु गहरे निशान आजाते । वे भी मुझे पीछे आने को कहते थे । उसके बाद मेरा रोम २ जल उठता । ऐसा लगता मानो मैंने एक बड़ी गलती

कर दी हो ऐसी भूल जो सुधर नहीं सकती और मैं तड़प उठता । शायद आप विश्वास न करें लेकिन मुझे वहम सा हो गया था ।

एक दिन मैं बाजार से कोई आवश्यक चीज लेने जा रहा था । परन्तु मेरी विचार-धारा मुझे कहीं और ही घसोटे लिये जा रही थी । अचानक मैं बुरी तरह चौंक पड़ा । नन्हे २ पांवों के निशान देख कर मैं क्षण भर के लिए रुका, सचमुच जमीन पर निशान थे । 'बात साधारण है' मैंने मन को समझाया परन्तु मैं अपने को रोक न सका । मेरे पांव स्वयं ही उन चरण-चिह्नों पर द्रुतगति से पड़ने लगे । मैं बढ़ता गया और मेरा हृदय भी उस व्यक्ति के हृदय की धड़कन की तरह जोरों से धड़कने लगा जिसका मन्तव्य दो कदम रह गया हो ।

गली समाप्त हो गई । मैं बाजार के चौक में पहुंच चुका था । यहां आकर ये पद-चिह्न फीके हो चले थे और उसके बाद लुप्त ! मैं घबरा गया, सामने देखा एक नौ दस वर्षीय बालक एक फलों की

वाले ने पूछा ।

‘हस्पताल !’

और कुछ क्षणोंके बाद हमारी रिक्शा चिकित्सालय के सामने खड़ी थी। मैंने चवन्नो रिक्शा वाले की तरफ बढ़ा दी और बालक को अपनी बाहों पर थामे उतर पड़ा।

‘डाक्टर साहब’ इस बच्चेकी अवस्था
शोचनीय है—इसे देखिये ।’ मेरी आवाज़
में कातरना थी ।

डाक्टर ने बच्चे का निरीक्षण किया तथा धीरे से कहा—‘इसकी हालत सच मुच असंतोषजनक है—आप इसके कौन हैं ?’

मैं चकरा गया किन्तु तुरन्त उत्तर दिया—‘भाई !’ वह देर तक उस बच्चे के चीथड़ों और मेरे कीमती वस्त्रों को आश्चर्य तथा सन्देह से घूरता रहा पर कुछ बोला नहीं ।

बच्चे को दाखिल कर लिया गया ।
मैं उस रात घर न जा सका केवल घर पर
फोन कर दिया 'मैं आवश्यक काम होने के
कारण घर नहीं जा पाऊंगा ।'

मैंने सारी रात बेचैनी से काटी ।
बालक के शरीर पर कई जगह पट्टियाँ
बन्धी थीं—वह बेसुख पड़ा था । मेरी दृष्टि

'कहाँ जाना है जनता?' लिखा उसने मामूली चेहरे

अचानक घड़ी ने दो बजाये—मुझे नींद आने लगी। कुछ देर बाद मैं बड़बड़ा उठा 'शायद वह बोला है ! मुझे कुछ ऐसा ही लगा था। मैं कुर्सी से उठ कर उसके पास आया और धीरे २ उसका सिर सहलाने लगा।

'ओ नादान बालक ! मुझे तुमसे स्नेह क्यों है ? तुम मेरे कौन हो ?' मैं बड़बड़ा रहा था। उसके होंठ हिले, मेरा मन नाच उठा।

'बच्चे !' मैंने धीरे से पुकारा। उस की पलकें हिलीं—मेरा दिल जोरोंसे धड़क उठा।

'मेरे बच्चे !' न जाने क्यों ये शब्द मेरे होंठों से निकल पड़े। मुझे कुछ सुध ही नहीं थी कि मैं कुआंरा हूँ—मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।

कुछ देर तक मैं बड़ी उत्सुकता से उसे ताकता रहा। उसने पलकें खोल दीं, दो काली आंखें चमक पड़ीं !

'पानी' उसके पतले होठों से क्षीण आवाज आई। मैं लपक कर प्याले में पानी डाल लाया और चम्मच से कुछ वून्टें उसके गले में टपका दीं। उसके मानो प्राण लौट आये।

'मेरे फल' वह फुसफुसाया।

'मिल जाएंगे घबराओ नहीं ! पतले

ठीक हो जाओ !' मैंने स्नेह से उसे पुचकारते हुए कहा। वह मुझे आश्चर्य से ताकता रहा।

'तुम कौन हो ?'

'मैं, तुम्हारा भाई !' मैं मुस्कराया। वह भी थोड़ा सा हंसा।

'दादा !' वह क्षीण आवाज में बोला।

'चुप रहो, ज्यादा मत बोलो !

मैं उस के रूखे बालों को सहलाता रहा। उसने धीरे से आंखें बन्द कर लीं और कराहने लगा। प्रातः उस बालक की बूढ़ी मां आई और अपने बच्चे से लिपट कर फूट पड़ी।

'मां' वह बोला।

'क्या है मेरे लाल ?' बूढ़ा ने फटी चादर से उसको ढांपने का असफल प्रयत्न करते हुए पूछा।

'तुम मत रोओ, मुझे बचा लिया है, दादा ने—ये देवता हैं !' उस ने बड़ी कठिनाई से मेरी ओर संकेत करके कहा।

'भगवान् तुम्हारा भला करें—'दूसरे क्षण बूढ़ा मुझे कह रही थी।

'तुमने मुझ पर अहसान किया।'

'नहीं—नहीं—' मैं चौंक पड़ा।

'मुझे तो इस बच्चे ने नई राह

दिखाई है ! मैं कह रहा था तथा डाक्टर

कहानी—

भगवान की मर्जी

(श्री शंकर मोतीनगर नई देहली)

आखिर अनिलदा मेरी बात मान गए। मैं पंजाब से नया नया इस दफ्तर में आया था। कितनी कठिनाइयों के बाद यह नौकरी मिली, कितनी दौड़-धूप करनी पड़ी मुझे नौकरी की तलाश में, यह बताने की जरूरत नहीं। दो वर्ष बेकार रहनेके पश्चात मेरी कोशिशें सफल हुईं और मुझे देहली में नौकरी मिल गई, किंतु अब आवास का प्रश्न सम्मुख था। बहुत से नए परिचितों से कहा। किसी ने कोरा उत्तर दे दिया। किसी ने गर्म हो जवाब दिया 'मैं क्या मकानों का दलाल हूँ?' कोई आश्वासन देना 'कोशिश करूंगा, भाई। इतमीनान रखो।' आखिर एक सहृदय और भद्र बङ्गाली महाशय ने मेरी पीठ थपथपाते हुए मुझे विस्मय से घूर रहा था। बच्चे की मुस्कानमें सन्तोषका सम्मिश्रण था और वृद्धाकी आंखोंमें दुआएं थीं पर, पर, मैं देख रहा था, रेत की मोटी परत पर नन्हें गहरे निशान—और उनमें झांक रही थी एक मासूम मुस्कान—जो मुझे मानवताकी राह दिखा रही थी।

हौसला दिया 'तुम फिक्र न करो। आज छुट्टी के बाद मेरे साथ चलना, मैं अपने क्वार्टर में एक कमरा दे दूंगा।'

'यह है मेरी बीवी मंजू मुखर्जी. यह मेरी बड़ी लड़की लता, यह अजीज गोपाल, कृष्ण, सलिल, मालती, अमित, माधव, चम्पा और मन्तो.....'

अनिल मुखर्जी ने अपने परिवार से परिचय करवाया। इतने बच्चे? मैं स्तम्भित रह गया और हैरान हो उनकी ओर देखने लगा। पूछा—'कितने बच्चे हैं आप के, दादा?'

'भगवान की कृपा से ग्यारह हैं।' बड़ी लड़की की शादी कर चुका हूँ और लता के विवाह की फिक्र में हूँ...

लता यह सुन कर शर्मा गई और बच्चों को लेकर भाग गई। मेरी हैरानी और भी बढ़ गई यह जान कर कि अनिलदा की आयु इस समय चालीस वर्ष है और बच्चे हैं ग्यारह। सब से छोटी बच्ची की आयु है डेढ़ वर्ष।

मुझे उन्होंने कमरा दिखा दिया। मैंने अपना सामान इसमें टिका दिया। कमरा बाहर की ओर था और काफी हवादार।

दिन गुजरते गए। बच्चे कभी-कभी मेरे कमरे में भी आ जाते और उनसे बातें

करके मन बहला लेता । दफ्तर से पता चला कि अनिलदा अपनी बड़ी बेटी की शादी पर एक हजार रुपया ऋण ले चुके है जो किस्तों में वेतन से कट जाता है । किस्त देकर डेढ़ सौ के लगभग मिलता है जिससे इतने बड़े परिवार का खर्च चलता है ।

कभी कभी अनिलदा छुट्टी वाले दिन मेरे पास आ बैठते हैं और खूब बातें होती हैं । एक रविवार को मैंने भिभकते-भिभकते एक बात कह देने का दुःसाहस किया ।

‘दादा ! अगर बुरा न मानो तो एक बात कहूं ?’

‘अवश्य, अवश्य, सतीश बुरा मानने की क्या बात है ?’

‘आप का इतना बड़ा परिवार है, दादा । बड़ी लड़की की शादी आप ने ऋण लेकर की । अब लता जवान है और उसकी शादी के लिए भी आप को ऋण लेना पड़ेगा । अभी दूसरे बच्चों को पढ़ाना है । आगे ही कर्ज से दबे हैं, और भी दब जाएंगे । यदि इसी रफ्तार से आपका परिवार बढ़ता गया तो आप कैसे इन्हें खिला-पिला और पढ़ा सकेंगे ? आप परिवार नियन्त्रण क्यों नहीं करते, दादा ।’

‘तुम ठीक कहते हो, सतीश, लेकिन

मैं क्या करूं ? यह तो भगवान की मर्जी पर है ।’ उन्होंने चिंतातुर हों कर कहा ।

‘आप बहुत कुछ कर सकते हैं दादा, कम बच्चे होने से आप नन्हें अच्छा खाना अच्छे वस्त्र और शिक्षा दे सकते हैं । इस विषय में आज कल फैमिली प्लैनिंग डाक्टर मुफ्त सलाह देते हैं । कल मेरे साथ चलियेगा ।’ अनिलदा सहमत हो गए ।

दूसरे दिन शाम को मैं उन्हें एक अच्छे फैमिली प्लैनिंग डाक्टर के पास ले गया । डाक्टर से सलाह लेकर जब हम निकले तो सूर्यास्त हो चुका था । संध्या की लालिमा चारों ओर फैली हुई थी ।

खाना खा कर मैं अभी लेटा ही था कि दादा के लड़के अजीत ने आ उठाया— ‘बाबा ने आप को बुलाया है ।’ मैं जल्दी से भीतर गया । देखा, अनिलदा कुछ घबराये हुए हैं । मैंने पूछा—‘क्या बात है दादा ?’

‘मंजू की तबीयत खराब है ज़रा डाक्टर को बुला लाओ सतीश ।’

मैं दौड़ कर निकटवर्ती बाज़ार से एक कुशल लेडी डाक्टर ले आया । उन्होंने मुझे, अनिलदा और बच्चों को बाहर बैठने को कहा । नौ बज गए । बच्चे सो गए । अनिलदा की मन्जी मंजू दर्द और

★ दो मुक्तक ★

—शालिहास सिरसा

बहारों में भी कलियों को
स्वयं कुम्लाते देखा है ।

कमल में कैद अलियों को भी
गुनगुनाते देखा है ।

तो फिर क्यों हम खिजाओंको
बहारों पर लुटाते हैं ।

कि जब आंखों से कांटों पर
कुसुम को छाते देखा है ॥

गरीबी में भी खुश रहना है
गाना काम शायर का ।

कि गर्मी पाके थोड़ी सी
है फटना काम "टायर" का
सहिष्णु बन के हंस हंस
काटना है जिदगी, जीवन ।

मुसीबत में रुदन करना तो है
बस काम कायर का ॥

पीड़ा से कराह रही थी । हम दोनों के
हृदय धड़क रहे थे । भगवान खैर करे ।
हम बेचैन थे । अनिलदा घड़ी को बार
बार देखते थे, किंतु घड़ी भी हमारे हृदयों
की तरह टक् टक् करती धीमी गति से
चल रही थी । भीतर कराहटों और चीखों
का स्वर तेज होता जा रहा था । दस
बच्चे के लगभग छड़ी-डाक्टर बाहर

★ २४ छातों का प्रभु ★

पहला छाता चीनमें सहस्रों वर्ष पहले
बना था । वहां से वह भारत तथा पूर्व के
दूसरे देशों में पहुंचा । एक लम्बे अर्से तक
छाता अमीरी का प्रतीक बना रहा । बर्मी
राजा की उपाधि हुआ करती थी - 'श्वेत
गजों और २४ छातों का प्रभु ।' यूरोप में
छाता १६वीं सदी में जाकर प्रकट हुआ ।
कोई पुर्तगाली भारत से एक छाता लाया
था, उसे देख कर एक फ्रांसीसी विशेषज्ञ
ने छाता तैयार किया । फ्रांसीसी छाता
बहुत भोड़ा था । उसका व्यास ४-५ मीटर
और वजन लगभग चार किलोग्राम था ।

निकलीं और पुलकित स्वर में कहा—
'वधाई हो अनिल मुखरजी, आपके लड़का
हुआ है ।' अनिलदा धम्से कुर्सीपर गिर पड़े
और मेरी ओर देखने लगे । उनकी परे-
शान आंखें कह रही थीं, 'अब तुम ही
बताओ, सतीश, मैं क्या करूं यह भी तो
भगवान की ही मर्जी है ।'

मैंने उनके कन्धे को थपथपाते हुए
सान्त्वना दी, 'दादा, चिंता न करो ।
डाक्टर को राय पर चलिए । आज जब
कि विज्ञान के युग में इन्सान चांद तक
पहुंचने के लिए प्रयत्नशील है, तो यह
भगवान् की मर्जी भी वैज्ञानिक साधनों
से बदल सकती है ।

(सफा २७ से आगे)

को प्राप्त हुई। संसार के इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिलेंगे।

हमें खेद है कि वर्तमान परिस्थिति पर भी यह विनाश का काल चढ़ा हुआ है। वैसे तो संसार में, जबसे सृष्टि बनी है तभी से कई जातियां बनीं और बिगड़ीं। कई देशों का उत्थान हुआ और विध्वंस हो गया। कई राष्ट्र बलवान हुए और बलहीन हो गए परन्तु हिंदू जाति जो संसार में सब से पुरानी है और अपनी प्राचीनता का पता अब भी देती है इसका सुनहरा भूतकाल आज भी संसार को चकित कर रहा है। इसकी विद्या और कला-कौशल का डंका संसार में अब भी बज रहा है और इसके महापुरुष अब भी संसार के लिए आदर्श रूप हैं। इनकी बहादुरी के कारनामों की वास्तविकता पर सन्देह होता है। आज यह जाति जो लाखों वर्षों की आयु में असंख्य परिवर्तनों से गुजर कर भी अपनी सत्ता का परिचय दे रही है इस संसार में कितनेही उतार चढ़ाव देख चुकी है। जिस ने चीनी, यूनानी मिश्री और कई जातियों को बनते और बिगड़ते देखा है निःसंदेह उस जाति का जीवन आज संदेह से पूर्ण है। आज कई विदेशी जातियां कच्चे धागे की तरह नाना प्रकार के ज्ञान

विज्ञानके आविष्कारों द्वारा इसके जीवन को समाप्त करने पर तुली हैं। यह सब क्यों? इसलिए कि आज भारतीय शक्तिहीन, कायर, और निर्बल हैं, आज यह अपने पूर्वजों के रास्ते पर नहीं चल रहे हैं और स्वार्थवश, अन्याय सह रहे और अज्ञानवश अपना जीवन व्यर्थ बिता कर देश को सभ्यता पर कलंक लगा रहे हैं।

यही कारण है कि आज इनको अपनी माता की गोद में बैठने के लिए स्थान नहीं, आज उसकी गोद में पड़े हुए पड़ोसी राष्ट्र इसको हड़प करने की सोच रहे हैं। आज उनकी माताओं और बहिनों का अपमान किया जाता है और उनसे मानवताहीन वर्ताव किया जाता है और उन को बचाने में हम असमर्थ हैं। यह सब कुछ शक्तिहीन जाति पत्थर की आंखों से देखती है। उसकी आंखों से रुधिर तो क्या आंसू भी नहीं टपकता।

★ अबूकर नामक एक व्यक्ति वैडूत के निकट एक गांव में रहता है। उसकी आयु १२३ वर्ष की है। कुछ वर्ष पूर्व उसकी सुनने और देखने की शक्तियां जाती रही थीं और सिर के बाल और दांत झड़ गए थे। किंतु अब वह पुनः देखने और सुनने लगा है और उसके दांत और बाल पुनः उग आए हैं।

चुटकुले

★ एक मुसाफिर ने किसी होटल के मालिक से किराया पूछा। मालिक ने उत्तर दिया कि निचली मंजिल के कमरे का १५, दूसरी का १० और तीसरी का पांच रुपए है। मुसाफिर ने कहा—‘मैं तो चौथी मंजिल पर रहना चाहता हूँ, पांच रुपए और कम कर दीजिए।’

★ गाड़ी के डिब्बे में एक कवि भी बैठा था। वह कहने लगा, ‘मेरी कविता में इतना रस है कि मुरदों में जान डाल देती है।’ उसके निकट बैठी एक बुढ़िया ने यह सुन कहा, ‘भाई तुम्हारा भला हो, रात हमारी भैंस का कट्टा मर गया है, चल कर उसे अपनी कविता सुना कर जीवित कर दे। मैं तुम्हारा अहसान मानूंगी।’

★ एक सेठ ने नई कार खरीदी और उसमें किसी गांव को गए। रास्ते में गढ़े बहुत थे। कार में बैठे सेठ को हिचकोले लगने लगे। उसने ड्राइवर से पूछा—क्या बात है? उसने उत्तर दिया कि रास्ते में ‘टोए’ हैं। सेठ ने कहा, तुम हार्न क्यों नहीं बजाते ‘टोए’ अपने आप

खुद बुरा है, जो.....

नीर बन नयन से वह तो सकेगी मुझे डर है कि जुबां कह न सकेगी उर को पीड़ा है अनोखी पीड़ा नन्ही सो मेरी जां सह न सकेगी दुनिया इस को भला कब सहती है? दिल के कोने में छिपी रहती है धुआं भी है और आतिश भी यह कह ले दुनिया जो इसे कहती है।

मुहब्बत धुआं है अगर छिपी रहे आग बन जाय तो हंसी खुशी सहे दिल की दुनिया है इसी से रौशन खुद बुरा है जो इसको बुरा कहे।

—कुमारी सुवर्ण रत्न, बम्बई—४.

एक तरफ हट जाएंगे।

★ विद्यार्थी—मास्टर जी. नक्शे में लाल लकीरें कैसी हैं?

मास्टर—ये नदियां हैं।

विद्यार्थी—अजीब नदियां हैं जिन में पानी नाम को नहीं, नक्शा जब देखो सूखे का सूखा रहता है।

★ एक मित्र (दूसरे से) सुना है हाल ही में आपकी शादी हुई है। हमें तो खबर तक न की। दूसरा मित्र, हाल में हुई होती तो खबर करता। मेरी शादी तो धर्म-शाला में हुई थी!

आप नहीं जानते

★ टोकियो लन्दन से आगे

दुनिया में लन्दन की जनसंख्या सब नगरों से अधिक मानी जाती थी किन्तु अब टोकियो (जापान) इससे आगे निकल गया है। जून ५८ में लन्दन की आबादी ८२२२३४२ थी किन्तु टोकियो की ८८५८८३५ हो गई है।

★ केवल मूँछों के लिए

कलकत्ता के एक नाई को अपनी जान इसलिए गंवानी पड़ी क्योंकि उसने एक ग्राहक की मूँछें ठीक नहीं काटी थीं। ग्राहक ने शेव के पैसे देने से इन्कार कर दिया जिसपर झगड़ा हो गया। इसी झगड़े में ग्राहक ने नाई के लात जमा दी जिससे वह मर गया।

★ १८० मील प्रतिघंटा रफ्तारकी मोटर

एक रूसी इंजिनियर ने एक ऐसी मोटर कार तैयार की है जिसकी रफ्तार १८० मील प्रतिघण्टा है। फोर्ड कम्पनी ने एक ऐसी मोटर कार का माडल तैयार किया है जो बिना पहियों के चलेगी और रफ्तार भी १००० मील तक होगी।

★ दिल बदला जा सकता है !

रूसी प्रोफेसर ब्लादीमीर डैमो नोव

नेता सुभाष

—शालिहास

यौवन में जोग लिया जिसने
तज भोग विदेशों में घूमा।

सुख त्याग रागभाता पदसे रख
राग मुक्ति का गा भूमा।

तज आत्म मुक्ति उस योगी ने
मां की मुक्ति का मन्त्र पढ़ा।

सर्वस्व फूंक भारत के हित
आखिर मृत्यु-मुख चूमा।

नेता जी जीवन दानी वह
अनुपम नेता था भारत का

ना मोह उसे था पदवी का
चस्का था नहीं वजारत का
निष्काम भक्त भारत मां का
सिर चढ़ा गया, आंखों पर चढ़।

आओ श्रद्धांजलि दें उसको,
कर्तव्य यही है भारत का।

—★—

ने कहा है कि खराब दिल की जगह दूसरा स्वस्थ दिल आप्रेशन द्वारा फिट किया जा सकता है। कुत्तों पर किए गए ऐसे आप्रेशनों से पता चलता है कि इस प्रकार बदले गये हृदयों पर कुत्ते एक मास से अधिक जीवित नहीं रह सके। जीवन को लम्बा बनाने के लिए नए परीक्षणों की

गृह-विज्ञान

★ रंग के धब्बे

अगर किसी का कपड़ा गीली रंगीन चीज के स्पर्श में आ जाए तो कपड़े पर लगने वाले धब्बों और विशेष रूप में लाल और पीले धब्बों को मिटाना मुश्किल हो जाता है। इन धब्बों को साइट्रिक अथवा ओक्जेलिक तेजाब से धोया जा सकता है। एक गिलास गर्म पानी में १० से लेकर ३० ग्राम तक तेजाब घुला दो। कपड़े में जहां धब्बा लगा हो, उसे गुनगुने पानी से दो या तीन बार अच्छी तरह धोओ। अन्त में पानी में तरल अमोनिया की कई वून्टें डालो और उसे अच्छी तरह धोओ।

★ अण्डे का धब्बा

अण्डे के धब्बे को फौरन धोओ। अगर अण्डे की सफेदी बहुत देर तक कपड़े पर टिक जाए तो उसे धुलाना नामुमकिन हो जाता है। अण्डे के धब्बे को ऐसे पानी से मिटाने की कोशिश करो जिसमें कुछ तरल अमोनिया मिला हुआ हो। पुराने धब्बों को ग्लिसरीन से या तरल अमोनिया के घोल से मिटाया जा सकता है। ग्लिसरीन को ३५ से लेकर ४० ग्रंश सेंटि-

जेबी रेडियो टैलिफोन

मास्को के तरुण इंजिनियर लियो-निद कुप्रिया नो बिच ने बेतार के सहारे स्वयं काम करने वाला जेबी रेडियो-टैलिफोन बनाया है जिसका वजन ५०० ग्राम से कम है तथा अति लघु तरंगों (अल्ट्रा शार्टवेव) पर चलता है।

इसमें स्वयं चालित ढंग से काम करने वाले रिसीवर-ट्रांसमिटर की व्यवस्था है तथा ए. टी. आर. एस. (स्वयंचालित टेलिफोन-रेडियो-स्टेशन) के किसी भी रिसीवर-ट्रांसमिटर यन्त्र से सम्पर्क स्थापित कर सकता है। स्वयंचालित टैलिफोन-रेडियो स्टेशन रेडियो के सहारे जेबी रेडियो टेलीफोन सन्देश पाता है और नगर के टेलीफोन एक्सचेंज के जरिये स्वयंचालित ढंग से वांछित नम्बर मिला देता है।

इस छोटे से टेलीफोन को आसानी से कहीं ले जा सकते हैं। यह बहुत से कामों में प्रयुक्त हो सकेगा।

ग्रेड तक के तापमान तक गर्म किया जा सकता है। इस पानी में ब्रुश डालकर धब्बे वाली जगह को रगड़ा जाए, फिर १५ से लेकर २० मिनट तक ऐसे ही पड़े रहने दिया जाए। उसके बाद कपड़े को धोना चाहिए।

स्वास्थ्य सुधार

दांत दर्द की सस्ती दवा

अकर करा, सूखा पोदीना, फिलफिल
स्याह बराबर वजन में लेकर सब को
बारीक पीस कर दांतों पर मलें ।

★ पेट के कीड़ों के लिए

कथेला दो तोला लेकर पाव दही में
हल करके मरीच को खिला दें । सभी
कीटाणु मर कर खारिज होंगे । यह दवा
खिलाने से दो घण्टे पहले मिठाई या चीनी
रोगी को खिलानी चाहिए ताकि कीटाणु
इस पर एकत्रित हो जाएं ।

★ सांप का विष न चढ़े

रीठा एक माशा मनुष्य के पेशाब में
घिस कर सांप के काटे घाव पर लगाएं
तो सांप का जहर न चढ़ेगा ।

★ मुख की दुर्गन्ध दूर करना

पोदीना एक तोला, इलायची एक
तोला, फूल सुख एक तोला, काफूर दो
माशा ५ सेर पानी में मिला कर गरारे
करें । मुंह से बदबू नहीं आएगी ।

★ कह गए कहने वाले

कि उचित अवसर का लाभ न उठाना
और पीछे पछताना दोनों मूर्खता में
शामिल हैं ।

बूझिए तो ?

★ सब्ज कटोरी मिठा भत्त, लऔ
सहेलियो रखो हाथ !

★ डिठा इक अचरज मनुख, सूरज
साहमने रखे मुख । धूपों नहीं जरा
घबरांदा, सूरज वल्ले भजभज जांदा ।

★ पहलां सां मैं आली भोली, फिर
सवाई खट्टी चोली । जां मैं कीता
सूहा भेस, उठ पिया उचक्का देस ।

उत्तर :— (१) खरवूजा, (२) सूर्य
मुखी का फूल (३) बेरी ।

वतन दे नौ निहालो

उठो जाग पऔ वतन दे नौ निहालो
बहादुर बनो, वतन दी लाज पा लो,
करो नाम रोशन वक्त नूं सम्भालो
आपा नम्रता सचाई 'च ढालो ।

उठो जाग पऔ वतन दे नौ निहालो
जान अपनो देश दे लेखे लावो
कम अज दा कदे कल ते न पावो
उन्नति दे राह ते सदा वधदे जावो
उठो जाग पऔ वतन दे नौ निहालो
करो साहमना खिडे मत्थे दुःखां दा
रखो याद रब नूं मालिक जहां दा
जीवन जांच सिखो फर्ज जो तुसां दा
उठो जाग पऔ वतन दे नौ निहालो

'निर्माण'

शिक्षा विभागसे मान्यता प्राप्त

हीरे-मोती

पंजाब— : डी. पी. आई नं० २६३९ सी.

तिथि—१०-२-५०

उत्तरप्रदेश :—डायरेक्टर आव एजुकेशन

सं० बी ४०८/१०/८ (७०३) ५०-५१

तिथि ६-७-५०.

हिमाचल : डिप्टी डायरेक्टर आव एजुकेशन

नं. ई २९-३/३१०० तिथि १६-६-५१

पेंसू : नं. एड: ई. आई. (५०) ५२/२२६०७

तिथि २९-७-५२.

बिहार : सुपरिण्टेंडेंट आव लाइब्रेरीज

नं. ७३४०/२ पी-१५३ ति. २७-११-५३

हैदराबाद : डी. पी. आई नं. १७/१२९/१८

१९५२ तिथि ३-१-५३.

भूपाल : [मध्यप्रदेश] सीनियर इंस्पेक्टर आव

स्कूलज नं. १२१९५/१२२०२-१८ एकेड

[५२] ८/५२ तिथि १९-४-५२.

विज्ञापन के दर

‘प्रकाश’ में विज्ञापन छपवाने के लिए निम्न दर हैं:—

वार	१ पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	३० रुपये	१७ रुपये	१० रुपये
३ बार	८०	४५	२६
६ बार	१५०	८०	५०
एक वर्ष	२५०	१७५	९०

‘प्रकाश’ के ग्राहक सारे भारत, ब्रह्मा, फिजी इंगलैंड और अफ्रीका में भी मौजूद हैं।

[‘प्रकाश’ में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं]

मैनेजर:-

‘प्रकाश’ चहलवाग जालन्धर

शिक्षा क्या है ?

शिक्षा का अर्थ यह नहीं कि लोगों को वह कुछ सिखाया जाए जो वह नहीं जानते, बल्कि ऐसा व्यवहार करना सिखाना है जैसा कि उन्हें करना चाहिए !

विद्यार्थियों से

विद्यार्थियो ! अपने माता पिता का आदर करो। जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया। शैशव काल में स्वयं दुख उठा कर तुम्हारा पालन-पोषण किया, यौवन-काल में तुम्हें शिष्टाचार सिखाया—और सभी अवस्थाओं में तुम्हें प्रेम किया। उनका आदर करो। उनकी आज्ञा का पालन करो। इससे उनकी आत्मा सन्तुष्ट होगी और तुम्हें आशीर्वाद देंगे और भविष्यमें तुम्हारे वच्चे तुम्हारे जीवन को सुखी बनाएंगे।

बच्चों को पहली शिक्षा

माता-पिता की आज्ञा पालने की मिलनी चाहिये और दूसरी जो वे चाहें।

भाग्य

भाग्य के दुर्व्यवहार पर हंस दो ताकि कोई यह न जान सके कि कितना कड़वा घूंट तुम ने पिया है।

कभी निराश मत होँ

मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए, और यदि निराशा कभी जीवन में आ जाए तो निराशमें भी काम करतेजाना चाहिए।

बड़े आदमियों की आत्म कथाएँ

बड़े आदमियों की आत्म कथाएं बताती हैं कि मनुष्य अपने जीवन को जैसा चाहे बना

पंजाब की ग्राम पंचायतों के लिए

उर्दू मासिक

‘पंचायत गजट’ जालन्धर

सम्पादक—हितैषी अलावलपुरी

अप्रैल १६ से बड़ी सजधज से प्रकाशित हो रहा है। सभी सम्बन्धित अधिकारियों और ग्राम पंचायतों ने इसे हृदय से अपनाया है। हजारों पंचायतें इसकी ग्राहक बन चुकी हैं। इस में पंचायत कानून की व्याख्या, इन्तजामियां दीवानी और फौजदारी मुकदमों की समाइत का तरीका, भारत का विधान, कृषि सम्बन्धी अमूल्य जानकारी, पंचायतों की समस्याओं का हल उनके प्रश्नोंके उत्तरों के रूप में, शिक्षा समाचार, कृषि समाचार, महीने भर के अन्य महत्वपूर्ण समाचार तथा पंचायतों के काम की रिपोर्टें पढ़ने को मिलेंगी। वार्षिक मूल्य ९ रु० बी. पी. से ९ रु० ८५ नए पैसे।

आज ही ग्राहक बनिए

नमूने की प्रति १२ आने के डाक टिकट भेजकर मंगवाएं।

हिन्दी संस्करण

‘पंचायत गजट’ का हिन्दी संस्करण भी छपता है। इसका वार्षिक शुल्क भी ९ रु० ही है। बी. पी. से ९ रु० ८५ नए पैसे। उर्दू तथा हिन्दी दोनों संस्करण एक साथ जारी कराने पर १८) रुपये की बजाए १६ रु० लिए जावेंगे।

पंजाबी में भी ‘पंचायत गजट’

‘पंचायत गजट’ पंजाबी में शीघ्र छपने लगेगा।

मिलने का पता : मैनेजर पंचायत गजट, चहार बाग जालन्धर।

उपयोगी उर्दू पुस्तकें

(१) पंचायतों के अधिकार तथा कर्तव्य

इस पुस्तक में पंचायतों के लाजमी और इख्तियारी कर्तव्यों और सभी प्रकार के अधिकारों की व्याख्या की गई है। मूल्य ६ आने।

(२) दीवानी व माल नालिशों की समाइत

इसमें पंचायतों की दीवानी व माल नालिशों की समाइत के अधिकारों की व्याख्या करके इन नालिशों की समाइत का रीका बताया गया है। मूल्य ८ आने।

(३) फौजदारी मुकदमों की समाइत

जिन दफात में पंचायतों को फौजदारी मुकदमों की समाइत का इख्तियार हासिल है उनकी व्याख्या और मिसल बनाने का तरीका देकर एक पूरी मिसल बतौर नमूना दी गई है। मूल्य १२ आने।

(४) पंचायत इलैक्शन क्वाइड

इसमें पंचायतों के चुनाव सम्बन्धी सारी जानकारी दी गई है। मूल्य ६ आने।

(५) इन्तजामिया मुकदमों की समाइत

दफात २३ ग्राम पंचायत ऐक्ट के अंतर्गत किए जाने वाले इन्तजामिया मुकदमों की समाइत का तरीका और दफा २१, २२ के तहत जारी किये जाने वाले नोटिसों और आज्ञाओं के नमूने दिए गए हैं। मूल्य चार आने।

(६) मसला शामलात देह

के बारे में पूरी जानकारी। मूल्य ५ आने।



★
७, अप्रैल १९५९

★
सम्पादक
हितैषी-अलावलपुरी



वार्षिक मूल्य
मनीआर्डर से ७ रुपये
बी. पी. से ७ रु. ६५ नए पैसे
विदेशों के लिए
१५ शिलिंग पेशगी
मनी आर्डर अथवा पोस्टल
आर्डर द्वारा।



★
भोर हो गई ! ★

नया जागरण-बुझने से पहले ले आये दीप धरा पर-भोर हो गई !
उठो, तुम्हें संदेश दे रहे माटी के तन,
तिल-तिल जलना, जल मरना ही जिन का जीवन;
गहन तिमिर को चीर इन्होंने चार प्रहर तक—
मुक्त हस्त हो बांटा है अपना प्रकाश-धन।

बिछुड़ गए जो, उन को अपने साथ मिलाओ,
मानव का मानव के उर में प्यार जगाओ;
इन विवाद की गलियों, विष के चौराहों से—
आगे बढ़ कर हर पीड़ित को कंधे लगाओ।

तुम प्रतीक हो परिवर्तन के, आवर्तन के,
इस आने वाले युग में चेतना भर दो !
सुप्त गुत्थियां खुल जाएं मानस की सब के—
एक सूत्र में इन बिखरी लड़ियों को कर दो !

बढ़ो. तुम्हारा एक लक्ष्य है बढ़ते जाना,
हर आने वाली पथ-बाधा से लड़ जाना !
तभी नेह की-भूलसी कलियां खिल पाएंगी वसुन्धरा पर !
नया जागरण-बुझने से पहले ले आए दीप धरा पर-भोर हो गई !

आनन्द प्रकाश



THE "Prakash"
Editor: L.C. HITASHI
JULLUNDUR CITY

लक्ष्य तथा नियम

लक्ष्य :—

- (क) विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना ।
- (ख) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना ।
- (ग) छात्रों और अध्यापकों में सहयोग और प्रेम बढ़ाने में सहायता देना ।
- (घ) छात्रों और अध्यापकों के हितों की रक्षा करना ।
- (ङ) निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना ।
- (च) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति !

नियम :—

- (क) प्रकाश प्रतिमास की ७ तारीख को ग्राहकों को भेजा जाता है । किंतु कारण-वश देर से संभव है ।
- (ख) वार्षिक मूल्य, भारत में ७ रु० मनीआर्डर से, ७ रुपए ६५ नए पैसे बी. पी. से और १५ शिलिंग विदेशों के लिए नियत है । विदेशों के ग्राहक शुल्क पोस्टल आर्डर अथवा मनीआर्डर से भेजें । विदेशों में बी. पी. नहीं जाता ।
- (ग) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता । इसके लिए ६५ नए पैसे के टिकट भेजने चाहिए ।
- (घ) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में कमी या वृद्धि की जा सकेगी ।
- (ङ) लेख, कविता, कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास की १५ तारीख तक आ जाने चाहिए । जो लेखक अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे ५ रुपए ब्लाक के लिए अपने फोटो के साथ भेजें ।

आवश्यक सूचना

(अफ्रीका तथा बर्मा के ग्राहकों के लिए)

अफ्रीका के निम्न ग्राहकों को दिसम्बर ५८ में उनके जिम्मे बकाया शुल्क के बिल भेजे गए थे । किंतु उनकी अदायगी न हुई । २१ जनवरी को इन्हें पत्र लिख कर शुल्क भेजने का प्रार्थना की गई । केवल फिजी से श्री विलायती राम जी के २ पौंड प्राप्त हुए हैं, अन्यवाद । नीचे हम ग्राहकों तथा उनके जिम्मे ३१ दिसम्बर ५९ तक बकाया शुल्क की सूची प्रकाशित कर रहे हैं । उनसे प्रार्थना है कि शीघ्र मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर से शुल्क भेज कर अनुगृहीत करें ।

सूची

१. श्री एस. आर. मंगल नैरोबी	३० रु०
२. मंत्री आर्यसमाज नैरोबी	२० "
३. श्री गुरुदासराम भण्डारी	४० "
४. महाशय जीवन लाल नैरोबी	३० "
५. मंत्री आर्यसमाज किसुमू	३० "
६. मंत्री आर्यसमाज मुम्बासा	४० "
७. मंत्री आर्यसमाज दारुस्सलाम	३० "
८. मंत्री आर्यसमाज कम्पाला	४० "
९. श्री बाबूराम भल्ला नैरोबी	३० "
१०. श्री बी. डी. प्रिजा मुम्बासा	४० "
११. आर्यसमाज माण्डले	२० "
१२. आर्य समाज रंगून	१० "

यदि आपके स्कूल में प्रकाश नहीं आता तो आजही ७ रुपये भेजकर जारी कराएं । —मैनेजर

- (६) अप्रकाशित लेख आदि बिना डाक टिकट आए लौटाये नहीं जाते । (७) विज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अश्लील न हों और उनके नाम पेशगी आ जाएं । —प्रबन्धक

प्राक्काश

वर्ष १०]

अप्रैल ५९

[अंक ४]

राष्ट्र सम्बोधन !

—केदारनाथ 'प्रभात'

हे सृजन की शक्तियों के सांघ्वनिक आधार !

तुम किरण के अमृत का करते चलो संचार !

हे गगन के गर्व, गर्वोन्नत-शिखर-हिम-हास !

हे अनल के पर्व की संदीप्ति के इतिहास !

हे मरुत, मारुत-मुखर-मधु-छंद युग-युग गेय !

हे प्रकृति के छांदसीय-प्रमाण-प्राण अजेय !

हे विपुल धन, अतुल वन-सौन्दर्य, रस के स्रोत !

हे सजल-घन-पोत, हे पर्जन्य-पवि उद्योत !

हे निशा के आभरण, सुख स्वप्न सोमा-हीन !

हे उषा के स्वर्ण-खग, चिर-मुक्त, चिर स्वाधीन !

हे धरा के रूप-गौरव, स्वर्ग के वादित्र !

आंगरिस हे, हे स्वयंभुव मनु, मनुज के मित्र !

हे तपोधन ! हे तपस्या के अमर शृंगार !

तुम किरण के अमृत का देते चलो उपहार !

हे अहं को चीर कर निकले हुए आह्वान !

व्यष्टि की अनुभूति में बैठ समष्टि-विधान !

एकता के सूत्र हे जिस में गुंथे नक्षत्र !

कामना-तरु कल्पना-तरु कल्प-तरु के पत्र !

चेतनाओं के समुच्चय, स्नेह-सुषमा-श्लिष्ट !

हे सुनिर्मल, शिशु-सरल, तुमहो न किंचित क्लिष्ट !

भुवन-भर के भाग्य की संवर्द्धना का मंत्र,

तुम लिए हो साधना का यन्त्र, कल्पक-तन्त्र !

विश्व में सब से प्रथम यजनीय शोभन शुद्ध !

युग-प्रवर्तक, ऊर्ध्व-पथ-गामी सतत उद्बुद्ध !

हे बृहस्पति ! विश्वकर्मा, शन्य के स्वरकार !

तुम किरण के अमृत का देते चलो उपहार !

कहां क्या है ?

कविताएं

भोर हो गई आनंद प्रकाश १

राष्ट्र सम्बोधन केदारनाथ प्रभात ३

इन्सान बनो तो अच्छा है २१

उषा आमन्त्रण, ये लड़ाई भुगड़े

शालिहास २३

इन्सान मर रहा है सुवर्ण २६

देश मेरे दा चप्पा २ बनिया

अज गुलजार ३६

कहानियां

अपना और पराया सुदर्शन १०

'जग बीती' २२

इन्सानियत की खोज में २७

हम सफर शंकर २८

एक दिन ३१

लेख

रूस में शिक्षा सम्बन्धी नया कानून ७

बाधाओं को कुचल कर आगे बढ़ा चल ८

शिक्षा की ऊष्मा बनी रहे १३

विज्ञान अनुसंधानकी अंतिम सीमा पर १४

सिनेमाके दुष्प्रभावसे युवकोंको बचाओ १५

सुख कहां और कैसे मिल सकता है १६

मैं बम्बई का एक करोड़पति हूं २०

पानी के बुलबुले विज्ञानके लिए पहेली २४

आकाश में परीक्षणशाला स्थापित

होगी ३२

इनके अतिरिक्त—अपनी बोली'च,

फूल और कांटे, समाचार सार, आप नहीं

जानते, शिक्षा समाचार, सम्पादकीय

विचार, स्वास्थ्य रक्षा, गृह विज्ञान,

चुटकुले तथा पहेलियां आदि स्थायी

स्तम्भ ।

शिक्षा समाचार

—शोगी (शिमला) के मिडल स्कूल को १ अप्रैल ५९ से हाई कर दिया गया है।

—ला कालेज जालन्धर से चंडीगढ़ चला जाएगा।

—पंजाब यूनिवर्सिटी सीनेट ने एक कमेटी स्थापित करने का निश्चय किया है जो परीक्षाओं की फीस बढ़ाये जाने के प्रश्न पर विचार तथा जांच करके अपनी सिफारिशें करेगी।

—पटियाला में एम० ए० के एक छात्र जसवन्तसिंह ने रिवाल्वर की गोली से आत्म-हत्या करने की २७ मार्च को कोशिश की।

—२९ मार्च को चण्डीगढ़ में पंजाबी के प्रसिद्ध नाटक-कार श्रीबलवन्त गार्गी तथा हिंदी के लेखक स्वामी सत्यदेव को ११, ११ सौ रुपए तथा मानपत्र गवर्नर द्वारा भेंट कर सम्मानित किया गया।

—पंजाब यूनिवर्सिटी के ज्योलोजी विभाग में एक प्रोफेसर और दो रीडर तो हैं मगर कोई छात्र नहीं इसके विपरीत कैमिकल इंजिनियरिंग और टेक्नोलोजी विभागों में छात्र तो हैं किंतु कोई स्टाफ मौजूद नहीं। इसी प्रकार जर्नेलिज्म विभाग के लिए कोई भवन नहीं।

—पंजाब यूनिवर्सिटी की वार्षिक आय २०२५२६०० और व्यय २२७९५०० और घाटा २५४२४०० रुपए है।

—बहाल्ला (रोहतक) में सवा लाख के व्यय से बने स्कूल भवन का उद्घाटन मुख्य-मन्त्री ने २६ मार्च को किया।

—मैट्रिक के हाऊस होल्ड अरिथमेटिक के प्रश्न पत्र पर आपत्ति की गई है।

समाचार सार

—श्री विनोबा भावे पंजाब में ५२ दिन की पदयात्रा के लिए १ अप्रैल को लोहारू पधारे।

—सिरसा क्षेत्र से पंजाब विधानसभा के उपचुनाव में चौधरी देवीलाल सफल रहे हैं।

—तिब्बत में विद्रोह की आग भड़क उठी है। चीनी सेना सख्त कार्यवाही कर रही है। दलाई लामा अपनी माता और बहिन के साथ आश्रय पाने के लिए किसी अज्ञात स्थान को चला गया है।

—भारत में और भी ऐटमिक रिएक्टर स्थापित किए जाएंगे।

—सस्ते रेडियो सैटों और एकही व्यक्ति के पास एक से ज्यादा रेडियो होने पर दूसरे सैटों की लाइसेंस फो घटा दी जाएगी।

—दयालसिंह ट्रस्ट को देहली का कंप का लेज ग्रीष्मावकाश होनेसे पूर्व सौंप दिया जाएगा।

—अमेरिका बी-५७ जैट बाम्बर पाकिस्तान को भारी संख्या में भेजने वाला है।

—होलियों पर भूपाल में साम्प्रदायिक दंगों में २ व्यक्ति मारे गए।

—भारत सरकार ने अनार्जों का राज्य सरकारों द्वारा थोक व्यापार अपने हाथ में ले लेने का सुभाव स्वीकार कर लिया है।

—बड़े पश्चिमी देशों के विदेशमंत्रियों की कान्फ्रेंस ११ मई को मास्को में होगी।

—गत वर्ष आंध्र में २३०० व्यक्तियों ने आत्म हत्या की।

—पाकिस्तान के प्रेजिडेंट जनरल अयूब ने एक वक्तव्य में कहा है कि पाकिस्तान और भारत के मध्य निकट भविष्य में युद्ध होने की संभावना नहीं।

अपनी धोली च

बिल्लीआं दी कान्फ्रेंस

पिछले दिनीं बम्बई दे ताजमहल होटल'च भारतीय प्रतिनिधि दी प्रधानता हेठ बिल्लीआं दी इक कान्फ्रेंस होई जिस'च दुनिया भर दे देसां दीआं बिल्लीआं दे प्रतिनिधियां ने हिस्सा लिया। एस कान्फ्रेंस'च चूहियां दी इस मंग ते विचार कीता गया कि ओहनां नूं अजेहे ढंग नाल पकड़िया ते खादा जावे कि ओहनां नूं घट तों घट दुख होवे। हुन तीक बड़ी बेददी नाल तिखे दन्दां 'च दबोच ते नोच २ के खान नाल कष्ट सहना पैदा है। रूस दे प्रतिनिधि ने आखिया कि सानूं विश्व शांति बनाई रखन'च सहयोग देन लई चूहे खाने ई छड़ देने चाहीदे ने ते अपने भोजन लई सरकारां तों सेर दुध रोजाना दी मंग करनी चाही दी ए। चीनी प्रतिनिधि एस सुभाव दा समर्थन करन लई खड़ी होई ई सी कि अमेरिकन प्रतिनिधि ने प्रधान दा ध्यान इस प्वाइंट आव आर्डर वल खिचिया कि हाऊस अगे प्रश्न बिल्लीआं दे किसे नवें अधिकार दी मंग बारे नहीं बल्कि एह है कि चूहियां नूं खान वेले किवें घट तों घट कष्ट पहुंचन दिता जा सकदा है ? प्रधान ने अपने रूलिंग द्वारा अमेरिकन प्रतिनिधि दा एतराज ठीक मनदे होए रूसी सुभाव नूं आऊट आव आर्डर करार दे दिता ते जापानी प्रतिनिधि नूं बोलन दा अवसर दिता। जापानी प्रतिनिधि ने किहा कि मेरा सुभाव है कि भारतीय प्रतिनिधि नूं सिंगल कंट कमिशन दे रूप'च नियत कीता जावे। इस प्रस्ताव दा समर्थन बर्मा दे प्रतिनिधि ने कीता अते अस्ताव बोरखान

फूल और कांटे

[पाठकों के प्रश्न और उनके उत्तर]

प्र०—तिब्बत और चीन के भगाड़े में भारतकी क्या स्थिति है? —मनोहरलाल शिमला

उ०—वही जो बहू और सास के भगाड़े में बेटे की होती है जो न भाभी को नाराज कर सकता है न मां को।

प्र०—पाकिस्तानी बेगमों ने शृंगार की विदेशी वस्तुओं के बायकाट का आंदोलन क्यों शुरू किया है ? —सावित्री मेरठ

उ०—संभवतः किसी वजीर के साले ने शृंगार की वस्तुओं का कारखाना खोल लिया है जिसके माल की खपत नहीं हो रही।

प्र०—विवाह के अवसर पर किन किन २ बातोंका ध्यान रखना चाहिए। कृष्णलाल करनाल

उ०—लड़की के पिता के बैंक बैलेंस और मां के जेवरों का, और इस बातका भी कि वह एकमात्र संतान हो। तब मुंहसे मांगनेकी जरूरत न रहेगी केवल पत्नीको संकेत करना पर्याप्त होगा।

तालियां विचकार सर्व सम्मति नाल पास हो गया। भारतीय प्रतिनिधि अपनी सिफारिश १५ अगस्त तों पहलां पहलां करेगी ते उस ते विचार करन लई इक होर मीटिंग अशोका होटल नवीं दिल्ली'च होवेगी। तारीख दी घोषणा रिपोर्ट मिलन मगरों कीती जावेगी। —भाईया रेलू

[नोट : चूहियां दी उपरोक्त मंग इस करके उठ खड़ी होई ए कि अमरीका'च हुन पशुआं नूं इंजेक्शन ला के बिजली दे झटके नाल घट तों घट कष्ट पहुंचादियां होयां मारिया जाया

ग्रीष्मावकाश के
विषय में

सम्पादकीय विचार

इस वर्ष पंजाब

के स्कूलों में ग्रीष्मावकाश १ जून से १५ जुलाई तक होगा। वर्षा के दिनों में आवश्यकतानुसार समय-समय पर और छुट्टियां भी की जा सकेंगी जो १५ तक होंगी। ग्रीष्मावकाश का नया कार्यक्रम कहां तक उपयोगी सिद्ध होता है, यह तो तजुर्बा ही बतायेगा किंतु इतना तो स्पष्ट ही है कि वर्षा के दिनों में बच्चों का समय पर स्कूल पहुंचना कठिन ही नहीं असंभव है—विशेषतः पर्वतीय क्षेत्र में। क्या यह सम्भव नहीं कि पर्वतीय क्षेत्र के स्कूलों के लिए स्थिति के अनुसार ग्रीष्मावकाश सम्बन्धी कार्यक्रम बदल दिया जाए?

पुस्तकों की उचित व्यवस्था की जाए

स्कूलों का नया सत्र आरम्भ हो रहा है। सभी विद्यार्थी नयी पुस्तकें खरीदेंगे। इन दिनों सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सप्लाई मांग की अपेक्षा प्रायः कम पड़ जाया करती है जिसके फलस्वरूप अप्राप्य पुस्तकों की ब्लैक मार्किटिंग आरम्भ हो जाती है और अभिभावक दुकानदारों को मुंह मांगे दाम देने पर विवश हो जाते हैं। सरकार को चाहिए कि पुस्तकों की पर्याप्त सप्लाई की उचित व्यवस्था करे।

प्राइवेट तौर पर परीक्षा देने की सुविधा

शरणार्थियों को प्राइवेट तौर पर यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं में बैठने की अब तक प्राप्त सुविधा छीन ली गई है। इस सुविधा से अब केवल लड़कियां और सरकारी कर्मचारी ही लाभ उठा सकेंगे। किंतु हमारी सम्मति में यह सुविधा उन सब परीक्षार्थियों को उपलब्ध होनी चाहिए जो आजीविका कमाने के साथ २ अपनी

शिक्षा जारी रखना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में सरकारी कर्मचारी या लड़की होने की

कोई शर्त नहीं रहनी चाहिए क्योंकि जीवन संघर्ष कठिन-तम होगया है और अन्य आवश्यक वस्तुओं के साथ २ शिक्षा भी बहुत महंगी हो गई है—इतनी महंगी कि यह सर्व साधारण की सामर्थ्य से बाहिर को चीज बन गई है।

किसी का ध्यान नहीं जाता !

गलियों में छोटे २ बच्चे निस्सकोच सब के सामने ऐसी २ अश्लील गालियां बकते हैं कि कानों में उंगलियां दबा लेने पर विवश हो जाना पड़ता है। कोई उन्हें रोक नहीं सकता, रोके तो स्वयं गालियां खाये या उनके घर वालों से लड़ाई-भगड़ा मोल ले। छोटी उम्र के बच्चे एक दूसरे के मुंह से सुन कर ही गालियां सीखते हैं। हमारे राष्ट्रीय जीवन की अधोगति के इस बड़े कारण के निवारण को और किसी का ध्यान नहीं जाता। पंजाब विधान सभा में ऐसा बिल पास कराने का यत्न होना चाहिए जिसके कानून बन जाने पर किसी बच्चे को गाली बकते देख उसका चालान करने का अधिकार हर मुहल्ले में कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को मिल जाये।

मैट्रिक की परीक्षा और उसके पश्चात

प्रति वर्ष मैट्रिक परीक्षा के किन्हीं प्रश्न पत्रों पर आपत्तियां उठाई जाती हैं। परीक्षक परीक्षार्थियों की योग्यता से बाहिर के प्रश्न दे देते हैं—ऐसी शिकायत प्रतिवर्ष सुननेको मिलती है। संभवतः इसका कारण यह है कि प्रश्न पत्र बनाने का भार अनुभवो स्कूल अध्यापकों पर न डाल कर कालेजों के प्रोफेसरों को सौंप दिया जाता है।

रूस में शिक्षा सम्बन्धी नया कानून

रूसी सरकार ने जीवन के साथ विद्यालयों के सम्पर्क को सुदृढ़ करने तथा सोवियत संघ में जन शिक्षा का और विकास करने के सम्बन्ध में एक कानून पास किया है।

नये कानून के अनुसार बच्चों को शिक्षा के आरम्भिक वर्षों से ही आगे समाजोपयोगी श्रम के लिए तैयार करना आवश्यक समझना चाहिए। सभी किशोरों को १५-१६ साल की उम्र से ही उपयुक्त समाजोपयोगी श्रम में लगाना चाहिए, और आगे की उनकी सारी शिक्षा राष्ट्रीय अर्थतन्त्र में सृजनात्मक श्रम के साथ मिश्रित की जानी चाहिए।

सातसाला सार्वत्रिक शिक्षा के स्थान पर आठ-साला सार्वत्रिक शिक्षा लागू की गयी है। माध्यमिक शिक्षा की पहली मंजिल की हैसियत से आठसाला पढ़ाई ऐसी हो कि बच्चों को एक ठोस साधारण पृष्ठभूमि एवं अच्छा बहुप्राविधिक प्रशिक्षण प्राप्त हो जाए। साथ ही वे काम को प्यार करना सीखें तथा समाजोपयोगी क्रियाकलाप के लिए तत्पर हो जाएं। दूसरी मंजिल, अर्थात् पूर्ण माध्यमिक शिक्षा तरुण लोग १५-१६ वर्ष की उम्र से, उत्पादक श्रम के साथ साथ, पूरी करेंगे।

पूर्ण माध्यमिक शिक्षा देने वाले निम्नलिखित शिक्षा संस्थान कायम किए जाएंगे:—

नौजवान मजदूरों और किसानों के लिए तीन-साला स्कूल-साँझ (पाली) के साधारण माध्यमिक स्कूल जिनमें आठ-साला पढ़ाई खत्म कर चुकने वाले राष्ट्रीय अर्थतन्त्र में काम कर रहे लोग अपनी माध्यमिक शिक्षा समाप्त कर

सकेंगे। व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ तीन-साला माध्यमिक साधारण बहुप्राविधिक स्कूल, अन्य विशेष माध्यमिक शैक्षणिक संस्थान।

उत्पादन की विभिन्न शाखाओं में विशेषज्ञ विषयों वाले शहरी और देहाती व्यावसायिक प्राविधिक स्कूल स्थापित करने की भी परिकल्पना की गयी है। अभी जो फैक्टरी, व्यावसायिक, रेलवे तथा अन्य पेशों से सम्बन्धित स्कूल हैं, उन्हें सायंकालीन और प्रातःकालीन व्यावसायिक-प्राविधिक स्कूलों में, जिनकी पढ़ाई एकसे तीन साल की होगी, और ग्रामीण स्कूलों में जिनकी पढ़ाई एक से दो साल की होगी, पुनः संगठित कर दिया जाएगा।

कानून की उच्चतर स्कूलों से सम्बन्धित धारा में इंजीनियरों, शिक्षकों, डाक्टरों और कला-विद्वानों के प्रशिक्षण की बुनियादी आवश्यकताएं निरूपित की गई हैं।

उन छात्रों के लिए जिन्हें पहले जटिल सैद्धांतिक विषय पढ़ना और प्रयोगशालाओं में विस्तृत प्रशिक्षण प्राप्त करना होता है, कानून यह जरूरी समझता है कि वे पहले दो या तीन वर्ष उत्पादन में काम किये बिना केवल अध्ययन में ही बिताएं। कानून में उद्योग की नई शाखाओं तथा विज्ञान एवं डिजायनिंग के और विकास के लिए इंजीनियरों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गई है।

माध्यमिक, उच्चतर और माध्यमिक विशेष विषयक शिक्षा का पुनः संगठन कार्य १९५९-६० में आरम्भ होने वाले सत्र से शुरू हो कर, तीन या ५ वर्षों में पूरा किया जाएगा।

बाधाओं को कुचल कर आगे बढ़ा चल !

सफलता काशीतल आंचल तेरे माथे का पसीना पोंछने के लिए दूर हवा में फहरा रहा है !

[प्रो० रामचरण जी महेंद्र, एम० ए०]

महात्मा कन्फ्यूशियस ने कहा है, 'महान् व्यक्ति जो चीजें डूँढ़ते हैं, वह आगे अन्दर ही उन्हें प्राप्त हो जाती है, जबकि कमजोर दूसरों का मुँह ताका करते हैं।' जीवन का आदेश है, मनुष्य की दो शिक्षाएँ होती हैं। प्रथम वह जो वह अपने गुरुजनों या संसार से प्राप्त करता है, दूसरी वह जो स्वयं अकेला चल कर अपने अनुभवों से संचित करता है।

चाहे व्यापार हो, खेल, कानून, प्रेम या महत्ता के लिए उद्योग, आप को यह बात गाँठ बांध लेनी चाहिए कि वह स्वयं अपने बल, बुद्धि एवं उद्योग द्वारा ही अर्जित की जा सकती है। संसार की सर्वोत्तम शिक्षा वह है, जो मनुष्य स्वयं सतत संसार एवं समाज में संघर्ष द्वारा प्राप्त करता है। आत्मनिर्भर ही सर्वत्र पूजा जाता है। एक विद्वान् ने लिखा है, 'नौजवानो ! याद रखो, जिस दिन तुम्हें अपने हाथ, पैर और दिल पर भरोसा हो जाएगा उसी दिन तुम्हारी अन्तरात्मा कहेगी—बाधाओं को कुचल कर तू अकेला चल, अकेला। सफलता का शीतल आंचल तेरे माथे का पसीना पोंछने के लिए दूर हवा में फहरा रहा है।'

जिन व्यक्तियों पर तुमने आशा के विशाल महल बना रखे हैं, वे कल्पना के व्योम में विहार करने के समान अस्थिर, सारहीन, खोखले हैं। अपनी आशा को दूसरों में संश्लिष्ट कर देना स्वयं अपनी मौलिकता का हास कर अपने साहस को पंगु कर देना है। जो व्यक्ति

दूसरों की सहायता पर जीवन-यात्रा करता है, वह शीघ्र अकेला रह जाता है। अकेला रह जाने पर उसे अपनी मूर्खता का ज्ञान होता है।

जो अपना सुख और प्रसन्नता दूसरों से चाहता है, उनके सुख में सुखी, उनकी नाराजगी में अस्तव्यस्त हो जाता है, वह जीवन भर दूसरों की गुलामी में फंसा रहता है। दूसरों के आदेश में हर्ष, प्रसन्नता, घृणा, क्रोध, उद्वेग का अनुभव करने वाला व्यक्ति उस बच्चे की तरह है जो दूसरे की गोदी से उतरना नहीं चाहता।

मनुष्य के सुख, साहस, उत्साह, प्रफुल्लता का केन्द्र किसी बाह्य सत्ता में नहीं है। बाह्य वस्तुओं की ओर निरन्तर दौड़ने और उनसे किसी प्रकार की सहायता या प्रेरणा की आशा रखना मृगमरीचिका मात्र है। सोचिये, आज जिस व्यक्ति की प्रसन्नता से आप भावी जीवन के सुख-स्वप्न निर्मित कर रहे हैं, यदि कल वह आप से मुख मोड़ ले, अनायास ही क्रुद्ध हो जाय, या चल बसे, तो आप का सुख कहाँ जाएगा ? दूसरे को अपने जीवन का संचालक बना देना ऐसा ही है, जैसा अपनी नौका को एक ऐसे प्रवाह में डाल देना, जिस के अन्त का आप को कोई ज्ञान नहीं।

संसार में दो व्यक्ति एक-सी रुचि, या एक स्वभाव, एक दृष्टिकोण या विचारधारा के कभी भी नहीं रहे हैं। जितने मस्तिष्क, उतने ही उन के सोचने-विचारने के ढंग, रहने की नाना पद्धतियाँ, पोशाक पहनने के तरीके होते हैं। भोजन सबका भिन्न-भिन्न है। एक सरल सीधी

खाद्य वस्तुओं में, सूखी रोटी में मधुर स्वाद लेता है, तो दूसरे को मिर्च-मसाले से परिपूर्ण नाना श्रृंगारिक उत्तेजक भोजन प्रिय हैं। एक ठंडा जल पीकर आंतरिक शांति का अनुभव करता है, तो दूसरा वर्ष से युक्त सोडा, लेमन, शरबत या मद्यपान चाहता है। एक छः घण्टे सोकर नया जीवन लेता है, दूसरा दस घण्टे पलंग तोड़ता है। संक्षेप में, संसार विभिन्न तत्वों, मन्तव्यों तथा जीवन-दर्शन वाले व्यक्ति समूहों से विनिर्मित किया गया है। फिर किस प्रकार आप अपनी योग्यता, अभिरुचि अथवा साम्य विचारधारा का व्यक्ति पाने की आशा कर रहे हैं? नहीं, कदापि नहीं। आप को अपने जैसा व्यक्ति कदापि प्राप्त न होगा! आप को जीवन पथ पर अकेले ही अग्रसर होना पड़ेगा। कोई आप के साथ दूर तक न चल सकेगा। अकेले चले चलिये।

जीवन को एक यात्रा मानिये। यात्रा में एक दो अल्पकालीन संगी-साथी आप को प्राप्त हो गए हैं। इनसे चार दिन के लिए आप बोलते वरतते हैं; हंसी-ठट्टा, संघर्ष, छीना-झपटी चलती है। साथ-साथ कुछ समय तक आगे बढ़ते हैं, किंतु धीरे-धीरे उनकी जीवन-यात्रा समाप्त होती चलती है। एक के पश्चात् दूसरा आपको छोड़ता चलता है। आप के साथ अभी छः-सात व्यक्तियों का परिवार था। सात में से छः रह जाते हैं। 'अरे, मैं अकेला रह गया, बिल्कुल अकेला'—आप का मन कुछ कालके लिए अशांत सा हो उठता है। उसमें एक कड़वाहट-सी आ जाती है। पर वास्तव में जीवन का यह अकेला-पन ही मानव-जीवन का चरम सत्य है।

सब को पाकर भी हम सब अकेले हैं, नितान्त अकेले! हमारे साथ कोई भी दूर तक

चलने वाला नहीं है। जिन्हें हम भ्रम-मायावश अपने साथ चलता हुआ समझते हैं, वास्तव में वे हमारे अल्पकालीन सहयात्री मात्र हैं, हमारे इस अकेले पन में कोई भी हाथ बंटाने, दिलासा देने वाला नहीं है। हम अकेले आये, अकेले जीवन पर्यन्त चलते रहे, अकेले ही निरन्तर बढ़ते रहेंगे। हमें अपने दोनों पांवों पर ही चलना है; हमें अपने दोनों हाथों का ही सहारा हो सकता है।

नित नये-नये रूप बना कर मनुष्य इस अकेलेपन को विस्मृत करने का उद्योग करता है। भीड़भाड़ से भरे हुए विशाल नगरों में निवास करता है, सिनेमा, थियेटर, दौड़, खेल इत्यादि देखता है; अपने परिवार, इष्ट-मित्रों की संख्या में विस्तार करता है; किंतु वह मूर्ख नहीं जानता, इस माया-चक्र से वह स्वयं ही उलझन में फँस रहा है। सूखी रेत से स्निग्धता की आशा रखता है, बालू में से तेल निकालना चाहता है। दूसरों के बल पर चलने, उनसे आशा, उत्साह, प्रेरणा या सहायता चाहने का मायाजाल मृगमरोचिका नहीं तो क्या है?

आत्मशक्ति जाग्रत् करने के लिए संकेत

'मैं अकेला होते हुए भी शक्तिशाली हूँ। मेरे अन्दर वह शक्ति है, जो स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य कर सकती है। मैं दूसरों का अनुगामी न बनूँगा। मैं कभी दूसरों का अनुगामी न बनूँगा। मैं कभी दूसरों का अनुकरण न करूँगा। मैं अपनी महत्ता और प्रतिभा का प्रभाव दूसरों पर डाल सकता हूँ। मुझ में विशेषता है, निजो मोलिकता है। सच्ची शक्ति मेरे भीतर विद्यमान है। मुझ अपनी शक्तियों पर पूरा भरोसा है। मैं ने अकेले ही सफलता प्राप्त करने की दृढ़ प्रतिज्ञा की है। मेरी प्रतिज्ञा दृढ़ है और अटल है। उसे भगवान अवश्य पूरी करेंगे।'

कहानी—

अपना और पराया

[कुमारी सुदर्शन खोसला 'प्रभाकर']

मुख पर निरीह शैशव, अधरों की प्राकृतिक रक्तिम आभा पर फैली हुई शुष्कता का पुट ! शैला भयातुर सी पृथ्वी पर पड़े मृतक शिशु को विस्फाटित दृष्टि से ताकती रही ।

अचानक भीतर से आती हुई आशा शैला को देखते ही विह्वल सी चीख पड़ी—

'तुम—तुम—हत्यारी हो—तुमने अपने खूनी हाथों से मेरे बच्चे को पीस डाला है—नागिन अब आंखें फाड़ २ कर क्या देख रही है ? इसके कोमल शरीर में तेरे लिये अब रक्त नहीं है—यह केवल हड्डियों का पिञ्जर है—इस में अब कुछ नहीं है—'

आवेश के कारण वह अपने केशों को नोचने लगी, उसका वक्षस्थल उद्विग्नता के कारण शीघ्रता से उभरने-गिरने लगा ।

'मैं कहती हूँ—दूर हो जा—नीच—पतिता मेरे मृदुल-प्रसून से बच्चे को मिटाते समय तेरे हाथ क्यों न टूट गये । इसे कृत्रिम स्नेह से अपना क्यों कहती थी ? उस दिन—कैसे छाती से चिपका कर ले गई थी...पर मेरी आंखों पर—एक मां की आंखों पर धोखे की पट्टी बांध कर उसकी गोदी का स्नेह लूटते तुझे लज्जा न आई ? हट जा—मैं कहती हूँ—दूर हो जा—मेरी आंखों के सामने से—!'

और वह शिथिल सी चुप हो गई । कुछ क्षणों तक अपने बच्चे को मूक दृष्टि से ताकती रही फिर नीचे झुकी तथा मृतक बच्चे के मस्तक का चुम्बन लेकर रुदन करने लगी—

एक हृदय भ्रूणभोर देने वाला रुदन ! उसके बाद उसकी सिसकन हृदय की कन्दरा को निर्ममता से फोड़ कर उसके होंठों पर कराही और वह बिजली की सी तेज़ी से उठ कर खड़ी हो गई ।

'शैला—' वह पूरे बल से चिल्लाई । क्रोध से उसकी मुट्टियां तन गईं, मुख रक्तिम हो गया और वह दांत कट कटाने लगी ।

शैला सिर से पांव तक कांप गई और उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानों उसके मुख पर किसी ने रक्त सने हाथों से बड़े २ अक्षरों में लिख डाला हो—'हत्यारी !' उसने अपनी हथेलियों से मुंह छिपा लिया । आशा निरन्तर कहती रही—

'मुंह छिपाने से तेरा पाप नहीं छिप सकेगा राक्षसी, एक मासूम की हत्या तुझे चैन से जीने न देगी—तू भी धीरे २ तड़प २ कर मरेगी—तू—'

हौले २ आशा की आवाज़ करुणित चीखों में परिवर्तित हो गई तथा वह विग्रुत-गति से शैला पर झपट पड़ी । उसके बाल नोच डाले तथा अपने तेज़ नाखूनों से उसका मुंह छील दिया । निश्चेष्ट सी शैला लुढ़क गई । साक्षात् दुर्गा सी आशा उसका छाती पर चढ़ कर उस का गला दबोचने का उपक्रम करने लगी ।

'आह, यह क्या ?' कहती हुई दो-चार स्त्रियां आगे बढ़ीं और दोनों को पृथक कर डाला । एक वृद्धा आश्वासन के लिए उसकी

पीठ थपथपाते हुए बोली—

‘बिटिया संतोष करो। प्रभु इस नीचको जरूर उचित फल देंगे !’

‘संतोष—संतोष का बांध तो तभी टूट गया था जब मेरी इस नन्ही कलिका को इस निष्ठुर ने—मसल दिया था।’

और आशा फिर हृदय को द्रवित कर देने वाले स्वर में ज़ोरों से सुवकने लगी। उस को आवाज़ में इतना दर्द था कि वहां खड़ी अनेकों महिलाओं के नयन-कोर भीग गये।

‘रोओ मत—’ आशा की जेठानी ने कर्णित स्वर में कहा।

‘मुझे कुछ मत कहो’ आशा का स्वर विवशता की आग में भड़क रहा था।

‘ओफ—’ प्रत्युत्तर में जेठानी ने एक लंबा निःश्वास खींचा और आंचल से आंखें पोंछने लगी।

इसी बीच शैला उठी और लड़खड़ाते हुए अपने क्वार्टर को तरफ बढ़ गई। सभी उस को चाल को घृणा से घूरते रहे।

उसके बाद बच्चे को पोस्टमार्टम के लिए ले जाया गया। डाक्टर ने बतलाया कि बच्चे को घातक विष दिया गया है। आशा के घर के सभी सदस्य सिहर उठे। यह खबर सारे गांव में बिजली की तरह फैल गई। लोग शैला के नाम पर थूकने लगे। स्थान स्थान पर उसकी चर्चा होने लगी—

‘अरे, विधवा है। सात वर्षों से सिलाई का स्कूल खोलकर सेवा करने का ढोंग रचा रही है। इसे सब ‘देवी’ कहते थे, किसी को क्या पता था कि इस ‘पापिनी’ के हृदय में पाप-बीज पनप रहा है !’

‘और—इसकी आंखें—कितनी मोटी

हैं कभी कभी भय लगता था।’

चारों तरफ कुछ इसी प्रकार की कटू-कृतियां चल रही थीं। दूसरे दिन गांव भर थाने में जमा था। बहुत से लोग तो केवल-मात्र एक हत्यारी को देखने भर के लिये चले आए थे।

आशा वहां भी अविरल भाव से अश्रु-कण विखेरती जा रही थी। कुछ देर बाद दो-तीन सरकारी कर्मचारियों के साथ शैला धीरे-धीरे सरकती हुई वहां आ पहुंची।

यही है मेरे बच्चे की हत्यारी। उस दिन यह मेरे बच्चे को ले गई थी। मैं घर पर नहीं थी मेरे पीछे ही मेरी जेठानी मेरे बच्चे को ले आई और जब—जब मैं घर लौटी तो मेरा मासूम बच्चा तड़प रहा था—यही है जिसने मेरे बच्चे को मौत की गोद में सुलाया है—

आशा भावावेश में हांपने लगी। वह आंखें फाड़-फाड़ कर शैला को घूर रही थी। दूसरे क्षण वह शैला पर झपटने का प्रयास करने लगी परन्तु उसके पति ने उसे अपनी सबल बांहों में जकड़ लिया। वह रुक गई परन्तु उसका चिल्लाना बन्द न हुआ।

‘क्या इसी पाप को हृदय में छिपा कर मेरी सहोदरा बनी थी—बोली चुप क्यों हो ? तुम्हीं ने मेरे बच्चे को नृशंसता से पीसा है न ? तुम हत्यारी हो न —?’

आशा अर्धचेतना में बकती जा रही थी और शैला के मुंह की रंगत प्रतिक्षण बदलती जा रही थी। देखते-देखते उसके चेहरे पर उन्माद चिन्ह प्रकट होने लगे और वह बोली—

‘क्या कहती हो ? मैं हत्यारी हूं ? ठीक है मैंने इन हाथों से उस मासूम को मिटाया है।’

वह भावहीन सी कुछ देर तक हाथ रगड़ती रही फिर निराधार ही पृथ्वी पर गिर

पड़ी।

‘मैं कहती न थी—’ भीड़ में से किसी का स्त्री स्वर उभरा और उसके बाद शैला के विरुद्ध भांति २ की टीका टिपणियां होने लगीं।

इसके बाद बात यहीं रुक गई। डाक्टर ने निरीक्षण द्वारा बतलाया कि शैला के हृदय और मस्तिष्क पर गहरा धक्का लगा है। फिर भी शैला के अधरों से फूटे शब्दों तथा लोगों के आरोपों के परिणाम-स्वरूप शैला का दण्डित होना स्पष्ट ही था।

उसके बाद भीड़ बिखर गई लोग अपने घरों को जाने लगे लेकिन इस आश्चर्य-जनक समाचार ने गांव भर में तहलका मचा दिया।

आशा ने अन्तःस्थल में मचे तूफान को कठिनता से थामा और अपने घर का दरवाजा धकेल कर भीतर प्रविष्ट हुई। उसके पीछे २ उसका पति भी भीतर पहुंचा। अचानक दोनों रुक गये। भीतर से कोई कह रहा था—

‘आज मेरा हृदय शान्त हो गया। किस सफाई से कांटा निकाल फेंका।’

कहने वाला नृशंसता पूर्वक हंसा—यह आवाज आशा की जेठानी की थी। आशा कांप उठी। उसके हृदय पर मानो किसी ने मन भर का पत्थर धकेल दिया हो!

‘तुम ने पाप किया—घोर पाप!’ जेठका कंपित स्वर सुनाई दिया।

‘पाप? पाप-पुण्य तो कुछ भी नहीं है। वस मेरे उर की आग जरूर शांत हो गई—आज का दिन मेरे जीवन का सबसे अधिक रंगीन दिन है!’

‘चुप—रहो!’ जेठ का क्रोध तथा भय मिश्रित स्वर उभरा परन्तु शायद उसका निर्मम स्त्री पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वह कहती रही—

आज उसकी गोद भी मेरी तरह सूनी है—हा—हा—हा—

उसका हिसक अट्टहास सुनाई दिया। आशा के उर पर यह हंसी हथौड़ों की तरह बजने लगी।

‘पापिन—’ अस्फुट सा शब्द आशा के अधरों से फूटा और वह अर्धचेतन सी पृथ्वी पर गिरने को हुई। तभी उसके पति ने उसे बाहों में सम्भाल लिया।

‘आशा’ उसका उद्वेलित स्वर वातावरण में उभर पड़ा जिसे सुन कर आशा के जेठ जेठा-जेठानी घबराये से बाहिर आ गये। उनके मुख पर ठीक वही भाव था जो रंगे हाथों पकड़े गये चोर के मुंह पर होता है।

‘क्या है?’ उखड़े से स्वर में जेठ ने पूछा आशा के पति ने मानो यह प्रश्न सुना ही नहीं। वह विह्वल सा आशा की कांपती पलकों को देख रहा था—उसका सारा शरीर पसीने से तर था।

कुछ देर बाद आशा की चेतना लौटी। उसने मासूम दृष्टि से अपनी जेठानी को देखा। कुछ कहने को उसके अधर हिले परन्तु शीघ्र ही स्थिर हो गये। तत्पश्चात् विचित्र से भाव उभरे और वह पति का आधार छोड़ कर सीधी खड़ी हो गई और अनायास ही द्वार से बाहिर निकल गई।

‘आशा’ उसके पति का कंपित स्वर फिर उभरा और भौर वह द्वार पर लपका—देखा, आशा लड़खड़ाते पगों से शैला के क्वार्टर की तरफ जा रही थी। उसकी आंखें सजल हो गईं।

दरवाजे पर आकर आशा के कदम कुछ इस प्रकार जम गये मानों वह किसी पावक मन्दिर के द्वार पर खड़ी हो जिसकी वह अधिकारिणी नहीं। बड़ी कठिनाई से उसने अपने

शिक्षा की ऊष्मा बनी रहे

(आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री एम. ए., नासिक)

शिक्षा का सम्बन्ध आत्मजागृति से है। संस्कृत में 'आत्मा' शब्द साधारणतया मन, शरीर और आत्मा तीनों के लिए प्रयुक्त होता है। यही हाल पुरुष शब्द का भी है। वह जहाँ आत्मा के लिए प्रयुक्त होता है वहाँ सप्त धातुओं के लिए भी प्रयुक्त होता है। परन्तु आत्मा और पुरुष की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह शरीर की ऊष्मा को कायम रखने का प्रयत्न भारी कदमों को उठाया और भीतर प्रविष्ट हुई। उसके बाद वह देर तक उस श्रद्धा की प्रतिमूर्ति को सजल दृष्टि से निहारती रही।

'मैं—क्या—हूँ—फिर—कहो—?' शैला की हल्की सी आवाज़ आई। आशा आगे बढ़ी और उसपर झुकते हुए बोली—

'तुम मां हो—मेरे बच्चे की ही नहीं, सब की !'

हड़बड़ा कर शैला ने आंखें खोल दीं, बड़ी २, विशाल आंखें, जिन में वात्सल्य का पानी तैर रहा था।

'मैं लज्जित हूँ—' आशा सिसकते हुए बोली और विह्वल सी शैला से लिपट गई—

'मैं—स्नेह में पागल हो चुकी थी तुम्हारी सही पहचान भूल चुकी थी !'

शैला, भूल जाओ—सब कुछ—केवल इतना याद रखो—कि तुम एक मां थी और मां का स्नेह अन्धा होता है।'

बड़ी कठिनाई से शैला ने अपनी बांह उठा कर आशा के गिर्द लिपटाई और आशा की कांपती पलकों से दो अश्रु कण गिर कर शैला के विशाल मस्तक पर गिर गये।

करता है। आत्मा का नाम आत्मा इस लिए है कि वह निरन्तर गति एवं स्फूर्ति देकर ऊष्मा को जागृत रखता है। पुरुष शब्द इस कारणसे आत्मा के लिए प्रयुक्त होता है कि वह आती हुई ऊष्मा की कमी को पूरा रखने एवं मानदंड में रखने का प्रयत्न करता है। लोक में लोग कहते हैं कि कलेवर बाकी परन्तु फूक निकल गयी। इस प्रकार जिस भी वस्तु से फूक निकल जावे वह निकम्मी बन जाती है।

यह आत्मा ही ऊष्माका केन्द्र है। जीवित और मृत की पहचान भी यह ऊष्मा ही है। जीता हुआ व्यक्ति ऊष्मा युक्त होता है किन्तु उसके मरने पर ठण्डा पड़ जाता है। ऊष्मा को जीवन और शैत्य को मृत्यु की निशानी बतलाया गया है। आत्मा के शरीर में रहते हुए एक ऊष्मा कार्य करती रहती है जिसपर शरीर और उसके अष्ट अंगों की स्थिति है। शब्दों के उच्चारण में भी इसकी महत्ता है। व्याकरण शास्त्र में जिसे प्रयत्न कहा जाता है उसका बहुत सा खेल इस ऊष्मा पर ही निर्भर है। श, ष, स,—वर्णों के उच्चारण में ऊष्मा का अधिक प्रयोग होता है—अतः वे नाम से ही ऊष्मा वर्ग कहलाते हैं। ऐसी ही अवस्था शिक्षा की भी है। शिक्षा में भी एक ऊष्मा है। उसी को शिक्षा का वीर्य भी कहा जाता है। गुरु और शिष्य का सम्बन्ध इस वीर्य एवं ऊष्मा को सुरक्षित रखने का साधन है। मुख्य साधन तो गुरु एवं आचार्य जन हैं जो इसको अक्षुण्ण रखते हैं। निरुक्त में कहा गया है कि विद्या विद्वान् के पास गयी, (शेष सफा १८ पर)

विज्ञान अनुसंधान की अन्तिम सीमा पर पहुँच गया है !

[पं० जवाहर लाल नेहरू]

भौतिक राकेट और उद्जन वम मानव के मानसिक और नैतिक विकास के दो विभिन्न पहलू हैं। मनुष्य के हृदय में भौतिक जगत के स्वरूप को समझने और उसमें निहित दृश्यमान असीम बहुरूपता में एकता का रहस्य जाननेकी उत्कण्ठा विद्यमान है। भौतिक राकेट इसी उत्कण्ठा और कौतूहलका परिणाम है। यह राकेट उस मानवकी सर्वोपरि सफलता है जो अज्ञातका ज्ञाता और विजेता है जो अबतक आकर्षण शक्ति का बन्दी बना रहा और जो आकाश के सौंदर्य और उसके रहस्यों से विमोहित हुआ नित्य आकाश की ओर दृष्टि लगाये रहता था। जिस भावना ने राकेट को जन्म दिया वह धर्म और दर्शन से मिलती जुलती है। बहुत समय व्यतीत नहीं हुआ जब वैज्ञानिकों को जादूगर, नास्तिक और अनीश्वरवादी कह कर उनकी निंदा की जाती थी क्योंकि वे सत्य के अन्वेषणार्थ इन अन्धविश्वासों और मान्यताओं की अपेक्षा किया करते थे। विज्ञान और धर्ममें कोई विरोध नहीं है। विज्ञान तो अन्धविश्वास और अज्ञान का ही शत्रु है। विश्वके बहुत से दार्शनिकों और धर्मोपदेष्टाओंकी यह मान्यता है कि विज्ञान एकमात्र विश्वके रहस्यों की बुद्धि संगत उहापोह करता है उसमें विश्वकी सृजनाका रहस्य बतानेकी क्षमता नहीं है जो आध्यत्मिक शक्तियोंसे प्रशासित है। इसके संचालनका रहस्य तो एकमात्र ध्यान और योग साधना से ही ध्यानी और योगी जनों पर स्पष्ट होता है। जीवन के रहस्यों को खोल कर हमारे सामने रख देने की विज्ञान की क्षमता के विषय में जो सन्देह पाया जाता है वही सन्देह स्वयं वैज्ञानिकोंकी भी है। भौतिक और आध्या-

त्मिक के बीच की रेखा प्रति दिन पतली होती जा रही है और वह दिन दूर नहीं है जब विज्ञान को यहस्वीकार करना होगा कि वह अनुसंधान की अन्तिम सीमा पर पहुँच गया है और वह गहराई तक पहुँचने में असमर्थ है। विज्ञान और यन्त्रोंने मनुष्य के जीवन में क्रांति उत्पन्न कर दी है। उन्होंने दूरीको समाप्त करके संसारको एक और अविभाज्य बना दिया है। विज्ञान और यन्त्रों ने जिस औद्योगिक समाज की सजना की उसने मानवकी जीवन-पद्धति को विल्कुल बदल दिया है बहुत से व्यक्ति प्राविधिक समाज व्यवस्थाके आगमन, इससे उत्पन्न पारिवारिक जीवन के विघटन इससे प्रोत्साहित भौतिकवाद, आर्थिक असमानताओं तथा विनाश एवं संहारके भयंकर अस्त्रों के आविष्कार पर जो राष्ट्रों के हाथों में रख दिए गये हैं दुःख प्रकट करते हैं। संसार में व्याप्त सामाजिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक अव्यवस्था के लिए वैज्ञानिकों को उत्तरदाता ठहराना उनके प्रति अन्याय करना है। विज्ञान से हमें ज्ञान और शक्ति प्राप्त होती है, दर्शन और धर्मका कार्य गुणोंका विकास करना है, हम अविवेकपूर्ण ढंग से शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं। विज्ञान और यन्त्रों ने जिस वातावरण की सृष्टि की हम अपने को उसके अनुरूप नहीं बना सके हैं। जब तक हम स्थानीय, प्रदेशीय तथा अन्यान्य विघटन कारिणी ममताओं से मुक्त न होंगे, राज्य की प्रभुता के पुराने सिद्धांतों का परित्याग करके विश्वव्यापी स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे पर अवलम्बित समाज-व्यवस्था के प्रति निष्ठावान न होंगे तब तक हम विज्ञान का पूर्ण लाभ उठाने में सफल न हो सकेंगे।

सिनेमा के दुष्प्रभाव से युवकों को बचाओ !

[श्री रामेश्वर प्रसाद एम. ए., पी. एच. डी.]

हमारी आकांक्षाओं के अनुरूप हमारे आदर्श का निर्माण होता है तथा आदर्शके अनुरूप हम आचरण करने का प्रयत्न करते हैं। हम जो चाहते हैं, वही बनने का प्रयास करते हैं। आदर्श हमारी इच्छा और हमारे आचरण की बीच की कड़ी है अथवा आदर्श वह सोपान है, जिसके माध्यम से हम अपनी महात्वाकांक्षा की सिद्धि का स्वप्न देखते हैं। कभी हम आदर्श की प्रतिमा की पूजा करते हैं, कभी उसके चित्र के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं, कभी उसका गुणगान करके उसका स्मरण करते हैं। आज कल हमारे कमरोंमें कितने चित्र लटकते दिखाई देते हैं ? अखबारों में कितनी चर्चा होती है ? हमारे नवयुवक किसके हस्ताक्षर एकत्र करते हैं— फिल्म स्टारों के ! आपस में चर्चा करते हैं तो इन्हीं की। वे सिनेमा के गीत गाते हैं तथा स्वयं सिनेमा के सितारे हमारे लिए आदर्श बन चुके हैं।

हम को कोई साबुन इसलिए इस्तेमाल करना चाहिए, क्योंकि सिनेमा की अमुक तारिका उसको इस्तेमाल करती है। हमको कोई क्रीम इसलिए खरीदनी चाहिए, क्योंकि सिनेमा की अमुक तारिका की चमड़ी उसके कारण मुलायम रहती है। हमको अमुक पाउडर इसलिए लगाना चाहिए, क्योंकि सिनेमा की अमुक तारिका की तस्वीर उसके डिब्बे के ऊपर छप रही है। हमको चाहिए कि अमुक मंजन का प्रयोग किया करें, क्योंकि मंजन करने वाले के पास सिनेमा के मशहूर सितारे के द्वारा दिया

गया सर्टीफिकेट या तमगा मौजूद है। हमारे सांस्कृतिक समारोह में अमुक गाना होना चाहिए क्योंकि उसको गाने वाली तारिका को गाने की फीस के रूप में पचास हजार रुपए मिले हैं तथा जब उसके गाने का दृश्य दर्शकों के सम्मुख आता है, तब पर्दे के ऊपर दुःअन्नियां फिकने लगती हैं। सारांश यह कि सिनेमा हमारे जीवन का आदर्श बन गया है तथा उसमें काम करने वालों के बताए हुए मार्ग पर चलकर हम जीवन में सफलता की इच्छा करते हैं।

हम कहीं भी चले जाएं, हम को सिनेमा का प्रभाव दिखाई देगा। बाजार में घूमने वाली औरतों अथवा विवाहों में घूँघट काढ़ कर जाने वाली महिलाओं, प्रत्येक की पोशाक ऐसी होगी जिसमें सिनेमा की तारिकाओं की भांति वह अर्द्धनग्ना बनी रहें। नवयुवक बुशशर्ट के लिए एकट्टेसों के नाम से बिकने वाला कपड़ा खरीदते हैं, एकटरों जैसे बाल कटवाते हैं, उनके जैसे पैण्ट पहनते हैं।

इन सब का परिणाम सामने है। हमारे देश के नौनिहाल प्यार के स्वप्न देखते हैं अथवा प्रेम के दीवाने बन कर दिल के हजार टुकड़े कर देने की तमन्ना करने लगते हैं। उनके जीवन का छोटा-सा उद्देश्य बन गया है—सिनेमा लाईन में नौकरी पाना। इसके लिए वे कभी घर से चोरी करके बम्बई का टिकट कटाते हैं। बम्बई में निर्देशकों तथा फिल्म मालिकों के घर की खाक छानते हैं, फुटपाथ पर सोते हैं, बे-आबरू होते हैं और अन्तमें 'अभागा' के नामसे घर (१८५२

मनुष्य को सुख कहाँ और कैसे मिल सकता है ?

[विश्व विख्यात विद्वानों के अमूल्य विचार]

मनुष्यमात्र सुख का आकांक्षी है । एक अंग्रेज कवि ने सुख की आकांक्षा को 'जीवन-डोर' का नाम दिया है । टालस्टाय कहते हैं कि, सुख की कल्पना अगर वरदान के रूप में मनुष्य को नहीं मिलती, तो मनुष्य इस सृष्टि का सबसे अभागा जीव होता । मनुष्यके ऊपर भगवान की दया, वास्तव में अपरिमित है । भगवान मनुष्य को देने से कभी थका नहीं है । सुख का चरम् विकसित रूप 'स्वर्ग' तक मनुष्य को भगवान ने दिया है और 'स्वर्ग' भी मनुष्य से बाहर नहीं है, स्वयं उसके भीतर ही बद्ध-मूल है ।

किंतु सुख, हमारी जीवन-लीला का मूलाधार होते हुए भी, अकसर हमारे लिए मृग-मरीचिका ही बना रहता है । कई व्यक्ति आ-जीवन उसको पाने का प्रयत्न करते हैं; किंतु उसे अपने जीवन में प्रायः नहीं उतार पाते । इसके कई कारण हैं और इन कारणों का पता लगाने में अनेक तत्त्व वेत्ताओं ने अपने जीवन खपा दिये हैं । एक टेलिविज़न-भाषण में डा० राधा कृष्णन् ने इस प्रसंग में बड़े सारगर्भित वाक्य कहे थे—'सुख इतना ही सहज-प्राप्य है, जितने कि, हवा, पानी, धूप और हरियाली । जहाँ चाहें और जब चाहें, आप उसे प्राप्त कर सकते हैं । सारा सवाल इच्छा का है । सुख-प्राप्ति के लिए हमारी इच्छा में काफी बल होना चाहिए और दूसरे, इच्छा की दिशा संकीर्ण न हो, वरन् इतनी व्यापक हो कि, मनुष्यमात्र के कल्याण का उसमें समावेश हो । हमारे दृष्टिकोण में जब यह परिवर्तन आ जायेगा, तो हम अपने चारों

ओर सुख ही सुख बिखरा हुआ पाएंगे, क्योंकि सुख एक होने में नहीं, अनेक में है । भगवान को हम हिंदू लोग 'आनन्दस्वरूप' इसी लिए कहते हैं कि, वह घट-घट में समाया हुआ है, वह एक नहीं अनेक है; विराट् है । आप अपने को 'स्व' की परिधि से मुक्त कीजिये—जितने आप अपने से दूर जाएंगे, उतने ही आप सुख के निकट आएंगे । फूल की तरह आप अपने से आपको मुक्त कर दीजिये, अपना अंतः-कोष खोल दीजिये, फिर जो भी आप के निकट आयेगा, आपको अनुराग चढ़ायेगा ।"

उपर्युक्त पंक्तियों से सुख के रहस्यों पर काफी अच्छा प्रकाश पड़ता है—अर्थात् सुख न तो जीवन-सामग्रियों की प्रचुरता में है न ज्ञान विद्या के अक्षय कोष में । सहस्र-सहस्र सुविधाओं से घिरे व्यक्ति भी प्रायः दुख के दलदल में आकंठ-ग्रस्त पाये जाते हैं । अपने आसपास भी आपको ऐसे कई व्यक्ति मिलेंगे, जो धन एवं कीर्ति की विपुलता के बावजूद दुख के विभिन्न आतंकों से पीड़ित हैं । अनेक विद्या-बुद्धि-सम्पन्न व्यक्तियों का भी यही हाल है । शोपनहावर की गिनती दुनिया के प्रख्यात दर्शनवेत्ताओं में की जाती है; किंतु अगाध विद्वत्ता के होते हुए भी, वह आजीवन दुःख, नैराश्य एवं विषादसे संतप्त रहा । सुप्रसिद्ध फ्रेंच लेखक मोपासां भी असीम यशोपार्जन के बावजूद जीवन-भर भय, दुख तथा अवसाद का आखेट बना रहा । इसी प्रकार सर मोहम्मद इकबाल की जीवन-लिपि भी मानो दुर्भाग्य के ही अक्षरों में लिखी गयी थी—कस्तूरी के मृग की भांति वे भी सदैव सुख की भांति में

यावज्जीवन भटकते रहे।

सुख को लेकर रूप और यौवन के साथ भी यही परिस्थिति है। सुख वहाँ भी नहीं है। बर्नर्ड शा ने अपने एक पात्र से इस सम्बन्ध में बड़े तत्व की बातें कहलवायी हैं। गले तक संतापों में डूबी एक विख्यात नर्तकी कहती है—
“यह रूप, यह यौवन और मेरी यह कला ज़हर की एक पुड़िया से कुछ ज्यादा महत्व नहीं रखती है। नहीं-नहीं ज़हर की पुड़िया तो उल्टे इनसे अच्छी है : क्योंकि वह दुख में जकड़ती नहीं मुक्त ही करती है। कितना अच्छा हो कि, क्षण भर के सुख के बदले मेरा यह सौंदर्य, यह यौवन और मेरी यह कीर्ति कोई ले ले। मगर क्या कहीं कोई ऐसा मूर्ख भी होगा कि ऐसा विनिमय स्वीकार करेगा ?” अस्तु, इस सुख का निवास फिर कहां है ? धन में नहीं, रूप-यौवन में नहीं, ज्ञान-विज्ञान में नहीं, यश-कीर्ति में भी नहीं। तो फिर उसे कहां ढूँढा जाये ? इस प्रश्न के सम्मुख एक अति रोचक प्रसंग याद आ जाता है। किसी समय बंगाल में गोपाल भांड की बड़ी ख्याति थी। बीरबल की तरह वे भी अपनी हास्य-व्यंगमयी कुशाग्र बुद्धि के लिए प्रसिद्ध थे। वे सदैव इतने हर्षोल्लास में रहते थे कि, लोग उनके सौभाग्य पर ईर्ष्या करते थे। सर्वसाधारण में यह धारणा दिन-ब-दिन गहरी होती जा रही थी कि किसी महात्मा ने उनको ‘सुखदा’ नाम की एक मणि दे रखी है, जिसके प्रभाव से सदैव सुखी एवं प्रफुल्ल रहते हैं। राजा के यहां जो पंडित थे, उनको भांड अपनी पैनी व्यंग्य बुद्धि द्वारा अच्छी-खासी खबर लिया करते थे। एक रात को राज्य के सारे पंडित एकत्र होकर गोपाल भांड से प्रतिशोध लेने के लिए निकले। गोपाल भांड भोजन करने के लिये बाहर निकले।

थे कि पंडितों ने आकर उन्हें पकड़ लिया और रस्सी से बांध कर उन्हें पीटने लगे। गोपाल भांड ने उद्देश्य पूछा, तो पंडितों ने ‘सुखदा’ मणि की मांग की। गोपाल भांड को हंसी आये बिना न रही। हंसते हुए वे बोले, ‘अरे भाई, मारते क्यों हो वैसे ही क्यों नहीं मांग लेते ?’

चोरी के डर से मैंने उसे जंगल में गाड़ रखा है। मेरे साथ चलो तुम्हें वह स्थान बता देता हूँ।

कहने-भर की देर थी। सब पंडित उनके साथ हो लिये। बीच जंगल में जाकर गोपाल रुके और पंडितों को सम्बोधित कर कहने लगे—
‘यहां से सिर्फ दो सौ कदम दूर चन्द्रमा के ठीक नीचे मैंने वह मणि गाड़ रखी है, आप में से जो बुद्धिमान हो वह ढूँढ ले।’ पंडितों के लिए यह एक चुनौती थी। सब को अपनी बुद्धि पर गर्व था चन्द्रमा के निशान पर सब मणि की अवस्थिति खोजने लगे। मगर वे जहां जाते चन्द्रमा वहीं उनके सिर पर रहता। इस प्रकार उनमें से प्रत्येक पंडित को विश्वास हो गया कि, चन्द्रमा केवल उसी के सिर पर है और वहीं बैठ कर वह ज़मीन खोदने लगा। इस प्रकार उन डूढ़ सौ पंडितों ने रात भर में पूरी दो बीघा ज़मीन खोद डाली। गोपाल भांड वहीं पेड़ के नीचे सुख को नींद सोते रहे। सवेरा हुआ तो उठकर पंडितों के पास गये—‘भाइयो, रात भर कठिन परिश्रम करके आपने मेरे लिए जो खेत तैयार किया है, उसके लिए मैं आपका बड़ा आभारी हूँ। इस मेहनत का मैं आप लोगों को पुरस्कार देना चाहता हूँ। और वह पुरस्कार है—‘सुखदा मणि’। मैंने आप लोगों से कहा था कि, ठीक चांद के नीचे सुखदा मणि गड़ी है, जिसमें बुद्धि दो सौ खोद ले। वह बात मैंने सही कही थी।

(सफा १५ से आगे)

वालों को चिट्ठी डाल कर आत्म-हत्या की धमकी देते हैं।

विज्ञापन तथा गीत हमारे समाज के नैतिक स्तर के द्योतक हैं। उनके अनुरूप ही हमारे आचरणों का अनुमान लगाया जा सकता है। अब आप ही विचार कर सकते हैं कि हमारा समाज किस ओर जा रहा है। सिनेमा के तारक तारिकाएं जब हमारे आदर्श बन गए हैं, तब हम अधिक-से-अधिक क्या बन सकते हैं ? मैं इन तारक-तारिकाओं को निम्न कोटि का व्यक्ति नहीं समझता हूं। मैं समाज में उनका महत्वपूर्ण स्थान भी स्वीकार करता हूं, परन्तु साथ ही यह भी मानता हूं कि यद्यपि जीवन में उनका स्थान है, तथापि वे हमारे जीवन का आदर्श नहीं हैं। इनके कारण हमारे समाज के मूल्य बहुत कुछ बदल चुके हैं और बहुत त्रेजी के साथ बदलते जा रहे हैं। ऐसे कितने नवयुवक अथवा नवयुवतियां हैं, जो राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, शंकराचार्य, दयानन्द, गांधी प्रभृति विभूतियों के चित्र अपने कमरे में टांगते हैं अथवा

चांद के नीचे आप लोगों के सिर थे और मनुष्य के सिर में ही सूखदा मणि रहती है।”

वास्तव में, सुख का रहस्य यही है। सुख मनुष्य की विवेक बुद्धि में है। अपने दृष्टिकोण को बदलिये, आपका दुख भी सुख में बदल जायेगा। संसार को भगवान् बुद्ध की सबसे बड़ी देन यही है। संसार के चतुर्दिक फैले निविड़ दुख से हमें विमुख बनाकर उन्होंने अमृत-तत्त्व की ओर उन्मुख किया। दुःख की जो परिस्थितियां हैं, उन्हें परिपूर्ण विवेक से परखिये। दुःख के ये पर्वत आपकी परीक्षा की अग्नि में स्वमेव भस्मसात् हो जाएंगे।

उनके जीवन के बारे में कुछ जानकारी रखते, हैं ? परन्तु शायद ही ऐसा कोई नवयुवक हो जिसकी मेज पर सिनेमा की तारिकाओं का एल्बम न हो तथा जो उनकी जीवनी तथा उन के भावी कार्यक्रम से परिचित न हो ? आवश्यकता है इस बात की कि सरकार फिल्मों के निर्माण पर कड़ा नियन्त्रण रखे जिससे अश्लोचन निर्र्थक और उद्देश्यहीन फिल्में बन ही न सकें।

(सफा १३ से आगे)

और कहा कि मेरी रक्षा करना—जिससे कि मैं वीर्यवती बनी रहूं। आचार्य जन इसके निधिप हैं। यह उनकी शोध है। पढ़ी पढ़ाई विद्या का जब यह वीर्य निकल जाता है तब वह ऊष्मा रहित हो जाती है। संस्थाएं बहुत हैं, पढ़ाई भी कहते हैं बहुत होती है, प्रचार और उत्सव बहुत बड़े तड़क-भड़क के होते हैं, परन्तु शिक्षा का स्तर और उसकी उपज शक्ति नष्टप्राय है। पदवियां प्राप्त करने पर भी ज्ञान के स्थान में अन्धकार और कुण्ठता ने आधिपत्य जमाया है। इस ऊष्मा के बढ़ाने के साधन अध्ययनाध्यापन और अन्वेषण एवं विविध शैक्षणिक प्रगतियां हैं। मनुष्य के ज्ञान की वृद्धि में उसका क्यों ? कैसे ! और क्या ? बहुत बड़ा खेल खेलते हैं। जहां पर इसका अभाव हो जाता है वहां अनुसन्धान की वृत्तिसमाप्त हो जाती है। इस वृत्ति की समाप्ति ऊष्मा की भी समाप्ति का कारण बन जाती है। यह आवश्यक है कि सरस्वती के मन्दिर में शिक्षण क्रम को चलाने के लिए विशेष योग्यता और दक्षता का प्रयोग किया जावे। इससे ही शिक्षण की जीवनमयी ऊष्मा बनी रहेगी। इसकी ओर वस्तुतः विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

* भारतीय बाल सभा *

बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी

अध्यक्षा : दीदी

फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र०—इस वर्ष ग्रीष्मावकाश कब होगा ? —हरि प्रकाश, लुधियाना।

उ०—१ जून से १५ जुलाई तक। मगर छुट्टियों के लिए इतने ब्रेचैन क्यों हो, बताओ तो ?

प्र०—मूर्ख की पहचान क्या है ?

—तिलकराज, गुड़गांव।

उ०—यह कि वह स्वयं को दूसरों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान समझता है।

प्र०—जब चन्द्रलोक में न जल है न वायुमंडल तो फिर मनुष्य वहां पहुंचने को क्यों इतना उत्सुक है ?

—द्वारिकादास अमृतसर।

उ०—इसका कारण है विश्व के अधिकाधिक रहस्यों को जानने की मनुष्य की जिज्ञासा। एवरेस्ट की चोटी पर ही पहुंच कर किसी को क्या मिल गया, कहो तो ?

प्र०—गधे के सिर पर सींग उग आए तो ? —महेन्द्रसिंह तरन तारन।

उ०—तो तुम दोनों में पहचान मुश्किल हो जाएगी ?—(देखो, बुरा मान गए ? मगर तुमने ऐसा प्रश्न पूछा ही क्यों ?)

प्र०—‘अल्हादीनका चिराग आजकल किस के पास है ? —सोमदत्त, भटिण्डा।

उ०—फिल्में बनाने वालों के पास जो घण्टों में महल खड़े करना जानते हैं। मगर, क्या तुम इसे भी ‘कोहेनूर’ जैसी कोई अमूल्य वास्तविक वस्तु समझते हो ?

प्र०—काश मैं आकाश मैं उड़ सकती ? —सावित्री मेरठ।

उ०—तो क्या तुम आकाश से तारे तोड़ कर ले आती ?

प्र०—सोना इतना महंगा क्यों है ?

—दुनीचन्द देहली।

उ०—जो वस्तु जितनी ही दुर्लभ होगी उतनी ही महंगी भी। —दीदी

हास्य व्यंग्य—

मैं बम्बई का एक करोड़पति हूँ !

—श्री श्याम किशोर

मैं बम्बई का एक करोड़पति हूँ ।

मैं सत्तर वर्ष का एक युवक हूँ । जवानी मेरे पाओं के नाखूनों की मल का सेवन कर अमर हो गई है । मेरी रग-रग में जवानी का लहू दौड़ रहा है । मेरे चेहरे पर जो रौनक है, जो चमक है, वह मेरे सफेद बालों की खिल्ली उड़ाती है । मेरे सिर पर सफेद बाल वैद्यों के दिमाग की खराबी का जबरदस्त सबूत हैं । वैद्यों का आपरेशन करवाने के लिए मैं अमरीका के सबसे कुशल डाक्टर को तीन करोड़ रुपए में खरीद सकता हूँ । मेरी हार्दिक इच्छा है कि वैद्यों का दिमाग दुरुस्त हो जाए ।

मैं बम्बई का एक करोड़पति हूँ ।

देश-विदेश में मेरा बिजनेस चलता है । लाखों इन्सानों के लिए मैं अन्नदाता हूँ । मेरी मुसकराहटों से रुपयों की वर्षा होती है, और मेरी भवों के तन जाने से अभिशाप का सागर कसमसाने लगता है ।

बम्बई राज्य में शराब पीना जुर्म है । किन्तु मेरे विलास कक्षमें दिन रात मदिरा के दौर-चलते हैं, शराब की नदी बहतो है, किशोरियों का नग्न नृत्य होता है और जुए की बाजियों पर बाजियां लगती हैं ।

मेरी इस इन्द्र सभा में सभासद हैं राज्य के मन्त्री, पुलिस के अफसर तथा अन्य महानुभाव जिन में धर्मके ठेकेदार भी शामिल हैं । मेरे रंगमहल की दीवारें सोने और चांदी की बनी हैं, जिनमें कीमती पत्थर सितारों की भांति जड़े हुए हैं । वहां नग्न तरुणियां सुन्दर व आकर्षक पोज बना कर पाषाण प्रतिमाओं की तरह निस्तब्ध खड़ी हैं ।

मैं बम्बई का एक करोड़पति हूँ ।

मेरे वैभव की दीवाली में सहस्रों प्राणियों के शरीर मिट्टी के दीप की भांति रक्त का तेल और श्वासों की प्रज्वलित बाती लिये जलते हैं । मेरे चांदी की सिक्कों की भंकार एक विराट् मानव समुदाय के लिए प्राण-गीत है ।

मैं बम्बई का एक करोड़पति हूँ ।

मैंने कितनी ही धर्मशालाएं बनवाई हैं । गरीबों की भूख की आग को ठंडा करने के लिए मैंने कितने ही लंगर खोल रखे हैं । अभी-अभी मैंने छः लाख की लागत से कुंज-बिहारी, वीर धीर शिरोमणि भगवान् कृष्ण का भव्य मन्दिर बनवाया है । वृन्दावन के कुंजों में गोपियों के साथ रास रचाने वाला और यमुना के तट पर

खड़ी ब्रजबालाओं से खेलने वाला बाल
कन्हैया मुझे बहुत अच्छा लगता है। कुरु-
क्षेत्र की रणभूमि में कर्मठ व युद्धकुशल
कृष्ण मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है। उसने
पांडवों को अपने अधिकार-हित लड़ने की
मन्त्रणा दी थी। 'अधिकार' शब्दके स्मरण
मात्र से ही मुझे मजदूरों के अधिकारों की
याद हो आती है। तब मैं एक अज्ञात भय
से रोमांचित हो उठता हूँ। मेरा तो विचार
है कि मशीनों से उलझने वाले इनसानों व
भिखमंगोंका अधिकार बस इतना ही है कि
वे आंखों में आंसू और ओठों पर सिस-
कियां लाये बिना मरते चले जाएं।

मैं बम्बई का एक करोड़पति हूँ।

मुझे धर्म में श्रद्धा नहीं, ईश्वर में भी
विश्वास नहीं है। पाप-पुण्यकी चिंता और
स्वर्ग की इच्छा भी नहीं है। फिर भी मुझे
आंखें बन्द करके मन्दिर में रामायण की
कथा सुननी पड़ती है। रामायण सुनते
समय मुझे कुछ ऐसा महसूस होता है, जैसे
मेरा इन्द्रासन मुझ से छिन गया है और
मैं इंजेक्शन की शीशियों में रंगदार पानी
भरने के अपराध में नरक में जल रहा हूँ।
मैं हमेशा उस प्रसंग को टालता रहता हूँ,
पर वह पंडित की दुम पीछा ही नहीं
छोड़ती। वही राम जो बाप के कहने मात्र
से अयोध्या का राज्य छोड़ वन को चला

इन्सान बनो तो अच्छा है !

मैं जगमग करता चांद बनूँ
दिल मेरा मचलता रहता है,
पर अम्मी मुझ से कहती है
तुम चांद बनो तो क्या हासिल ?
वह सिर्फ चमकता रहता है।

मैं एक महकता फूल बनूँ
दिल मेरा मचलता रहता है
पर अम्मी मुझ से कहती है
तुम फूल बनो तो क्या हासिल ?
वह सिर्फ महकता रहता है।

यह चीज बनूँ, वह चीज बनूँ
दिल मेरा मचलता रहता है
तब अम्मी मुझ से कहती है
इन्सान बनो तो बात भी है
वह सब से अच्छा होता है।

यह चांद सितारे फूल और फल
यह बाग चमन खेती जंगल,
हर तरफ इशारे कर कर के
हर चीज दिखा कर कहती है
इन्सान बनो तो अच्छा है।

गया था, कदापि पूजा का पात्र नहीं हो
सकता। राज्य सिंहासनको केवल इसलिए
छोड़ देना कि बूढ़े और निर्मोही बाप की
बात रह जाय, मेरे ख्याल में बेवकूफी की
हद है।

(रवि)

★ जग बीती ★

मैं सोकर उठा ही था, छज्जे पर टहलने लगा। 'तुम्हें ले जाना पड़ेगा'—किसी ने ऊँचे स्वर में कहा। 'नहीं मैं नहीं ले जाऊंगा। मैं कुली नहीं हूँ।' किसी किशोर की आवाज कानों में पड़ी। आंख उटाकर देखा कि सामने वाले मकान के नीचे रिक्शा खड़ा है जिसमें एक एटैची और होलडोल है। नवयुवक रिक्शा चालक के पास ही वे बाबू जी भी खड़े हैं जिन्हें वह सवेरे २ स्टेशन से लाया है। बात तुरन्त समझ में आ गई। बाबू जी रिक्शा वालेसे सामान ऊपर लेचलने को कह रहे थे और वह दृढ़ता से इन्कार कर रहा था। बाबू जी के परिचय में इतना बताना पर्याप्त होगा कि वे किसी सरकारी दफ्तर के साधारण क्लर्क तो नहीं, किंतु कुछ ऊँचे पदपर आसीन हैं। मतलब कि उनके नीचे कुछ कर्मचारी काम करते हैं, जिन पर हुक्म चलाने का अवसर उन्हें प्राप्त है। "अबे, नहीं चलेगा!" वे डपट कर बोले। 'पैसे दीजिये मैं ले चलूंगा। युवक ने कुछ दबी आवाज में कहा।

'लड़के, जिद्द क्यों कर रहा है? सभी ऊपर ले जाते हैं। तेरी क्या नई बात है।' पड़ोस के एक मजदूर ने कहा। उसके

कहने में बाबू जी की खुशामद को गंध थी तथा युवक को सीख देकर उसका शुभ-चित्तक बनने का प्रदर्शन था। मैंने सोचा गरीब भी गरीब का साथ नहीं दे रहा। नहीं! नहीं!! चाहते हुए भी वह साथ नहीं दे पा रहा। यही उसकी विवशता है।

'जा तुझे पैसे नहीं मिलेंगे। नहीं तो सामान ऊपर पहुंचा।' बाबू जी ने अपना निर्णय दिया। 'मैं कुली नहीं हूँ और तुम्हें पैसे देने होंगे।'—रिक्शा वालेने निर्भीकता से कहा। 'कुली नहीं है और रिक्शा चलाता है।' बाबू जी ने व्यंग किया। इस कहा सुनी में बाबू जी के नौकर की आंख खुल गई। वह आंखें मलता हुआ नीचे आ खड़ा हुआ और रिक्शा से सामान उतार लिया। बाबू जी ने, जो खीझ उठे थे अवसर का लाभ उठाया। बिना पैसे दिये ऊपर चढ़ गए। युवक थोड़ी देर मौन खड़ा रहा। फिर कई आवाजें दीं—'बाबू जी, पैसे भिजवा दीजिये।'

मैंने सोचा। स्वाभिमान बड़ों की ही बपौती नहीं, छोटों में भी होता है। युवक के स्वाभिमान और दृढ़ता को देख कर मन उसकी मौन प्रशंसा कर उठा और आत्मा को सात्विक बल प्राप्त हुआ।

क्या कहें एहबाब क्या कारे नुमायां कर गये, बी.ए. किया, नौकर हुए पैन्शन मिली और मरगाए

उषा आमन्त्रण

(श्री 'शालिहास' सिरसा)

(क्रमागत) (२९)

उषा का मित्र से संयोग ।

जब खगाऽऽली गीत गाती,

तान से तानें मिलाती ।

औ' प्रकृति-सौंदर्य को नयनोंसे पीते लोग ।

उषा का मित्र से संयोग ।

अलसभर पलकें उठा कर,

स्मित नयन चितवन चला कर

अब उषा, तजती अशोभन-

रवि-विरह का रोग ।

उषा का मित्र से संयोग

रवि किरण-छूँकर, उषा मन

तरलतर होता है क्षण-क्षण !

लाज की लाली श्रवण युग

रंग रही सोद्योग ।

उषा का मित्र से संयोग

(३०)

सुना है ऊषा भी गाती है

अम्बर के कुछ मन्द सितारे,

कान लगाये सुनते सारे ।

पर उस मधुर कंठ का गायन-

प्रथम हवा ही सुन पाती है

सुना है ऊषा भी गाती है ।

'उठो, विश्व-जन! हुआ सवेरा

बीत रही निद्रा में बेला ।'

ये लड़ाई भगड़े

हम रहे लड़ते परस्पर आज तक—

क्या न होगी खत्म भी यह गृह कलह ।

बंट चुका है राष्ट्र तो दो खण्ड में

और क्या आफत गई है शेष रह ॥

बम्बई, गुजरात को मिल जाय या—

वह मराठों की रहे बन कर सिरफ ।

कुछ न बनता, बिगड़ता है राष्ट्र का-

हिंद की थी, आज भी है हिंदकी ही वह ॥

बोलियों का ले सहारा क्यों लड़ें

बोलियां मारें हृदय में तीर सी ।

गोलियां खाएं, मरें बस व्यर्थ ही

देश हितता क्या भला इसमें बसी ?

प्रगति की ये योजनाएं तक रही

बोलियां अब बोलना दो छोड़ तुम ।

बोलियां मारें, व खाएं गोलियां,

बोलियों के हित, नहीं है यह लसी ।

—'शालिहास'

इसी उषा गायन को जग में

फिर-फिर वायु दुहराती है,

सुना है उषा भी गाती है ।

'सब जग को शोषित शोषक को

द्युति देती हूं सम, मैं सब को—

प्यार करो मानव से मानव !

यही सन्देश सुनाती है,

सुना है ऊषा भी गाती है ।

पानीके बुलबुले आधुनिक विज्ञानके लिए एक पहेली बने हुए हैं

मनुष्य जिस वायु में सांस लेता है और जिस जल से अपनी प्यास बुझाता है, उसके महत्व को वह सामान्य तौर पर अनुभव नहीं करता। प्रकृति और ईश्वर का सहज सुलभ वरदान मान कर वह उन के अस्तित्व को स्वाभाविक मान लेता है। परन्तु वायु रहित स्थान में बन्द हो जाने पर अथवा चारों ओर फैले हुए मरु-स्थल में फंम जाने पर वह इनके अभाव में उसी प्रकार व्याकुल हो उठता है, जिस प्रकार जल से अलग होते ही मछली तड़पने लगती है। तब पानी की एक-एक बून्द और हवा में एक खुली सांस लेने के लिए वह अपने समस्त वैभव को भी ठुकरा सकता है। वह जल जो हम और आप पीते हैं, तरह-तरह के कार्यों में इस्तेमाल करते हैं, उतना साधारण और सामान्य पदार्थ नहीं, जितना हम इसे मान बैठे हैं संसार के वैज्ञानिक इस सम्बन्ध में बराबर अनुसन्धान कर रहे हैं कि जल का आविर्भाव किस प्रकार होता है, उसमें किस प्रकार की रासायनिक क्रियाएं या प्रतिक्रियाएं होती हैं तथा उसका मौलिक रूप क्या है, परन्तु जल की रासायनिक प्रक्रियाएं इतनी असमान्य हैं कि आज तो कोई

भी वैज्ञानिक इन प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाया है। कैलिफोर्निया इंस्टिट्यूट औक् टेक्नोलौजी के वैज्ञानिक भी अनेकों वर्षों से जल की रासायनिक प्रक्रियाओं, उसके आविर्भाव तथा उसके मौलिक स्वरूप की जानकारी प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। इस कार्य के लिए इंस्टिट्यूट में एक एक विशेष परीक्षण शाला का निर्माण किया गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार पानी में उठने वाले छोटे से बुलबुले का जीवन अधिक से अधिक २३ मिनट होता है। उक्त परीक्षणशाला में ऐसी व्यवस्था की गई है जिस की सहायता से एक सेकण्ड में पानी के बुलबुले के कम से कम २० हजार चित्र उतार लिए जाते हैं। इस प्रकार बुलबुले के कुल जीवन का उसके उद्भव से लेकर अन्त होने तक समस्त इतिहास इन चित्रों के द्वारा प्राप्त कर लिया जाता है।

यदि जल पर अत्यधिक तीव्र गति से आघात किया जाए तो उससे एक प्रकार की नीली-सफेद आभा उत्पन्न होती है। विद्युदणु-नेत्र की सहायता से यह नीली-सफेद आभा विद्युत-तरंगों के रूप में निकलती है। ये विद्युत-तरंगें

गामा विकिरण से युक्त होती हैं। इस प्रकार के विकिरण का उपयोग खाद्य पदार्थों को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने के लिए किया जा सकता है।

पानी में बुलबुले उठने की जो क्रिया होती है, वह बड़ी हानिकारक होती है। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप पानी के नलकों में छेद हो जाते हैं, जहाज के पंखे बेकार हो जाते हैं तथा बांधों में लगे लोहे के विशाल फाटक तक गल जाते हैं। कैलिफोर्निया इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी की परीक्षणशाला में इन्हीं बुलबुलों के संबन्ध में कई वर्षों से निरन्तर अनुसन्धान हो रहा है। इस परीक्षणशाला में किए गए अनुसन्धानों से पता चला है कि सामान्य जल के सभी जल-कण आपसमें पूरी तरह नहीं मिल पाते और उनके मध्य बहुत सी सूक्ष्म संधियां रह जाती हैं। पानी के अन्दर तेज गति वाले पंखे के घूमने के फलस्वरूप ये संधियां और चौड़ी तथा गहरी हो जाती हैं। इन्हीं संधियों में पानी की भाप से युक्त बुलबुलों का जन्म होता है। यदि पानी में किसी भी पदार्थ का सूक्ष्मातिसूक्ष्म कण मौजूद रहता है तो वह जल-कणों के सम्मिलन में बाधक होता है। लेकिन यदि कोई पदार्थ पानी में पूर्ण रूप से घुल जाए, अर्थात् जल को सभी

बाहरी तत्वों से मुक्त कर दिया जाए तो उसकी मजबूती बढ़ जाती है। वस्तुतः इस प्रकार के कई परीक्षणों में वैज्ञानिकों ने पानी की धार के सहारे भारी बाट टिका दिए, परन्तु पानी का तार नहीं टूटा।

इन बुलबुलों का अध्ययन करने में वैज्ञानिक अनेकों वर्षों से संलग्न हैं। इससे पता चलता है कि जल के सम्बन्ध में पूर्ण अनुसन्धान करने के लिए कितना समय चाहिए। उदाहरणार्थ तेजगति से उड़ने वाले जेट यानों के उपयोगार्थ ऐसा रसायनिक पदार्थ तैयार करने के लिए, जिस पर वर्षा के जल का असर न पड़े, डा० पारस्टर डिब्स्वेल को चार वर्ष लग गए।

आज भी, हिम-कणों, जल के स्वरूप औद्योगिक क्षेत्रों के जल में पाए जाने वाले विचित्र स्वाद और गंध और प्यास इत्यादि के सम्बन्ध में वैज्ञानिक लोगों को बहुत कम जानकारी है। कई दशाब्दों से निरन्तर प्रयत्न जारी रहने के बाद भी जल के वास्तविक स्वरूप की जानकारी अभी तक प्राप्त नहीं हो पाई है। जल कोई सामान्य पदार्थ नहीं, जैसी कि लोगों में धारणा है कोई इसे हाईड्रोजन-२ और ऑक्सीजन-२ का संयोग मानते हैं, परन्तु अधिकांश वैज्ञानिकों में आज इस प्रश्न पर मतभेद है कि हाईड्रोजन के साथ ऑक्सीजन का कितना

संयोग जल का निर्माण करता है। वह यह भी नहीं तय कर पाये हैं कि जल-कणों का अलग-अलग अस्तित्व है अथवा वह किसी बड़ी इकाई के पूरक अंश मात्र हैं।

वैज्ञानिक इस सम्बन्ध में अनुसन्धान कर रहे हैं कि क्या समुद्र में फ्रांस मनुष्य खारे जल में जीवित रह सकता है? खारे पानी की मनुष्य के शरीर और अंगों पर क्या प्रतिक्रिया होती है, इसका भी अध्ययन किया जा रहा है। फ्रांस की नौसेना ने इस सम्बन्ध में एक परीक्षण किया था। इस परीक्षण में डा० एलियन योमबार्ड ने १९५२ में कैनारी द्वीप से बारबोडास द्वीप तक लठ्ठों के बेड़े पर यात्रा की थी अमेरिकी और ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने भी इस सम्बन्ध में अनेकों परीक्षण किए हैं।

इससे सम्बन्धित एक दूसरी समस्या भी है। यह समस्या है खारे जल को शुद्ध कर पीने योग्य बनाने की, क्योंकि बहुत से स्थानों में शुद्ध जल का अभाव है।

अमेरिका तथा संसार के अनेक देश खारे पानी को मीठे जल में परिणत करने के सम्बन्ध में निरन्तर परीक्षण कर रहे हैं अकेले अमेरिका में प्रतिदिन २ खरब ६२ अरब गैलन जल खर्च होता है और आशा है कि १९७५ तक इस की मात्रा दुगुनी हो जाएगी। अतएव मीठे जल की

इन्सान मर रहा है!

जगती में दुःख बहुत हैं सहने को
आंसू बेताव हैं आंखों से बहने को
दिल को समझाया, वह हो गया खामोश
जुवां विवश है मगर कुछ कहने को।
तदबीर करो कोई इन्सान को बचाने की
कोशिश में है वह इक दूजे को खाने की।
भूख पेट की, हविस की और पैसे की
हाथ बढ़ गई क्यों इतनी जमाने की।
इन्सान गिर रहा है और मर रहा है
हैवां भी आज इन्सां से डर रहा है।
बहुत बढ़ गई है शायद लहू की प्यास
प्यास यह बुझाने जा वह किधर रहा है?

—कुमारी स्वर्ण रत्न, बम्बई—४

★ एक कीटाणु का कारनामा

‘दो स्टोरी आव पेन्सिलीन’ (बोरिस स्कोलोव एम० डी० कृत) के पृष्ठ ११ पर हैजे के एक कीटाणु के सम्बन्ध में लिखा है कि वह एक दिन में इतने कीटाणुओं को जन्म दे सकता है कि उनका वजन एक हज़ार टन तक हो सकता है।

बढ़ती हुई आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि समुद्र के सारे जल को मीठे जल में परिवर्तित करने का कोई सरल और सस्ता साधन ढूँढ़ निकाला जाए।

एक कटु सत्य—

इन्सानियत की खोज में

अभी सूर्योदय नहीं हुआ है। शिवनाथ अपने सुन्दर सजे शयनागार में पलंग पर सोया है। अच्छी मोटी रजाई ओढ़ रखी है। जग गया है, पर रजाई के बाहर नहीं आ रहा है। ठण्ड है और वह किसी के आने की राह देख रहा है।

रजाई को जरा हटा, दीवार पर टंगी घड़ी की ओर देखता है। ६ बजे हैं, ६-२० हो गए। ६-२५ होगए। प्रातःकाल की चाय लेकर रामा अभी आया नहीं है दस मिनट की देरी हो गई। ठंड में भी शिवनाथ के मन में उष्णता उत्पन्न होने लगी। कुछ क्रोध से मन ही मन में वह कहने लगा—‘रामा अभी आया नहीं। समय का जरा भी ध्यान नहीं रखता। बड़ा आलसी है।’

दो ही मिनट में कमरे का दरवाजा खुला। आवाज हुई। शिवनाथ ने रजाई से मुंह निकाल कर देखा। रामा दोनों हाथों से चाय के बरतनों से भरी, कपड़े से ढंकी ट्रे लेकर कमरे में घुसा।

रामा को देखते ही शिवनाथ उठ बैठा। उसकी अंतस्थ क्रोधाग्नि मुख-रूपी ज्वालामुखी से बह निकली—“रामा, कितनी देर कर दी! बड़ा बेवकफ है।

कभी समय पर आता ही नहीं ?”

पहले ही भयभीत रामा इस डांट से कांप गया। हाथ हिल गए। चाय, दूध कुछ ट्रे में गिर गए। उसने डरते-डरते कहा—‘हुजूर, आज बहुत ठण्ड है। जरा देरी हो गई। माफ करें॥’ कहते-कहते पलंग के समीप रखी तिपाई की ओर बढ़ा और ट्रे रखने लगा। शिवनाथ ने तमक कर कहा ‘ठण्ड लगती है तो नौकरी क्यों करता है?’

दूसरे दिन ठण्टका प्रकोप कुछ अधिक बढ़ा रामा समय के पूर्व आया। चाय की ट्रे तैयार कर नियमित समय पर ठीक ६ बजे कमरे में पहुंचा। शिवनाथ रजाई ओढ़े अभी बिस्तर में लेटा है। नींद खुल गई है, पर बाहर आता नहीं। ६-२० हो गए। रामा ने कहा—‘बाबू जी, ६-२० हो गए। चाय भी ठण्डी हो रही है।

‘हां उठता हूं।’

६-२५ हो गए। रामा ने फिर कहा—‘बाबू जी, चाय ठण्डी हो रही है।’

शिवनाथ ने चिढ़ कर उत्तर दिया—‘उठता हूं! इतनी जल्दी क्या पड़ी है? दिखता नहीं आज कितनी ठण्ड है?’

‘हुजूर, आप को भी ठण्ड लगती है क्या?’ शिवनाथ क्रोधसे बोला—‘क्या कहा?’

(शेष सफा ३४ पर)

अभिनेता बनने के शौक में बम्बई से लुट कर लौट आने वाले एक युवक की कहानी—

हम-सफर

[लेखक : श्री शंकर, मोती नगर नई देहली]

स्टेशन पर विलम्बसे पहुंचा। जल्दी से टिकट खरीदा। प्लेटफार्म पर पहुंचते पहुंचते गाड़ी छूट गई। जो भी डिब्बा सामने पड़ा, दौड़ कर चढ़ गया।

देखा, एक सीट खाली थी, वहीं बैठ गया। मेरे सामने एक बीस इक्कीस वर्ष का एक युवक बैठा था जिसकी बड़ी हुई दाढ़ी, मैले और फटे वस्त्र उसकी शोचनीय स्थिति का परिचय दे रहे थे।

दृष्टि बार बार उसी युवक पर केंद्रित होती थी। मन कई प्रकार की कल्पनाओं में उलझा हुआ था। मालूम नहीं किस का लड़का है? ऐसी स्थिति में क्यों है? किसी भले खानदान का जान पड़ता है... कहीं घर से भाग कर तो नहीं आया आदि प्रश्न मस्तिष्क में उठ उठ कर परेशान कर रहे थे।

मैं सोच ही रहा था कि उससे वार्तालाप करूं या नहीं कि वह घबड़ाया सा उठ खड़ा हुआ और पाखाने की ओर बढ़ा। दृष्टि घूम कर पीछे गई। एक टी० टी० कम्पार्टमेंट में टिकटें देख रहा था। 'यह युवक भी अवश्य बिना टिकट के है'

मन में विचार उठा।

पाखाने में पहले ही से कोई बे टिकट व्यक्ति घुसा हुआ था इसलिए वह बाहर ही ठिठक गया। क्षण भर खड़े रहने के पश्चात् वह द्वार खोलने बढ़ा ही था कि एक मजबूत हाथ और गरज ने उसे रोक लिया।

"खबरदार! जो दरवाजा खोला— बदमाश, लफंगे, एक तो टिकट नहीं लेते, दूसरे गाड़ी से कूदते हैं—!"

युवक का चेहरा रक्तहीन हो गया। काटो तो खून नहीं। चेहरे पर एक रंग आ रहा था और एक जा रहा था।

'टिकट निकालो—' टी० टी० पुनः गरजा। युवक सकपका गया।

'जी—टिकट नहीं—' युवक ने कम्पित स्वर में कहा।

टिकट नहीं है तो गाड़ी में क्यों बैठे हो? गाड़ी क्या तुम्हारे बाप की है?

वह स्तब्ध था। चेहरे पर मुर्दनी छा गई और मूक एवं शून्य दृष्टि से छत की ओर देख रहा था।

उसकी दयनीय स्थिति पर मुझे तरस

आ रहा था। मैं अभिभूत हो उठा और टी० टी० से कहा—

‘श्रीमन, जरा तमोज से बोलिए, यह युवक मेरे साथ है। मैं इसका टिकट लेना भूल गया हूँ। यह लीजिए पांच का नोट और किराया काट लीजिए—मैंने जेब से पांच का नोट निकाल कर आगे बढ़ा दिया।

उसकी जान में जान आ गई। वह पुनः अपनी सीट पर आ बैठा और मुझे सम्बोधन कर कहने लगा, ‘मैं किस जुबान से आपका शुक्रिया अदा करूँ, आपने आज मुझे जेल जाने से बचा लिया।’

मैंने आश्वासन देते हुए कहा—‘दोस्त इसमें शुक्रिये की कोई बात नहीं। यदि इन्सान इन्सान के काम नहीं आयेगा तो किस के काम आयेगा? दोस्त मैं पूछ सकता हूँ कि तुम्हारी ऐसी दुर्दशा क्यों हो रही है? मैं कहानी सुनना चाहता हूँ।’

‘यह दुर्दशा मेरी अपनी भूलों के कारण हुई है। आप आग्रह करते हैं तो सुनिये—

मेरी उत्सुकता बढ़ गई और मैं ध्यान पूर्वक उसकी कहानी सुनने लगा—

‘मैं एक अच्छे और शरीफ घराने का युवक हूँ। स्कूल में पढ़ते समय मुझे सिनेमा देखने का शौक हो गया। पढ़ाई में अरुचि हो गई। दिन रात सोते-जागते फिल्मों

की बातें, सोचता रहता। फिर मित्र भी ऐसे ही थे, बस फिल्मोंकी ही चर्चा होती रहती थी। फिल्मी पत्रिकाएं बहुत चाव से पढ़ता था। नए अंकों के लिए अंधीर और उत्सुक रहता। बड़ी व्याकुलता और बे-चैनी से इनकी प्रतीक्षा करता। पढ़ाई में मन न लगता, प्राण इसीमें बस गये। अपने प्रिय अभिनेता और अभिनेत्रियोंकी फिल्में देखने के लिए उन्मत्त रहने लगा। मुझे फिल्मी-हिस्ट्रिया सा हो गया।

खैर किसी भांति मैट्रिक थर्ड डिवीजन में पास किया और कालेज में प्रविष्ट हो गया किंतु फिल्म-हिस्ट्रिया ज्यों का त्यों था। अब अभिनेता बनने की धुन सवार हुई। सोचता था कि यदि अभिनेता तीन-तीन लाख रुपए एक फिल्म में काम करके ले लेते हैं तो मुझे एक मामूली सा रोल मिलने पर दस-पन्द्रह हजार तो अवश्य मिल ही जाया करेंगे। और मैं इस भ्रम में घर से भाग आया। बम्बई पहुंच एक होटल में ठहरा। वहां पर दीवानचन्द नामक एक व्यक्ति से मेरा परिचय हो गया। उसका फिल्मी-संसार में विशेष प्रभाव था। उसने सहायता करने का आश्वासन दिया। वह मेरे कमरे में अपना सामान उठा लाया और उसी कमरे में हम दोनों रहने लगे।

पांचे दिन के पश्चात् मुझे एक फिल्म में एक्सट्रा का रोल मिल गया। हृदय फूल उठा प्रसन्नता और उत्साह से। अब विश्वास होता जा रहा था कि यदि दीवान चन्द का सहयोग मिलता रहा तो मैं एक दिन अवश्य सिने-आकाश पर सितारा बन कर चमक उठूंगा, तब मेरे पास भी बंगला, मोटर और ऐश्वर्य के सभी साधन होंगे।

मैं घर से ३०० रुपए लाया था। अब तक डेढ़ सौ रुपए खर्च हो चुके थे। एक दिन दीवानचन्द जी ने एक पत्र दिया कि मैं महालक्ष्मी के पास जाऊं और दिग्दर्शक प्रकाश को यह पत्र दूँ तो वह मुझे अपनी फिल्म में साइड हीरो का रोल दे देंगे। मैं यह पत्र पा कर नाच उठा और भट महालक्ष्मी की ओर चल पड़ा।

मन में स्वप्नों की दुनिया बसाता मैं महालक्ष्मी जा रहा था। जब निर्दिष्ट स्टुडियो में गया और पत्र निकालने के लिए जेब में हाथ डाला तो भौंचका सा रह गया क्योंकि जेब रास्ते में कट गई थी जल्दी से दूसरी जेब में टटोला कि कहीं उसमें तो पत्र और बटुआ नहीं रख बैठा किन्तु दूसरी जेब में केवल पांच रुपए का एक नोट और कुछ रेज़गारी थी। पत्र जाता रहा था। मगर हिम्मत न छोड़ी

क्योंकि अभी डूबते को तिनके का सहारा शेष था। आशा थी कि दीवानचन्द से कुछ आर्थिक सहायता प्राप्त हो जाएगी।

उसी क्षण मटुंगे वापस लौटा। कमरे में जाकर देखा कि मेरा सामान ही गायब है। मैनेजर से पूछा तो पता चला कि मि० दीवानचन्द सब सामान ले गये हैं। मैं चिल्ला उठा, 'हाय मैं लुट ग।। उस में मेरा भी सामान था।' मैनेजर ने बहुत खेद और समवेदना प्रकट करते हुए कहा कि दीवानचन्द ने आपको अपना भतीजा बताया था। मैंने उसका पता-ठिकाना पूछा। अफसोस से उसने कहा कि मालूम नहीं। और पुलिस में रिपोर्ट करने की सम्मति दी।

पुलिस में रिपोर्ट दी। स्थान-स्थान पर खोजा, स्टुडियो-स्टुडियो गया, एजेंटों से पूछा किन्तु कहीं से भी दीवानचन्द का पता नहीं मिला। एजेंटों से मिन्नतें कीं, गिड़गिड़ाया कि मुझे कोई एक्सट्रा का रोल दे दो, कोई नौकरी दिला दो, किन्तु उनके कानों पर जूँ तक न रेंगी। दिग्दर्शकों और निर्देशकों के बंगले छान मारे, किन्तु सभी जगह चौकीदारों ने रोक लिया।

पांच रुपए से कब तक गुज़र चलती भूखों मरने की नौबत आई। मजदूरी की किन्तु प्रतिद्वंद्वता और प्रतिस्पर्धा के

एक दिन

एक वृद्ध सज्जन जो भेड़ की खाल का कोट और फर की टोपी पहने थे, रूसकाया मिस्ल (रूसी विचार) के सम्पादकीय विभाग में एक पाण्डुलिपि लाये।

कारण केवल आठ-दस आने ही मिल पाते।

हार कर मनने कहा, घर लौट चलो, 'भूखों मरने से क्या लाभ? यह फिल्मी दुनिया प्रपंच है, विडम्बना है, मृगमरी-चिका है, जिसके पीछे मेरे जैसे सहस्रों युवक पथ-भ्रष्ट होकर भटक रहे हैं। और अपना जीवन बर्बाद करने के साथ २ मां-बाप की कमाई भी लुटा रहे हैं। और अब मैं बे टिकट घरकी ओर जा रहा हूं।'

कहानी समाप्त हो चुकी थी, किंतु उसके चित्र अभी तक कल्पना में उभर रहे थे कि सहसा युवक की आवाज ने मुझे जैसे नींद से जगा दिया हो— 'अच्छा श्रीमान जी, नमस्कार, मेरा स्टेशन आ गया। कभी यहां तशरीफ लाएं तो अवश्य दर्शन दें।'

और बिना अपना नाम व पता बताये वह गाड़ी से उतर गया। और मैं आंखें बन्द कर भगवान से युवकों की सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना करने लगा।

सेक्रेटरी ने पाण्डुलिपि ले ली। यह सेमियोनोव नामक किसान लिखित कहानी थी। सेक्रेटरी ने बूढ़े से कहा कि एक पखवारे में आइए। तब आप को इसके बारे में बताया जाएगा।

ठीक दो सप्ताह के बाद बूढ़ा फिर आया। सेक्रेटरी ने उससे इन्तजार करने को कहा और मुख्य सम्पादकको आगन्तुक के बारे में बतलाने गया। सम्पादक अन्य लेखकों से गपशपमें मशगूल था। वह उस बूढ़े की बात भूल गया।

कहीं दो घण्टे बाद सम्पादक आगन्तुक कक्ष में आया। बूढ़ा कुर्सी से उठा।

“आप ही सेमियोनोव हैं। हां, हां, मैंने आप की कहानी पढ़ी है—”

इसी क्षण सम्पादक आगन्तुक की ओर मुड़ा—और भौचक सा रह गया। वह तो तालस्ताय थे। लेव निकोलायेविच एक कोने में खामोश बैठे सम्पादक के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह उत्सुक थे कि अज्ञात किसान की कहानी छप जाए।

रुवाई

—★—

आंख जब तक तर नहीं होती
उन्को कुछभी खबर नहीं होती
हम जहां जहाँ से भी गुजरते हैं
उत्तकी वहां से गुजर नहीं होती

पृथ्वी से २२ हजार मील की ऊंचाई पर—

आकाश में गेंदाकार की परीक्षण-शाला स्थापित की जाएगी

(जहां से मनुष्य का यान चन्द्रलोक में उतर सकेगा)

मानव की जिज्ञासा का कोई अन्त नहीं। अपने ग्रह के सभी भागों की खोज कर लेने के उपरांत खोज करने की उस की जिज्ञासा और अधिक तीव्र हो गई है और अब वह इस समस्त सृष्टि के अनन्त रहस्यों का उद्घाटन करने के लिए कमर कस मैदान में उतर पड़ा है।

यह तो निश्चित प्रतीत होता है कि निकट-भविष्य में एक दिन ऐसा अवश्य आने वाला है, जब मनुष्य अन्तरिक्ष यान पर सवार होकर चन्द्रलोक में सशरीर उतर सकेगा और सम्भवतः सौरमण्डल के अन्य अनेकों ग्रहों की यात्रा भी कर सकेगा।

आज वैज्ञानिकों के समक्ष सबसे बड़ा प्रश्न यह उपस्थित है कि इस अन्तरिक्ष यात्रा के लिए किस प्रकार के यान का विकास किया जाए? अन्तरिक्ष में छोड़े जानेवाले राकेटों और भू-उपग्रहों का एक प्रमुख लक्ष्य इस अन्तरिक्ष यान के निर्माण के सम्बन्ध में अधिकाधिक जानकारी और तथ्यों का संग्रह करना भी है। यद्यपि अभी कोई यह भविष्यवाणी

नहीं कर सकता कि मनुष्य अन्तरिक्ष में कब यात्रा कर सकेगा और न अभी तक किसी ऐसे यान का परीक्षण ही किया गया है, जो मनुष्य को अन्तरिक्ष में ले जाकर उसे सकुशल पृथ्वी पर वापस ले आए। फिर भी अन्तरिक्ष-यात्रा अब कल्पना की वस्तु नहीं रह गई। आज नहीं तो १० वर्ष के अन्दर मनुष्य निश्चय ही इस प्रकार का साहसिक प्रयत्न करने वाला है, वैज्ञानिक आज उन समस्याओं के अध्ययन में संलग्न हैं, जिनका सुलझाना अन्तरिक्ष गामी यान के निर्माण की दृष्टि से परमावश्यक है।

मनुष्य का पहला लक्ष्य चन्द्रमा है परन्तु यहां उतरने से पहले वहां की परिस्थितियों तथा मार्ग में पड़ने वाली बाधाओं की जानकारी प्राप्त कर लेना अनिवार्य है।

इस समस्त जानकारी को प्राप्त करने के उद्देश्य से वैज्ञानिकों ने सर्वप्रथम एक अन्तरिक्ष परीक्षणशाला की स्थापना करने का विचार किया है।

टैलिविजन, टैलिस्कोप और रडार

इत्यादि यन्त्रों से पूर्णरूप से सुसज्जित गेंद के आकार की इस अन्तरिक्ष परीक्षण-शाला की कल्पना 'राकेटडाइन' नामक संस्था के वैज्ञानिकों ने की है। ६० फुट की गेंद के आकार की इस परीक्षणशाला का वजन २ लाख ५० हजार पौंड होगा और शक्तिशाली राकेट द्वारा यह पृथ्वी से २२ हजार मील की ऊंचाई पर स्थापित की जाएगी।

अन्तरिक्ष-परीक्षणशाला से चन्द्रमा के समस्त आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के बाद वैज्ञानिक उस पहले मानव-रहित यान का निर्माण करेंगे, जो चन्द्रमा की परिक्रमा कर पृथ्वी पर वापस लौट आएगा।

कैमरे की फ्लैश लाइट यन्त्र के आकार का एक ऐसा मानव-रहित यान पहली बार इस अन्तरिक्ष स्टेशन से उड़ कर चन्द्रमा की परिक्रमा करेगा। इस यान में रेडियो-टेलिस्कोप और टेलिविजन तथा अन्य यन्त्र फिट रहेंगे, जो चन्द्रमा के सम्बन्ध में सभी आवश्यक तथ्य संग्रहीत कर पृथ्वी को भेजेंगे। यह यान सूर्य-शक्ति से चलेगा और पृथ्वी से १५ हजार मील ऊपर उड़ान भरेगा। यह अन्य अन्तरिक्ष यानों के पथ-प्रदर्शन का भी कार्य कर सकेगा।

मानव रहित राकेट यान द्वारा चन्द्रमा की परिक्रमा कर लेने के उपरांत मनुष्य स्वयं अन्तरिक्ष यान में बैठ कर चन्द्रमा के धरातल पर उतरने का प्रयत्न करेगा। इस यात्रा के लिए ऐसे अयन-शक्ति-चालित यान की कल्पना की गई है, जिस का आकार बहुत कुछ चतुष्पाद हैलिकोप्टर जैसा प्रतीत होता है और जिस के डैने में तेज गति से चक्कर काटने वाले पंखे फिट होंगे। तेज गति से घूमने वाले यह पंखे यान को चन्द्रमा पर धोमो गति से उतारने में मदद देंगे। इस अयनशक्ति-चालित यान में एक साथ कई व्यक्ति सफर कर सकेंगे। यह यान अपने पथ और लक्ष्य पर अग्रसर होने के लिए सूर्य से मार्ग-दर्शन प्राप्त करेगा और अपने साथ जल, भोजन और वायु का भण्डार भी ले जा सकेगा।

चन्द्रमा के धरातल पर उतने के बाद मनुष्य के समक्ष सबसे बड़ी समस्या रहने की होगी, क्योंकि वहां न तो कोई वायु-मण्डल है, न हवा है और न पानी। अन्तरिक्ष से प्रबल वेग से आने वाली उल्काओं से भी रक्षा करने की आवश्यकता पड़ेगी। वैज्ञानिकों ने इस आवश्यकता को पहले से ही अनुभव कर लिया है और उन्होंने एक ऐसे मकान का कल्पना-चित्र भी तैयार (शेष सफा ३६ पर)

आप नहीं जानते

तुम अगर चाहो

—महावीर सिंहल—

—कि बिजली चिड़ियों पर कभी नहीं गिरती, क्योंकि उनके पर बिजली के प्रभाव से उनकी रक्षा करते हैं।

—कि आदमी के शरीर में हर सेकेण्ड में ३० लाख नये लाल रक्त कण बनते हैं।

—कि चाकू कांटे से एक लाख साल पुराना है ! कांटे का पहले पहल उपयोग वेनिस में तीन सदी पहले हुआ था।

—कि हर हाथी मन्द दृष्टि होता है।

(सफा २७ से आगे)

मन ही मन भला बुरा कहता हुआ शिवनाथ उठा। चाय की ट्रे के पास गया, कपड़ा हटाया। ट्रे में केवल केतली है। कप, दूध आदि के बरतन नहीं हैं। शिवनाथ ने जोर से रामा को पुकारा। उत्तर नहीं मिला। केतली उठाई। हल्की, खाली शिवनाथ के क्रोध की सीमा न रही। बड़बड़ाया और देखा केतली के नीचे एक कागज रखा था। उसे उठाया। पढ़ने लगा—

“हम चारों आज आप की नौकरी छोड़ कर जा रहे हैं। आप समाजवादी हैं। आप के यहां बड़ी आशा लेकर हम आए थे। पर निराशा हुई। आप ने सदा हमारी इन्सानियत पर हमला किया।

तुम अगर चाहो तो नभ को चूम लो, पृथ्वीको स्वर्ग बना लो, हमेंशा ही जियो, चांद तारे तोड़ अपना घर सजा लो, और सूरज पूर्व का पश्चिम उगा दो, तुम बताओ क्या नहीं सकते हो कर, तुम जा नहीं सकते जहां, वह कौन सा है घर, तुम्हारे में छिपी वह शक्ति मुश्किल को करे आसान और रख ले मान, आन, शान उसका नाम है मेहनत करो जी तोड़कर तुम काम— जो तुम को ब्रतलाया है मगर मेरी एक बात मानो परिश्रम का फल कभी मत चाहना तुम वह मिलेगा अपने आप कृति तुम्हारी ही उसे देगी विरल होगा नाम, तुम को बिना कहे मोती मिलेंगे, इसलिए, उठ कर यह आलस्य त्याग कर काम पर डटे रहो, काम तुम किए चलो। इसलिए तंग आकर इन्सानियत की खोजमें आज हम सब आप से विदा ले रहे हैं।”

—ब्रिज लाल

स्वास्थ्य सुधार

★ सौंदर्य की स्थिरता के लिए
ढीली-ढीली त्वचा के लिए शुद्ध
वनस्पति तैल लगाइये, और ठुड्डी से कानों
तक ऊपर की ओर हाथ से मालिश की-
जिये तथा उंगलियों से थपथपाइये। मुला-
यम चमड़े के लिए हमारा सुझाव है कि
हफ्ते में तीन बार पहले गर्म और फिर
ठंडी पट्टी लगाइए।

शरीर की भुरियां मिटाने के लिए
चिकनी पट्टियां इस्तेमाल में लाइए। रुई
की पट्टियों को बादाम के गुनगुने तैल में
भिगोइये और फिर उन पट्टियों को गर्दन
पर बांध दीजिए। उनके बाहर सूखा
तौलिया या ऊनी रुमाल होना चाहिए।
उन्हें कम-से-कम आधे घण्टे तक ऐसी ही
स्थिति में रखें।

गर्दन की पेशियों को मजबूत बनाने
के लिए निम्नलिखित कसरतें की जा
सकती हैं :

१. ज्यों-ज्यों आप अपना सिर धीमी
गति से पीछे की ओर करें, नाक से अंदर
की ओर सांस लें और जब अपने सिर को
पूर्ववत करें तो मुंह से सांस निकालिये।

२. दाएं कंधे की ओर जहां तक

दांतों की रक्षा !

दांतों की रक्षा बहुत आवश्यक है
क्योंकि इन्हीं से हम खाना खाते हैं। दांत
खराब हों तो हम अपना भोजन चबा नहीं
सकते हैं। बिना अच्छे दांतों के हमारा
हाज्मा ठीक नहीं रह सकता। पेट में गड़-
बड़ रहने से शरीर रोगी रहता है। जो
मोठा चीनी गुड़ आदि अधिक खाते हैं—
उनकी पाचन शक्ति खराब हो जाती है
यदि खाना खाने के पश्चात सेब अथवा
अन्य फल या कच्ची सब्जी खा ली जाए
तो मीठे का प्रभाव नष्ट हो जाता है।
खाना खाने के बाद यदि दांत मंजड़ आदि से
साफकर लिए जाएं तो खराब नहीं होंगे।

संभव हो, सिर झुकाइये और ऐसा करते
समय नाक से सांस खींचिए। जब पूर्ववत्
स्थिति में आए तो मुंह से सांस बाहर
निकालिये अपने सिर को फिर बाएं कंधे
की ओर करते रहें।

३. जहां तक भी सम्भव हो, पहले
अपने सिर को दाएं कंधे की ओर और
फिर बाएं कंधे की ओर झुकाएं और ऐसा
करते समय नाक से सांस खींचें। सिर को
अपनी जगह पर लाते समय मुंह से सांस
निकालें। प्रत्येक कसरत को ५ से १० बार
तक दुहराइये।

पंजाबी कविता

देश मेरे दा चप्पा २ बनिया अज गुलज़ार
(१)

धरतीसी बेचैन कि कोई इस चों कढ़े सोना
दरियां नूं शौक कि सिजन कोना कोना
सधरां सन बेअन्त कि भूमन कनक कपाहां
भोना ।

जद लोकां ने हिम्मत कीती रिहा न कुभ
अनहोना ।

मालिक होये लोक देसदे लोकांदी सरकार
देश मेरे दा चप्पा २ बनिया अज गुलज़ार
(२)

ओह भी इक जमाना है सी किरसान
रहे मजबूरे
टुटे छप्परीं वासा तन ते लीरां पेट अधूरे
पर हुन होनी बदल गई है सुफने होगए पूरे
हरे भरे खेतां दे बन्ने मारे जट खंगूरे
कोठी अगे आन खलोंदी फर-फर करदी कार
देश भेरे दा चप्पा २ बनिया अज गुलज़ार
(३)

भखड़े दी थां, लई भाखड़े होईयां लहरां-बहरां
धरतीदे जुस्सेविच चलियां नाड़ां बनके नहरां
भंग बनियां पिडां दीआं भुगियां मात
करेदियां शहरां

नंगल घर २ मंगलकीते चानन वांग दोपहरां
रेडियो सैट लगाके लोकी सुनन कवि दरबार
देश मेरेदा चप्पा २ बनिया अज गुलज़ार ।

नए आविष्कार

★ छोटे से छोटा रेडियो

अमेरिका ने शूगर क्यूब के साईज
का रेडियो तैयार किया है किन्तु यह केवल
फौजी जरूरतों के काम में लाया जाएगा ।

★ इलेक्ट्रिक मशीनी डाक्टर !

रूसी वैज्ञानिकों ने एक ऐसी मशीन
बनाई है जो डाक्टर के कुछ काम करती है
यह शरीर के किसी भी भाग का रक्त-
चाप मालूम करती है और हृदय की गति
अवस्था और ध्वनि नोट करलेती है । यह
गणना प्रणाली के आधार पर हृदय को
बीमारी का निदान ही नहीं बतलाती
बल्कि उपचार के लिए तथ्य भी प्रदान
करती है ।

(सफा ३३ से आगे)

कर लिया है, जिसमें चन्द्रमा पर उतरने
वाला मानव सुरक्षित रह सकेगा । रेल के
इंजन के अग्र भाग से मिलते-जुलते इस
घर में परीक्षणशाला, मिस्त्री की दूकान
रेडियो, टैलिस्कोप आदि यन्त्रों की ब्य-
वस्था रहेगी । मकान की छत इस प्रकार
से बनाई जाएगी ताकि उल्का पिण्डों के
प्रहार से उसकी रक्षा हो सके । यह मकान
८३ फुट ऊंचा, ५६० फुट लम्बा और
३८० फुट चौड़ा होगा ।

चुटकुले

★ डाक्टर—(रोगी से) पिछली दवा की परची लाये हो ?

रोगी—जी नहीं, मगर उसकी क्या जरूरत है ?

डाक्टर—उसके बिना मैं दवा कैसे दूंगा ?

रोगी—मगर बीमार तो मैं हूं, परची नहीं ।

★ मास्टर—(छात्र से) मैं तुम से प्रश्न पूछना चाहता हूं—बताओ दो आसान प्रश्न पूछू या एक कठिन ?

छात्र—एक कठिन प्रश्न ही पूछ लीजिए ।

मास्टर—तो बताओ, सब से पहला आदमी कहां पैदा हुआ था ?

छात्र—हरिद्वार में ।

मास्टर—मगर वह कैसे ?

छात्र—यह मत पूछिए, यह आप का दूसरा प्रश्न हो जाएगा ।

★ डाक्टर—जो व्यक्ति एक घण्टा तक बहुत ऊंची आवाज़ में गाता है वह छाती और फेफड़ों के रोगों से बचा रहता है और बुढ़ापेमें उसे कोई कष्ट नहीं होता ।

रोगी—मगर उसे बुढ़ा होने ही कौन

देगा, पड़ोसी जवानी में ही उसे मार न देंगे ?

★ अध्यापक—जार्ज वाशिंगटन किस गुण विशेष के लिए विख्यात था ?

एक विद्यार्थी—स्मरण शक्ति कैलिए ।

अध्यापक—शाबाश ! मगर तुम ने किस प्रकार इस बात का अनुमान लगाया ?

विद्यार्थी—इसीलिए तो अमेरिका में लोगोंने जगह जगह उनकी यादगार कायम कर रखी है ताकि याद रहे ।

★ पिता—मेहनत करने से कोई मर नहीं जाता ।

पुत्र—मैं आप की बात मानता हूं तभी मैं इस सम्बन्ध में तजुर्बा करना नहीं चाहता ।

पुत्र—मैं आप की बात मानता हूं तभी मैं इस सम्बन्ध में तजुर्बा करना नहीं चाहता ।

★ रोगी—मेरा नाक लाल हो गया था । इस पर मैंने आपकी दवा लगाई तो उसका रंग अब नीला हो गया है ।

डाक्टर—दूसरी दवा देने से पहले मैं चाहता हूं कि तुम मुझे बता दो कि तुम्हें कौन सा रंग पसन्द है ?

—★—

धोखे खाये हैं गो हजार अब तक ।

है मगर उनका एतबार अब तक ॥

‘हमें देश पै मरना आता है !’

भारत माता की शान हमीं हैं।

वीरों की सन्तान हमीं हैं।

हमें देश पे मरना आता है

हमें प्यार भी करना आता है !

भारत के हम दीवाने हैं,

हम शमा वतन के परवाने हैं!

हमें देश पे जलना आता है,

हमें प्यार भी करना आता है

हम असत् से लड़ने वाले हैं,

हम धर्म पै चलने वाले हैं।

हमें कांटों पे चलना आता है,

हमें प्यार भी करना आता है।

—मीना वर्मा जालन्धर

—★—

बूझिए तो ?

१. पहला अक्षर मुझे बुलाता,
दूसरा अक्षर लू बरसाता।
२. वह कौन सा जीव है जिस की आंखें
मृत्यु समय भी खुली रहती हैं।
३. वह कौन सी चीज है जिसका पहला
अक्षर काट दिया जाए तो देवता बन
जाता है यदि दूसरा काट दिया जाए
तो कल बन जाता है और तीसरा
काट दिया जाए तो एक हथियार
बन जाता है।

कह गए कहने वाले

—संभव असंभवसे पूछता है ‘तुम्हारा

निवास स्थान कहां है ?’ उत्तर मिलता
है, ‘कायर के स्वप्नों में।’ —टैगोर

—मनुष्य यदि कुछ सीखना चाहे तो
अपनी भूलों तथा असफलताओं से बहुत
कुछ सीख सकता है। —गांधी जी

—आत्मिक विकास का पौधा सांसारिक
विषय वासना की जमीन पर नहीं
टिकता। —रामतीर्थ

चम्बल के रोगियों को

आवश्यक सूचना

‘चम्बल’ के रोगियों को सूचना दी
जाती है कि सम्पादक ‘प्रकाश’ के पास इस
भयंकर रोग की एक अचूक दवा है जिस
का प्रयोग उन्होंने अपने पिता जी पर
सफलता पूर्वक करके अन्य रोगियों को
लाभ पहुंचाने का निश्चय किया है।

औषधिका नाम ‘चम्बलीन’ रखा गया
है। इसका मूल्य डाक खर्च तथा पैकिंग
समेत ५) रु० है जो मनीआर्डर से भेजा
जाना चाहिए। रोगी स्वयं आकर ३॥
रु० में दवा ले जा सकते हैं।

सम्पादक ‘प्रकाश’ १३७, चहार बाग
जालन्धर शहर।

शिक्षा विभागसे मान्यता प्राप्त

पंजाब :—डी. पी. आई. नं. २६३९ सी.

तिथि—१०.२.५०

उत्तरप्रदेश :—डायरेक्टर आव एजुकेशन

सं. बी. ४०८/१०/८ (७०३) ५०-५१

तिथि—६-७-५०

हिमाचल :—डिप्टी डायरेक्टर आव एजुकेशन

नं. ई २९-३/३१०० तिथि—१६-६-५१

पैम्सू :—नं. एड. ई. आई. (५०) ५२/२२६०७

तिथि—२९-७-५२

बिहार :—सुपरिटेण्डेंट आव लाइब्रेरीज

नं. ७३४०/२ पी-१५३ ति. २७-११-५३

हैदराबाद :—डो. पो. आई. नं. १७/१२९/१८

१९५२ तिथि ३-१-५३

भूपाल : (मध्यप्रदेश) सीनियर इंस्पेक्टर आव

स्कूलज नं. १२१९५/१२२०२—१८ एकेड

(५२) ८/५२ तिथि ११-४-५२

विज्ञापन के दर

‘प्रकाश’ में विज्ञापन छपवाने के लिए निम्न दर हैं:—

बार	१ पृष्ठ आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	३० रु. १७ रु.	१० रु.
३ बार	८० रु. ४५ रु.	२६ रु.
६ बार	१५० रु. ८० रु.	५० रु.
१ वर्ष	२५० रु. १७५ रु.	९० रु.

‘प्रकाश’ के ग्राहक सारे भारत, ब्रह्मा, फिजी इंग्लैंड और अमेरिका में भी मौजूद हैं।

[‘प्रकाश’ में विज्ञापन देकर लाभ उठाए]

मैनेजर:—

‘प्रकाश’ चहारबाग आलन्धर

कुछ सम्मतियां

(क) ‘प्रकाश’ का मई का अंक मिला।

मैंने उसे ध्यान से पढ़ा। उसमें आप ने शिक्षा सम्बन्धी उपयोगी सामग्री जुटाने और उसे सार-गर्भित रूप में थोड़े ही पृष्ठों में उपस्थित करने में जो परिश्रम किया है, वह सराहनीय है। इस प्रकार ‘प्रकाश’ के छोटे क्लेवरमें एक बड़ी ज्ञान राशि भर देने से, आशा है विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा —सन्तराम बी. ए. पुरानी बसी-

(ख) मैंने ‘प्रकाश’ को पढ़ा है और स्कूलों के लिए बहुत ही लाभप्रद पाया है। —पी. एल. सोदन, हैडमिस्ट्रेस गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना।

(ग) मैंने इसे सभी शिक्षा पत्रिकाओं में उत्तम पाया। इसमें छात्रों के लिए बहुत उपयोगी सामग्री संग्रहीत की गई है।

—रामप्रसाद हैडमास्टर, मि. स्कूल जमशेर

(घ) ‘प्रकाश’ की नमूने की प्रति मिली अंक सुन्दर और पत्रिका छात्रोपयोगी है।

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम. ए. डी. लिट्, प्रिंसिपल डी. ए. वी. कालेज अजमेर.

इनके अतिरिक्त—प्रशंसापत्र भेजने वालों में हैड मिस्ट्रेस, क्रिश्चियन गर्ल्स हाईस्कूल पालमपुर, हैडमास्टर गवर्नमेंट हाईस्कूल होशियारपुर व अन्य

आवश्यक सूचना

युण्डरी (करनाल) के श्री मेघराज, सोशल वर्कर का ‘प्रकाश’ कार्यालयसे २ फरवरी से कोई सम्बन्ध नहीं रहा अतः शुल्क मनीआर्डर से कार्यालय में भेजा जाए। उन्हें की गई किसी अदायगी का दफ्तर जिम्मेदार न होगा। उन्हें की गई किसी अदायगीकी तारीख सहित सूचना दफ्तर को भेजी जाए। —मैनेजर

पंजाब की ग्राम पंचायतों के लिए

उर्दू मासिक

‘पंचायत गजट’ जालन्धर

सम्पादक—हितैषी भलावलपुरी

अप्रैल ५६ से बड़ी सजधज से प्रकाशित हो रहा है। सभी सम्बन्धित अधिकारियों और ग्राम पंचायतों ने इसे हृदय से अपनाया है। हजारों पंचायतें इसकी ग्राहक बन चुकी हैं। इस में पंचायत कानून की व्याख्या, इन्तजामियों दीवानी और फौजदारी मुकद्दमों की समाइत का तरीका, भारत का विधान, कृषि सम्बन्धी अमूल्य जानकारी, पंचायतों की समस्याओं का हल उनके प्रश्नोंके उत्तरों के रूप में, शिक्षा समाचार, कृषि समाचार, महीने भर के अन्य महत्वपूर्ण समाचार तथा पंचायतों के काम की रिपोर्टें पढ़ने को मिलेंगी। वार्षिक मूल्य ९ रु० बी. पी. से ९ रु० ८५ नए पैसे।

आज ही ग्राहक बनिए

नमूने की प्रति १२ आने के डाक टिकट भेजकर मंगवाएं।

हिन्दी संस्करण

‘पंचायत गजट’ का हिन्दी संस्करण भी छपता है। इसका वार्षिक शुल्क भी ९ रु० ही है। बी. पी. से ९ रु० ८५ नए पैसे। उर्दू तथा हिन्दी दोनों संस्करण एक साथ जारी कराने पर १८ रुपये की बजाए १६ रु० लिए जावेंगे।

पंजाबी में भी ‘पंचायत गजट’

‘पंचायत गजट’ पंजाबी में शीघ्र छपने लगेगा।

मिलने का पता : मैनेजर पंचायत गजट, चहार बाग जालन्धर।

वीर मिलाप प्रेस जालन्धर शहर में श्री एल० सी० हिन्दोली कृष्ण मुद्रित तथा १३७ चहार बाग, जालन्धर शहर से प्रकाशित।

उपयोगी उर्दू पुस्तकें

(१) पंचायतों के अधिकार तथा कर्तव्य

इस पुस्तक में पंचायतों के लाजमी और इस्तियारी कर्तव्यों और सभी प्रकार के अधिकारों की व्याख्या की गई है। मूल्य ६ आने।

(२) दीवानी व माल नालिशोंकी समाइत

इसमें पंचायतों की दीवानी व माल नालिशों की समाइत के अधिकारों की व्याख्या करके इन नालिशों की समाइत का रीका बताया गया है। मूल्य ८ आने।

(३) फौजदारी मुकद्दमों की समाइत

जिन दफात में पंचायतों को फौजदारी मुकद्दमों की समाइत का इस्तियार हासिल है उनकी व्याख्या और मिसल बनाने का तरीका देकर एक पूरी मिसल बतौर नमूना दी गई है। मूल्य १२ आने।

(४) पंचायत इलैक्शन क्वाइड

इसमें पंचायतों के चुनाव सम्बन्धी सारी जानकारी दी गई है। मूल्य ६ आने।

(५) इन्तजामिया मुकद्दमों की समाइत

दफात २३ ग्राम पंचायत ऐक्ट के अंतर्गत किए जाने वाले इन्तजामिया मुकद्दमों की समाइत का तरीका और दफा २१, २२ के तहत जारी किये जाने वाले नोटिसों और आज्ञाओं के नमूने दिए गए हैं। मूल्य चार आने।

(६) मसला शामलात देह

के बारे में पूरी जानकारी। मूल्य ५ आने।



★
७ अगस्त १९५९

★
सम्पादक
हितैषी—अलावलपुरी



★
वार्षिक मूल्य

मनी आर्डर से ७ रुपये
पि. पी. से ७ रु० ६५ नए पैसे
विदेशों के लिए
१५ शिलिंग पेशगी
मनी आर्डर अथवा पोस्टल
आर्डर द्वारा ।



★ भारत देश हमारा

भारत देश हमारा हम को प्राणों से भी प्यारा,
प्राणों से भी प्यारा हम को भारत देश हमारा ।

प्राण हमारा जान हमारी आन हमारी शान हमारी,
हम सब के मन का सूरज है यह आंखों का तारा ।
भारत देश हमारा हम को प्राणों से भी प्यारा ॥

ज्ञान का दीप जलाने वाला प्रेम उजाला लाने वाला,
दूर भगा देगा सब जग से, पापों का अन्धियारा ।

भारत देश हमारा हम को प्राणों से भी प्यारा,
जीवन इस पर वारेंगे हम, संकट इसके टारेंगे हम ।
हम सारे हैं इसके रक्षक, यह अपना रखवारा ॥

भारत देश हमारा हम को प्राणों से भी प्यारा,
प्राणों से भी प्यारा हम को भारत देश हमारा ।

—अमरचन्द "कैस"



THE "Prakash"
Editor: L.C. HATASHI
MUNDAUR CITY

लक्ष्य तथा नियम

लक्ष्य—

- (क) विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना ।
- (ख) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना ।
- (ग) छात्रों और अध्यापकों में सहयोग और प्रेम बढ़ाने में सहायता देना ।
- (घ) छात्रों और अध्यापकों के हितों की रक्षा करना ।
- (ङ) निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना ।
- (च) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति !

नियम—

- (क) प्रकाश प्रतिमास की ७ तारीख को ग्राहकों को भेजा जाता है, किंतु कारण-वश देर सबेर सम्भव है ।
- (ख) वार्षिक मूल्य, भारत में ७ रु० मनीआर्डर से, ७ रु० ६५ नए पैसे, वी० पी० से और १५ शिलिंग विदेशों के लिए नियत है । विदेशों के ग्राहक शुल्क पोस्टल आर्डर अथवा मनीआर्डर से भेजें । विदेशों में वी. पी. नहीं जाता ।
- (ग) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता । इसके लिए ६५ नए पैसे के टिकट भेजने चाहिए ।
- (घ) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में कमी या वृद्धि की जा सकेगी ।
- (ङ) लेख, कविता, कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अंतर्गत हों, प्रतिमास की १५ तारीख तक आ जाने चाहिए । जो लेखक अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे ५) रुपए ब्लाक के लिए अपने फोटो के साथ भेजें ।

आवश्यक सूचना

अफ्रीका तथा बर्मा के ग्राहकों के लिये

अफ्रीका के निम्न ग्राहकों को दिसम्बर ५८ में उनके ज़िम्मे बकाया शुल्क के बिल भेजे गये थे । किंतु इनकी अदायगी न हुई । २१ जनवरी को इन्हें पत्र लिख कर शुल्क भेजने की प्रार्थना की गई । केवल फिजी से श्री विलायती राम जी के २ पौंड प्राप्त हुए हैं, धन्यवाद । नीचे हम ग्राहकों तथा उन के ज़िम्मे ३१ दिसम्बर ५८ तक बकाया शुल्क की सूची प्रकाशित कर रहे हैं । उन से प्रार्थना है कि शीघ्र मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर से शुल्क भेज कर अनुगृहीत करें ।

सूची

१. श्री एस. आर. मंगल नैरोबी	२० रु.
२. मंत्री आर्यसमाज नैरोबी	२० "
३. श्री गुरदासराम भण्डारी नैरोबी	४० "
४. महाशय जीवनलाल नैरोबी	३० "
५. मन्त्री आर्यसमाज किमुमु	३० "
६. मन्त्री आर्यसमाज मुम्बासा	४० "
७. मन्त्री आर्यसमाज दारुससलाम	३० "
८. मन्त्री आर्य समाज कम्बाला	४० "
९. श्री बाबूराम भल्ला नैरोबी	३० "
१०. श्री वी. डी. प्रिजा मुम्बासा	४० "
११. आर्य समाज माण्डले	२० "
१२. आर्यसमाज रंगून	१० "

(६) अप्रकाशित लेख आदि बिना डाक टिकट आए लौटाए नहीं जाते । (७) विज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अश्लील न हों और जिन के दाम पेशगी आ जाएं । —प्रबंधक

यदि आप के स्कूल में प्रकाश नहीं आता तो आजही ७ रुपये भेजकर जारी कराएं । —मनेजर

प्राक्काश

वर्ष १०] ७ अगस्त ५९ [अंक ८

रक्षा-बन्धन

—कु० पुष्पा पुरी

कहीं तोड़ मत देना समझ इन्हें धागे की डोरियां,
तुम्हें बांधने आई हूं, राखी के कोमल तार से !
कहने को तो कच्चा सूत लगा है इस में
पर मैं ने रंग दिया इसे अपने दुलार से;
गहराई से देखो इस में छिपी भावना
कहती तुम से रखना इस को सदा प्यार से !

एक एक धागे का मोल आंक कर देखो,
मत सोचो जैसे सोचा करता जग सारा;
बहन मांगती नहीं रत्न की लड़ियां तुम से—
पाने को तरसा करती है प्यार तुम्हारा !

बांध लिया है प्यार हृदय का मैंने इस में,
तार तार राखी का गुंथा कर से अपने;
उसी प्यार से तुम्हें बांधने आई हूं मैं—
भर मन में विश्वास नयन में सादक सपने !

नतिक मुनो तो क्या कहती हैं ये चमकीली डोरियां—
मेरा मूल्य चुका सकते हो केवल निश्छल प्यार से !

मत रक्षा-बन्धन को रक्षा-बन्धन मानो,
यह तो पावन स्निग्ध स्नेह का दृढ़ बन्धन है;
राखी से कर का बन्धन है मात्र बहाना
समझो दो पावन हृदयों का मधुर मिलन है !

मत दो तुम उपहार मुझे रुपयों का भैया,
प्यार दान ही है केवल, प्रतिदान नहीं है;
प्यार तुम्हारा मिले मुझे तो यही बहुत है
इस से बड़ा जगत में कोई दान नहीं है !

(शेष पृष्ठ ६ पर)

कहां क्या है ?

कविताएं	लेखक	पृ० सं०
ऐसा भीत मिले तो जानूँ		३१
देखो पंछी के जीवन को		२१
तिरंगा		२२
राखी		२२
वीर और बलवान बनो		२९
आजादी		३४
कहानियां		
राखी का बन्धन		५
राजकुमारी वन चेंग का स्वयम्बर		२४
लेख		
भारत का भूत वर्तमान और भविष्य		७
आज का भारत और हमारी		
जिम्मेदारियां		११
बच्चों के स्कूल कैसे होने चाहिए ?		१७
हमारा राष्ट्रीय पर्व रक्षा-बन्धन		१८
भविष्य में प्लास्टिक के मकान बनेंगे		२०
कांच का आविष्कार कैसे हुआ ?		२३
शिक्षार्थी सुख छोड़ दें		२८
मृत्युर्मा अमृत गमय		२९
ऐसे बनो कि हमें तुम पर नाज हो		३०
मनुष्य ने सातवें समुद्र का निर्माण		
कर लिया !		३२
हम भारतीय छात्रों को मित्र बनाना		
चाहते हैं		३३
नारी के दो रूप		३६
लोहे का आदमी तैयार हो गया		३७
इनके अतिरिक्त		
फूल और कांटे, अपनी बोलीच,		
समाचार-सार, शिक्षा समाचार, सम्पा-		
दकीय विचार, बुझिए तो ?, गृह विज्ञान,		
चटकुले इत्यादि स्थायी स्तम्भ !		

—★—

समाचार सार

—चण्डीगढ़ को जिला बनाया जा रहा है, जनसंख्या १० लाख होगी।

—तीसरी पंचवर्षीय योजना में कृषि पर भारत सरकार १००० करोड़ रुपया व्यय करेगी।

—पूर्वी पाकिस्तान के तीन मिनिस्टर भ्रष्टाचार के अभियोग में पकड़ लिए गए हैं।

—केरिल में राष्ट्रपति राज स्थापित कर दिया गया है। चुनाव निकट भविष्य में होंगे।

—भाखड़ा-नंगल में लगे दस हजार व्यक्तियों में से ५ हजार इस वर्ष के अन्त तक बेकार हो जाएंगे।

—देश में बढ़ रही बेकार पशुओं की आबादी सरकार के लिए समस्या बन रही है।

—उत्तरप्रदेश सरकार के पास गत वर्ष पुलिस के विरुद्ध १९१३१ शिकायतें प्राप्त हुईं।

—पंजाब में ११६ माडल फार्म स्थापित हो चुके हैं।

—पंजाब में '५२ में ५२.३६ लाख टन मन अनाज पैदा हुआ जो नियत किए गए निशाने के लगभग बराबर ही है।

—मलाया से हज पर गए ३ हजार यात्रियों में से २०० मर गए।

—मि० खुरुशेव ने अमेरिका के वाइस प्रेजिडेंट मि० निक्सन को सुभाष दिया है कि रूस और अमेरिका को मिल कर चन्द्रमा पर विजय पानेका प्रयत्न करना चाहिए।

पंजाब में ५७ लाख की जमीन बोगस अलाटियों से छेन ली गई है।

—आसाम को बाढ़ों से बचाने के लिए ५.२९ करोड़ व्यय किए जाएंगे।

शिक्षा समाचार

—जींद में डिग्री कालेज खुल रहा है।

—वैश्य कालेज रोहतकमें बी. टी. क्लास बन्द कर दी गई है।

—अबोहर म्युनिस्पल कमेटी ने कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी को ५१००० रुपए तथा कैथल म्युनिस्पल कमेटी ने २५००० की सहायता देने का निश्चय किया है।

—पंजाब कालेज टीचर्स यूनियन ने २६ जुलाई को परीक्षा में हो रही इतनी असफलताओं के कारणों पर विचार किया।

—लैकाडाईव टापुओं में पहली बार लड़कियों के सरकारी स्कूल खोले जा रहे हैं।

६०-६१ में देश के आधे हाई स्कूलों को हायर सैकण्डरी स्कूलों में परिवर्तित किए जाने का आल इण्डिया कौंसिल आव एजुकेशन ने निश्चय किया है।

—श्री यश डिप्टी मिनिस्टर आव एजुकेशन ने सरकार द्वारा प्रकाशित 'पंजाब का भूगोल' के सम्बन्ध में यह जांच किये जाने की आज्ञा दी है कि यह पुस्तक कैसे स्वीकृत हो गई?

—अग्रस्त के अन्त में उन स्कूलों के हैड-मास्टर्स और मैनेजर्स को जो सरकारसे एड नहीं पाते एक कन्वैन्शन अमृतसर में होगी जिस में आर्थिक कठिनाई की समस्या पर विचार किया जाएगा।

—भटिण्डा के ७ मिडल स्कूलों को हाई कर दिया गया है, ये स्कूल हैं : बोहा, कोटफत्ता कुटी, संगत भाई रूपा, ढबाली, गोनियाना।

—भारत सरकार 'नेफा' में गुरुकुल पद्धति के स्कूल खोलेगी।

अपनी धोली 'च'

दुनियां दा सब तों बड्डा आदमी !

दुनिया'च वड्डा कौन ए ? एह अजेहा सवाल ए जिस दा ठीक तरहां उत्तर देना शायद संभव नहीं । किसे दे ख्याल'च अनगिनत दौलत वाला वड्डा आदमी ए ते किसे दे सब तों वधीक शारीरिक बल रखन वाला । कई तरहां दे वड्डे आदमी हो चुके ने, हुन भी हन ते अगों वी हुन्दे रहन गे । धार्मिक महापुरुष भी वड्डे कहाँदे हन ते नेपोलियन ते सिकन्दर जिहे योद्धा भी । साडे अपने देस'च वी अनगिनत वड्डे आदमी हो चुके ने ते हुन भी मौजूद हन । पं० नेहरू डा० राधाकृष्णन ते डा० राजेन्द्र प्रसाद दुनिया दे वड्डे आदमी ही मन्ने जाँदे हन । एह सब क्यों वड्डे ने ? कोई अपने महान त्याग दे कारण, कोई अपूर्व विद्वत्ता करके ते कोई होर विशेषता लई । पर सब तों वड्डा कौन ए ? एस प्रश्न दा उत्तर किवें दिता जावे ? मेरे ख्याल'च सब तों वड्डा ओह है जिसने अपने हर छिपे शत्रुओं नूँ जित लिया होवे । मनुष्य दे कई दुश्मन अजेहे हन जिन्हां नूँ ओह वेख सकदा ए ते ओहनां नूँ हरान लई संघर्ष करदा रहंदा ए । पर जेहड़े शत्रु उसदे अपने अन्दर हन ओहनां नूँ न ओह वेख सकदा ए ते न ही ओहनां नूँ जितन दी कोशिश ई करदा ए । ओह शत्रु हन—काम, क्रोध मोह, लोभ अते अहंकार । जिन्ने भी बड़े आदमी हो चुके ने यां मौजूद हन ओहनां चों किसे ने इक नूँ ते किसे ने दो नूँ ते किसे ने तिन शत्रुओं नूँ जितिया ए पर पंजां ई शत्रुओं ते काबू हाले तीक किसे नहीं पाया । जेहड़ा एहनां

फूल और कांटे

[पाठकों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र०—कराची की बजाय रावलपिंडी को पाकिस्तान की राजधानी क्यों बनाया जा रहा है ?

—बुद्धिप्रकाश, पठानकोट

उ०—संभवतः काश्मीर की समस्या का निकट से अध्ययन करने के लिए ।

प्र०—सुना है कि भाखड़ा डैम पर काम में लगे ५ हजार व्यक्ति इस वर्ष तक बेकार हो जाएंगे वे क्या करेंगे ? —हीरालाल होशियारपुर

उ०—हां, हो तो जाएंगे, करेंगे वे नई नौकरी प्राप्त करने का यत्न !

प्र०—केरिल में केन्द्रके हस्तक्षेप का परिणाम क्या होगा ? —रामेश्वरी प्रसाद लुधियाना

उ०—जो एजीटेशन अब चल रही है उस से भी बड़ी एक और एजीटेशन का सूत्रपात ।

प्र०—फैशन कैसे चलते हैं ? —सुशीला मेरठ

उ०—सिने-स्टारों की वेश-भूषा की नकल करके ।

प्र०—भारत की नदियों में बाढ़ आने से हमें चाहे हानि हो किन्तु पाकिस्तान को तो लाभ ही रहता है । क्या यह गलत है ?

—दीनानाथ, अम्बाला ।

उ०—नहीं, बिल्कुल सही है, प्रति वर्ष सैंकड़ों एकड़ जमीन और लकड़ी के शहतीर उसे मुफ्त में मिल जाते हैं, इसका मतलब यह हुआ कि अमेरिका के साथ २ कुदरत भी उसके पक्ष में है ।

पंजां ते विजय पा लयेगा ओ ही दुनिया दा सब तों वड्डा आदमी कहावेगा । —भाईया रेलू

निःशुल्क शिक्षा

कहा जा रहा है

कि देश में अनियंत्रित

प्राइमरी शिक्षा का प्रचलन तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक किया जा सकेगा। इस प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिए तीन सौ करोड़ से ऊपर रुपए दरकार हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि किसी राज्य के लिए प्राइमरी शिक्षा को ही निःशुल्क बनाना आसान काम नहीं है तो मेट्रिक तक निःशुल्क शिक्षा का प्रचलन कितना दुःसाध्य है इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं रह जाता। एक ओर सरकारी स्कूलों में ७वीं तक फीस की माफी और दूसरी ओर विजली पर शिक्षा कर लगा कर जिनके बच्चे पढ़ते हैं उनसे भी और जिनके नहीं उनसे भी फीस वसूल कर लेने को निःशुल्क शिक्षा नहीं कहा जा सकता। फिर प्राइमरी के बच्चों की फीस भर सकना तो किसी के लिए कठिन नहीं, किसी के लिए कठिन है तो हाई स्कूल यथवा कालेज का व्यय उठा सकना अतः यदि निःशुल्क शिक्षा का प्रचलन करना ही हो तो फिर उन विद्यार्थियों से हाई स्कूल और कालेज का व्यय न लिया जाए जिनके अभिभावक यह भार वहन नहीं कर सकते।

ग्रामीणों को कैसी शिक्षा मिलनी चाहिए ?

राष्ट्र का भाग्य-निर्माण जिन के हाथों में

(सफा ३ से आगे)

चाहो तो तुम मोल चुकाना तब राखी का, भुके घेर कर जब दुख के बादल मंडराएं, कभी न मेरा शीश भुके कर्मण के सम्मुख घेर न पाए मेरा पंथ कलुष-छायाएँ ! मेरी बाँटें धाम भुके पट्टे चा आना तुम द्वार तक, जब मेरा पंथ धुत्तला जाए मावस के अधियार से !

सम्पादकीय विचार

है वे अनुभव भी करते हैं और इसका अपने भाषणों में यदा कदा उल्लेख भी कि देश में

प्रचलित शिक्षा पद्धति में परिवर्तन की नितांत आवश्यकता है। अभी हाल ही में कहा गया है कि देहात में 'जनता कालेज' खोलने की बजाय हाई स्कूलों में ऐसी व्यवस्था करना ज्यादा अच्छा होगा कि जिससे कृषकों के बच्चे कृषि का वैज्ञानिक प्रशिक्षण पा प्रगतिशील किसान बन सकें। यदि देहातियों के लिए प्रचलित शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता है तो निःसंदेह स्त्रियों के लिए भी ऐसी व्यवस्था वांछनीय है कि जो उन्हें अपने भावी जीवन में सुदृढ़ गृहिणी सफल पत्नी और आदर्श माता बनने में सहायक हो !

'नेफा' के लिए गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति

आसाम और बर्मा के बीच के क्षेत्र को नेफा कहते हैं। एक ओर पाकिस्तान और दूसरी ओर विदेशी मिशनरी उन्हें भारत के विरुद्ध उकसाते रहते हैं। उनके बच्चों की शिक्षा का उत्तर-दायित्व इन्हीं मिशनरियों ने अपने ऊपर ले रखा था। किन्तु सन्तोष की बात है कि अब इस ओर सरकार का ध्यान गया है। उसने नेफा में गुरुकुलों के ढंग पर स्कूल खोलने का निश्चय किया है। आशा करनी चाहिए कि जो विद्यार्थी इन स्कूलों से निकलेंगे वे न केवल राष्ट्र-भक्त होंगे अपितु जिम्मेदार नागरिक भी।

बच्चों के नए ढंग के स्कूल

अन्य देश बच्चों के लिए क्या कुछ कर रहे हैं इसका एक छोटा सा उदाहरण अमेरिका में स्थापित किए जा रहे बच्चों के नए ढंग के स्कूलों से मिलता है। ये स्कूल कैसे हैं यह जानने के लिए पृष्ठ १३ पर प्रकाशित लेख पढ़ें।

भारत का भूत, वर्तमान और भविष्य !

[श्री राणा प्रतापसिंह "राणा" गन्नौरी]

भूत हमें इतिहास के पन्नों में अंकित मिलता है। वर्तमान हम प्रति दिन अपनी आंखों के सम्मुख देखते हैं। और भविष्य वर्तमान के आधार पर कल्पना के कोष में सुरक्षित होता है। भूत एक नींव है जिस पर कि दिनोंदिन उन्नत हो रही हैं वर्तमान की दीवारें और इन दीवारों पर भविष्य की छत पड़ती है।

यदि हम यह देखने की इच्छा करें कि भूतकाल स्वर्णयुग था, वर्तमान स्वर्ण युग है या भविष्य स्वर्ण युग होगा तो हमें इन तीनों युगों को अपने समक्ष रखना होगा। इनके गुण दोषों पर भली भांति विचार करना होगा तब कहीं यह निर्णय हो पाएगा कि इन तीनों युगों में से सबसे अच्छा युग कौन सा है। और जो सब से अच्छा युग है, वही स्वर्ण युग कहे जाने के योग्य है।

सर्वप्रथम रामायण व महाभारत के युग को देखें। इतिहास को खोलने पर यह ज्ञात होता है कि वह युग कैसा था। उन्नतिशीलता के दृष्टिकोण से वह युग भी कुछ कम न था। भयानक से भयानक यन्त्र उस काल में थे। द्रुतगति से चलने वाले हवाई जहाज इस समय भी थे परन्तु आज की तरह स्यात उन्हें वायु-यान, हवाई जहाज या एरोप्लेन नामों से नहीं पुकारा जाता था उसका समय का नाम कुछ और था। उस समय भी बड़े बड़े वैज्ञानिक, शिल्पकार और कलाकुशल थे। रामेश्वरम का पुल, विमान, विनाशकारी बाण आदि उन के ही तो चमत्कार थे। शासन के दृष्टिकोण से

तो उस समय का शासन आज तक एक उदाहरण बना हुआ है। राज्य में सुख शांति, प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, त्याग, तप, चारित्रिक बल, विचाराभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, हर प्रकार की सुरक्षा (शारीरिक, आर्थिक और अधिकारों की सुरक्षा आदि) सभी गुण थे। तभी तो आज हम वही रामराज्य स्थापित करना चाहते हैं। परन्तु क्या इन अच्छाइयों के साथ बुराइयां थीं ही नहीं? थीं और अवश्य थीं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम जैसे त्यागी, प्रेमी और तपस्वी, ज्ञान-शील, धर्म निष्ठ व्यक्ति थे तो रावण जैसे हठ, दुष्ट, दुराचारी भी थे। युधिष्ठिर जैसे धर्मपुत्र थे तो दुर्योधन सरीखे नीच भी। श्रीकृष्ण थे तो कंस भी था। जहां उस युग में अच्छे व्यक्ति थे दुष्ट भी थे। जहां उस युग में शांति थी वहां राम-रावण युद्ध और महाभारत जैसे विश्वयुद्ध भी तो उस समय के इतिहास के पन्नों को रक्त-रंजित किए हुए हैं। उस समय इस भू पर नारी का सत्कार होता था। नारी पूज्य थी। यहां तक मान उसे प्राप्त था कि उसकी उपस्थिति के बिना कोई यज्ञ ही सफल नहीं गिना जाता था। परन्तु क्या उस समय सीताहरण, द्रौपदी चीरहरण और इस प्रकार की तिरस्कारपूर्ण घटनाएं नहीं हुईं जो स्पष्टतया यह बताती हैं कि उस समय भी नारी का अपमान करने वाले थे।

इस काल को सतयुग कहा जाता है। उस समय सत्य था फिर भी अधिकतर राजे-
(शेष सफा १२ पर)

कहानी—

राखी का बन्धन

[श्री जगदीश तोमर]

अभी की बात कह रहा हूँ ज्यादा अरसा नहीं हुआ। मुश्किल से एक पखवाड़ा बीता होगा। मोहन अभी श्रावण की छुट्टियों में दो दिन के लिए अपने घर गया था। जब से वहाँ से लौटा है, तब से उसमें बड़ा परिवर्तन आ गया है। जब देखो तब एकांत में बैठा-बैठा हंसता रहता है। एक दिन मुझ से बोला—“अभी दुनिया में सत्य बाकी है !” मैं जरा फक्कड़ स्वभाव का आदमी हूँ। तपाक से बोला—“हां बेटा, इसमें क्या शक है...जब तक तुम सरीखे गांधी के चेले, इस धरती पर हैं, तब तक सत्य भी रहेगा...उसे रहना पड़ेगा।” यह सुन कर मोहन कदाचित सहम गया। उस ने वहीं की वहीं बात रोक दी। फिर दो-चार दिन तक उसने मुझ से इस प्रकार की कोई बात नहीं की। किंतु एक दिन फिर बहक पड़ा, बोला—“मैंने जीवन की पवित्रता को समझ लिया है।”

मुझे जरा आश्चर्य हुआ। सोचने लगा कि इसे हुआ क्या है? मन में कुछ जानने की इच्छा जाग उठी और इसलिए मैंने उससे पूछा—“क्या हो गया है मोहन तुम्हें? सच बताओ यह क्या चक्कर है?”

‘कुछ नहीं’ मोहन ने कहा—‘एक व्यक्तिगत बात है।...सचमुच ही अब मैं जीवन की पवित्रता को समझ चुका हूँ। वास्तव में, मानव हृदय बड़ा पापी होता है।...’

मैंने रास्ते ही में रोका—‘पागल कहीं

का, कुछ बतायेगा भी या यों ही बके जाएगा। सच बता क्या बात है?’

मोहन ने उत्तर दिया—‘एक घटना घटी है, पर उसे तुम्हें नहीं बताऊंगा। बताने से कोई लाभ नहीं...और फिर तुम कलाकार ठहरे... न जाने कहां कहां गाते फिरोगे।’

मैंने ईश्वर की सौगन्ध खाई और फिर बोला—‘तुम्हारी बात! और मैं इधर उधर कहूँ।...शिव, शिव, शिव! ऐसा कभी स्वप्न में भी मत सोचना।’

इसके बाद मोहन ने अपनी राम कथा कहनी आरम्भ की।

‘गर्मियों की छुट्टियों में मैं अपने गांव गया था। हर साल ही जाता हूँ। इस साल भी चला गया था। मेरी जन्म-भूमि है न। वहां जाकर रहना मुझे बड़ा अच्छा लगता है। घरका छोटा-बड़ा काम तो मैं ही कर लेता हूँ—जैसे पानी भरना, गाय भैंसों को चारा डालना, उन्हें पानी पिलाना आदि।

मेरे घर के सामने ही एक गडरिये का मकान है। उसी में एक लड़की रहती है। रंग सांवला, बड़ी-बड़ी आंखें। कांति युक्त मुखड़ा। हृष्ट-पुष्ट। उम्र यही १५-१६। नाम सोना।

वह मुझे चिढ़ाती बहुत है। मोहन नाम से उसने मुझे आज तक नहीं बुलाया। सदैव ‘भगडू’ नाम से बुलाया करती है। ‘भगडू’ मेरे बचपन का नाम है। उसके अतिरिक्त अब मुझे इस नाम से कोई नहीं बुलाता। वह बड़ी बातूनी है, पर मैं उसकी किसी बात का बुरा नहीं मानता क्योंकि वह मेरी बाल-सखी है न।

एक दिन मैं कुएं पर खड़ा था। मेरी पढ़ाई के विषय में, गांव वालों में साधारण वार्तालाप हो रहा था। रमई काका कह रहे

एगा ।

घटी
कोई
हरे...बोला-
कहूं ।
में भी

कथा

गांव
न भी
वहां
परका
-जैसे
जना,का
रंग
ड़ा ।नाम
सदैव
मेरे
मुझे
बड़ी
बुरा
न ।
मेरी
रण
रहे

थे—‘मोहन और थानेदार में अंग्रेजी में बातें हुई थीं । उससे थानेदार हार गया ।’

सुखे महाजन बोले—‘मोहन कलटूर है, कलटूर ।’

मैं वहीं पर सिर नीचा किये, मुख पर लज्जा की छाया लिए यह सब कुछ सुन रहा था । इतने में वह आ गई । उसने आते ही पूछा—‘क्यों मोहन, पटवारी तो हो ही जाओगे ?’

मुझे थोड़ी सी हंसी आ गई । और भी लोग हंसने लगे । अपना काम न बनते देख, सोना लज्जित हो कर चली गई ।

इसी तरह आये दिन उसका भोलापन निखरता रहता । एक दिन उसने मेरी निद्रावस्था में, तबे की करोंच से मेरी मूछें बना दीं । सारा चेहरा काला कर दिया । जब जागा, तब भाभी के द्वारा उसकी करतूत ज्ञात हुई । मैं भुंभला गया । सोचा, दो एक खरी-खोटी सुना दूं पर न जाने क्यों, मैं क्रोध पी कर रह गया ।

यह बात नहीं थी कि सोना मुझे परेशान करना ही जानती हो । वह मेरी सुख-सुविधा पर भी ध्यान देती, तीज त्योहार को, बिना कहे दूध दे जाती । कहने पर बैठक में भाड़ू भी लगा देती । शायद इसी कारण से उस का चिढ़ाना मुझे अखरता नहीं था । एकांत में कभी मेरा जो कह उठता था—‘बड़ी अच्छी लड़की है सोना ।’

बहुत दिनों तक इसी प्रकार का क्रम चलता रहा । एक दिन, सब काम समाप्त कर, एक उपन्यास पढ़ रहा था । सहसा किसी ने पुकारा—‘भागडू’

यह स्वर सोना का नहीं था । पीछे मुड़ कर देखा तो जमींदार की लड़की खड़ी थी ।

संकोचवश, मैं कुछ न कह सका, उसी ने बात आगे बढ़ाई—‘यह किताब पढ़ कर मुझे दे देना भागडू ।’

इसी समय सोना आ भटकी । उसने वाक्य के अन्तिम शब्द ‘भागडू’ के अतिरिक्त कुछ न सुन पाया । उस शब्द को सुन कर उसकी तयारी चढ़ गई । तपाक से बोली—‘क्यों री तारा एक पढ़े लिखे लड़के से ‘भागडू’ कहने में तुम्हें शरम नहीं आती क्या ? बोलना हो तो शुद्ध नाम लिया करो ।’

तारा को बुरा लगा । वह अपने क्रोध को न पी सकी । तीखे स्वर में उसने उत्तर दिया—‘तो तू काहे को भागडू भागडू रटा करती है ?’

मेरी बात और है, मेरे साथ खेले हैं । कोई और भी भागडू कहता है या तुम ही कहना चाहती हो ?

तारा के पास इस तर्क का कोई उत्तर न था । कदाचित इसी कारण कुछ सहारा पाने के उद्देश्य से उसने मेरी ओर देखा । इस पर मैंने भी कुछ कह देना उचित समझा । धीरे से बोला—‘मुझ से चाहे जो कहा करो, पर लड़ा मत करो । लोग सुनंगे तो क्या कहेंगे ?’

सोना को मेरा हस्तक्षेप अखरा । वह घर चली गई और तारा भी चल दी ।

तुम जानते ही हो कि मैं एक विचार-शील व्यक्ति हूँ । अपने आप को अच्छा मनो-वैज्ञानिक भी समझता हूँ । इस घटना को लेकर, मैं घण्टों सोचता-विचारता रहा । अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सोना मुझ से प्रेम करती है और वह इस प्रेम में किसी का हस्तक्षेप सहन नहीं कर सकती । मुझे प्रसन्नता हुई ।

लेकिन उस दिन से कुछ समय के लिए,

सोना ने मुझ से बोलना बन्द कर दिया। हां जब कभी देख कर मुसकरा अवश्य देती। ऐसा मालूम होता जैसे कि वह किसी कार्य में संलग्न हो : उसे बहुधा मैं तारा से हंसती बोलती देखता।

वह मुझ से नहीं बोली, किंतु जब ग्रीष्म की छुट्टियां समाप्त हो चलीं, गांव छोड़ने के लिए मेरा केवल एक दिन शेष रह गया तो मैंने स्वयं ही उससे बोलना उचित समझा। उसे मैंने एकांत में बुलाया, पूछा—‘क्या मुझ से नाराज हो गई थी?’

‘नहीं तो!’ उसने हंस कर कहा।

‘तो फिर बोलती क्यों नहीं?’ मैंने फिर पूछा।

‘बोलना चाहती थी पर मौका न मिला, एक छानबीन में लगी हुई थी।’

‘कैसी छानबीन? किस की छानबीन? क्या मुझे न बताओगी?’

‘बताऊंगी क्यों नहीं। तुम्हारे लिए तो सब कुछ किया ही है—छोटी सी बात है—तारा तुम से प्रेम करती है।’

‘हिष्ट, उसे भाड़ में जाने दो, मैं तुम्हें ही अपना सब कुछ समझता हूं।’

‘ऐसा मत कहो। तुम पढ़े लिखे हो, समझदार हो।’

‘पढ़ा लिखा हूं, समझदार हूं, इससे क्या? क्या तुम मुझ से प्रेम नहीं करती? बोलो...।’

‘मैं तुम से प्रेम करती हूं। किंतु प्रेम कई प्रकार का होता है, मेरे और तारा के प्रेम में अन्तर है।’

‘मेरी समझ में कुछ न आया। झुंझला कर पूछा—‘कैसा अन्तर है?’

‘सहसा किसी के आने की आहट हुई

और सोना की ओर एक बार देख कर चल दिया। सोना ने चलते समय कहा—सावनी छुट्टियों में जरूर आना।’

अच्छा,—मैंने कहा—‘अब की बार अवश्य आऊंगा।’

मैं कालेज आ गया। पुराने साथी मिले खूब गप्पें-शप्पें, सैर-सफाटे होने लगे। जुलाई तो न जाने कब खिसक गया। अगस्त आया। इसी माह में श्रावण की छुट्टियां पड़ीं, मैं घर को चल पड़ा।

रास्ते में वही विचार पुनः प्रविष्ट होने लगे। पुराने दृश्य और समस्याएं सामने आईं। मन ने सोना और तारा की तुलना की। तारा हार गई। फिर सोना का कहा हुआ वाक्य स्मरण हो आया—मेरे और तारा के प्रेम में अन्तर है। मैंने इसे समझने का प्रयत्न किया। मेरे अन्तर ने कहा कि सोना मुझे हृदय से चाहतो है। तारा का प्रेम क्षणिक है। दोनों की पुनः तुलना हुई। मैं बहुत दूर तक सोच गया। मेरे मन ने पूछा—इन में से किसे अपनाओगे? और उसी ने कहा—

‘सोना को।’

किन्तु समस्या का अन्त न हुआ। एक और भ्रंश सामने आई। सोना एक गडरिये की लड़की है और मैं एक ब्राह्मण का। समाज क्या कहेगा? यावन की हुंकार ने इसे भी सुलझा दिया, हृदय से एक आवाज उठी—समाज मेरा कुछ नहीं कर सकता। पढ़ लिख कर लकीर का फकीर बना रहना मुझे शोभा नहीं दे सकता। रुढ़िवाद के विरुद्ध मेरा उर आंदोलित हो उठा।

इन्हीं गुत्थियों में उलझते-सुलझते घर आ पहुंचा, नहाया-धोया। ग्राम-सुलभ कपड़े

आज का भारत और हमारी जिम्मेदारियाँ

[श्री शमसुद्दीन एम० ए०, एम० एड० रायपुर]

भारत, वह भारत जो आज हम देख रहे हैं, वर्षों के संघर्ष का फल है। एक वह युग था भारत का, जब भव्य भारत सभ्यता के उच्चतम आसन पर आसीन हो विश्वमंडल का पथ-प्रदर्शन करता था। और एक वह युग भी आया जब भव्य भारत मुट्ठी सर विदेशियों की अधीनता में कई वर्षों तक पड़ा रहा। तब भौतिकवादी विदेशियों की हिंसा का उत्तर आध्यात्म-पहिने। गांव में आज बड़ी धूम मची हुई थी। राखी का त्योहार जो था।

किन्तु मुझे इससे कोई सरोकार नहीं था। मैं तो यथा शीघ्र सोना से मिलना चाहता था। कुछ देर में वह स्वयं मेरे घर आ गई। मेरी हृदय-कली खिल गई। वह मुसकराती हुई, मेरी ओर बढ़ी चली आई और चट से मेरे हाथ में राखी पहना दी। मैं विस्मित नेत्रों से उसे देख रहा था, पर वह प्रसन्न थी पूर्ण प्रसन्न उसके मुख पर शुद्ध प्रेम की झलक थी। मैंने उसके चरणों का स्पर्श किया और जब से पांच रुपए का नोट निकाल कर उसके हाथ पर रख दिया। पर उसने स्वीकार नहीं किया। कहा—“जब नौकर हो जाओ तब।” फिर वह चली गई।

मैंने अपनी मनोकालिमा को समझा। पवित्रता का पाठ सीखा। उसने मुझे गिरने से बचा लिया।”

यह सब कथा सुना कर वह शांत हो गया और मैं उसको आश्चर्य से देखता रह गया।

वादी भारतीयों ने अहिंसा से दिया और उनके सभी प्रकार के अत्याचारों को चुनचाप सहते रहे। किन्तु किसी भी चीज की एक सीमा होती है। सीमा से बाहर जब शासकों के अनाचार बढ़ने लगे तब भारत माता के वीर लाल इसे सहन न कर सके। सन १८५७ का मंदर इस का प्रतीक है।

इस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम किरण भारत के अतिरेक पर फूटी थी और वर्षों की गुलामी को गहरी अंधकारमयी रात्रि में सोई हुई जनता ने पहली करवट बदली थी। जनता के हृदयों में दबी आह ने धीरे-धीरे चिनगारी का रूप धारण किया था और फिर तो यह आग क्रमशः बढ़ती ही गई और उसने देशव्यापी संघर्ष व विद्रोह का रूप धारण कर लिया। किन्तु असहाय निःशस्त्र भारतीय कब तक सबल और सशस्त्र शासकों का सामना करते? आखिर उन्हें हार माननी पड़ी और एक बार फिर सर्वत्र मौन छा गया तथा आग भीतर ही भीतर सुलगती रही। १९वीं सदी में भारत के कुछ प्रमुख नेता जिनमें लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचन्द्रपाल इत्यादि शामिल थे, सामने आए और उन्होंने लोगों में जागृति और राष्ट्रीयता के प्रति प्रेम की भावना फैलाना प्रारम्भ कर दिया। सामाजिक सुधार और जन कल्याण के कार्यक्रम की आड़ में वास्तव में उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की तैयारी प्रारम्भ कर दी फिर तो मां

(शेष सफा १४ पर)

(सफा ७ से आगे)

महाराजेशक्ति के सहायक थे सत्य के नहीं, महाभारत के युद्ध से यह स्पष्ट है कि उन्होंने दुर्योधन का पक्ष लिया था।

समय दवे पांच आगे बढ़ रहा है। इतिहास के पन्ने भी इससे आगे आने वाली घटनाओं को अपनी मूक जिह्वा से पुकार पुकार कर कह रहे हैं। आर्यों के सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक जीवन चित्र, गुप्तकाल और अशोक का राज्यकाल, बौद्ध और जैन युग, ये सब भूत की आकर्षक भाकियां हैं परन्तु इनके साथ साथ सिकन्दर महान का आक्रमण, राजा अम्भी का कायरता पूर्ण व्यवहार, और आगे बढ़ने पर जैचन्द्र, पृथ्वीराज के आपसी सम्बन्ध, मुहम्मद गौरी के आक्रमण, भारत के निकट भूत की घटनाएं हैं। उस समय की फूट ही तो यवनों के आगमन और भारत की परतन्त्रता का कारण हुई। घूस लेकर दुर्गों के द्वार खोल दिए जाते, शत्रु को देश नष्ट करने की आज्ञा दे दी जाती थी।

यद्यपि वैज्ञानिक उन्नति रामायण महाभारत के युग सी न रही। युग की गति धीमी होती गई। शनैः शनैः चलने वाली बेलगाड़ियां, बेलों और घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली रथें और गाड़ियां हमारे सामने आईं। नगर-नगर से दूर, ग्राम ग्राम से दूर और देश देश से दूर तर हाता गया। परन्तु फिर भी शिल्प की उन्नति रही। उस समय के गगन चुम्बी भवन, जो-सैंकड़ों वर्षों-की आंखों देखी कहानियां सुना रहे हैं, भूत की ही तो देन हैं। अशोक का लोह स्तम्भ उसी समय की कला का चिन्ह है। एजन्ता और एलोरा की चित्र कला भूतकाल की कला का मुंह बोलते प्रतीक है।

यवनकाल के धर्माधता पूर्ण कार्य इतिहास के धब्बे हैं। और उन्हीं के साथ धार्मिक प्रचारकों और गुरुओं के बलिदान इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखे हैं।

भूत का क्षेत्र तो अत्यधिक विस्तृत है। बीता हुआ कल यहां तक कि एक पल भी भूत की कड़ी बन जाता है। यदि यों देखें तो वर्तमान की सीमा तो केवल एक पल तक ही सीमित रह जाती है। आने वाला प्रत्येक पल भविष्य ठहरा।

परन्तु फिर भी हमें आज से कुछ वर्ष पहले तक वर्तमान युग की सीमा निर्धारित करनी पड़ेगी। अपितु एक पल को युग कहना और फिर उसकी भूतकाल से तुलना करना असम्भव कार्य है। अतः पिछले कुछ वर्षों को वर्तमान युग मान कर हम आज तक की दशा का निरीक्षण करने उतरते हैं।

वे आहिस्ता आहिस्ता रींगने वाली गाड़ियां, वह एक देश से दूसरे देश का दूर होना, वह बन, पर्वत और नदियों का मानव के रास्ते में बाधाएं बनना, मानव को एक आंख न भाया। उसने इन सब को समाप्त करने की ठानी। और इस कार्य के लिए उसे एक और केवल एक यन्त्र मिला विज्ञान। विज्ञान का आश्रय लेकर मानव ने वह किया कि इस युग का नाम ही विज्ञान का युग पड़ गया। विज्ञान की सहायता से मानव ने, दूरी का नाम मिटा दिया, पर्वत नतमस्तक हो गए और यदि अड़े तो मानव ने उनके वक्षस्थल को चीर डाला। सागर, बन, नदियां अपने आप मानव को अपने पर से गुजर जाने की आज्ञा देने लगे साधन हीन समाज को मानव ने सीमित की बजाय विस्तृत और विश्व समाज बनाने के

लिए साधन जुटाए। रेल, तार, विद्युत्, रेडियो मोटर, जहाज (वायु तथा जल), मशीनें और अनेकों दूसरी वस्तुएं जिन्होंने मानव के जीवन को सुखमय बना दिया है, मानव ने विज्ञान की सहायता से बनाईं। दुख और रोग बढ़े तो उन के लिए अनेकों औषधियां तैयार कीं। यहां तक कि रोग को लताड़ता लताड़ता मानव मृत्यु के केसों में पंजे गाड़े उसे पछाड़ने का यत्न करने लगा है। आज विज्ञान की सहायता से मानव चन्द्र सूर्य तक पहुंचने में प्रयत्नशील है। और ऐसा लग रहा है कि वह वहां भी पहुंच जाएगा अवश्य।

आज इस युग में विज्ञान ने मानव के जीवन को ऐश्वर्यमय बना दिया है। आज जीवन का उद्देश्य ही ऐश्वर्य की प्राप्ति बन कर रह गया है। तप और त्याग का तो कोई स्थान ही नहीं रहा। आज संसार भोग-वादी बन गया है। मादा परस्ती बढ़ रही है। द्रोण, लालच, द्रोह और कलह ने ही मानव को वशीभूत कर लिया है। आज धन ही ईश्वर है और इसकी प्राप्ति सब से बड़ा उद्देश्य। धन जिस के पास है वही ईश्वरीय कृपा का पात्र समझा जा रहा है। ईश्वर तो एक ढकोसला बनकर रह गया है। धर्म अपनी मौत आप मर गया है। धन के लिए भाई भाई का शत्रु है, पिता पुत्र का, पत्नी ने अधिकार प्राप्त करने के लिए पति का मुकाबला करना आरम्भ कर दिया है। पति पत्नी को अत्यन्त तिरस्कृत कर रहा है। चारित्रिक पतन अपनी चरमसीमा पर पहुंच चुका है। आज सभ्यता का प्रकाश पूर्व से पश्चिम की ओर नहीं बल्कि पश्चिम से पूर्व की ओर फैल रहा है, आज फिर सृष्टि के आरम्भकाल की तरह, स्त्री, पुरुष एक दूसरे के संग नग्न

तथा स्वतन्त्र रहने की इच्छा, पश्चिमी मानव के मन में पैदा हुई है। पृथ्वी अपनी उपज शक्ति खो रही है मानव अपनी उत्पदान शक्ति बढ़ा रहा है। खाद्य की कमी दिन दिन मानव को सता रही है। आज मानव की मानसिक शारीरिक और मस्तिष्क की शक्तियां नष्ट हो रही हैं। वह हर कार्य मशीनों से ले रहा है। भूतकाल जैसे त्यागो, तपस्वी, ऋषि और मुनि तो आज ढूँढे नहीं मिलते।

आज शासन प्रणालियां बदल चुकी हैं। अनेकों वाद हैं। अनेकों मत हैं। प्रत्येक वाद और मत दूसरे वाद और मत को समाप्त कर अपना सिक्का जमाना चाहते हैं। आज विश्व अनेकों देशों में विभक्त है। कुछ बड़े देश हैं और कुछ छोटे। बड़े शक्तिशाली हैं। उनके पास बम और राकेट हैं तो दूसरों के पास भोजन भी नहीं। बड़े छोटा को अपना शिकार बना लेना चाहते हैं। और इस इच्छा के फलस्वरूप प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध हुए। इन युद्धों से मानवता कांप उठी। युद्ध रोकने के लिए राष्ट्रीय संघ की स्थापना हुई। परन्तु फिर भी क्या विज्ञान की उन्नति ने मानव को निचला बैठने दिया? आज मानव अपना आप भोखा बैठा है। और यह कहा जाने लगा है कि आज विश्व बारूद के ढेर पर बैठा है। न जाने यह बारूद का ढेर कब फट जाए और विश्व नष्ट हो जाए।

भविष्य वर्तमान के पर्दे में दीख पड़ रहा है। विज्ञान की उन्नति ने यह आशा बंधा दी है कि भविष्य और भी सुखमय होगा। परन्तु स्वयं एक वैज्ञानिक ने ही यह कहा है—'मैं तीसरे विश्व युद्ध के बारे में कुछ नहीं कह सकता परन्तु चौथा विश्वयुद्ध फिर से लाठियां

(सफा ११ से आगे)

के और भी वीर लाल, जैसे मोती लाल नेहरू, महात्मा गांधी, बल्लभ भाई पटेल और जवाहर लाल नेहरू सभी इस स्वतन्त्रता के महायज्ञ में कूद पड़े और विभिन्न सत्याग्रहों, असहयोग आंदोलनों आदि के रूप में अपनी हृदयगत भावनाओं का प्रदर्शन करने लगे। क्रांति के इस महायज्ञ में राष्ट्र धर्म की वेदी पर सैकड़ों वीरों ने अपने जीवन की बलि दे दी और उन अमर शहीदों का जीवनदान सार्थक हुआ। काल ने चक्र चलाया, युग ने करवट ली और भारत एक बार फिर स्वराज्य सूर्य की रश्मि राशि से जगमगा उठा।

आज से ठीक १०० वर्ष पहले हमारे स्वतन्त्रता संग्राम का जो प्रारम्भ हुआ था उस और पत्थरों का युद्ध होगा।" इस उक्ति से स्पष्ट है कि भविष्य सुखमय होगा परन्तु उससे घोर दुख है। शक्तियाँ अपने अभिमान में एक दूसरे से टकरा जाएंगी। विश्वयुद्ध होगा अवश्य शीघ्र या देर से। और यह युद्ध वह भयानक युद्ध होगा कि वर्तमान सभ्यता ही नष्ट होकर रह जाएगी। इस महानाश के बाद का भविष्य यदि स्वर्णमय हो भी तो क्या जबकि निकट तम-मय है।

भविष्य तो किसी ने देखा नहीं, जाना नहीं, कैसा है, कौन कहे। देखा भूत भी नहीं परन्तु इतिहास के द्वारा ही हमें पता चला है उसका। और इसमें भी कल्पना है। अतः भूत कल्पना है भविष्य भी कल्पना।

भूत केवल कल्पना है,

और भविष्य भी कल्पना ही है।

वर्तमान ही हमारे सम्मुख है और जो सम्मुख है वही अच्छा है, वही स्वर्णिम है।

का अन्त १५ अगस्त १९४७ में हुआ था, जब विदेशी हमें हमारी सत्ता सौंप देश से चले गए। इस तरह हमने देश की आजादी तो प्राप्त कर ली किंतु जैसा कि किसी ने कहा है राजनीति की विजय से सभ्यता की विजय कहीं महत्वपूर्ण और स्थायी होती है। आज हमें उसे प्राप्त करना है... वर्षों की गुलामी और अत्याचार से देश की जनता जो सामाजिक और आर्थिक पतन के गर्त में पड़ी हुई है, उसे हमें उठाना है। इसी प्रकार के अनेक कर्तव्य और जिम्मेदारियों का एक बड़ा बोझ हमारे कंधों पर आ पड़ा है किंतु हम ने इनसे भयभीत न होकर उन्हें सफलतापूर्वक वहन करना है।

समय के परिवर्तन के साथ-साथ मानव का कार्यक्षेत्र भी बदलता रहता है। आजादी की प्राप्ति से पहले भारत के स्त्री पुरुष, बालक युवक सभी का एक अलग ही कार्य क्षेत्र था। प्रत्येक का कर्तव्य था कि वह अपने संकुचित हित का त्याग कर राष्ट्र की स्वाधीनता के महान हित की ओर अग्रसर हो। व्यष्टि को समष्टि के लिये बलिदान करें। बालकों को सिखाया जाता था कि वे निर्भीक वन त्याग और बलिदान के लिए तैयार रहें और अपनी बन्दिनी भारत माता को मुक्त करें। विद्यार्थियों को सिखाया जाता था कि वे शिक्षा के साथ साथ अपनी शक्ति का संगठन करें ताकि समय आने पर वे दुश्मनों का सामना कर सकें। युवकों को अहिंसा के आधार पर क्रांति और सत्याग्रह का मन्त्र पढ़ाया जाता था। स्त्रियों का कर्तव्य था कि वे ऐसे वीर और देशभक्त पुत्र तैयार करें उनमें राष्ट्र प्रेम की ऐसी ऐसी भावनाएं भरें कि अत्याचार के सामने उनका खून खौल उठे, भुजाएं फड़कने लगें और वे भारत माता के

लिए हंस हंस कर अपने अमूल्य जीवन की बलि देने के लिए तत्पर रहे।

किंतु १५ अगस्त १९४७ से भारत में समय और परिस्थितियां दोनों ही बदल चुकी हैं। आज हम स्वाधीन भारत के नागरिक हैं और हमारे देश के नवनिर्माण की महान जिम्मेदारी हम पर है। राज्य सत्ता पाकर भी हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शब्दों में हमें यहां रामराज्य स्थापित करने के लिए बहुत कुछ करना है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद ही देश के विभाजन के कारण यहां अशांति, अराजकता और हाहाकार का जो वातावरण निर्माण हो गया था उसे शांत करने में देश की राष्ट्रीय सरकार को कठिन परिश्रम करना पड़ा। लाखों शरणार्थी जो बिना घरबार के इधर-उधर घूम रहे थे, उन्हें आश्रय दे उनकी रोजी रोटी की व्यवस्था का भार सरकार को वहन करना पड़ा। इसी समय सरदार पटेल के नेतृत्व में देशी रियासतों का भारत संघ में विलीनीकरण प्रारम्भ हुआ, जिसने अनेक राजकीय व आर्थिक समस्याओं को जन्म दिया। परिणाम यह हुआ कि हमारी राष्ट्रीय सरकार उपयुक्त सभी मामलों को हल करने में तत्पर हो गई।

इस दिशा में हम ने कुछ प्रगति भी की किन्तु एक बड़े देश की विभिन्न आवश्यकताओं को देखते हुए यह अभी बहुत कम है। आज हमारा देश संक्रांतिकाल की उस स्थिति से गुजर रहा है जिस में अपनी पुरानी खाइयों को भरना है और भविष्य के लिए नव निर्माण करना है। स्पष्ट है कि आज का हमारा जीवन तो कठिनाइयों और मुश्किलों से भरा रहेगा ही किन्तु यह निश्चय है कि हमारी आगे आने वाली

पीढ़ी ज्यादा सुखी और सम्पन्न हो सकेगी। आज हमारा राष्ट्र हम से हर तरह की सेवा, त्याग और कर्तव्य की मांग कर रहा है और हम वास्तव में देश के प्रति कर्तव्य करके अपनी भारत मां के ऋण से उद्धृत होना चाहते हैं तो हमें शीघ्रातिशीघ्र अपने कर्तव्य को पहचान कर उसमें जुट जाना चाहिए तभी देश का कल्याण हो सकेगा और हमारा रामराज्य का स्वप्न पूरा होगा।

आज देशके हर नर नारी, बालक युवक के सामने कोई न कोई योजना और उसका कार्यक्रम रखा हुआ है। सरकार की प्रथम पंच-वर्षीय योजना समाप्त हो चुकी है और दूसरी सामने है। इसके अन्तर्गत औद्योगिक, कृषि सम्बन्धी शैक्षणिक व ग्राम्य सुधार सम्बन्धी जो आर्थिक और सामाजिक कार्यक्रम हैं, उनमें सहयोग देना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जब तक जनता का इसमें पूर्ण सहयोग न होगा, अकेली सरकार कुछ नहीं कर सकती। हमें जिस रूप में भी हो अपनी सेवा और त्याग से राष्ट्र और सरकार के कार्य में सहयोग देना है। देश की बढ़ती हुई आर्थिक विषमता को दूर करने व हिंसात्मक क्रांति को रोकने के ध्येय से आचार्य विनोबा भावे ने जो भूदान यज्ञ आंदोलन प्रारम्भ किया है, उसे हमें सफल बनाना है। इसके पीछे छिपी हुई त्याग, सेवा और समता की महान भावनाओं को हमें लोगों तक पहुंचाना है। यदि हमारे पास सम्पत्ति है तो उसका कुछ हिस्सा दान करें, यदि श्रम कर सकते हैं तो श्रम का दान करें और यदि बुद्धि से सेवा कर सकते हैं तो बुद्धि का दान करें। इस प्रकार हर तरह से हम देश के कार्य में हाथ बटा सकते हैं। सामूहिक विकास कार्यक्रम के

के अन्तर्गत हमारे सामने ग्रामों की पिछड़ी हुई दशा को सुधारने का काम पड़ा है। हमारे असंख्य भाई अशिक्षा, दरिद्रता, अस्वच्छता, तथा कई सामाजिक दोषों जैसे अदूरदर्शिता, अन्धविश्वास, अस्पृश्यता आदि के कारण दुखी और पीड़ित हैं। रोजी के अभाव में कई व्यक्ति बेकार बैठे हुए राष्ट्र के लिए भार स्वरूप बन रहे हैं। इन सब के प्रति हमें मोर्चा लेना है। यह सब एक दिन का कार्य नहीं। इसे पूरा करने में हमें बरसों लग जाएंगे। पर यदि हम सब कमर कस के जुट जावें तो थोड़े ही समय में काया पलट की जा सकती है।

आज के इस बदले हुए युग में माताओं शिक्षकों और छात्रों के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों में भी वृद्धि हो गई है। वर्तमान राष्ट्र की कर्णधार और भावी राष्ट्र की निर्माता हमारी माताएं ही हैं। यदि वे अपने कर्तव्य से जागरूक हो जावें तो देश का सहज ही उत्थान हो सकता है।

किसी युग की अबला नारी को आज सबला बनाया है और सुरक्षित रहने के बजाय जो स्वरक्षित होना है तभी राष्ट्र और समाज के भार को हल्का करने में सहायक हो सकती है। उसे अपने घर को केवल ईंट-पत्थर की चार-दीवारी न बना उसे सच्चे अर्थ में घर बनाना है, ऐसा घर जहाँ माता का स्नेह, पत्नी का प्यार, छोटी की श्रद्धा और बड़ों का आशीर्वाद हो। शांति और सुख से सम्पन्न ऐसे घरों का निर्माण हमारी बहिनों के हाथ है। यदि वे इसे पूरा कर सकीं तो हमारा कौटुंबिक और सामाजिक जीवन जो दुख और निराशाओं से भरा दीखता है स्वर्ग-सुखदायी हो सकता है।

एक युग था जब नारी ने अपने पति और पुत्रों को स्वयं स्वातंत्र्य संग्राम में भेज कर अपने अपूर्व त्याग और तप का परिचय दिया था। आज भी उसके सामने महान जिम्मेदारी है कि वह अपने पुत्रों में राष्ट्र के प्रति प्रेम, सेवा और त्याग की भावनाएं ठूस ठूस कर भरें और उन्हें आज का आदर्श नागरिक बनाएं। आज के शिक्षकों पर भी बच्चों के नवनिर्माण की महान जिम्मेदारी है। उन्हें चाहिए कि वे न केवल उन का बौद्धिक विकास करें बरन उनकी शारीरिक व आत्मिक उन्नति को भी ध्यान में रखें ताकि उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो और वे देश के सफल नागरिक बन सकें।

सारांश यह कि हम भावी भारत का नवनिर्माण करने वाले हैं और यह हमारे लिए गर्व की बात है। भूतकाल में हमारे भाई और बहिन ने अपने जिस कीमती जीवन का रक्त दे कर आजादी के इस कोमल पौधे को अंकुरित किया है उसे पल्लवित और पुष्पित करने का बीड़ा हम पर आया है। हमें चाहिए कि हम देश की राजकीय, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक उन्नति कर देश को सर्वतः सम्पन्न करें और त्रेता युग का रामराज्य एक बार फिर भारत भूमि पर ला दें।

★ वण्डरफुल !

दुकान के मैनेजर ने 'बास' के सामने अपनी चिंता प्रगट करते हुए कहा आखिर अमरनाथ का क्या किया जाये वह बिलकुल बहरा हो गया है, ज़राभी सुन नहीं पाता। अब किसीभी काउंटर पर रखने लायक तो नहीं रह गया वह ! 'बास' ने बीचमें ही बात काटते हुए कहा, 'अरे उसे शिकायत वाले काउंटर पर क्यों नहीं भेज देते ?' यह सुझाव सुनकर मैनेजर खशी से चिल्ला उठा—वण्डरफुल !

बच्चों के स्कूल कैसे होने चाहिए ?

आज के बालक कल के राष्ट्र निर्माता बनते हैं। जिस प्रकार उनका लालन-पालन होता है, जैसी उनकी शिक्षा-दीक्षा होती है, वैसे ही गुणों और व्यक्तित्व का विकास उनमें होता है। अब लगभग सभी देश यह स्वीकार करने लगे हैं कि देश के भावी कर्णधारों को उत्तम प्रकार से शिक्षा देने की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। लगभग सभी देशों की सरकारें बालकों की शिक्षा के लिए अच्छे और प्रतिभाशाली शिक्षक जुटाने, उत्तम पाठ्यक्रम की व्यवस्था करने तथा उनके स्वास्थ्य की रक्षा करने के तरीकों पर विशेष रूप से अपना ध्यान केन्द्रित कर रही हैं, लेकिन अमेरिका में इससे भी आगे एक कदम उठाया जा रहा है। वहां आजकल शिक्षा शास्त्री इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं कि बालकों को शिक्षा देने के लिए किस प्रकार के भवनों का निर्माण किया जाना चाहिए। इस दिशा में अमेरिका के अनेकों भागों में सक्रिय कदम भी उठाए जा चुके हैं। अभी हाल में बालकों के एक स्कूल का निरीक्षण करते हुए एक विदेशी अतिथि के मुख से बरबस यह शब्द निकल पड़े, 'कितनी सुन्दर व्यवस्था है, कितना सुन्दर भवन है। इस कक्षा में बैठ कर ही बालक बहुत कुछ सीख सकता है।' जिस कक्षा को देख कर उक्त विदेशी अतिथि के मुख से ये उद्गार निकले थे, उसकी व्यवस्था का संक्षेप में विवरण सुनिए :—

सुन्दर आरामदेह घूमने वाली छोटी-छोटी कुर्सियां और आकर्षक मेजें, कक्षा की

चमकदार कार्ड बोर्ड से बनी दीवारें, जिन पर बालकों के लिए बनाए गए चित्र टंगे थे; कांच के बड़े-बड़े पारदर्शी दरवाजे, जिनके पार सुन्दर और मनमोहक छोटा सा बाग।

आज कल अमेरिका में इसी प्रकार की स्कूली इमारतें तैयार करने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वहां स्कूल-भवनों के निर्माण की एक विशेष स्थापत्य-कला का ही विकास हो गया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका विकास ज्ञानोपाार्जन के नए-नए तरीकों की खोज में संलग्न शिक्षकों और शिष्यों के विचारों को दृष्टि में रख कर किया गया है।

इन नवीन स्कूलों के लिए नए-नए प्रकार के नक्शे तैयार करने की आवश्यकता पड़ती है और यह भी आवश्यक रहता है कि नक्शे तैयार करने वालों का ज्ञान काफी विकसित और विस्तृत हो। उनको ठीक उसी प्रकार की जानकारी होनी चाहिए, जिस प्रकार भवन स्थापत्य-कला विशेषज्ञ को रसोईघर, भोजन-कक्ष, विश्रांति-कक्ष, बैठक-कक्ष इत्यादि के निर्माण के सम्बन्ध में जानकारी होनी आवश्यक है। यही नहीं, उन्हें आज कल की शिक्षा-प्रणाली के आधारभूत सिद्धांतों के बारे में भी कुछ मालूम होना चाहिए और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वालों के सुझावों पर भी उन्हें ध्यान देना चाहिए।

पहले अमेरिका में भी स्कूलों का निर्माण पुराने ढंग पर होता था। मगर अब नया ढंग लोकप्रिय हो रहा है।

भारत का राष्ट्रीय पर्व रक्षा-बन्धन

[श्री कैलाश चन्द्र]

किसी देश की एकता वहाँ की संस्कृति, साहित्य, परम्पराओं और मनाए जाने वाले पर्वों से जानी जाती है। भारत एक महान देश है। वह विभिन्न संस्कृतियों के समन्वय से बना है। यों तो उसमें पग पग पर विभिन्नता मिलती है किन्तु उसकी अविच्छिन्न और अखंड एकता को दर्साने वाले हमारे त्योहार, आज भी उसे एक सूत्र में बांधे हुए हैं। राष्ट्रीय पर्व का महत्व रखने वाले त्योहार विशेषतः होली, दिवाली तीज, दशहरा और रक्षाबन्धन हैं, जो इस विशाल देश के हर कोनेमें मनाये जाते हैं और इस बात का संदेश देते हैं कि सब भारत-माता की सन्तान हैं।

वैसे प्राचीन काल से इसके मनाने की भिन्न भिन्न मान्यताएं चली आई हैं। ब्राह्मण-गण इन दिनों जनता को अपने धर्म-उपदेश दिया करते थे। यज्ञ होते थे और श्रावणी पूर्णिमा को यज्ञ की पूर्णाहुति होती थी। यज्ञ की समाप्ति पर राजपुरुष आश्रमाध्यक्ष का सत्कार और तिलक करते थे। उधर आश्रम के मुखिया राजाओं और अन्य अतिथियों के हाथ में रक्षा-बन्धन (मौली का सूत्र) बांध देते थे। इस के अनुसार सूत्र बंधवाने वाले व्यक्ति बांधने वाले की रक्षा का सारा भार अपने ऊपर ले लेते थे। आज इसका स्वरूप ब्राह्मणों के लालच और क्षत्रियों की बलहीनता ने बिल्कुल बदल दिया है। हमारे पुराणों में इस पर्वसे सम्बन्धित कितने ही आख्यान मिलते हैं किन्तु आज रक्षा-बन्धन का विशेष महत्व भाई-बहन के पवित्र प्रेम को

सुरक्षित रखना है।

हमारे इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब रक्षा का भार लेने वाले ने अपना जीवन जोखिम में डाल कर भी अपने कर्तव्यका पालन किया है। इसका एक ज्वलन्त उदाहरण हमारे सामने चित्तौड़ की महारानी कर्णवती और हुमायूँ का है। जब कर्णवती को अपनी रक्षा का अन्य कोई मार्ग न मिला तब उसने हुमायूँ के पास राखी (मौली का डोरा) भेजी। हुमायूँ राखी का महत्व अच्छी तरह जानता था। उसने स्वयं पर विपत्ति होते हुए भी उन पवित्र धागों की लाज रखी।

सूतके कच्चे धागोंमें जो संदेश छिपा है उस के गौरव की रक्षा के लिए बहन भाई के राखी बांधती है। अथवा जिस के भी राखी बांधी जाती है वह स्वतः आजीवन भाई बन जाता है। यह सूत का धागा भाई-बहन के पवित्र सम्बन्ध का प्रतीक है। आज कल रक्षा-बन्धन के दिन परिवार के कुल पुरोहित ही नहीं बल्कि कोई भी ब्राह्मण हाथ में मौली की पिंडी और राम राखी ले कर निकल पड़ते हैं और अपने जान-पहचान वालों के घर जा कर उनके राखी बांध देते हैं तथा दक्षिण-स्वरूप कुछ पैसे लेकर चले आते हैं। अब यह सूत्र केवल धन-प्राप्ति के लिए बांधा जाता है। बहनें भी राखी की तैयारियां कई दिन पूर्व से प्रारम्भ कर देती हैं। बाजारों में लगी राखियों की दुकानों पर प्रातः काल से संध्या तक महिलाओं की अपार भीड़ जमा रहती है।

* भारतीय बाल सभा *

बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी

अध्यक्षा : दीदी

फुलवाड़ी

(बच्चों के प्रश्नों के उत्तर)

प्र०—रक्षाबन्धन का त्योहार कैसे और कब प्रचलित हुआ? कमला जालंधर

उ०—संभवतः यवन-काल में आत-
तायियों से आत्मरक्षा के लिए वीरों को
वचन-बद्ध करने के कारण ही रक्षा-बन्धन
प्रचलित हुआ।

प्र०—स्वतन्त्रता दिवस इतने उत्साह
से भारतमें नहीं मनाया जाता जितना कि
अमेरिका आदि में, इसका क्या कारण है?

—हरिगोपाल होशियारपुर।

उ०—इसलिए कि स्वतन्त्रता प्राप्ति
के पश्चात् जिस सुखी जीवन की सर्व-
साधारण को आशा थी वह पूरी नहीं
हुई।

प्र०—मैं रूस के किसी बालक को
पत्र-मित्र बनाना चाहता हूं, क्या आप इस
कार्य में मेरी सहायता करेंगी?

—सुरेन्द्र कुमार, मुधियाना

उ०—इसी अंक में अन्यत्र मास्को
के एक मिडल स्कूल के कुछ छात्रों का
एक पत्र छपा है। उसे पढ़ लो। इसके
नीचे पता भी दिया हुआ है—तुम उन
छात्रों मेंसे किसीको पत्र लिख सकते हो।

प्र०—क्या संसारमें कोई ऐसा मनुष्य
भी हुआ है जो कभी न रोया हो?

—सन्तोषकुमारी, करनाल।

उ०—बीते सत्-युग में तो ऐसा
व्यक्ति हुआ नहीं, आने वाले सत्-युग में
शायद पैदा हो जाए।

प्र०—लड़कियों को कैसी शिक्षा
मिलनी चाहिए। —दुर्गादेवी अम्बाला

उ०—ऐसी जो लड़कियों को आगे
चल कर सफल गृहिणी, आदर्श पत्नी
और गौरव-मयी मां बनने में सहायक
सिद्ध हो!

[सभी बच्चे निस्संकोच प्रश्न भेज

—दीदी

सकते हैं।

भविष्य में प्लास्टिक के मकान बनेंगे !

हमारे दैनिक जीवन में प्लास्टिक ने जो महत्व प्राप्त किया है वह किसी से छिपा नहीं। भारत में भी प्लास्टिक-उद्योग ने आश्चर्यजनक उन्नति की है। भारत में यह उद्योग नया है किन्तु अमेरिका के लिए नया नहीं। वहां इस उद्योग की ५ हजार कम्पनियां हैं जिनमें २॥ लाख व्यक्ति काम करते हैं। इन कम्पनियों के द्वारा करोड़ों डालर का सामान प्रति वर्ष तैयार होता है।

प्लास्टिक की कहानी बड़ी रोचक है। प्रारम्भ में वैज्ञानिक अपनी परीक्षण शालाओं में ही इसे उन्नत करने में व्यस्त रहे। किन्तु युद्ध के दिनों में दूसरी धातुओं की कमी ने प्लास्टिक का महत्व बढ़ा दिया अतः इसका प्रयोग बहुत बढ़ गया। मोटरों के कारखानों, निर्माण, खाद्य पदार्थों के पैकिंग, हवाई जहाजों की तैयारी आदि में प्लास्टिक का बहुत प्रयोग किया जा रहा है।

१६८८ में जब बिलियर्ड के गेंद बनाने वाले कारखानेदारों को हाथी दांत का अभाव हो गया था तब इसके स्थान पर काम में लाए जा सकते वाली किसी चीज

के आविष्कारक के लिए १० हजार डालर का इनाम घोषित किया गया। इस पर एक युवक 'जान वेजले हेयट' ने सेलो-लाईड तैयार किया जो अमेरिका में सब से पहले व्यापारिक आधार पर प्लास्टिक के तौर पर इस्तेमाल किया गया। बिलियर्ड के गेंदों के अतिरिक्त इसे नकली दांत कालर और आस्तीनों और गाड़ियों की खिड़कियों के लिए प्रयुक्त किया गया। ४१ वर्ष के पश्चात् डा० ल्युहैडरिक बाईक लैंड ने, जो बेलजियम में उत्पन्न हुए थे प्लास्टिक को तैयार करने के लिए अगला पग उठाया। उन्होंने कीमियात से एक ऐसी सख्त प्लास्टिक तैयार कर ली जिस का नाम 'बेकलाईट' रखा गया। इसे दूसरे विश्व युद्ध में बड़ी लोकप्रियता प्राप्त हुई। प्लास्टिक के कारखानेदारों का विश्वास है कि भविष्य में घर भी प्लास्टिक के बनने लगेंगे।

टोटका

—★—

—सीने में दर्द हो, रोगी बेचैन हो रहा हो तो मिट्टी के तेल से नरम हाथ द्वारा मालिश कर दें आराम होगा। आवश्यकता हो तो सैक भी दे दें।

ऐसा मीत मिले तो जानूँ ?

गुण का आदर करने वाले-

मुझ को जग में बहुत मिले हैं,

अवगुण पर भी जो अपनाएँ,

ऐसा मीत मिले तो जानूँ ।

अपने यश की गौरव-गाथा,

बहुतों से सुनता आया हूँ,

पर, अपयश में दृग भर लाए,

ऐसा मीत मिले तो जानूँ ।

मुझको दुनियाने आ-आ कर,

बल पर साधुवाद दे डाला ।

मेरी दुर्बलता दुलराए,

ऐसा मीत मिले तो जानूँ ।

अपनी-अपनी कहने वाले,

यहां रोज आते-जाते हैं ।

मेरी भी थोड़ी सुन पाए,

ऐसा मीत मिले तो जानूँ ।

अपने दृष्टिकोण से मुझ को-

सभी समझने का दम भरते,

मेरा मत समझे, समझाए-

ऐसा मीत मिले तो जानूँ ॥

—पालीवाल

—यदि हिचकियां बन्द न हों तो
एक गलास ठंडा या ताजा पानी लें और
एक २ घूंट पिएं, हिचकियां बन्द हो
जाएंगी ।

देखो पंछी के जीवन को !

देखो पंछी के जीवन को,

कितना सुन्दर, कितना अनुपम ।

देखो मानव के जीवन को,

सुख से ज्यादा जीवनमें गम ॥

—२—

कारण यह है मानव-जीवन,

आजादी से फूल रहा है ।

अधिकारों के मद में प्रतिपल,

सद्कामों को भूल रहा है ॥

—३—

इतना अन्तर है जीवन में,

पंछी और मानव के मन में ।

मानव सदा दुखित रहता है,

पंछी खुश रहता हर-क्षण में ॥

—तारादत्त 'निर्विरोध'

—यदि मसूढ़े फूल रहे हों, रतूबत के
कारण सख्त दर्द हो तो थोड़ा सा नौशादर
लेकर नीम कोफता करलें और रुई के एक
फाये में लपेट कर दर्द के स्थान पर फाया
रख दें, मुख टेढ़ा करके राल बहने दें,
पांच मिनट में गन्दा पानी बह जाएगा
और शांति आ जाएगी ।

—नींद कम आती हो या देर से आती
हो तो सोने से पूर्व पांच धो डालें, नींद
आ जाएगी ।

तिरंगा

[श्री रघुवीर शरण मित्र]

हमारे देशका झंडा तिरंगा फहरता जाए !

गगन तक लहरता जाए !

शहीदों की कहानी की निशानी

उड़ रही नभ में,

अनेकों देशभक्तों की जवानी

उड़ रही नभ में;

जगा दी ज्योति जन-जन में

लगा कर क्रांति के नारे ।

बचाता आग से जग को—

सुना कर शांति के नारे;

तिरंगा चक्र का झंडा—

कभी भुंकने नहीं पाए ।

गगन तक लहरता जाए ।

प्रेम का श्वेत रंग गा-गा

हृदय ऊंचा उठता है,

अग्नि का पीत रंग प्यारा—

कदम आगे बढ़ाता है;

हरे रंग में हरी खेती

खुशी के गीत गाती है—

अमर स्वाधीनता इस में—

अमर दीपक जलाती है;

कमल से देश का दीपक—

कभी बुझने नहीं पाए ।

गगन तक लहरता जाए ।

राखी

[कु० वीणा माथुर]

भैया ! बन्धवा लो यह राखी,

मेरे अमर प्रेम की साखी ।

इसको समझो मत तुम बन्धन,

इसको समझो मत तुम कंगन,

समझो इसे न तुम कोरा रेशम का तार ।

इसमें भरा बहनके उरका निश्छल प्यार ।

यह है अतुल शक्ति का सम्बल,

भक्ति-भाव का इसमें दृढ़ बल ।

यह अटूट शृंखला प्यारकी—दृढ़ पतवार,

आई जिसके हाथ उसे तब क्या संभवार !

अपने आगे करो कलाई,

बहन सजा कर इसको लाई ।

—★—

देश की शान है इसमें,

अमर उत्थान है इसमें,

हमारी आन है इस में,

हमारी बान है इसमें;

ध्वजा पर आंच आई तो,

सिरों पर आंच ले लेंगे—

ध्वजा की छांह में मिलजुल,

खुशी के खेल खेलेंगे;

हिमालय की शिखा का सिर

कभी भुंकने नहीं पाए ।

गगन तक फहरता जाए ।

कांच का आविष्कार कैसे हुआ ?

[न्यूयार्क में कांच की २८ मंजिला बिल्डिंग तैयार हो गई !]

रोमन इतिहासज्ञों के अनुसार ईसा से लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व फीनिशिया के मल्लाहों का एक दल तूफान के कारण भूमध्य सागर के किसी अज्ञात तट पर पहुँचा, तो उसे खाना पकाने की पतीली के नीचे रखने के लिए पत्थरों की आवश्यकता हुई। उनमें से एक मल्लाह ने यह सुझाव दिया कि पतीली को जहाज में पड़े सोड़े के टुकड़ों पर रख दिया जाए। उन्होंने वैसा ही किया और आग जलाने के बाद वे यह देख कर चकित रह गए कि चूल्हे से एक तरल पदार्थ बाहर निकल रहा है। ताप से रेत और सोडा आपस में मिल गए थे। यहीं से कांच तैयार करने की कहानी शुरू होती है। १०वीं शताब्दी में बाइजेन्टाइना के कारीगरों ने जब खिड़कियों में इस्तेमाल करने के लिए कांच तयार किया था, तो वे यह समझते थे कि उन्होंने कांच निर्माण के क्षेत्र में चोटी की प्रगति कर ली है, लेकिन उन्होंने इस सम्भावना की स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि एक दिन कांच से विशालकाय गगनचुम्बी अट्टालिका भी

खड़ी की जा सकेगी। महाभारत में अवश्य पाण्डवों के लिए निर्मित एक ऐसे विशाल राज प्रासादका विवरण मिलता है, जिसमें कांच का इस प्रकार प्रयोग किया गया था कि जल के स्थान पर स्थल का और स्थल के स्थान पर जल का भ्रम होता था। परन्तु अब इस का प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे समक्ष आ रहा है।

न्यूयार्क नगर में कांचके एक विशाल गगनचुम्बी भवन का निर्माण लगभग समाप्ति पर है। इस भवन के तैयार हो जाने से गृह-निर्माण उद्योगों में कांच के नवीन उपयोगों का मार्ग प्रशस्त हो गया है।

न्यूयार्क नगर की गगनचुम्बी भव्य इमारतों के मध्य कांच से निर्मित होने वाली इस २८ मंजिला इमारत की शोभा निराली ही लगती है। कंक्रीट और इस्पात-निर्मित भव्य गगनचुम्बी इमारतों के मध्य यह एक नवीन और अनूठी कृति प्रतीत होती है। जैसा कि इसके नाम से (शेष सफा २६ पर)

लोक कथा—

राजकुमारी 'वन चेंग' का स्वयम्बर

(गतांक से आगे)

अन्त में उसे एक बात सूझी। उसे याद आया कि जिस सराय में वह ठहरा है, उसकी मालकिन ने उसे बताया था कि एक बार वह राजकुमारी की दासी रह चुकी है। फिर उसी से क्यों न पूछा जाए—राजकुमारी देखने में कैसी है? सराय की मालकिन ने सुन रखा था कि तिब्बत के महाराज तरुण और सुन्दर हैं। गार के प्रसन्न व्यक्तित्व से भी वह बहुत प्रभावित थी। वह इस जोड़े के पक्ष में थी, इसलिए उसने राजकुमारी की तमाम विशेषताएं गार को काफी विस्तार के साथ बता दीं।

दरबार में जब वह लौटा, तो अन्य चारों दूत एक-एक तरुणी को राजकुमारी समझ कर चुन चुके थे। सौभाग्य से मालकिन ने जो बातें बतायी थीं, वे उनमें से किसी में भी न थीं। गार ने संतोष की सांस ली और वह असली राजकुमारी की तलाश करने लगा। एक-एक को सावधानी से देखता हुआ वह सातवीं तरुणी के पास पहुंचा। ग्रीष्म

की बदली या फूल की तरह उज्ज्वल उस की त्वचा में से गुलाब का सा रंग दमक रहा था। उसके ललाट पर एक लाल चिन्ह था जिस पर बुद्ध की मूर्ति बनी थी। शरीर से सुवास बह रही थी। निःसंदेह, उसमें मालकिन द्वारा बताई गई एक-एक बात मौजूद थी। गार ने सम्राट से कहा कि उसने राजकुमारी को पहचान लिया है।

गार के चातुर्य से सम्राट चकित रह गए। भला इस बात का इससे बढ़ कर और क्या सबूत हो सकता था कि गार के स्वामी, तिब्बत के महाराज, उससे भी चतुर होंगे? अपनी कन्या के लिए एक सुयोग्य वर ढूंढ कर वह प्रसन्नता और गर्व अनुभव करने लगे। उन्होंने शानदार दहेज की तैयारी की। बर्तन भांडे, दवाइयां, हान वंश की कविताएं, शास्त्रीय ग्रंथ और इतिहास की पुस्तकें, ३६० प्रकार की कला तथा ६० प्रकार के शिल्पों की उत्पादन-टेक्नीक पुस्तकें, एक आर्कस्ट्रा, साज, अनाज के बीज, रेशम के कीड़ों के ग्रंथ, बुद्ध-प्रतिमा तथा

नाना प्रकार के अन्य अमूल्य पदार्थ उन्होंने दहेज में दिए। सम्राट ने राजकुमारी के साथ बहुत से कारीगर और दस्तकार भी तिब्बत भेजे।

राजकुमारी वन चेंग के लहासा पहुंचने पर स्रोत-त्सान गाम्पो के साथ उनका बड़ी धूम-धाम से विवाह हुआ। वे सुखपूर्वक आजीवन साथ रहे और मिलजुल कर तिब्बत पर शासन करते रहे। राजकुमारी वन चेंग के साथ जो कारीगर और दस्तकार आए थे, उन्होंने तिब्बती जनता को पौधे रोपना, कातना बुनना, मकान बनाना, कागज और स्याही तैयार करना, शराब खींचना, चीनी के बर्तन बनाना, लोहे के व खेती के औजार ढालना तथा आटा पीसने और चक्की चलाने का हुनर सिखाया। धीरे-धीरे महाराज स्रोत-त्सान गाम्पो और उनकी बहुत सी प्रजा मोठे ऊनी कपड़ों और फर की जगह रेशम और साटन के कपड़े पहनने लगी।

अपनी रानी की इच्छा पूरी करने के लिए महाराज स्रोत-त्सान गाम्पो ने लहासा के बीचोंबीच जोखान मठ बनवाया। मठ को तैयार करते समय भीलें भरी गयीं, पहाड़ साफ़ किए गए और

एक भट्टे में ईंटें और खपड़े पकाये गए। काम में सहायता देने के लिए एक पवित्र बकरी प्रकट हुई। इस बकरी की प्रतिमा आज भी मठ की दीवार पर देखी जा सकती है। एक दिन वहां रानी निर्माण-कार्य का निरीक्षण करने के लिए आई। रानी को देख कर संगतराश मुग्ध रह गए। एक संगतराश तो उस परम सुन्दरी को अपलक निहारता रहा और बेसुधी में उसने पत्थर के एक शेर की नाक काट डाली। सब के सब शेर एक जैसे दीखें इसलिए मठ के तमाम शेरों की नाकें नहीं बनाई गयीं। यही कारण है जो आज तक जोखान मठ में बिना नाक के शेर बने हुए हैं।

जोखान मठ जब पूरी तरह तैयार हो गया, तो राजकुमारी वन चेंग ने उसमें चांग-आन से अपने साथ लाई हुई बुद्ध प्रतिमा प्रतिष्ठित कर दी और उसे एक पवित्र तीर्थ-स्थान बना दिया। वह मठ में यह देखने प्रायः जाती थीं कि चीनके भीतरी भाग में लोग किस प्रकार रहते और काम करते हैं।

राजकुमारी वन चेंग बौद्ध धर्म की अनन्य भक्त थीं। उनके प्रभाव से महाराज भी बौद्ध धर्म के समर्थक हो गए और तिब्बत में बौद्ध मत का खूब प्रसार हुआ।

(सफा २३ से आगे)

ही स्पष्ट है, यह अधिकांश कांच से बनी है। बाहर ही नहीं, बल्कि भीतर भी विभिन्न रूपों में कांच निर्मित रंग-बिरंगी अनेकानेक प्रकार की सामग्री सजावट और फर्नीचर इत्यादि के लिए प्रयुक्त की

हर वर्ष बहुत-से तिब्बती बुद्ध-प्रतिमा की पूजा के लिए जोखान मठ की यात्रा करते हैं, और मठ के सामने जो वेद वृक्ष है उसे शीश नवाते हैं। कहा जाता है कि इस वृक्ष को राजकुमारी वन चेंग ने अपने हाथों से लगाया था। इस वृक्ष के सम्बन्ध में एक और भी कथा प्रचलित है, जिसके अनुसार राजकुमारी वन चेंग की एक लट्ही बेद वृक्ष बन गयी है।

रानी इस बात को तीव्रता से अनुभव करती थी कि एक लिपि बिना, शिक्षा का प्रसार कठिन है। इसलिए उन्होंने महाराज को एक लिपि तैयार करवाने की सलाह दी। महाराज ने उनकी सलाह मान ली और तिब्बती लिपि तैयार की गई।

राजकुमारी वन चेंग ने दुष्कर्म करने वालों को दंड तथा सुकर्म करने वालों को पुरस्कार देने के कानून बनाने में भी सनोन-त्सान गाम्पो की सहायता ली।

गई है।

इमारत के ३५९ फुट ऊंचे टावर की बाहरी दीवार हरे रंग के ताप जज्ब करने वाले कांच को अल्यूमीनियम के फ्रेम में जड़ कर तैयार की गई है। टावर के नीचे के हिस्से में एक पार्क का दृश्य अंकित है। नीचे काले ग्रंफाइट की टाइलों से घिरा एक तालाब है। इसके तल में काले रंग के कांच की टाइलें फिट हैं, जिन से जल प्रतिबिम्बित होता है।

इमारत के अन्दरूनी भाग में भी निर्माण कार्य, सजावट और फर्नीचर के लिए कांच का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया है। भवन के स्वागत-कक्ष को देखने से ही इसका भली प्रकार आभास मिल जाता है। दूसरी मंजिल में दीवारें, छत, मेज इत्यादि सभी वस्तुएं कांच की हैं। यद्यपि इमारत के निर्माण में मुख्यतः कांच का ही उपयोग किया गया है, परन्तु इस के साथ ही उसमें लकड़ी, धातु इत्यादि का यथास्थान और आवश्यकतानुसार प्रयोग हुआ है।

इस भवन में दुकानों, दफ्तरों और रिहायशी कमरों—इन सभी की व्यवस्था की गई है। रिहायशी भाग में किराया-दारों को आना शुरू हो गया है। इस

रिहायशी भाग में ३ हजार वर्ग फुट क्षेत्र में एक विश्रान्ति-कक्ष है, जिसमें संगमरमर की दीवारों पर चारों ओर बड़े बड़े शीशे फिट हैं। इस कक्ष की छत काले कांच की है। कमरों में कांच के टाइलों के अन्दर ही अन्दर प्रकाश की इस प्रकार व्यवस्था की गई है कि कमरे में आने वाले प्रकाश का रंग बदलता रहता है। कक्ष की छत संगमरमर के १० खम्भों पर स्थित है। कक्ष की पूर्वी दीवार पर कलाकार जोसेफ एल्वर्स द्वारा तैयार किया गया एक भित्ति चित्र अंकित है।

खिड़कियों के स्थान पर फाइबर ग्लास के पर्दे प्रयुक्त किए हैं। इन पर्दों से चकाचौंध नहीं होने पाती, तापमान कम रहता है और इसके साथ ही इमारत के अन्दर रहने वाले व्यक्ति बाहर की दृश्यावली का सहज ही अवलोकन कर सकते हैं। दफ्तर-कक्षों की छतें भी 'फाइबर ग्लास' की हैं। टाइलों को छूती हुई प्लास्टिक की पतली सी आकर्षक फिल्म छत को घेरे हुए है, ताकि कमरे में आवाज न गूँजे।

इसके अलावा दीवारों, नालियों पाइपों और छतों में भी जगह-जगह कांच का उपयोग किया गया है। इमारत के

कमरों में फिट दरवाजों के हैण्डल भी कांच के हैं और कक्षों में पर्दों भी दूधिया रंग के सफेद अपारदर्शी कांच से ही बने हैं। बाहरी दीवारों में हर ६ फुट के बाद बाहर के दृश्यों को देखने के लिए पारदर्शी कांच लगे हैं।

नीचे की मंजिल पर स्थित 'स्ट्यूवेन शोप' में हाथ से बनी कांच की सामग्री अत्यन्त आकर्षक और सुन्दर ढंग से प्रदर्शित की गई है। दूकान की काले रंग की दीवारें और हल्की रोशनी एक शान्तिपूर्ण वातावरण प्रस्तुत करती हैं। लेकिन अल्मारियों में रखी कांच की वस्तुओं पर इतना तेज प्रकाश पड़ता है कि वस्तुएं चमकती सी प्रतीत होती हैं। दीवारों पर सुनहरे रंग से सजावट का काम भी है और आदम कद शीशे भी लगे हैं। दूकान के गोलाकार मध्य भाग में स्ट्यूवेन कम्पनी द्वारा निर्मित कांच का ७ फुट ऊंचा फव्वारा दिखाई देता है।

नीचे की मंजिल पर कांच की सामग्री बेचने वालों एक अन्य दूकान भी स्थित है। इस दूकान में कांच-निर्मित पर्दों इत्यादि को ५ हजार विभिन्न किस्में प्रदर्शित की गई हैं।

—★—(यू.एस.आई.एस)

स्वामी रामतीर्थ की जीवनी से

शिष्यार्थी सुख छोड़ दें !

[श्री रमेशकुमार जी, देहली]

आज से लगभग मत्तर वर्ष पहले की बात है कि लाहौर कालेज में एक विद्यार्थी था, नाम था—तीर्थराम। विद्यार्थी-जीवन में कुछ काल के लिए वह तीन पैसे व्यय कर वहां पढ़ता रहा। तीन पैसे और कालेज का विद्यार्थी ! जी हां, प्रातः पास की एक दुकान में दो पैसे देकर एक रोटी और दाल लेकर खानी और ठंडा पानी पी डट जाना पढ़ाई पर। सहपाठियों के व्यंग भी सुनने पड़ते—“अरे इस किताबी कीड़े को देखो, अठारह घण्टे से कम नहीं पढ़ता, अरे मान भी, सच कभी कभी सारी रात गुजार देता है।” सायं फिर दुकान पर जा एक पैसा दुकानदार के सामने धर देना। वह एक रोटी और साथ में दाल मुफ्त देता। पर यह भी चलता रहता तो बात भी थी। निर्धनता ने तो और भी उपहास करना था। एक दिन दुकानदार ने सुना ही तो दिया “नहीं जी, मैं एक पैसे की रोटी के साथ दाल नहीं देता। सवेरे की तरह दो पैसे ही दिया करें तो फिर दाल मिलेगी।” यह परा-

काष्ठा थी। पर क्या उसने पढ़ाई छोड़ दी ? पढ़ाई तो उसने नहीं छोड़ी—हां सायंकालीन रोटी खानी छोड़ दी। वह दो पैसे मांगता था कहां से देता ? यह तो हुई खाने की बात। पहनने के लिए उसके पास एक ही जोड़ा था खदर की कमीज और पाजामा, रात को धोता और सवेरे पहन लेता।

अभी एक चित्र और भी है दिखाने को—एक दिन शाम को किसी काम से बाजार जाना था, चल पड़ा। भीड़ काफी थी। चहल पहल, चमक दमक, विलास और शृंगार बिखरा पड़ा था चारों ओर, पर वह तो मस्त था; तपस्वी। सहसा अंधेरे में एक स्थान पर पैर से चप्पल निकल गई, मोटर आ रही थी जरा हट गये, फिर बड़ा ही ठूँठा पर चप्पल नहीं मिली, शायद नाली में गिर गई होगी। उसी एक चप्पल के साथ लौट आया। रात तो बीत गई पर अब जाना है कालेज। कोई बात नहीं, इधर-उधर देखने से एक जनानी जूती मिल गई। काम चल गया, और वह चल पड़ा कालेज की ओर। पर क्या मन में खेद था ? आत्महीनता की भावना थी ? नहीं, मुख पर शाश्वत रहने वाली मुस्कान थी।

वीर और बलवान् बनो

[श्री जोरावरसिंह जी, बरसाना]

भारत को उच्च बनाना है,
तो वीर और बलवान् बनो ।

जो जग में नाम कमाना है,

तो वीर और बलवान् बनो ॥

निज देश-धर्म-हित धन तो क्या,

निज जान तलक कुर्बान करो ।

बन धर्म-वीर, बन देश-भक्त,

निज देश-धर्म के प्राण बनो ॥

तुम सन्मुख देख विरोधो को,

कायर न बनो पीछे न हटो ।

आगे ही बढ़ते हुए सदा ।

जीतो अथवा बलिदान बनो ॥

प्रिय मातृ-भूमि की रक्षा हित,

जिस समय पुकार तुम्हारी हो ।

तो तुरन्त मोर्चे पर जाकर ।

नेताओं का अभिमान बनो ॥

मच जाए उथल-पुथल हलचल

गूँजे धरती आकाश सकल ।

पीड़ित जनता के स्वर में स्वर,

भर महाक्रांति के गान बनो ॥

ऊँचे चरित्र के लोग सदा,

देशों को उच्च बनाते हैं ।

बन करके वीर चरित्रवान् ।

तुम भारत का उत्थान बनो ॥

मृत्योर्मा अमृतं गमय

जो कुछ मृत हो चुका है, उसे अपनी
आत्मा का भोजन नहीं बनाना चाहिए,
क्योंकि जो मृत है वह मारक है—मृत्यु को
लाने वाला है । मृत्योर्मा अमृतं गमय...तब
तक स्वच्छ प्रकाश के राज्य में प्रवेश नहीं
कर सकते जब तक कि हमने अपना तमाम
ऋण न चुका दिया हो और मरे हुए भूत-
काल में हमारे जो बन्धन हैं वे न टूट गए
हों । अपने पुराने व्यक्तित्व से विदाई लेना
अत्यन्त ही कठिन है । जब तक विदाई का
क्षण नहीं आता तब तक इस बात का हमें
पता नहीं लगता कि हमारे पुराने व्य-
क्तित्व ने अपनी जड़ें कितनी दूरी तक
जमा ली थीं और जीवन के रस चूसने के
लिए उसके प्यासे नशे कितनी गहराई तक
चले गए थे । हमारे जीवन की अवधि
थोड़ी है ।

टैगोर

कितने ही प्रबल विरोध जिन्हें,

आसन से नहीं डिगा पावें ।

तुम दयानन्द गांधी सुभाष से ।

मानव और महान् बनो ॥

जो रुकें नहीं जो झुकें नहीं,

जो थकें नहीं जो डरें नहीं ।

बनना है तो ऐ नवयुवको ।

तुत ऐसे वीर जवान बनो ॥

युवकों के नाम खुला पत्र—

श्री गंगाधर मंडलोई

ऐसे बनाओ कि हम को तुम पर नाज़ हो

[जून अंक से आगे]

अब तुम्हारे इस आकर्षण में वैचित्र्य एवं सम्मान का अद्भुत सम्मिश्रण है। यह आवश्यक नहीं कि ये तीनों अवस्थाएं एक के बाद एक, क्रम से, तुम्हारे जीवन में आएँ। ये तीनों एक साथ भी उपस्थिति रह सकती हैं। यौन प्रवृत्ति सैक्स इन्स्टिक्ट तुम्हारी किशोरावस्था का एक महान् सत्य है। यौन प्रवृत्ति के कारण ही इस अवस्था में, अच्छे या बुरे चरित्र की नींव डाल सकते हो। जल से परिपूर्ण नदी के समान यौन प्रवृत्ति तुम्हारे जीवन की भूमि को सींचती और उपजाऊ बनाती है। यह तो उस बाढ़ आई नदी के समान है जिसके जल को बांध बांध कर, नहरों के द्वारा उपयोग में लाया जा सकता है। अन्यथा इस बाढ़ में तुम्हारी जीवन-वाटिका के आशाओं के कुसुम बह जाएंगे—तहस-नहस हो जाएंगे।

तो मेरे भाई! बांध बांधो, यौन प्रवृत्ति के जल से, सर्जनात्मक कार्य-रूपी नहरों के द्वारा अपने जीवन-उद्यान को सींचो—तुम्हारी जीवन-आशाओं के कुसुम

लहलहा उठेंगे। तुम देशोद्यान के गुलाब और नरगिस बन जाओ।

अब स्कूलों में कई गतिविधियां बढ़ गई हैं। खेल-कूद, नाटक, प्रतियोगिताएं, भ्रमण इत्यादि कार्यक्रमों को उन का उचित स्थान प्राप्त होने लगा है। अपने आप को इन कार्यक्रमों में डुबो दो। खेलो और खूब खेलो—इतना खेलो कि थक कर चूर हो जाओ। ये सब कार्य ऐसे बांध हैं कि तुम्हारी यौन प्रवृत्तियों को नया मोड़ दे देंगे और तुम्हें ऐसा युवक बना देंगे जिस का कि हम सपना देख रहे हैं—देश का एक चरित्रवान् कर्णधार!

अब तुम अपने बचपन को पोछे छोड़ रहे हो और आने वाले यौवन की राह जोह रहे हो। ऐसी स्थिति में तुम अपने-आप को एक नई दुनिया में—इसीलिए तो तुम्हारा 'स्व' (सेल्फ) तुम्हें सपनों की सुनहली दुनिया में ले जाता है। किसी से आंख मिलाते ही आंख चुराने लगते हो। और हां, तुम्हारी बहनों के गालों पर तो अब लाली दौड़ जाती है। तुम अब भाव-नाओं के सामान्य में रहने लगे हो। कभी

अत्यधिक आनन्दित और उत्तेजित हो जाते हो, तो कभी तुम्हारा जी ऊबने लगता है। यह संसार तुम्हें एक अजीब गोरखधंधा लगता है, इसलिए तो तुम सपनों की उस दुनिया में खो जाना चाहते हो, जो तुम्हारी आशाओं और इच्छाओं से मेल खाती हो। तुम यथार्थ की दुनिया से दूर चले जाना चाहते हो, जहां तुम्हें अपना आदर्श प्राप्त हो सके।

मुझे डर है कि कहीं तुम अंतर्मुखी (इंट्रोवर्ट) न हो जाओ। यह एक ऐसी प्रवृत्ति है, जो व्यक्ति को समाज से दूर ले जाती है। व्यक्ति अपने मन में ही अपनी दुनिया बना लेता है। ऐसी ही प्रवृत्ति वाले व्यक्ति कूप-मण्डूक बन जाते हैं। एक बात कहूं—तुम शीघ्रातिशीघ्र स्काउट-दल ए. सी. सी. या एन. सी. सी. में शामिल हो जाओ। शीघ्र ही तुम इस हीन प्रवृत्ति से छुटकारा पा जाओगे।

तो मैंने कहा, तुम किसी आदर्श की खोज में हो—ऐसे आदर्श केन्द्र की, जहां तुम अपनी आस्था केन्द्रित कर सको। साहित्य और इतिहास के पृष्ठ पलटते हो ऐसे व्यक्ति की खोज में, जो तुम्हारा 'हीरो' (आदर्श) बन सके। माना मैंने, जैसे-जैसे तुम्हारी अवस्था बढ़ती जाती है यह 'हीरो' खोजने की प्रवृत्ति कम होती

जाती है, किंतु यह पूर्णतः लुप्त नहीं होगी बाल्यावस्था में माता-पिता तुम्हारे लिए ऐसे ही 'हीरो' थे। आज तुम साहित्य और इतिहास में ऐसे 'हीरो' को खोजते हो। तुम्हें अपने शिक्षक में ही उस व्यक्ति के दर्शन होते हैं या फिर तुम वर्तमान के किसी नेता को ही अपना 'हीरो' मान लेते हो। किन्तु एक बात जिसका तुम्हें भान नहीं, उस ओर मैं तुम्हारा ध्यान आकर्षित करूंगा—मेरे किशोर, किसी व्यक्ति विशेष में अपनी आस्था न बढ़ाओ। उसके सद्गुणों के प्रति अपने जीवन में आस्था बढ़ाओ। यह सत्य है, प्रगति के लिए मन की प्रवृत्तियों का कहीं-न-कहीं केन्द्रित होना आवश्यक है। विशृंखल प्रवृत्तियां तुम्हें ले डूबेंगी—जीवन का मार्ग अवरुद्ध कर देंगी इसीलिए तो हमारे ऋषि-मुनियों ने धर्म का सहारा लेकर राम एवं कृष्ण में हमारी आस्था को केन्द्रित करने का प्रयत्न किया है, हम इन दो महापुरुषों में उन आदर्शों को पाते हैं, जिनके अनुरूप हम आचरण करना चाहते हैं। अन्य महापुरुषों की जीवनियों में भी तुम पढ़ोगे कि किशोरावस्था तथा उसके बाद भी उनके अपने हीरो थे, जिनके अनुरूप वह अपने आपको ढालने का प्रयत्न करते रहे। महात्मा गांधी के 'हीरो' राम और हरिश्चन्द्र थे।

मनुष्य ने सातवें समुद्र का निर्माण कर लिया !

अमेरिका और कनाडा वर्षोंसे आठवें समुद्र के निर्माण करने का जो स्वप्न देख रहे थे, वह एक नए जल-मार्ग के बन जाने से पूरा हो गया है। यदि हम इसे अमेरिका का चौथा समुद्री तट कहें, तो अत्युक्ति न होगी।

इस जलमार्ग के निर्माण का कार्य अमेरिका और कनाडा ने मिल कर ५ वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया था। इस में सेंट लारेंस नदी के ऊपरी भाग की ओर ६० करोड़ डालर की लागतसे एक पन-बिजली घर खड़ा करने का कार्य भी शामिल था।

कनाडा और अमेरिका की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं पर दोनों ओर दो बिजली घरों का निर्माण किया गया। ये बिजली घर इस वर्ष के अन्त तक बन कर तैयार हो जाएंगे। प्रत्येक बिजलीघर में १६ जेनरेटर होंगे और ये कुल मिला कर ९ लाख ७० हजार किलोवाट बिजली उत्पन्न कर सकेंगे। इस प्रकार दोनों बिजली घरों की कुल विद्युत-शक्ति उत्पादन-क्षमता १८ लाख ८० हजार किलोवाट तक पहुँच जाएगी। इस प्रकार 'मैरोज सैण्डरी' नामक यह बिजली घर उत्तरी

अमेरिका का दूसरा सब से बड़ा बिजली घर बन जाएगा।

जल-मार्ग के निर्माण पर कुल मिला कर ४७ करोड़ १० लाख डालर खर्च हुए हैं। बिजलीघरों और जलमार्ग को मिला कर इस योजना पर कुल १ अरब डालर खर्च हुए हैं। इस जल-मार्ग से जो आय होगी, उसका ७१ प्रतिशत भाग कनाडा को और २९ प्रतिशत भाग अमेरिका को मिलेगा। अधिकारियों को यह आशा है कि ५० वर्षों के अन्दर दोनों सरकारों द्वारा जलमार्ग के निर्माण के लिए दिया गया ऋण चुकता हो जाएगा।

अमेरिकी सरकार लेक ईरी और तीन अन्य झीलों को मिलाने वाले छोटे जल-मार्गों को २७ फुट तक गहरा करने पर १४ करोड़ ६० लाख डालर खर्च करने की योजना तैयार कर रही है।

इस आठवें मानव-निर्मित समुद्र का तट कुल मिला कर ८,३०० मील लम्बा है। इस प्रकार इसकी लम्बाई अमेरिका के अतलांतक महासागर तट से भी अधिक है। इस जल-मार्ग पर अतलांतक महासागर से सब से अधिक दूरी पर स्थित

हम भारतीय छात्रों को मित्र बनाना चाहते हैं !

[मास्को से रूसी छात्रों का आप के नाम पत्र !]

प्यारे दोस्तो ! अभी हाल में हम लोग सोवियत संघ की यात्रा करने वाले भारतीय अध्यापकों से मिले थे ।

एक कालेज के प्रिंसिपल श्री गोपाटी ने हमें भारत के स्कूली बच्चों के बारे में बहुत सी जानकारी दी । पर हमारी इच्छा है कि इस बारे में हम आप लोगों से और ज्यादा जानकारी प्राप्त करें । हम आपसे पत्र-व्यवहार और अपने अपने स्कूली जीवन के बारे में समाचारों का आदान-प्रदान करना चाहते हैं ।

इन दिनों हम लोग छुट्टियां बिता रहे हैं । हम को पहली सितंबर तक छुट्टियां हैं हमारी छुट्टियां बहुत आनन्ददायी होती हैं, बन्दरगाह की दूरी सीधे मार्ग से २,३४२ मील है ।

विशेषज्ञों का यह भी कथन है कि अब तक इस जलमार्ग पर बड़े जहाजों से छोटे जहाजों पर तथा छोटे जहाजों से बड़े जहाजों पर जो अतिरिक्त खर्चा बँठता था, उसकी बचत हो जाएगी और इस अदला-बदली में वस्तुओं को जो नुकसान पहुँचता था, उसकी भी अब कोई सम्भावना न रहेगी ।

सभी बच्चे आम तौर पर शहर से बाहर चले जाते हैं । कुछ तरुण पायनीयर शि-विरो को जाते हैं । तो दूसरे देहाती भवनों तथा अरोग्य-गृहों में जाकर छुट्टियां बिताते हैं । हम आठवों कक्षा के छात्र मास्को से ७४ किलोमीटर दूर वन में स्थित एक पर्यटन शिविर में पहुँचे । हम लोग अपने साथ खेलकूद के साधन, भोले तम्बू और दूसरी बहुत सी सम्बन्धित वस्तुएं ले गए थे । कुछ छात्र सैर करते-करते उन जगहों में पहुँचे जहां हमारे राज्यके संस्थापक व्लादीमीर लेनिन पैदा हुए थे, जहां वह रहे और जहां उन्होंने काम किया था ।

हम यह जानना चाहते हैं कि आप लोग अपनी छुट्टियां कैसे बिताते हैं ? आप गर्मियों में क्या करते हैं ? कहां जाते हैं ?

कृपया हमें उत्तर अवश्य भेजें । हमें आप लोगों की चिट्ठियां मिलने से और उनका जवाब देनेसे प्रसन्नता होगी । हम हैं :

१. आन्या मोलिवेर, २. इरा जेरे-बत्सोवा, ३. ल्युदा ग्याज्जोवा, ४. तान्या स्मिनावा, ५. विक्टर जुरिन । माध्यमिक स्कूल नं० ३४५, मास्को ई. ६६ ।

★ आज़ादी ★

—महावीर प्रसाद अग्रवाल

मैं ज़िंघर देखता आज़ादी ।

जल में, थल में, नभ में सबमें,

सब ओर शोर आज़ादी है ।

घर में, दर में बाहर-भीतर,

सब ओर-छोर आज़ादी है ।

आज़ादी नर में नारी में,

बालक में वृद्ध-जवानों में ।

आज़ादी आई नगर-डगर,

आज़ादी कुटी मकानों में ।

मैं उधर देखता आज़ादी,

हां इधर देखता आज़ादी ॥

भारत में आई आज़ादी,

अंग्रेज़ देश तज चले गए ।

नेताओं में है आज़ादी,

अंग्रेज़ी हित वे मचल रहे ।

हड़ताल करें धरना धर दें,

चाहे आंदोलन खड़ा करें ।

मजदूरों की आज़ादी है,

वह काम करें या पड़ा रहे ।

सब की-अपनी है आज़ादी,

सब की अपनी है मनमानी ॥

घर में लड़के की आज़ादी,

तज घर चाहे जब भग जाये ।

घर में लड़की की आज़ादी,

वह रोज़ सिनेमा ही आये ।

घर में वर वधू की आज़ादी,

आवादी नित बढ़ती जाये ।

धरती की भी है आज़ादी,

जब चाहे अन्न को उपजाये ।

ऐसे ही ढंग हुआ करते जब,

जन में आज़ादी आती ॥

मोटर विमान या वाष्पयान,

इन की पूरी है आज़ादी ।

जब मन में आई टकराई,

या उलट गई जब मन भाई ।

बिजली जाए वर्षा आये,

सरदी चाहे जब ठिठुराती ।

सब ऋतुओं की आज़ादी है,

जब चाहे तब आती जाती ।

जीवन में आज़ादी आई,

नदियों में बाढ़ें हैं आती ॥

अपराध आज आज़ाद हुए,

वे खुले आम जग पर छाये ।

हिंसा रिश्वत या अनाचार,

आज़ादी में ये भी आये ।

वक्ता स्वतन्त्र श्रोता स्वतन्त्र,

सब ही स्वतन्त्र हैं कहलाये ।

लेखक स्वतन्त्र वाचक स्वतंत्र,

लिख ले पढ़ ले जो मन भाये ।

यों सम्पादक की आज़ादी ।

रचना छपवादी-फिकवादी ॥

चुटकुले

★ मालिकन—तुम्हें कैसे पता चलता है कि प्रेस गर्म हो गई है ?

नौकर—जब कपड़े का रंग भूरा होने लगता है तो उससे पता चल जाता है ।

★ कालेज की छात्रा—पिता जी मुझे पांच रुपए दीजिए मैं आप के लिए जन्म दिन का उपहार खरीदना चाहती हूँ ।

पिता—महीने की आखिरी तारीख को पड़ने वाले जन्मदिन के उपहार के लिए पांच रुपए खर्च करने से नोट का उस दिन जेब में रहना ज्यादा खुशी देगा उषा !

★ मैनेजर—आज ज़रा जल्दी घर लौटना है क्योंकि घर पर नौकर की रजत जयन्ती मनानी है ।

मालिक—क्या नौकर को आप के पास रहते २५ वर्ष हो गए ?

मैनेजर—जी नहीं, इस वर्ष में आज यह २५वां नौकर रखसत हो रहा है ।

★ रीता—मैंने रात पहली बार घर पर भोजन बनाया और खूब सफल रही ।

नीता—खूब बढ़िया ! अच्छा कैसा रहा ?

रीता—मेरे पति ने फौरन ही एक बावर्ची लाने का निर्णय सुना दिया ।

★ तीन वर्षीय बालक ने अपने पिता से पूछा—जब आप छोटे थे तो आप क्या थे—लड़की या लड़का ?

★ उसी बालक ने मां से पूछा—आड़ू के फल में गुठली क्यों होती है आखिर हम उसे फेंक ही तो देते हैं ।

★ उसके ८ वर्षीय बड़े भाई ने दादा से पूछा क्या गर्मियों में भी शीत युद्ध (कोल्ड वार) हुआ करता है ?

दादा—जब मैं छोटा था तब नहीं होता था मगर अब होने लगा है ।

★ पुत्र—पिता जी अब हम मालदार हो जाएंगे ।

पिता—वह कैसे बेटा ?

पुत्र—क्योंकि आज हमारे मास्टर जी ने हमें इकन्नियों से रुपए बनाने का तरीका सिखा दिया है ।

★ टीचर—बड़ों का कहना है कि कोई बात सीखने समझने के लिए उसकी तह तक पहुंचना चाहिए ।

एक विद्यार्थी—क्या तैरना भी

मास्टर जी ?

लोहेका आदमी तैयार होगया !

न्यूयार्क की जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी ने एक 'रोबट' का निर्माण किया है जो अपनी विशाल भुजाओं और हाथों से अपने काम उतनी ही सफाई के साथ कर सकता है जितनी सफाई से मनुष्य। उस कम्पनी के इंजीनियरों ने उसका नाम 'हैण्डी मैन' रखा है। इसका निर्माण इस उद्देश्य से किया गया है कि यह प्रयोग की दृष्टि से बनाये जाने वाले अणुशक्ति-चालित विमानों के इंजनों के कुशल इंजीनियर के रूप में काम कर सके। यह रेडियो-सक्रिय क्षेत्र में काम करता है। जिस समय यह काम पर होता है, इसकी गतिविधियों को, इससे कुछ दूरी पर बैठा एक मानव चालक नियंत्रित करता है। इस प्रकार के अन्य रोबटों तथा 'हैण्डी मैन' में मुख्य अन्तर यह है कि यह अपने इस्पाती हाथों में वस्तुओं को पकड़ सकता है। यह किसी वस्तु के पकड़ने में मनुष्य के हाथोंकी क्रियाकी बड़ी सफाईसे नकल कर सकता है। यह क्रिया सम्पन्न करने के लिए इसकी प्रत्येक भुजा में एक अंगूठा और एक तर्जनी उंगली बनी होती है। प्रत्येक भुजा और हाथ कुल १० प्रकार की गतियां कर सकता है।

गृह-विज्ञान

—अदरक टुकड़ा दाढ़ के नीचे रखने से दर्द जाता रहता है।

—इसका रस गर्म करके कान में डालने से कान का दर्द जाता रहता है।

'रोबट' अपने मानव-चालक के हाथों की गतियों की नकल करता है। इसकी भुजाएं और दाहें एक पेचीदा विद्युदणु प्रणाली द्वारा नियंत्रित होती हैं।

चालक 'रोबट' की उंगलियों और अंगूठों को झुका सकता है या उन्हें मोड़ सकता है। इसकी कलाईयां और कुहनियां झुक सकती हैं, ऊपर और नीचेकी भुजाएं मुड़ सकती हैं और कंधे के जोड़ों में आगे की ओर और बगल में घूमने वाली धुरियां हैं। इतने विविध प्रकारकी गतियां करने में समर्थ होने के कारण यह 'रोबट' किसी पटरे में लोहे की कीलियां ठोक सकता है किसी पेच को खोल सकता है और वृत्ताकार हुला-हूप को चारों ओर घुमा सकता है। इसके हाथ की गतियों को इतना बारीकी से नियन्त्रित किया जा सकता है कि यह किसी फूल को भी तोड़ सकता है।

नारी के दो रूप

(१)

दो व्यक्तियों में नारी को लेकर विवाद चल रहा था। प्रश्न था, नारी का कौन रूप श्रेष्ठतर है, माता-रूप या पत्नी-रूप ?

इसी प्रसंग में एक ने कहा—“निश्चय ही स्त्री का माता-रूप श्रेष्ठ है। स्त्री का पत्नी रूप मनमें वासना उत्पन्न करता है और माता-रूप श्रद्धा, वात्सल्य, ममत्व की भावना।”

तभी पास से कोई बोल उठा—“मूर्ख! यह क्यों भूल जाता है कि पत्नी के वासना-जनक रूपसे गुजर कर ही नारी माता का गौरवयुक्त पद प्राप्त करती है।”

दोनों मूक हो गए। समाधान हो चुका था।

(२)

चर्चा चल रही थी थी। पुरुष पर किस का अधिकार अधिक है, माता अथवा पत्नी का ? एक व्यक्ति माता के त्याग का वर्णन कर उसका अधिकार सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा था।

“माता पुरुष की जननी है, उसके शरीर का वह एक भाग है। कितने त्याग कर, कितने कष्ट उठा कर पालती है अपने पुत्र को ! निश्चय ही उसका अधिकार

बूझिए तो ?

(१) जाली जल गई जला न कोई धागा
घर का मालिक फंस गया घर
खिड़की से भागा।

(२) दो उगल का पेड़ बहुत बड़ा पत्ता
फल लगे अलग २ पकें इकट्ठा।

(३) नौ सौ बढ़ई दस सौ लुहार
तब भी न कटे अलवेले की धार।

(४) एक चीज सब चीज में पड़े।

(५) एक सूअर के नौ सौ अण्डे
चल गया सूअर पिचल गया अण्डे

(६) टीले ऊपर धर चुगाये
मेवा मिश्री खाये।

कसम तेरे उस्ताद की
जो बिन बताए जाये।

अधिक है।”

पीछे से किसी ज्ञानी ने टोका—“लेकिन वत्स ! एक और पहलू भी देखो। माता पुत्र को जन्म देती है, पुत्र उसके शरीर से निकल कर पृथक् होता है और निरन्तर वह पृथक्त्व बढ़ता जाता है; परन्तु पत्नी आरम्भ में पृथक् होती है, बाद में निकट आती है तो आते-ही आते पतिमें समा कर एकाकार हो जाती है।” इतना कह ज्ञानी अपनी राह पर बढ़ गए।

—अजितकुमार ऋषि ‘सरल’

111513

३८

आप नहीं जानते

—कि वैज्ञानिकों के मतानुसार २५ हजार मील प्रति घण्टा की गति से उड़ने वाला अन्तरिक्ष यान १० घण्टे में चन्द्रमा ५८ दिन में मंगल ग्रह तथा ४३ दिन में शुक्र-ग्रह की यात्रा पूरी कर लेगा ।

—कि कल तक कारखानों में जलने वाले कोयले का धुआं आकाश में चला★

चम्बल के रोगियों को सूचना

मेरे पास पुराने चम्बल रोग की एक अचूक दवा है जिसे ७ साल से इस भयंकर रोग से पीड़ित अपने पूज्य पिता पर सफलतापूर्वक आजमा कर अब अन्य रोगियों को लाभ पहुंचाने का निश्चय किया है । मेरे पिता जी ने ७ वर्ष तक कई तरह की देसी और अंग्रेजी दवाइयां इस्तेमाल कीं मगर रोग जड़ से न गया इस दवा से जिसका नाम 'चम्बलीन' रखा गया है, यह रोग जड़ से चला गया है और ५ वर्ष हो चुके हैं उन्हें पुनः चम्बल की शिकायत नहीं हुई । जो रोगी इस दवा से लाभ उठाना चाहें वे निम्न पते पर दवा प्राप्त कर सकते हैं : सम्पादक 'प्रकाश' १३७ चहार बाग-जालंधर शहर।

कह गए कहने वाले

—बार बार असफलता से खिन्नता हो जाती है और उस खिन्नता से ऊब कर असफल व्यक्ति प्रयास करना बन्द कर देता है फिर भी अवशिष्ट आशा का अस्तित्व उसके भीतर रहता है । वह आशा जो बिना प्रयास के कुछ चाहती है । उसे ही भाग्य कह दिया जाता है ।

—दुःख गणित का वह अंक है जिसे दूसरे दुःख अंक के साथ जोड़ने तथा गुना करने से उत्तर आता है सुख और आनन्द ।

—आत्म समर्पण का अर्थ बहुत स्पष्ट और सरल है—स्वयं का समर्पण । फिर जब नारी यह समर्पण करती है तब पुरुष उसके स्वयं के साथ २ बसने वाले गुणों—कहना और नम्रता को समर्पण के रूप में ग्रहण कर अपने में आत्म सात क्यों नहीं कर लेता ? —सुधि

★जाता था किंतु अब इस धुएं को रोक कर उससे कीटाणु नाशक बहुत सी वस्तुएं तैयार की जा रही हैं ।

—कि अदरक के रस में पुराना गुड़ खाने से शरीर की सूजन चली जाती है ।

—कि अदरक का रस, तिल्लीका तेल एक साथ पका कर उस तेल की मालिश करने से गांठियां ठीक हो जात हैं ।

शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त

पंजाब:—डी. पी. आई. नं. २६३९ सी.

तिथि—१०.२.५०

उत्तरप्रदेश:—डायरेक्टर आव एजुकेशन

सं. बी. ४०८/१०/८ (७०३) ५०-५१

—तिथि—६-७-५०

हिमाचल:—डिप्टी डायरेक्टर आव एजुकेशन

नं. ई २९-३/३१०० तिथि—१६-६-५१

पैम्सु:—नं. एड: ई. (५०) ५२/२२६०७

तिथि—२९-७-५२

बिहार:—सुपरिटेण्डेंट आव लाइब्ररीज

नं. ७३४०/२ पी-१५३ ति. २७-११-५३

हैदराबाद:—डी. पी. आई. नं. १७/१२९/१८

१९५२ तिथि ३-१-५३

भूपाल: (मध्यप्रदेश) सीनियर इंस्पेक्टर आव

स्कूलज नं. १२१९५/१२२०२-१८

एकेड (५२) ८/५२ तिथि ११-४-५२

विज्ञापन के दर

‘प्रकाश’ में विज्ञापन छपवाने के लिए निम्न दर हैं:—

बार १ पृष्ठ आधा पृष्ठ चौथाई पृष्ठ

एक बार ३० रु. १७ रु. १० रु.

३ बार ८० रु. ४५ रु. २६ रु.

६ बार १५० रु. ८० रु. ५० रु.

१ वर्ष २५० रु. १७५ रु. ९० रु.

‘प्रकाश’ ग्राहक सारे भारत, ब्रह्मा, फिजी इंग्लैंड और अमेरिका में भी मौजूद हैं।

[‘प्रकाश’ में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं]

मैनेजर:—

‘प्रकाश’ चहारबाग जालन्धर

कुछ सम्मतियां

(क) ‘प्रकाश’ का मई का अंक मिला।

मैं ने उसे ध्यान से पढ़ा। उस में आप ने शिक्षा सम्बन्धी उपयोगी सामग्री जटाने और उसे सार-गर्भित रूप में थोड़े ही पृष्ठों में उपस्थित करने में जो परिश्रम किया है, वह सराहनीय है। इस प्रकार ‘प्रकाश’ के छोटे क्लेवर में एक बड़ी ज्ञान राशि भर देने से, आशा है विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा —सन्तराम बी.ए. पुरानी बसी-

(ख) मैंने ‘प्रकाश’ को पढ़ा है और स्कूल के लिये बहुत ही लाभप्रद पाया है।—पी. एल. सोदन, हैडमिस्ट्रेस गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल लुधियाना।

(ग) मैं ने इसे सभी शिक्षा पत्रिकाओं में उत्तम पाया। इस में छात्रों के लिये बहुत उपयोगी सामग्री संग्रहित की गई है।

—रामप्रसाद हैडमास्टर, मि. स्कूल जमशेर

(घ) ‘प्रकाश’ को नमूने की प्रति मिली अंक सुन्दर और पत्रिका छात्रोपयोगी है।

—डा. सूर्यदेव शर्मा एम. ए. डी. लिट्,

प्रिंसिपल डी. ए. बी. कालेज अजमेर

इनके अतिरिक्त—प्रशंसापत्र भेजने वालों में हैड-मिस्ट्रेस, क्रिश्चियन गर्ल्स हाई स्कूल पालमपुर, हैडमास्टर गवर्नमेंट हाईस्कूल होशियारपुर व अन्य

आवश्यक सूचना

पुण्डरी के म. मेघराज को सूचित किया जाता है कि शीघ्र हिसाब साफ करें अन्यथा उन के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जाएगी। २ फरवरी के पश्चात् उन्हें अदायगी का दफ्तर जिम्मेदार नहीं है। किसी से अनुचित पेमेंट वसूल को गई हो तो इसकी सूचना दी जाए।

—मैनेजर ‘प्रकाश’ जालन्धर

पंजाब की ग्राम पंचायतों के लिए

उर्दू मासिक

‘पंचायत गजट जालन्धर’

सम्पादक—हितैषी अलावलपुरी

अप्रैल ५६ से बड़ी सज्जधज से प्रकाशित हो रहा है। सभी सम्बन्धित अधिकारियों और ग्राम पंचायतों ने इसे हृदय से अपनाया है। हजारों पंचायतें इसकी ग्राहक बन चुकी हैं। इस में पंचायत कानून की व्याख्या, इन्तजामिया दीवानी और फौजदारी मुकद्दमों की समाइत का तरीका, भारत का विधान, कृषि सम्बन्धी अमूल्य जानकारी, पंचायतों की समस्याओं का हल उनके प्रश्नों के उत्तरों के रूप में, शिक्षा समाचार, कृषि समचार, महीने भर के अन्य महत्वपूर्ण समाचार तथा पंचायतों के काम की रिपोर्टें पढ़ने को मिलेंगी। वार्षिक मूल्य ९ रु० बी. पी. से ९ रु० ८५ नए पैसे।

आज ही ग्राहक बनिए

नमूने की प्रति १२ आने के डाक टिकट भेज कर मंगवाएं।

हिन्दी संस्करण

‘पंचायत गजट’ का हिन्दी संस्करण भी छपता है। इसका वार्षिक शुल्क भी ९ रु० ही है। वी. पी. से ९ रु० ८५ नए पैसे। उर्दू तथा हिन्दी दोनों संस्करण एक साथ जारी कराने पर १२) रुपए की बजाए १६ रु० लिए जावेंगे।

पंजाबी में भी ‘पंचायत गजट’

‘पंचायत गजट’ पंजाबी में शीघ्र छपने लगेगा।

मिलने का पता : मैनेजर पंचायत गजट, चहार बाग जालन्धर।

उपयोगी उर्दू पुस्तकें

(१) पंचायतों के अधिकार तथा कर्तव्य

इस पुस्तक में पंचायतों के लाजमी और इस्तिथारी कर्तव्यों और सभी प्रकार के अधिकारों की व्याख्या की गई है। मूल्य ६ आने।

(२) दीवानी व माल नालिशों की समाइत

इसमें पंचायतों की दीवानी व माल नालिशों की समाइत के अधिकारों की व्याख्या करके इन नालिशों को समाइत का तरीका बताया गया है। मूल्य ८ आने।

(३) फौजदारी मुकद्दमों की समाइत

जिन दफात में पंचायतों को फौजदारी मुकद्दमों की समाइत का इस्तिथार हासिल है उनकी व्याख्या और मिसल बनाने का तरीका देकर एक पूरी मिसल वतौर नमूना दी गई है। मूल्य १२ आने।

(४) पंचायत इलैक्शन क्वाइड

इसमें पंचायतों के चुनाव सम्बन्धी सारी जानकारी दी गई है। मूल्य ६ आने।

(५) इन्तजामिया मुकद्दमों की समाइत

दफात २३ ग्राम पंचायत ऐक्टके अंतर्गत किए जाने वाले इन्तजामिया मुकद्दमों की समाइत का तरीका और दफा २१, २२ के तहत जारी किए जाने वाले नोटिसों और आज्ञाओं के नमूने दिए गए हैं। मूल्य चार आने।

(६) मसला शामलात देह

के बारे में पूरी जानकारी। मूल्य ५ आने।



